

خواتین اور دوشیزاؤں کیلئے ایک نئی سرحد کا شہر دامنا

رداء الجمیل

AUGUST
2018

URDU KA KHAZAANA

ماڈل: نبیہ علی
میک اپ: روز بیوٹی پارلر
فوٹو گرافی: سمویٰ رضا

www.urdu-gem.com

آرٹسٹ: جنید انصار

سالگره مبارک

رداد الخمس

خط و کتابت کا اہتمام
 ردا انجمن
 ۱۴۱- ڈی. بی. ۲
 لی. بی. بی. ای. ایس
 لاہور

لیگل ایڈوائزر: حمد صدیقی



Medora

Matte lipsticks

with matching

Oil Income

WHITE

110K

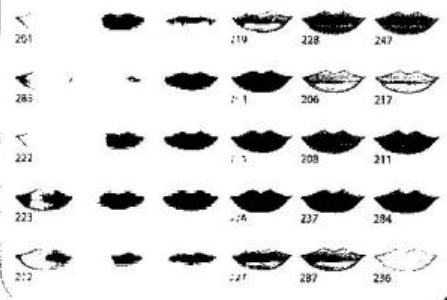
with

W. LING

COMFORT

AVAILABLE IN 100 SHADES,

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84



'Matte' is the new trend. Beautiful, Bold, Smooth, Vibrant and Long Lasting. The perfect long wearing matte Formula.

LIBRARY OF LONDON "CFC 1015 122" 190

مستقل سلسلے

۲۲۲ ثریا اقبال
۲۲۵ شہلا مشائق
۲۰۸ نورین ملک
۲۲۰ ادارہ
۲۱۷

گوشہ آگہی

سلسلے وارناول

عشق کی داستان جدا
ریحانہ آفتاب ۱۲۰

زندگی پھولِ محبت خوشبو
شازیہ مصطفیٰ ۱۸۶

بانہوں کے حصار میں
قمر و شہباز ۱۰

افسانے

| | | |
|-----|-----------------|----------------|
| ۷۸ | اقر اوجنا | بیس تم ہی ہوں |
| ۸۴ | ریمانور | بہار منتظر |
| ۸۸ | عائشہ ذوالفقار | زندگی کے رنگ |
| ۱۳۳ | حفصہ کنول | وجہ کون |
| ۱۳۸ | ماریہ یاسر | مطالبہ |
| ۱۶۰ | فریدہ فرید | اوٹ تیری کون.. |
| ۱۹۹ | حور العین اقبال | قربانی |
| ۲۰۳ | حنا کنول | زندگی کا بیج |

مکمل ناول

۳۲ کچھ عشق تھا کچھ مجبوری سب اس گل
۹۲ لکھی بابل مورے انیلا طالب

ناولٹ

۶۶ عطیہ مری پھریوں ہوا
۱۶۸ امیر فاطمہ تم ہی میری خوشی

اگست 2018ء
جلد نمبر 23 شمارہ نمبر 8
قیمت 70 روپے


جلد نمبر 23 شمارہ نمبر 8

قیمت 70 روپے

www.facebook.com/rida.digest

زِرَّ سَائِلًا بِذَرِيعَةٍ رَجَسْتَنِي

720 روپے

 34535726

پبلشر وائیڈ رصالحہ محمود نے ابن حسن پر تنگ پریس سے چھپوا کر شائع کیا۔
مقام اشاعت: ۱۲۹/ ڈی بلاک- ۲- بی- ای- سی- ایچ- سوسائٹی، کراچی

[illegible]



طرف سے ذبح کرتے۔ (مسند احمد)

قربانی واجب ہے یا نہیں؟

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ”جس کے پاس (قربانی کرنے کی) تمنا ہو اور وہ قربانی نہ کرے تو اسے چاہیے کہ ہماری عید گاہ کے قریب بھی نہ آئے۔“ (مسند احمد)

حضرت محمد بن سیرین رحمۃ اللہ سے روایت ہے انہوں نے کہا: ”میں نے حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ سے پوچھا۔

”کیا قربانی واجب ہے؟“

انہوں نے فرمایا: ”رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے قربانی کی اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد مسلمان قربانی کرتے رہے اور یہی طریقہ جاری ہے۔“ (طبرانی)

قربانی کا ثواب:

حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے، نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ”قربانی کے دن آدم کا بیٹا کوئی ایسا عمل نہیں کرتا جو اللہ کو خون بہانے (جانور کی قربانی کرنے) سے زیادہ محبوب ہو۔ وہ (جانور) قیامت کے دن اپنے سینگوں، گھروں اور بالوں سمیت آئے گا (اور نیکی کے پلڑے میں رکھا جائے گا) قربانی کے جانور کا خون زمین پر گرنے سے پہلے اللہ کے ہاں (قبولیت کا) مقام حاصل کر لیتا ہے۔ اس

قربانی کی دعا:

حضرت جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، انہوں نے فرمایا: ”رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے عید کے دن دو مینڈھے قربان کیے۔ جب انہیں قبلہ رخ کیا تو فرمایا: (ترجمہ) میں نے یکسو ہو کر اپنا چہرہ اس اللہ کی طرف کر لیا جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا اور میں مشرکین میں سے نہیں۔ بے شک میری نماز، میری قربانی، میری زندگی اور میری موت اللہ کے لیے ہے جو سارے جہانوں کا مالک ہے، اس کا کوئی شریک نہیں۔ مجھے اسی بات کا حکم دیا گیا ہے اور میں سب سے پہلا فرماں بردار ہوں۔ اے اللہ! یہ جانور تجھ ہی سے ملا اور تیرے ہی لیے قربان کیا۔ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) اور ان کی امت کی طرف سے۔ (ابوداؤد)

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی قربانی:

حضرت عائشہ اور حضرت ابو ہریرہ سے روایت ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جب قربانی کرنا چاہتے تو دو بڑے بڑے، مونٹے تازے، سینگوں والے، چتکبرے اور خصی مینڈھے خریدتے۔ ایک اپنی امت کی طرف سے ذبح فرماتے، یعنی امت کے ہر اس فرد کی طرف سے جو اللہ کی توحید کی گواہی دیتا ہو اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے پیغام پہنچانے (اور رسول ہونے) کی گواہی دیتا ہو اور دوسرا محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) کی طرف سے اور محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی آل کی

ایک شورا ایک ہنگامہ ہر طرف بابا کارچی ہے، کون کس پر بازی لے جائے یہ اگلا بندہ جان ہی نہیں سکتا، جس کے پاس پیسہ ہے میڈیا پر اسی کا بول بالا ہے، لا وارث صوبہ سندھ خاص طور پر کراچی پاکستان کا سب سے بڑا شہر جس کو اگر کچرا کڈی کہا جائے تو غلط نہیں ہوگا، جس کا بجٹ موجودہ حکومت ہڑپ کر جاتی ہے، یہاں پر سب قسمت آزمائی کے لیے اترے ہیں۔ کوئی میانوالی اور کوئی لاہور سے آیا ہے سب دوسری کرنے کے خواب دکھا رہے ہیں، خلق خدا چیخ رہی ہے، پانی اور کچرا، سیوریج کا نظام ٹھیک کر دو، ہر کوئی اپنی اپنی بساط پھیلائے ووٹ مانگ رہا ہے دعوے ہزار ہیں، پکڑا جائے گا وہ جو اس بار دھوکا دے کر نکلا، چلو بچ گئے تو پھر پانچ سال کھالے اور چلتے نہیں گئے، میں چلا تو سنجال، ووٹر ہکا بکا پھر رہ جائے گا پوری کوشش ہے کہ اس بار انتخابات شفاف طریقے سے ہو جائیں۔ اداروں کی بھی پوری کوشش ہے کہنے والے کہتے ہیں چور چوری سے جائے گا ہیرا پھیری سے نہیں جائے گا۔ ممکن کو ناممکن بنا دینے والے ہر دور میں ہوتے ہیں، میڈیا پر اتنے جلے جلوس اور تجزیہ نگاروں کے تجزیے سے ذہن کوئی بھی فیصلہ اخذ نہیں کر سکا کہ کون شہر کراچی کا ولی وارث ہوگا۔ بہر حال کل کی گھڑی ثابت کر دے گی کہ کون پاکستان کا محب وطن وزیر اعظم ہوگا تو یہ بات کل آخر میں ادارہ لکھتے ہوئے بتائیں گے۔

الحمد للہ ہم ایک خوش گمان دور میں داخل ہو چکے ہیں۔ پروردگار ہماری خوش فہمیوں کو دائمی کر دے اور واقعی پاکستان کو ایک نیا پاکستان بنا دے۔ تصویر پاکستان کو پھر سے زندہ کر دے، خشک دریا بنجر چمیلیں آباد ہو جائیں، ڈیمز کی تعمیر ممکن ہو، خوشحالی کا دور دورہ ہو، پاکستان کی یہ صبح ٹو یعنی 26 جولائی ہے اور آج میں اگست کا ادارہ لکھ رہی ہوں۔

رم، محرم موسم کے ساتھ بہت ساری یادیں سٹ آئیں، پاکستان کی ہجرت یہ نئی تہذیبی اور ساتھ ہی ہمارے ردا کا اجراء بھی ہمیں یاد ہے۔ ان تمام ادوار میں یہی جانا کہ زندگی مسائل کا نام ہے۔ پروردگار سے امید ہے کہ وہ تمام رستے کھل کر دے گا۔ ردا کے لیے بھی کوشاں رہیے کہ یہ آپ کا اپنا ہاتھ ہے اس سے جزی ہوئی یادیں، اس سے منسلک رائے سب ہمارے اپنے ہیں اور ایک گھر کا ساما حول ہے جو آپ کو اور ہم کو جوڑے ہوئے ہے۔ سودا ہے ہماری کہ آپ جہاں بھی ہوں خوش اور آباد رہیں۔ نئے لکھنے والوں کے لیے ہمیشہ یہ نوید رہی ہے کہ آپ قلم اٹھائیے اور روائیں اپنی تخلیق جیسے، ہم ردا گائیڈ کارنر میں جگہ ضرور دیتے ہیں۔

آپی

Freedom®

اب مخصوص دن بھی گزاریں
خوشگوار!!!



DRY MESH TOPSHEET

Freedom
Maxi Thick

Freedom
Maxi Thick

Available in:
• LONG
• EXTRA LONG

ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں کچھ بکریاں دیں جو انہوں نے قربانی کے لیے (رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم سے) صحابہ کرام میں تقسیم کر دیں۔ (ان کے پاس) بکری کا ایک سالہ بچہ (باقی) رہ گیا۔ انہوں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو خبر دی تو انہوں نے فرمایا: ”اس کی قربانی تم دے دو۔“ (بخاری)

جس جانور کی قربانی دینا مکروہ ہے:

حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے انہوں نے فرمایا: ”رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس جانور کو ذبح کرنے سے منع فرمایا ہے جس کا کان آگے سے کٹا ہوا ہو یا جس کا کان پیچھے سے کٹا ہوا ہو، یا جس کا کان چرا ہوا ہو یا جس کے کان میں (گول) سوراخ ہو یا اس کا ہونٹ کٹا ہوا ہو۔“ (ابوداؤد)

حضرت علی رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، انہوں نے فرمایا: ”جس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حکم دیا کہ ہم (قربانی کے جانور کی) آنکھیں اور کان اچھی طرح دیکھ لیا کریں۔ (ترمذی) قربانی کی کھالیں:

حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں حکم دیا کہ وہ آپ کے (قربانی کے) تمام اونٹوں کا گوشت، ان کی کھالیں غریبوں میں تقسیم کر دیں۔ قربانی کا گوشت کھانا:

حضرت جابر بن عبد اللہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم سے ہر اونٹ کی ایک ایک بوٹی لے کر ہنڈیا میں ڈالی گئی (اور پکائی گئی) تب انہوں نے (رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے ساتھیوں نے) کچھ گوشت کھایا اور کچھ شوربہ پیا۔ (مسند احمد)

لیے خوش دلی سے قربانی کیا کرو۔“ (ترمذی)
قربانی کا جانور:

حضرت یونس بن مہمرہ بن حبیس رحمۃ اللہ سے روایت ہے انہوں نے کہا: ”میں اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابی حضرت ابوسعید رزقی رضی اللہ عنہ کے ساتھ قربانی کے جانور خریدنے لگا۔

یونس بن مہمرہ بیان کرتے ہیں کہ حضرت ابوسعید رضی اللہ عنہ نے ایک ایسے مینڈھے کی طرف اشارہ کیا جس کے کانوں اور گلے کا کچھ حصہ سیاہ تھا۔ وہ جسمانی طور پر نہ زیادہ اونچا تھا نہ زیادہ پست تھا۔ انہوں نے فرمایا۔ ”میرے لیے یہ خرید لو۔“ گویا انہوں نے اسے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے مینڈھے کے مشابہ قرار دیا۔

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے۔ انہوں نے فرمایا: ”ہم لوگ ایک سفر میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ تھے کہ عید الاضحیٰ آگئی چنانچہ ہم نے دس دس آدمیوں کی طرف سے ایک ایک اونٹ اور سات سات آدمیوں کی طرف سے ایک ایک گائے مشترکہ طور پر ذبح کی۔ (ترمذی)

حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے، انہوں نے فرمایا: ”ہم نے حدیبیہ میں نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ ایک اونٹ سات افراد کی طرف سے اور ایک گائے سات افراد کی طرف سے ذبح کی۔“ (صحیح مسلم)

حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حجتہ الوداع میں آل محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف سے ایک گائے ذبح کی۔ (ابوداؤد)

کس عمر کے جانور کی قربانی درست ہے؟

حضرت عقیبہ بن عامر رضی اللہ عنہ سے روایت

بانہو گالچے صرار میں

”انشراح! رابع تم سے بات کرنا چاہتا ہے لو بات کرلو۔“ انابہ نے فون اس کی طرف بڑھایا تھا۔ انشراح نے فون کو دیکھا پھر انابہ کو۔
”مجھے نہیں کرنی ان سے بات۔“ اس نے نروٹھے پن سے کہا تھا۔ انابہ کے لبوں پر دھیمی سی مسکراہٹ ریگ گئی تھی۔



”من تو لو وہ کیا کہہ رہا ہے۔“
”نہیں اور آپ ان سے منع کریں مجھ سے بات نہیں کیا کریں۔“ اس کی ساری باتیں فون کے اس پار رابع ملک سن رہا تھا۔
”اب کیا کروں۔“ انابہ نے فون کان سے لگا کر رابع ملک سے پوچھا تھا۔
”نہیں کیا کرنا ہے جو کرنا ہے مجھے ہی کرنا ہے تم دونوں میاں بیوی تو ہو ہی نا کارہ۔“ رابع ملک کے سہلے جواب پر انابہ ہتھکڑی لگا کر ہنسی چلی گئی تھی۔
”بعد میں یہ وائٹ نکال لینا پہلے لاؤ ڈاؤ اپیل کرلو۔“

قمر نمبر 5



”او کے بابا کرتی ہوں۔“ انا بیہ نے ہنستے ہوئے فون کا لاؤڈ اسپیکر آن کر دیا تھا۔

”اب بولو انشراح تک تمہاری آواز جارہی ہے۔“

”انشراح! انا بیہ سے فون لو اور کمرے میں جاؤ مجھے تم سے بات کرنی ہے۔“

”مگر مجھے آپ سے کوئی بات نہیں کرنی ہے۔“ نکلتا ہوا جواب حاضر تھا۔

”تم فون لے کر روم میں جا رہی ہو یا مین ڈائریکٹ تمہارے روم میں ہی آ جاؤں۔“ عجیب دھونس بھری دھمکی تھی۔ انشراح کے چہرے کی تو ہوائیاں ہی اڑ گئیں۔ اس نے انا بیہ کو دیکھا جو چہرے نیچے کے مسکراہٹ تھی۔

”انا بیہ آپ! انشراح نے مدد طلب نظروں سے انا بیہ کو دیکھتے ہوئے پکارا تھا۔ انا بیہ کو اس کی معصومیت پر بہت پیارا آیا۔

”بات کرلو سنو وہ کیا کہہ رہا ہے۔“ انا بیہ نے لاؤڈ اسپیکر کو آف کیا اور فون اس کو تھا کر نیچے چلی گئی۔

انشراح فون لیے اندر آ گئی تھی۔

”جلدی کہیے کیا کہنا ہے مجھے نیند آرہی ہے۔“

”یہاں میری نیندیں اڑی ہوئی ہیں اور تمہیں نیند آرہی ہے۔“ نہایت دھیمی سرگوشی تھی۔

”اب مجھے کیا پتا آپ کو نیند کیوں نہیں آرہی ہے۔“ وہ سچ معنوں میں زچ ہو گئی تھی۔

”تم پاس ہو تو میں دل کے قریب ہوتی تو جتنا تاکہ میں اب تک کیوں جاگ رہا ہوں۔“

”میں کچھ نہیں جانتی۔“ اس کے خاکے پہلے چڑی اس کی باتیں۔

”اب ایک ہی طریقہ ہے میرے پاس تمہیں سب کچھ سمجھانے کے لیے کہ تمہیں یہاں اپنے پاس اپنے بیڈ روم میں لانا ضروری ہے۔“ شمار آلود لب و لہجہ میں کہتا ہوا وہ انشراح کی جسم سے جیسے جان بچ گیا ہو۔

”و قطعاً نہیں ایسا کسی صورت ممکن نہیں ہے۔“

”تو کیا اپنا کھراپے شوہر کو چھوڑ کر وہیں انا بیہ کے پاس پڑی رہو گی۔“

”دیکھیں آپ نے مجھے بے وقوف بنایا ہے اور اپنی چالاک سے مجھ سے نکاح نامے پر دستخط کروائے ہیں۔“

”چالاکی نہیں میری جان! سمجھ داری کہو، بہر حال جو بھی سے مراب میں تمہیں یہاں اپنے بیڈ روم میں دیکھنا چاہتا ہوں، تم جلدی سے آ جاؤ میں تمہارے بغیر اب نہیں رہ سکتا۔“ انشراح کچھ نہیں بولی اس کی کچھ کچھ میں ہی نہیں آ رہا تھا کہ کیا بولے۔

”کیا ہوا سو ہیٹ ہارٹ! خاموش کیوں ہو گئیں کیا ابھی سے تم میرے سنگ خوابوں کی حسین وادیوں میں سفر تو نہیں کرنے لگیں۔“ وہ اس کی خاموشی سے محظوظ ہوتا ہوا بولا تھا۔

”بس فضول کی ہی بولتے رہا کریں مجھے نہیں سننی آپ کی کوئی بات۔“ انشراح نے مزید کچھ بولے بغیر

لاسٹ ہی ڈسکالٹ کر دی تھی۔

یہاں رابع ملک ہو لے سے مسکرا دیا تھا اپنے فون میں اس دریا کی تصویر دیکھنے لگا، جواب اس کی جان سے زیادہ قیمتی شے تھی اس کی زندگی اس کی کائنات تھی، اس کی آتی جانی سانسوں میں خوشبو بن کر مہکتی تھی۔

”کہاں تک چچی کوئی بات نہیں کل ملاقات کرتے ہیں تم سے۔“ دھیسے سے بولتے ہوئے اس نے

انشراح کی تصویر پر اپنے لب رکھ دیئے تھے۔

☆.....☆

”السلام علیکم“

”علیکم السلام، کیسے ہیں آپ؟“ انا بیہ کو تبریز کے آنے کی بے حد خوشی ہوئی تھی۔

”فائن اینڈ اس فور یو، پچی برتھ ڈے ٹو یو۔“ تبریز نے ایک خوب صورت سے گفٹ پیپر میں لپٹا گفٹ

اس کی جانب بڑھایا تھا۔

”ٹھیکس بٹ اس کی کیا ضرورت تھی۔“ خوش دلی سے کہتے ہوئے اس نے وہ گفٹ تھام لیا تھا۔

بی بی جان اور انا بیہ سے مل کر تبریز کو بہت اچھا بھی لگا اور خوشی بھی ساتھ لیکن اس کو دامن سے اکیلے میں ملنا تھا جس کی خواہش اس نے ظاہر کر دی تھی۔

”دامم! تم تبریز بھائی کو بیڈ روم میں لے جاؤ۔“ انا بیہ کے بولنے پر دامن نے اس کو گھور کے دیکھا تھا وہ

کھپکھپاتی تھی اس کی سرری کو وہ سمجھ گئی تھی۔

”میرا مطلب تھا آپ دونوں بیڈ روم میں چلیے میں کچھ دیر میں چائے لے آؤں گی۔“

انا بیہ کے گڑ بڑانے اور دامن کے گھورنے کو تبریز سمجھ گیا تھا لیوں کی تراش میں مسکراہٹ کی تھی۔

دامم اور تبریز دونوں بیڈ روم میں آ گئے تھے، دامن جیسے ہی آگے بڑھا پیچھے سے تبریز نے دروازہ لاکڈ

کر دیا تھا۔ دامن نے پیچھے ہٹ کر دیکھا تھا تبریز کے چہرے پر ہی نہیں آنکھوں میں بھی غصہ دکھ رہا تھا۔ وہ

اپنی باتوں کی دونوں آئینیں اوپر کو فولڈ کر رہا تھا۔

”تو.....!“ اس سے پہلے کہ دامن پیچھے ہٹا تبریز کا دروازہ اس کے پیٹ پر لگ چکا تھا۔

”تبریز میری بات سن۔“ مگر تبریز نے ایک نہیں سنی اور ابک کر دروازہ اس کے جڑے پر جڑ دیا کہ وہ

بیڈ پر گر رہا تھا۔

”نہیں سننی مجھے تیری کوئی بھی بات، پہلے طبیعت سے بڑی دھلائی۔“ کوئی گانہ تیری ہڈیاں توڑ دوں گا

اس کے بعد تجھے اس قابل چھوڑ دوں گا کہ تو کچھ بولنے کے قابل ہو سکے، گھبراہٹ اس نے ہاتھ کے

اشارے سے اس کو کھڑے ہونے کے لیے کہا تھا۔ وہ اپنے بچاؤ کے لیے کھڑا تو ہوا مگر تبریز کے ایک بار پھر

اس کو ہیر کر دیا تھا۔

”اے بیہ میں ایسا کچھ نہیں چاہتا تھا مگر کب، کیسے کیوں ہوا میں کچھ نہیں جانتا۔“ اور اس سے پہلے کہ ایک

کا پھر پڑتا وہ نیپ کو تو کیا تو تبریز کا مکا ہوا میں ہی لہرا گیا تھا۔ دامن اس کے وار سے بچنے کے لیے بھاگا مگر تبریز

اس نے پیچھے بھاگا تھا۔ پورے کمرے میں گویا دوڑ کا میدان لگ چکا تھا۔

مگر تبریز کا سانس پھولنے لگا تھا اکھڑی اکھڑی سانسوں سمیت وہ وہیں کھڑا کھڑا رہ گیا۔ کھانسی کا

ایک دم نہ ہونے والا دورہ اٹھا تھا۔ دامن تیزی سے اس کے پاس آیا اور اس کو تھام کر صوفے پر بٹھایا۔ جلدی

سے پہلے اس کی کوٹ کی جیب سے آکسیجن پمپ نکالا اور اس کے منہ میں پمپ کرنے لگا تھا جس سے اس کی

سانسیں بحال ہوئی تھیں اور پھر پانی کا گلاس بھر کے لایا اور اس کو پورا پانی پلا دیا تھا۔

”دامن خراب ہو گیا تیرا کیا ضرورت تھی اس طرح بھاگنے کی۔“ دامن نے اس کو ڈانٹا۔

”مجھ سے زیادہ بکواس کرنے کی ضرورت نہیں ہے نہ ہی ہمدردی جتانے کی ضرورت ہے۔“ تبریز نے

بھی اس کو جھڑک دیا تھا۔
 اور تبریز کو بچپن سے وہ کسی طرح منانا آیا تھا۔ اس نے اپنے دونوں کان پکڑ لیے اور اس کے سامنے
 گھٹنوں کے بل آ بیٹھا۔
 ”سوری“، مستغنی سی صورت لیے وہ تبریز کو دیکھنے لگا تھا۔
 ”دل تو جا رہا ہے کہ تجھ سے زندگی بھر بات نہ کروں، ہمیشہ کے لیے ناراض ہو جاؤں مگر کیا کروں تجھ
 سے محبت بھی تو بہت کرتا ہوں۔“ اور پھر اس کے دونوں ہاتھ تبریز نے کانوں سے ہٹائے اور اس کے گلے
 سے لگا تھا۔
 ”اتنی بڑی بات تو نے مجھ سے چھپائی کسی کو خبر نہیں کہ تو نے یہاں شادی بھی کر لی ہے۔“ زبان پر شکوہ تو
 آنکھوں میں ناراضی تھی۔
 ”بس سب بہت اچانک ہوا تھا اور میں بتانا چاہتا تھا تجھے۔“
 ”ہاں جب بتاتا جب میں قبر میں منوں مٹی تلے دفن ہو جاتا۔“
 ”تبریز! داغ نے تڑپ کر اس کو دیکھا بلکہ کھینچ کر اس کو اپنے گلے سے بھی لگالیا تھا۔“
 ”اللہ نہ کرے تجھے کچھ ہو۔“
 ”ہاں بہت محبت کرتے تھے مگر اتنا ہی چاہتا جان چھڑکتا ہوتا تو کم از کم ایک فون ہی کر دیتا نہ آتا تیری
 شای میں تو کہتا۔“
 دائم نے پچھلے کچھ عرصے میں گزری ایک ایک رو داد اس کے گوش گزار کر دی تھی۔
 ”اب تو ہی بتا کیا چوائس مچی تھی میرے پاس۔“
 ”ٹھیک ہے تو انا بیہ ہابی سے محبت کرتا تھا اور ان کو اپنی لیا بگروہ۔۔۔۔۔ اس کا کیا جو تیرے انتقاد میں آج
 بھی بیٹھی ہے۔“
 ”کون۔۔۔۔۔؟“
 ”بازغہ۔۔۔۔۔“
 دائم نے ایک لمبی سانس بھری اور وہاں سے کھڑا ہو گیا تھا۔
 ”میں نے اماں جان کو سب بتا دیا تھا۔“
 ”اپنی شادی کے بارے میں بھی؟“ تبریز نے حیران ہو کر دیکھا۔
 ”نہیں اس بارے میں کسی کو کچھ علم نہیں ہے۔“
 ”کب تک چھپا کر رکھے گا۔“
 ”پتا نہیں۔“ اس کی پرسوج نظریں کسی غیر مرئی نقطے پر انگی ہوئی تھیں۔
 ”بابا کی طبیعت بہت خراب ہو گئی ہے تیری جدائی نے ان کو بہت نڈھال کر دیا ہے۔“
 ”کیوں کیا ہوا بابا کو۔“ اس کے چہرے پر فکر مندی کے سائے منڈلانے لگے تھے۔ اپنوں کی محبت کی
 تڑپ اس کے ہر عضو سے جھلک رہی تھی۔
 ”تو نہیں جانتا کہ ان کی واحد کمزوری کیا ہے۔“ انا سوال کیا تھا۔ دائم نے بغور تبریز کو دیکھا۔
 ”ہیلو۔۔۔۔۔ یعنی مینی پٹی ریٹن آف داڈے، میری پیاری سی جھٹی دوست کو سالگرہ مبارک ہو۔“ رابع

ملک نے گفٹ انا بیہ کی طرف بڑھایا۔
 ”ہینکس۔۔۔۔۔ مائی بیسٹ فرینڈ۔“ اس نے مسکراتے ہوئے تھام لیا تھا۔
 ”بی بی جان کہاں ہیں؟“
 ”وہ ابھی ابھی عشاء کی نماز پڑھنے اپنے روم میں گئی ہیں۔“
 ”اور وہ ہمارا سردار بیٹھا۔“ اس کے لبوں پر شریر مسکراہٹ تھی۔
 ”اس کا کوئی کزن آیا ہے، دونوں بیڈروم میں کچھ ڈسکشن کر رہے ہیں۔“
 ”اس کا، ابھی اگر سردار صاحب نے سن لیا تو خون میں جوش آ جائے گا اور برتھ ڈے سیلبریٹ کے
 بجائے ایک گھنٹے کا ٹیکر سننا بیٹھ کے۔“
 ”ٹھیک کہتے ہو اور آج تو اس کے اپنے والے آئے ہیں۔“ انا بیہ نے زبان دانتوں تلے دبا کر کہا۔
 جس پر رابع ملک ہو لے سے ہنس دیا تھا۔
 ”اور یہ ہماری نصف بہتر کہاں گوشہ نشین ہیں۔“ اس کی متلاشی نظریں ادھر ادھر دوڑ رہی تھی۔
 ”اشرح ابھی ابھی ابھی گئی ہے تیار ہونے۔“
 ”اس کو بتا کے مل رہا ہوں اس لیے۔“
 ”خوش نہیں دور کرنا تو چاہتا ہوں ہے تم آ رہے ہو اس لیے زبردستی تیار ہونے اس کو اور پریشان ہے۔“
 ”اوکے پھر میں اوپر ہی چلوں۔“ وہ مسکراتا ہوا سیڑھیوں کی طرف بڑھنے لگا تھا۔
 ”سوچ لو اس دفعہ تو دانتوں سے کاٹ کر تھیلی پر نشان چھوڑ دیے تھے اس بار اپنے ناخنوں سے تمہارا
 چہرہ ہی نہ بگاڑ دے۔“ رابع ملک اس کی بات پر چونک کر پلٹا تھا۔
 ”تم جاسوس لڑکی، تمہیں تو میں آکر پوچھتا ہوں کچھ نہ فرما اس بے وقوفوں کی سردار سے منٹ لوں۔“ وہ
 اس کو گھورتا ہوا آگے بڑھ گیا تھا۔
 انا بیہ کے جان دار قہقہے نے دور تک اس کا پیچھا کیا تھا۔
 رابع ملک نے ہو لے سے اشرح کے روم میں قدم رکھا تھا۔ وہ سب نے قد آور آئینے میں قیامت
 ڈھائی کھڑی تھی، پلیو اینڈ پیئرٹ ٹیٹ کے کنٹراس کی خوب گھیر داؤ فرما کر اس کی میدے جیسی رنگت
 خوب بہار دکھا رہی تھی، بنا میک اپ کے وہ اپنے لیے سیاہ سنگی بالوں سے ابھرتی تھی، اور بھی ابھن اس
 کے چہرے پر بھی تھی، جس کا مطلب اس کو یہ سب اچھا نہیں لگ رہا تھا، بنا آواز مسموٹوں کو آگے
 بڑھاتا وہ بالکل اس کے پیچھے جا کھڑا ہوا تھا اور دونوں بازو اس کی کمر کے گرد باندھ کے کھوڑی اس کے
 شانے پر دھردی تھی۔
 اشرح اس کا ردوائی کے لیے قطعی طور پر راضی نہیں تھی، ہینز برش اس کے ہاتھ سے گر گیا تھا، وہ ایک
 جھٹکے سے پلٹی تھی مقابل رابع ملک کو دیکھ کر وہ پوری جان سے سلگ کر رہ گئی تھی اور اس کی اس بے باک
 حرکت نے تو مزید اسے جیسے انگاروں پر بٹھا دیا ہو۔
 ”آپ پھر آگئے۔۔۔۔۔ اور یہ کیا حرکت ہے۔“
 مگر وہ اس کو کون کہاں رہا تھا۔ وہ تو بس ایک ٹیک اس کا سادہ حسن دیکھ رہا تھا اور ایک ہاتھ بڑھا کر اس کی
 مرمیس کلائی تھام کر اس کو اپنے قریب کھینچ لیا تھا۔ وہ کسی نازک سی ٹوٹی شاخ کی طرح بل کھاتی اس کے

”جی ہاں اندازہ ہو رہا ہے باخوبی کہ بچی کس قدر اس دیوبند کے ڈری سہمی ہوئی ہے۔“ انا بیہ نے معنی خیز مسکراہٹ بکھیری۔

”اب تو یہ تم پر ڈیپنڈ کرتا ہے کہ تم اسے ڈرے سہمے کا نام دو یا شرمائے گھبرانے کا۔“

”ٹھیک کہہ رہا تھا دائم کہ ڈھٹائی میں جھنڈے گاڑ دئے ہیں رابع نے۔“

انا بیہ کا کہنے کا انداز کچھ اس طرح تھا کہ وہ تہقید لگائے بیٹائیں رہ سکا تھا۔

”اس سے پہلے کہ میں تمہیں اس روم سے دھکے دے کر نکال دوں تمہاری بھلائی اسی میں ہے کہ خود ہی دفعہ ہو جاؤ۔“

”اوکے پنا جا رہا ہوں۔“ وہ مسکراتا ہوا ایک بھرپور نظر انشراح کے سر پر پڑا۔ البتہ کمرے سے باہر نکل گیا تھا، اس کی یہ بے باک نظر انشراح کو خود میں سننے پر مجبور کر گئی تھی۔ وہ صبح معنوں میں اس کی کھلی اور بے باک حرکتوں اور باتوں سے بوکھلا کر رہ گئی تھی۔

”انشراح! کیا ہوا کیوں اتنا پریشان ہو رہی ہو۔“ انا بیہ نے انشراح کے گھبرائے چہرے کو بغور دیکھا تھا۔

”انا بیہ! آئی! یہ یہاں کیوں آتے ہیں؟“ انشراح کے لب و لہجے میں کچھ تو ایسا تھا کہ انا بیہ کو چونکا گیا تھا اور بہت کچھ سوچنے پر مجبور بھی کر گیا تھا۔

”انشراح کی عمر زیادہ نہیں ہے اس کی سوچوں میں وہ محسوسات دل میں وہ جذبہ نہیں جو عموماً اس جیسی لڑکیوں کو محسوس کر دیتے ہیں وہ چھوٹے سے گاؤں کی ایک سیدھی سادھی سی لڑکی ہے۔“

”تمہیں رابع پسند نہیں ہے۔“ انا بیہ نے تجسیدی سے اس کے چہرے کو بغور دیکھا تھا۔

”نہیں۔“ انشراح نے نفی میں گردن ہلائی تھی۔

”اوکے میں رابع کو سمجھاؤں گی وہ اب تمہیں تنگ نہیں کرے گا۔“

”بچی!“ اس کے چہرے پر خوشی کی رشت کھل اٹھی تھی۔ انا بیہ نے خاموشی سے اس کے چہرے کو دیکھا پھر مسکراتے ہوئے اس کا چہرے پر ہولے سے چسکی دی۔

”بالکل سچ۔“

دونوں نیچے آئیں مگر پھر یہ ہوا کہ پھر رابع ملک نے نہ اس کو کچھ کہنا نہ ہی نظر اٹھا کے دیکھا۔ سارا وقت وہ بس واہم اور تیریز سے بات کرتا رہا تھا۔ انشراح نے سکھ کا سانس لیا تھا اور جمعی سے انا بیہ کی سالگرہ منائی تھی۔

☆.....☆

دسمبر کے اوائل دن شروع ہو گئے تھے، ٹھنڈا اپنے عروج پر تھی، گاؤں کی خنکی اور سردی کھلی تھی ایسا محسوس ہو رہا تھا ٹھنڈے لہجے میں ہنس رہی تھی اور اوپر سے سردی کی پہلی ٹھنڈی برقی بارش۔ حویلی کے بھی لوگ اپنے اپنے بیڈروم میں لحاف، بلینکٹ میں گھس گئے تھے، حویلی کے ملازمین بھی اپنے کوارٹر میں چلے گئے تھے، حویلی کے سائیں لوگوں نے اگر اپنے بیڈروم میں ہیز چلا لیا تھا تو غریب ملازمین نے لکڑیاں سلگالی تھیں، مگر آج تو ٹھنڈی طور کم ہونے کا نام نہیں لے رہی تھی، کوئی سردی سے کپکپا رہا تھا تو کوئی ٹھہر رہا تھا نی کے دانت بچ رہے تھے تو کوئی اپنے دونوں ہاتھوں کو مل کر ٹھنڈک کرنے کی ناکام کوشش کر رہا تھا اور یہ

کسرتی سینے سے لگی تھی۔ وہ ان براؤن کانچ میں دلیری سے دیکھ کر غصہ کرنا چاہتی تھی اسے خوب باتیں سنانا چاہتی تھی، جس نے صبح معنوں میں اس کو زچ کر کے رکھ دیا تھا مگر وہاں تو خوشیوں اور شرارتوں کا ایک جہاں آباد تھا، جس نے ان گلابی آنکھوں کو جھکنے پر مجبور کر دیا تھا، وہ ہلکے سے مزاحمت کرنا چاہتی تھی خود کو اس کی کسرتی ہانہوں سے آزاد کرنا چاہتی تھی مگر مقابل بھی لگتا تھا آج فل فارم میں ہے اس کے کسی ارادے میں اسے کامیاب نہیں ہونے دینا چاہتا تھا۔ رابع ملک نے ان گلابی آنکھوں میں لاکھ جھانکنا چاہا مگر ان پر پہرہ دیتی وہ غم دار سیاہ گھیری پلکوں کی باڈ نے ان گلابی آنکھوں کو چھپایا تھا، رابع ملک تادیر خود کو روک نہیں سکا اور ان پلکوں پر جھٹکا چلا گیا تھا۔ اس سادھے خوب صورت چہرے پر جا بجا اپنی بے تابانی اور بے قراری کی ایک لمبی داستان لکھتا چلا گیا تھا۔ انشراح نے بہت کوشش کی اس کی کسرتی مضبوط ہانہوں سے خود کو چھڑانے کی مگر رابع ملک نے اس کی ہر کوشش ناکام بنا دی تھی۔

”دیکھ لو جتنے دن آگے بڑھیں گے، یہ لمحے یہ پل آگے کو سرکیں گے، میری محبت و چاہت میری دیوانگی، میری بے قراری اور بے تابانی میں کہیں زیادہ جنون پاؤ گی اور یہ تو صرف ایک چھوٹا سا نمونہ ہے میرے ساتھ میرے گھر چلو میرے گھر میں وہاں تمہیں بتاؤں گا صبح معنوں میں محبت ہوتی کیا ہے۔“ رابع ملک کو اس کی بکھرتی حالت پر رحم نہ آتا تھا وہ مزید فی الحال اسے کسی امتحان میں نہیں ڈالنا چاہتا تھا۔ دو قدم پیچھے ہٹے بغور اس کے سر پر لے کر دیکھنے لگا تھا، گھبرائی گھبرائی سی انشراح اس کے دل میں اترتی چلی گئی تھی۔ گلابی ہونٹوں پر بار بار زبان پھیرتی وہ بہت مشکل حالات میں گرفتار ہو گئی تھی، اندر سے بہت سارا غصہ کرنا چاہتی تھی اس سے لڑنا بھڑکانا چاہتی تھی مگر جانے کیوں وہ ڈھسے ڈھسے ہی لگی تھی اس کی دہکتی محبتوں کے لہجے اس کو مکمل طور پر اپنی لپیٹ میں لے لیا تھا، اس کی لرزتی پلکوں کی بارش کھیلنے سے ہونٹ اور دونوں ہاتھوں کی انگلیوں کو آپس میں پیوست کیے بے دردی سے مروڑتی وہ رابع ملک کا بھینس دل کا سون و فترار لوٹ لے گئی تھی، اس نے سوچ لیا تھا کہ زیادہ تاہم تک وہ اس کو یہاں نہیں رہنے دے گا، لے جائے گا اسے گھر اپنے بیڈروم میں جو اس کی طرح بالکل اکیلا تھا۔

دروازے کی ہلکی سی دستک پر رابع ملک نے ہلکے سے رخ پھیر کے دیکھا، پھر وہ اپنی انشراح کو دیکھنے لگا اور مسکراتا ہوا دروازے کی جانب بڑھا دروازہ کھولا جہاں انا بیہ کھڑی مسکرا رہی تھی۔

”مجھے بتا تھا زیادہ دیر دشمنوں سے دو دروں کا ملنا برداشت نہیں ہوگا۔“

”بالکل ٹھیک کہا تم نے، مگر ابھی فی الحال تھوڑا سا حالات براور تھوڑا اس بے چاری پر رحم کھاؤ۔“ انا بیہ کی ذومعنی بات کا مطلب وہ اچھی طرح سمجھ گیا تھا اور ہولے سے مسکراتا ہوا پیچھے پلٹ کر دیکھنے لگا۔

”جب محترمہ اتنے کیل ہتھیار کے ساتھ سامنے آئیں گی تو رحم تو دور ہوش کیسے رہے گا۔“ انا بیہ نے بھی رابع ملک کی تقلید پر رخ کو رابع ملک کے شانے سے اچکا کر انشراح کو دیکھا تھا۔

”ماشاء اللہ!“ انا بیہ نے بے ساختہ ہی کہا تھا۔

”ارے سائے تو ہو۔“ وہ صبح میں جے رابع کو پرے کرتی اندرا لگتی تھی۔

”انشراح! تم ماشاء اللہ بہت پیاری لگ رہی ہو سو گار جیس۔“ انا بیہ نے اس کے رخسار پر پیار کیا تھا۔

”وہی ان کی تعریف تو میں بھی بہت اچھی طرح کر چکا ہوں۔“ شرارت سے کہتے ہوئے اس نے انشراح کے گھبرائے گھبرائے چہرے کو دیکھا تھا۔

سب حویلی کے بے چارے ملازمین تھے ورنہ یہاں کے مالکان کو تو معمولی سا بھی فرق نہیں پڑ رہا تھا۔
اربش اپنا آخری کام نمٹا کے فارغ ہو گئی تھی مگر ابھی جو اصل کام تھا وہ اس کے کاموں سے زیادہ تھکن،
مشکل اور جان سولی پر لٹکنے جیسا تھا، سالار شاہ کا سامنا اس کا ظلم اس کی زیادتی سہنا۔

انہی سب تکلیف دہ سوچوں میں گھری وہ بیڈروم میں داخل ہوئی تھی اس کے قدم جتنے من من بھر کے
تھے روح پر اتنی ہی جیسے کسی نے بھاری سل رکھ دی ہو، بیڈ پر سالار شاہ بیک کراؤن سے ٹیک لگائے اپنے
موبائل میں کچھ دیکھ رہا تھا۔ اربش کی آہٹ پر ہلکا سا رخ ترچھا کر کے دیکھا تھا اور پھر اپنا فون سائیڈ پر رکھ
دیا، بلیٹک سے نکل کر جہازی ساز بیڈ سے پیچھے اتر آ۔ دونوں ہاتھوں کو پیش پر باندھے وہ مغرورانہ چال چلتا
ہوا سیٹ چہرے لیے وہ آہستہ آہستہ آگے بڑھنے لگا تھا۔ اربش کے قدم تو وہیں پہنچی تھیں ترین قایلین پر جم کر رہ گئے
تھے آتی جانی سانس اس کے خوف سے قہم کر رہ گئی تھیں، کمرے سے باہر بے شک بہت ٹھنڈی بہت سردی
تھی مگر بیڈروم میں ہنر چل رہا تھا جس کی گرمائی اس نے اپنے اندر تک محسوس کی تھی۔ مگر اس گرمائی میں
سکون کوئی آرام نہیں تھا بلکہ جسم کی رگ رگ میں وحشت ڈر دوڑ رہا تھا۔ دل کی دھڑکنیں رک رک کر چل رہی
تھیں سوچوں کے تانے بانے بس اسی بات میں الجھے ہوئے تھے کہ سالار شاہ کا بوڑھتا اگلا قدم کیا ہے، اب
کون سی سزا کی وہ حق دار ہے، جان چلے گی۔ اس کا چہرہ یکدم سپید ہونے لگا تھا۔ ان سیاہ نین میں ایک سمندر
موجزن تھا، جس کی بندھ توڑنے کی غلطی کوئی اجازت نہیں تھی۔

سالار شاہ نے بغور اس کی زردی میں جھلک رگت کو دیکھا تھا۔

”تمہارے ڈر و خوف، تمہارے چہرے کی سپید پڑتی رگت، تمہارے جسم و روح کا لرزنا، کپکپانا،
تمہارے دل کا سہنا، کانپنا، یہ سب دیکھ کر مجھے میرے دل کو جتنا سکون ملتا ہے جس قدر طمانیت ملتی ہے اس کا
تمہیں معمولی سا بھی اندازہ نہیں ہے اور سوچو جتنا سکون جتنی خوشحالی مجھے ملتی ہے تو وہاں ضویا شاہ کو کتنا سرو
ملتا ہوگا اور میں یہی تو چاہتا ہوں کہ ضویا شاہ کو پل پل راحت ملے، وہ دیکھے کہ اس کو اتنی اذیت بھری موت
دینے والے کا کیا حال ہے اس کا بدلہ اس کا انتقام کیسے لیا جا رہا ہے۔ مگر اربش نے اپنا چہرہ جھکا لیا تھا، لرزتی
پلیٹیں دیکھتے عارض پر سجدہ ریز تھیں۔

سالار شاہ نے خاموش ہو کر پل بھر کے لیے اس کو دیکھا اور پھر اپنے روم کے ٹیرن پر دیکھا جہاں
سردیوں کی پہلی ٹھنڈی بارش موسلا دھار برس رہی تھی۔

”آج بہت ٹھنڈے نا۔“

اربش نے چونک کر سالار شاہ کو دیکھا تھا اس کا رخ روم کے ٹیرس پر تھا، وال گلاس کے اس پار موسلا
دھار ٹھنڈی بارش ہو رہی تھی اربش کا وہ بارش دیکھ کر ہی اندر تک کپکپی سی دوڑ گئی تھی۔ ریڑھ کی ہڈی سنسنائی
تھی۔ اس کے منگرنی ہونٹ کانپ کر رہ گئے تھے، اپنی اس کیفیت کو قابو میں کرنے کے لیے اس نے اپنے
دانتوں کو سختی سے پیچھ لیا تھا۔

”جاؤ..... وہاں۔“

سالار شاہ نے اس کو ٹیرس پر جانے کا اشارہ دیا تھا بلکہ حکم دیا تھا، اربش کی آنکھیں پھٹی کی پھٹی رہ گئیں،
اس نے تو بارش کی ٹھنڈ سوچ کر ہی جان نگی جا رہی تھی اور وہ اس کو بارش میں کھڑا رہنے کا حکم سن رہا تھا۔
اسے یاد تھا کہ وہ انشراح کی بابت بالکل مختلف مزاج کی تھی اسے ہلکی سی ٹھنڈ میں بھی زکام، کھانسی،

خار ہو جاتا تھا، بارش میں پھیلنا اسے سخت ناپسند تھا۔ ہلکی ہلکی بوند باندی میں بھی وہ ایک کونے میں چادر
ٹانے دیک کر بیٹھ جایا کرتی تھی یا لیٹ جاتی تھی، صغریٰ جانتی تھی اپنی نازک مزاج بیٹی کو اس لیے جیسے ہی ایسا
موسم شروع ہوتا وہ فوراً اسے ابال کر کھلاتی، چکن کا سوپ بنا دیتی، یا گرم گرم دودھ میں میوہ پیس کر
پلائی تھی کہ کسی طرح بس اس کو ٹھنڈ نہ لگے۔ انشراح تو اس کا اس قدر مذاق اڑاتی اور خوب اس کی حرکتوں
پر ہنستی، حالانکہ صغریٰ خوب ڈانٹتی بھی۔

”کیا سوچ رہی ہو میں نے کہا وہاں جاؤ۔“

اربش نے نہایت بے بس نظروں سے سالار شاہ کو دیکھا تھا، تو آج یہ سزا اس کے لیے متعین کر دی گئی
تھی۔ وہ تھکے تھکے قدموں سے ٹیرس کی جانب بڑھنے لگی تھی۔ وال گلاس کپکپاتے لرزتے ہاتھوں سے کھولا
تھا، ہوا کا ایک ٹھنڈا جھونکا اس کی نرس میں سرایت کر گیا، بے ساختہ ہی اس نے اپنے دونوں بازو سینے
پر باندھ لیے تھے، پیچھے کھڑا سالار شاہ جس کے چہرے پر سکون پرور مسکراہٹ براؤن کا بیچ بیچ قانع کا نشہ
ہلکورے لے رہا تھا۔ وہ چلتا ہوا گلاس وال تک آیا اور اندر سے گلاس وال لاکڑ کر دیا تھا۔ اربش کی آنکھوں
میں ٹھٹھیں مارا سمندر تھا اس ٹھنڈی بارش میں بننے کا راستہ مل گیا تھا۔ ٹھنڈ سردی سے وہ تھر تھر کانپنے لگی
تھی اس کے دانت بچھکے تھے، شکر فی لبوں پر نیلا ہٹ سی آنے لگی تھی۔ خود میں کمی وہ کیسے خود کو اس سردی
کی بارش سے بچائے اور جس نے سزا اس کے لیے جوڑ کی وہ خود تو آرام دہ نرم و ملائم بستر میں لحاف میں
جا کر سو گیا تھا، جسے نہ ہی اربش کی کوئی فکر تھی اور نہ ہی پرواہ۔ وہ کیوں اس کو تنکا تنکا کر کے مار رہا تھا،
ایک ہی بار ایک ہی جھٹکے سے کیوں اس کی جان لے نہیں لیتا، اس کے جسم سے اس روح کو آزاد کیوں نہیں کر
دیتا۔

”میرے مولا..... اف.....“

اربش نے تکلیف سے سختی سے آنکھیں بند کر لی تھیں، وہ لگتا تھا بھری درد بھری سوچیں جو اس کے گرد
لپی ہوئی تھیں ان سے چھٹکارا مشکل تھا۔

”آج تو لگتا ہے رب سوہنا خوب جھاجوں مینہ برساے گا، اف اس قدر ٹھنڈا چاہیے کہ کیونکر بڑھ
گئی۔“ رحمت سی سی سو سو کرتی اپنے کو اور ٹھٹھکی کھڑکی بند کرنے لگی جو ہوائے تیز چوکے سے کھل گئی تھی۔
اس کی نظر اوپر سالار شاہ کے بیڈروم کے ٹیرس پر پڑی تو ایسا لگا جیسا کہ اس کے سر پر آگرنی ہو اس کی آنکھوں
سے اشک بار بہنے لگے تھے۔

کوئی کسی معصوم کے ساتھ اتنا ظلم کیسے کر سکتا ہے، یہ تو ظلم کی انتہا ہے۔

مگر وہ اتنی بے بس اور مجبور ولا چار تھی کہ کچھ نہیں کر سکتی تھی مدد تو دور کی بات ہمدردی کے دو بول بھی بولنا
گناہ تھا۔

”میں تمہارے لیے دعا کے سوا کچھ نہیں کر سکتی اربش بیٹی۔“

نہایت دکھ بھری نظروں سے رحمت نے ٹیرس پر پھٹتی اربش کو دیکھا تھا، سکڑی ہوئی سی اربش پر رحمت کو
بہت ترس آ رہا تھا۔

☆.....☆

”السلام علیکم بابا جان! کیسے ہیں آپ؟“ دایم کی آنکھیں نمی سے بھر گئی تھیں۔ ڈیڑھ سال بعد ان کی

آواز سن رہا تھا۔

”وعلیکم السلام زندہ ہیں اور اپنی زندگی کے دن پورے کر رہے ہیں۔“ بھرائی ہوئی آواز نے دائم کے دل کو تڑپا دیا تھا۔

”ایسا کیوں بول رہے ہیں بابا جان۔“

”اس سوال کا جواب بھی تمہارے پاس ہے بیٹا۔“

”میں مجبور تھا، آپ کا فیصلہ میری زندگی کے لیے بہتر نہیں تھا۔“ سامنے بیٹھے تیریز کو دیکھتے ہوئے کہا تھا۔
”ہاں ٹھیک کہتے ہو مجبور یوں کی بیڑیاں تو ایک صرف تمہارے پیروں میں بندھی ہیں تم نے تو یہ بھی نہیں سوچا کہ بس محبت، امید آس کی بیڑیاں ہمارے ہاتھوں میں باندھی گئی ہیں ایک تمہارے فیصلے اور تمہارے جانے سے کس قدر کمزور ہو گئی ہیں۔“ موبائل کے اس پار سے آئی اس آواز نے پل بھر کے لیے اس کو خاموش کر دیا تھا۔

آغا اکبر خان نے نہایت گہرائی سے دائم کی خاموشی کو محسوس کیا تھا۔

”بہر کیف یہ سب تو زندگی کا حصہ ہے جس کے نصیب میں جتنے دکھ جتنے آنسو جتنا درد لکھا ہے اس کو وہی ملے گا اب چاہے یہ تقدیر کا کھیل ہو یا پھر کوئی خود سے دینا چاہے۔“

دائم خان نے ابھی بھی کچھ نہیں کہا تھا آغا اکبر خان کی باتیں ان کے لفظوں میں بولتا درد اس کو بہت چھوٹا کر رہا تھا، تیریز خان نے دائم خان کے ہاتھ کو ہولے سے دبایا اور اشارے سے پوچھا۔

”کیا ہوا؟“ دائم نے نفی میں گردن اودھرا دھرا ملا دی۔

”معانی نہیں مل سکتی؟“

”ہمارا کیا ہے ہم تو تمہارے بوڑھے ماں، باپ ہیں ہمارا دل اپنی اولاد کے لیے بہت وسیع ہوتا ہے، یہ تو اولاد دہوتی ہے جن کے دلوں میں برداشت کچھ سنبھلنے کی گنجائش نہیں ملتی۔“

”ادھر دیں مجھے فون، ڈیڑھ سال بعد میرے بیٹے کا فون آتا ہے اور آپ نے اپنی شکایتوں کی پوری ہنسی کھول دی تھی۔“ وہیں موجود گلناز نے آغا اکبر خان کے ہاتھ کے موبائل کو لے لیا تھا۔

”کیسا ہے میرا بیٹا خوش ہوتا، کوئی تکلیف کوئی پریشانی تو نہیں میرے بچے کو شے کو؟“ موبائل کے اس پار سے چپکتی آواز نے دائم خان کے دل میں ٹھنڈک کا احساس چگایا تھا، وہ جو آغا اکبر خان کی آواز نے اس کو

شرمندگیوں اور احساس ندامت کی گہرائیوں میں دھنسا لیا تھا، گلناز کی ٹھنڈی ٹیٹھی آواز نے امید کی کرن دکھائی تھی وہ جو خود کو مرنا ہوا محسوس کر رہا تھا ایک بار پھر جی اٹھا تھا۔

”آپ لوگوں کے بغیر کیا ہو سکتا ہے اماں جان! ایسا محسوس ہوتا ہے آپ لوگوں کے بغیر ادھر، بالکل اکیلا ہوں تپتے صحرا میں جھلپتی دھوپ میں تنہا کھڑا ہوں۔“

”تو میری جان کیوں ہم سے دور ہو کیوں ہم بوڑھے ماں باپ کو سزا دے رہے ہو جو بیل پل لے لے لے تمہاری یاد میں گھٹ گھٹ کے مر رہے ہیں ہر روز دروازہ دیکھتے ہیں تمہارے آنے کی راہ تکتے ہیں کہ تم اب آؤ گے اور ہماری بوڑھی آنکھوں کی ٹھکن دور ہو جائے گی ہمارے دل کو سکون قرار مل جائے گا۔“ مگر اب تو یہ

آنکھیں ٹھکن سے چور ہو گئی ہیں۔ یہ دل اب تمہارے گھر واپس آنے کی آس، امید کھونے لگا ہے۔ میرے چاند بس ایک بار ایک بار اپنی بوڑھی اماں جان کو اپنا چہرہ دکھا کے چلے جاؤ، پھر زندگی سے کوئی گلہ کوئی شکوہ

نہیں ہوگا۔“

”اماں جان!“ دائم خان کا دل خون خون ہو گیا وہ تڑپ کر رہ گیا تھا۔

”خدا کے لیے ایسا مت بولیے میرا دل پھٹ جائے گا۔“ اس کی آنکھوں سے چند قطرے نکل پڑے تھے۔ تیریز خان کو اندازہ تھا اماں جان بے شک اپنی ساری اولادوں سے بے پناہ محبت کرتی تھیں مگر جو

اہمیت دائم خان کو میسر تھی وہ کسی کو نہ تھی مگر کسی کو بھی دائم خان سے معمولی سی بھی حد بلن نہیں تھی بلکہ سبھی دائم خان سے بہت محبت کرتے تھے اس کو چاہتے تھے اہمیت دیتے تھے اگر کوئی براہم میں پھنس بھی جاتا تو سیدھا

دائم خان سے مشورہ لینے پہنچ جاتا۔
”میں آؤں گا آپ کے پاس بہت سزا کا ٹی اکیلے رہ کے۔“

”سچ کہہ رہا ہے تو؟“ اماں جان کی آواز کو جیسے ایک نئی زندگی مل گئی ہو۔

”بالکل سچ۔“ فرط جذبات سے اس کا دل بھر آیا۔ سامنے بیٹھا بغور دائم خان کو تکتا تیریز خان اس کی آنکھیں بھی نمی سے بھر گئی تھیں۔

”ٹھیک ہے میں انتظار کروں گی اور پورے گھر کو نئے سرے سے چکا دوں گی گھر کی ایک ایک شے بدل دوں گی، خرچہ کرے گی، مگر اسکیم، کارپٹ شوٹیں گو کہ ہر شے میں تم کو تبدیلی ملے گی اور اکیلے مت آنا

میری بہوانا یہ کو بھی ساتھ لے آنا۔“
”جی!“ وہ حیران بھری نظروں سے تیریز کو تکتے لگا تھا، وہ تو اس تمام وقت میں اتنا بیہوش بالکل ہی بھول گیا تھا۔

”کیا بیٹی لاؤ گے نا نا یہ کو بھی، ہمیں تیریز نے سب بتا دیا تھا۔“

”دائم!“ اماں جان نے کوئی جواب نہ پا کر اس کو دیکھا تھا۔

”ٹھیک ہے اماں جان میں اتنا یہ کو اپنے ساتھ لے آؤں گا۔“

”تو ٹھیک ہے میں جاتی ہوں اور تمہارے اور اپنی بہوانا کے آنے کی خوشی میں گھر کو سجاتی ہوں سنو رتی ہوں۔“ گلناز کے جسم میں جیسے کسی نے نئی روح پھونک دی ہوگی اماں جان نے موبائل واپس آغا

اکبر خان کے ہاتھ میں تھما دیا تھا۔
”تمہاری اماں جان بہت کمزور ہو گئی ہیں تمہارے جانے سے ان کی زندگی میں بہت بڑا اٹلا آیا ہے وہ

آج کل بیمار رہنے لگی ہیں ان کو جھوٹے بہلاوے اور جھوٹی امیدیں دلا سے مت دو۔“ آغا اکبر خان نے بے بے گلناز کی خوشی سے چپکتے دکتے چہرے اور چپکتے لب و لہجے کو مد نظر رکھتے ہوئے ہی کہا تھا جو ابھی ابھی

دائم خان کی مرہون منت ملا تھا۔
”نہیں بابا! میں نے اماں جان کو کوئی دلا سہ یا تسلی نہیں دی ہے میں واقعی آنا چاہتا ہوں واپس آپ

لوگوں کے درمیان رہنا چاہتا ہوں۔“ دائم خان نے بیٹی لب و لہجے میں ان کو یقین دلانا چاہا تھا۔
”اللہ حافظ!“

آغا اکبر خان نے مزید کوئی بات کہیے اللہ حافظ کہہ دیا تھا۔
دائم خان نے موبائل ٹیبل پر رکھا اور ایک سرد سانس فضا میں کھینچی تھی۔

”بابا کو یقین نہیں کہ میں اسلام آباد آ رہا ہوں۔“

”جاوہ لڑکی وہاں میرے روم کے میسر پر پڑی ہے اس کو اٹھا کے اپنے کوارٹر میں لے جاؤ اور سمندر خان سے کہہ کر شہر سے بہترین ڈاکٹر کو بلوا لے، مجھے وہ دودن میں بالکل ٹھیک چاہیے۔“ تھیک آمیز لب و لہجے میں کہتے ہوئے ٹیبل سے گرم گرم چائے کا کپ اٹھا لیا تھا جو اس کے وہاں آنے سے پہلے ایک اور ملازم رکھ کر چلا گیا تھا۔

رحمت بغیر کچھ کہے تڑپتی ہوئی سالار شاہ کے بیڈ روم کی جانب بھاگی تھی۔
”رات میں اپنے روم کی کھڑکی کا پردہ برابر کرنے آئی تو میری نظر اس لڑکی پر پڑی تھی۔ میں سمجھ گئی تھی سزا کے لیے آج کی رات منتخب کی گئی ہے۔“
زبیدہ جہاں چپتی ہوئی سالار شاہ کے سائیڈ والی خالی چیئر پر براجمان ہوئی تھیں۔ ان کے چہرے پر بھی بہت سکون اور خوشی تھی۔

”ضویا شاہ کا کفن میں لینا وجود آنکھوں سے نہیں جاتا، اس کا معصوم اور پاکیزہ چہرہ یاد آتا ہے تو جسم میں خون کی جگہ لاوا دوڑنے لگتا ہے جس بے دردی سے اس کو مارا گیا ہے، دل تو شدت سے کرتا ہے اس لڑکی کا ریشہ ریشہ الگ کردوں تو تب بھی طمانیت اور سکون میسر نہیں ملے گا۔ جو درد جو تکلیف اور جواذیت میری پھولوں سی بہن ضویا شاہ کو دیا گیا ہے اس کا تو پانسنگ میں نے ابھی وصول ہی نہیں کیا۔ اس لڑکی کو روز مرنا ہوگا، روز جینا ہوگا اس کے جسم کو ہی نہیں کسی کی روح کو بھی احساس ہونا چاہیے کہ اس کی بہن کیا کر گئی ہے۔“ سالار شاہ کے چہرے پر چٹانوں جیسی کسی اس لڑکی کے لیے اس قدر شدید نفرت کہ اگر اس کی معمولی سی چنگاری بھی کوئی چھو لے وہ وہیں جل کر خاک ہو جائے، انتقام اور بدلے کی اس آگ کو ٹھنڈا نہیں ہوتا، زبیدہ جہاں کو بھی جیسی سکون ملے گا قرآرا کے کلمہ دل کو ٹھنڈک ملے گی جب اس لڑکی کے خاندان کا نام و نشان مٹ جائے۔

”ٹھیک کہتے ہو سالار شاہ ان لوگوں کو احساس ہونا چاہیے کہ دوھٹے کی اوقات نہیں اور خواب کیا دیکھ لیے۔“ زبیدہ جہاں نے لمبا سانس لیا۔
”خیر یہ سب بھی چلتا رہے گا، تم ناشتہ کرو میں نے رحمت سے پہلے ہی بنوا لیا تھا۔“
سالار شاہ نے زبیدہ جہاں کو دیکھا اور نفی میں سر اُدھر اُدھر ہلا دیا۔
”اب کسی شے کی طلب نہیں۔“

اور وہ سمجھ گئی تھیں کہ ضویا شاہ کی یاد نے اس کو غمزدہ اور اداس کر دیا تھا، چائے کے بھی صرف دو تین گھونٹ ہی حلق میں اتارے تھے وہ بھی چھوڑ دی تھی۔ ”کشمالہ کی شادی تو ہو گئی حالانکہ میری بہت خواہش تھی کہ وہ یہاں اس حویلی میں تمہاری دلہن بن کر آتی مگر خیر اچھے لوگوں میں بیانی ہے تم اپنی کہو میں نے سرمد بھایا کی دہی تمہارے لیے پسند کی ہے میں تمہاری شادی کرنا چاہتی ہوں۔“
”بے بے شادی کی تو مجھے پہلے بھی کوئی خواہش نہیں تھی وہ تو ضویا شاہ کے کہنے، اس کی خواہش اور ضد کی وجہ سے میں نے کشمالہ سے منگوائی تھی مگر اب جب وہ ہی نہیں تو مجھے بھی شادی کی کوئی تمنا یا آرزو نہیں۔“

”ضویا شاہ کی کمی تو پل پل محسوس ہوگی قدم قدم پر اس کی یاد آئے گی مگر کیا کروں میری تم تین اولادیں بھی تو ہو جن کے لیے مجھے سوچنا ہے۔ عاکفہ شاہ تو جلد شادی ہو کر چلی گئی۔ علی شاہ کو تم نے پڑھنے کے لیے

”ہوں۔“ تبریز خان نے ہولے سے کہا۔
”وہ اس لیے کہ اس میں یقین کرنے والی کوئی بات نہیں ہے ڈیڑھ سال تم اپنے چاہنے والوں سے اپنے گھر سے اپنے شہر سے دور رہے ہو مطلب ہم سب کو چھوڑ کے چلے گئے تھے۔“

”تو میرے چھوڑ کے جانے کی وجہ بھی تم اچھی طرح جانتے ہو۔“
”مگر یہ کوئی مسئلہ کا حل تو نہیں تھا اور نہ ہی بازغہ کا کوئی قصور۔“
”اپنی وز ہم بعد میں اس ناپک کو ڈسکس کریں گے، ابھی کچھ منگوا لو۔“ وہ دونوں میٹھے ترین ہٹل میں آج لُچ کے لیے آئے تھے بلکہ تبریز نے ہی اس کو گیارہ بجے یہاں بلوایا تھا، جہاں بہت ساری باتیں آرام سے ڈسکس کر سکیں، ساتھ اچھا سا چائے بھی ہو جائے، تبریز نے ویٹر کو آرڈر دے دیا تھا۔

”دائم۔“ تبریز نے ہولے سے پکارا تھا۔
”ہاں بھو۔“ دائم خان نے اس کی طرف دیکھا۔
”انا بیہ بھالی تو مان جائیں گی نا۔“ دل میں ایک خدشہ تھا جو زبان پر آ گیا تھا۔ دائم خان نے پرسوج نظروں سے تبریز خان کو دیکھا تھا۔

”کیا سوچ رہے ہو؟“ تبریز نے اس کے چہرے پر ہاتھ لہرایا تھا۔
”پتا نہیں اس بارے میں تو میں نے سوچا ہی نہیں۔“
”اگر انا بیہ بھالی نے جانے سے انکار کر دیا تو۔“
”مگر وہ جانے سے انکار کیوں کرے گی۔“ نہایت ناخوشی والا سوال تھا۔
”اپنی بی بی جان کی وجہ سے، کیونکہ وہ ایسا سوچیں گی کہ اگر وہ ہمارے ساتھ اسلام آباد چلی جائیں گی تو یہاں کراچی میں ان کی بی بی جان اکیلی رہ جائیں گی۔“
”اور اگر ہم بی بی جان کو بھی اپنے ساتھ اسلام آباد لے جائیں۔“ اسے نہیں اس نے بہت اچھا حل نکالا تھا۔

”اور اگر بی بی جان ہمارے ساتھ اسلام آباد جانے کو راضی نہیں ہوں۔“
”تو نے سوچ لیا کہ ہر بات ٹکٹی ہوئی بولے گا۔“ دائم خان نے تبریز خان کو بری طرح کھوڑا تھا۔
”اور مجھے اپنے بے سٹکے مشورے دے کر ٹینشن دے گا۔“
میں تو آنے والے حالات کی آگاہی دے رہا ہوں بس۔“ تبریز خان اس کی حالت سے لطف اندوز ہوتے ہوئے مسکرایا تھا۔

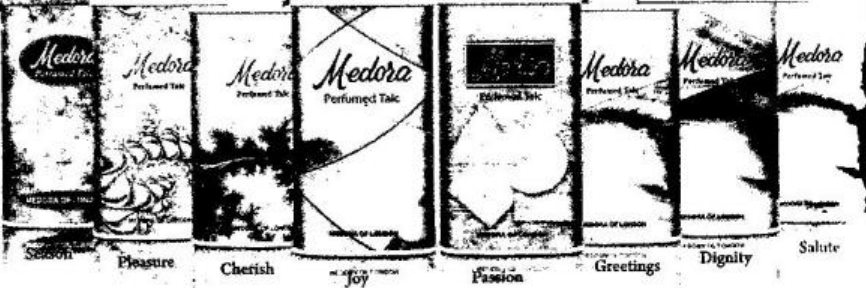
”تو تو اپنے حالات کی آگاہی اپنے پاس رکھ میں خود ہی کچھ سوچتا ہوں۔“
اسی اثناء میں ویٹر بھی ان کا آرڈر کردہ لُچ لے آیا تھا۔

☆.....☆
سالار شاہ تک سب سے تیار ہوا باہر نکلا تھا، کلائی میں قیمتی گرے واچ پہنتا ڈانگ ٹیبل کی سمت بڑھا تھا۔

”رحمت!“ سالار شاہ نے زوردار آواز میں اس کو پکارا رحمت لمبے میں حاضر ہوئی تھی۔
”جی حکم شاہ سائیں!“

Medora
Perfumed Tale

خوشبو جو ذل کو بہار ہے
تاریخ جو ہر کوئی چار ہے



خوشبو کی دنیا کے 8 شگفتہ احساس

MEDORA OF LONDON

آسٹریلیا بھیج دیا رہے تم، فی الحال تمہارے لیے ہی سوچوں گی۔“
”بے ہے!“

”شاہ سائیں!“ اسی اثناء میں ملازم چلا آیا اور مودب اور احترام سے سر جھکائے کھڑا ہو گیا۔

سالار شاہ نے اس کی طرف دیکھا۔ ”کیا بات ہے؟“

”وہ ڈاکٹر صاحب آئے ہیں شہر سے آپ سے ملنا چاہتے ہیں۔“

”ٹھیک ہے اندر بھیج دو انہیں۔“

”السلام علیکم سالار صاحب۔“ ڈاکٹر عمر ملازم کے ہمراہ اندر آ چکا تھا۔

”علیکم السلام ڈاکٹر صاحب! بیٹھے ہمارے ساتھ ناشتا کریں۔“ حق میز بانی ادا کرتے ہوئے سالار شاہ

نے چہرے پر بیٹھنے کا اشارہ کیا۔

”دھی بیکس۔“ ڈاکٹر عمر نے سہولت سے انکار کر دیا تھا۔

”چلیں جیسی آپ کی مرضی آئیے وہاں بیٹھتے ہیں۔“

دونوں ڈرائنگ روم میں آئے تھے ڈاکٹر عمر اور سالار شاہ آٹھ منٹ صوفے پر براجمان ہوئے تھے۔

”جی فرمائیے کیسے آنا ہوا؟ سالار شاہ شاہانہ انداز میں پاؤں پر پاؤں رکھے صوفے کی بیک سے ٹیک

لگائے ڈاکٹر عمر کی یہاں آنے کی وجہ دریافت کرنے لگا۔

”اچھو کی سالار صاحب آنا تو ڈاکٹر فاروق کو صاحب میرے ساتھ یہاں لیکن کسی پرسنل پر اہم کے تحت ان کو

اچانک کینڈا جانا پڑا مگر انہوں نے کہلوایا ہے وہ جیسے ہی فاروق ہوتے ہیں وہ خود آپ سے ملنے آئیں گے یہ

لیجئے۔“ ڈاکٹر عمر نے اپنے بلیک بریف کیس سے ایک بلیو فائل نکالی اور سالار شاہ کی سمت بڑھائی۔

”یہ کیا ہے؟“ سالار شاہ نے سوالیہ نظروں سے اس بلیو فائل کو دیکھا جو ڈاکٹر عمر کے ہاتھ میں تھی اور پھر

وہ فائل ہاتھ بڑھا کے لے لی۔

”یہ ضویا شاہ کی پوسٹ مارٹم رپورٹ، ڈاکٹر فاروق اسی سلسلے کی بابت آپ سے پوچھ سکتے ہیں۔“

”گے۔“ سالار شاہ جو فائل کھولنے ہی لگا تھا ڈاکٹر عمر کی بات پر فائل واپس بند کر دی اور سامنے رکھی کالج کی گول

ٹیبیل پر رکھ دی۔

”ڈاکٹر عمر ہم جانتے ہیں کہ ضویا شاہ کو کس بے دردی اور بے رحمی سے موت کے گھاٹ اتارا گیا ہے۔

زخم ابھی بھرے نہیں تازے ہیں جہاں سے خون رس رہا ہے، آپ جانتے ہیں کہ میں یہ فائل بڑھ کر اپنے

زخموں میں مزید اضافہ کر لوں گی کیونکہ جتنی تکلیف اور اذیت میں میری چلی ہے آپ اس کا اندازہ بھی نہیں لگا

سکتے۔“ سالار شاہ کے چہرے پر دردی واضح نکلیں تھیں۔

”میں معذرت خواہ ہوں آپ کو تکلیف پہنچی مگر دیکھا جائے تو یہ رپورٹس تو صرف دنیا داری کے لیے

جسٹ فار میٹھی ہے جس سے ہم نہ منہ موڑ سکتے ہیں اور نہ ہی نظریں جھکا سکتے ہیں۔“ ڈاکٹر عمر نے بہت تپ

تول کر بات سننے کی بجائے بلکہ اپنا مدعا بیان کیا تھا۔

”اوں..... آپ بھی اپنی جگہ بیٹھ فرما رہے ہیں ڈاکٹر صاحب۔“

☆.....☆

”اربش..... میری بیٹی۔“
رحمت دوڑتی بھاگتی ٹھنڈے بھیکے ماربل کے فرش پر پڑی اربش کے پاس آئی تھی اور اس کا سراپنی گود میں رکھا تھا۔

”اماں۔“ وہ سردی سے بری طرح کپکپا رہی تھی۔ ٹھنڈ سے اس کا پورا وجود آگ کا گولہ ہو رہا تھا۔ تب رہی تھی بخار میں چہرہ سرخ ہو رہا تھا۔ ٹھنڈ اور سردی اتنی حد تک لگ رہی تھی کہ رحمت کے وجود میں سکڑی سکی جا رہی تھی، رحمت کی آنکھیں شدت غم سے زار و قطار رونے لگی تھیں۔

اس قدر بے بسی، بے رحمی بے مروتی کوئی جانور بھی اگر کچھ ٹائم تک ساتھ رہے پاس رہے تو اس سے بھی محبت ہو جاتی ہے انسانیت ہو جاتی ہے اس کی بھوک پیاس سردی گرمی کا خیال رکھا جاتا ہے اس کی دیکھ بھال کی جاتی ہے یہ تو ابھی انسان ہے جیتا جاگتا سانس لیتا وجود جو کئی گے وجود کا حصہ ہے دل کا ٹکڑا ہے۔ آنکھوں کی ٹھنڈک ہے۔ اس کی سزا میں ترمیم کیوں نہیں ہو رہی کیوں اس بے چاری پر ترس نہیں آ رہا جو جگ سویرے اٹھ کر کسی کلوہ کے قیل کی طرح حویلی کے کاموں میں جت جاتی ہے تو رات کو ہی فراغت ملتی ہے اس کے باوجود رات بھر بھی اس کی جان لیوا سزا اور سزا بھی وہ جو قصور اس نے کیا ہی نہیں پھر بھی حق دار ٹھہری۔ ملزم ٹھہری سزا کی سزا ٹھہری۔

”رحمت ہوا!“ وہ ٹھٹھرتی ہوئی رحمت کے اندر دھکی جا رہی تھی۔

”مجھے..... مجھے..... بہت..... ٹھنڈ..... لگ رہی ہے.....“ ہونٹ تھر تھرا رہے تھے جسم کانپ رہا تھا۔
”چل میری دھی ہمت کر کے کھڑی ہو، چل میں ساتھ میرے کوارٹر میں۔“ رحمت نے اس کو خود میں سمیٹ کر اٹھانا چاہا۔

”اتنا برداشت کیا ہے تھوڑا سا اور حوصلہ کر لے کھڑی ہو۔“ رحمت کے منہ سے رحمت نے اربش کو اٹھایا تھا اور آرام آرام سے باہر آنے لگی مستقل اس کی آواز نکل رہی تھی کنکھاری ہوئی۔
رحمت جلد از جلد اربش کو اپنے کوارٹر میں لے جانا چاہتی تھی کہ سالار شاہ کی بھاری اور گھمبیر آواز نے اس کے قدم جکڑ لیے تھے۔

”جی شاہ سائیں۔“
”اس کو جلدی سے چیخ کر اوڈا اکٹر صاحب دیکھ لیں گے اس کو۔“ ڈاکٹر عزیز کی نظر رحمت کے اندر چھپی بیماری لاغر لڑکی پر پڑی۔

”جی بہتر شاہ سائیں۔“ رحمت نے مزید تیزی دکھائی اور اربش کو سنبھالے آگے بڑھتی چلی گئی۔
”ڈاکٹر صاحب اگر آپ کو دیر نہ ہو رہی ہو تو اس لڑکی کو دیکھ لیں گے۔“ سالار شاہ نے نہایت سنجیدگی سے ڈاکٹر عزیز کو دیکھا تھا۔

”جی کیوں نہیں سالار صاحب۔“ اسی دوران سالار شاہ کا فون بج اٹھا تھا۔ سالار شاہ نے فون دیکھا جہاں کسی کی کال آ رہی تھی۔
”ایکسیکو زمی۔“ سالار شاہ وہاں سے کھڑا ہو گیا تھا اور باہر جانے والے راستے کی طرف قدم بڑھا دیئے تھے۔

رحمت نے اربش کو پٹنگ پر لٹایا اور جلدی سے الماری سے اپنا سوٹ نکالا اور اربش کے کپڑے بدلے وہ

تھر تھر کانپ رہی تھی۔ بخار تیز سے تیز تر ہوتا جا رہا تھا۔
”رحمت..... ہوا..... مجھے کچھ..... اوڑھا دو..... مر جاؤں گی..... میں بہت..... سردی لگ رہی ہے۔“

دونوں ہاتھوں کو سختی سے سینے پر باندھے وہ خود پر قابو پانے کی کوشش کر رہی تھی۔ رحمت نے اس کو ساری لحاف اوڑھا دی تھی مگر اربش کی سردی ان دو تین لحافوں سے بھی کم نہیں ہو رہی تھی۔
دروازے پر پہولے سے کسی نے دستک دی تھی، رحمت جو اربش کو ایک اور موٹی رضائی اوڑھا رہی تھی، دروازے کی جانب بڑھی۔

”آئیں ڈاکٹر باوا! دیکھیں تو سہی ان کا بخار کم نہیں ہو کے دے رہا۔“ رحمت کے لب و لہجے میں فکر مندی پریشانی چیخ کی بول رہی تھی۔
”میں دیکھتا ہوں۔“ ڈاکٹر عزیز پٹنگ کے پاس آیا اور اربش کے چہرے سے لحاف ہٹائی اور اس کی سرخ تپتی پیشانی پر لٹایا ہاتھ دکھاتا تھا۔

”اوہ مائی گاڈ! انہیں تو بہت تیز بخار ہے، انہیں تو ہاسپٹل لے جانا پڑے گا۔“ ڈاکٹر عزیز کو اندازہ ہو گیا تھا کہ اربش کو کس قدر تیز بخار ہے اور جو ٹریٹمنٹ اسپتال میں با آسانی ہو سکتی ہے وہ یہاں گھر میں تھوڑا مشکل تھا۔
”نہیں ڈاکٹر باوا! حکم یہی ملا ہے کہ انہیں علاج یہیں گھر میں ہوگا۔“ رحمت کے انداز سے لگ رہا تھا کہ وہ ڈری ہوئی ہے۔

”میں آپ کے آگے ہاتھ جوڑتی ہوں آپ اربش کا سبب علاج کر دیجیے اس کو ہر حالت میں دونوں میں ٹھیک ہونا ہے۔“ رحمت نے ڈاکٹر عزیز کے آگے ہاتھ جوڑ دیئے۔
”اوکے میں دیکھ لیتا ہوں۔“ ڈاکٹر عزیز نے اپنے بریف میں سے اپنا تھرمسکوپ نکالا اور اچھی طرح چیک اپ کرنے کے بعد ایک پرچے پر جلدی جلدی کچھ انجکشن، میڈیسن لکھی۔
”آپ یوں کریں جلدی سے یہ منگو لیں۔“ پرچہ رحمت کو دیا۔
”جی بہتر۔“ رحمت تیزی سے باہر نکلی تھی۔

اربش کے کھٹکھٹانے کی آواز ابھی بھی آ رہی تھی، جس نے ڈاکٹر عزیز کی توجہ اس جانب کھینچی تھی، جانے کیا کشش تھی جو ڈاکٹر عزیز کو کھینچتا ہی چلا گیا۔ ڈاکٹر عزیز نے بغور اس چہرے کو دکھا تھا۔ معصوم سا چہرہ، ستواں کھڑی ناک، شکر فی ہونٹ، رنگت بلاشبہ گلابی سی ہوگی جو اس وقت بخار کی شدت کے باعث بالکل سرخ انگارہ ہو رہی تھی، وہ بالکل محو تھا اس کے معصوم حسن کو دیکھنے میں وہ عقل و خرد سے بالکل بیگانہ تھی، اس وقت کوئی ہوش نہیں تھا اس کو، جلد از جلد انجکشن کی ضرورت تھی ورنہ زیادہ دیر ہوئی تو اربش کی جان کو خطرہ لاحق ہو سکتا تھا، اسے بہت سردی لگ رہی تھی، ڈاکٹر عزیز آگے بڑھا لحاف سے اس کا ہاتھ نکال کر اپنے دونوں ہاتھوں میں لے کر مسلتے لگا تھا مگر اربش کی حالت بگڑنے لگی تھی، وہ اپنا سر تکیے پر پٹختے لگی تھی۔

”اف ان کی طبیعت تو بہت بگڑتی جا رہی ہے۔“ ڈاکٹر عزیز نے اس کا پیر زور زور سے مسلتا شروع کر دیا

تتاوہ پھر سے اس کے پاس آیا تھا۔

”اری رحمت کی بچی کیا ضرورت تھی اس ڈاکٹر باپو سے کچھ بھی بولنے کی خود تو پھنسے گی ساتھ بے چاری اربش اور مصیبت میں آجائے گی۔“ خود کو سرزنش کرتی وہ اربش کے پاس آئی تھی۔

☆.....☆

رات کے ڈیڑھ بج رہے تھے رابع ملک کی آنکھوں سے نیند کو سوں دور تھی ہال روم میں بیٹھا وہ لیپ ٹاپ پر اپنی کچھ میل چیک کرتا رہا، ساتھ فل سائز کا ایل سی ڈی بھی آن تھا جس پر ٹائی نیک موی چل رہی تھی۔ رابع ملک نے جب ساری میل چیک کر لیں تو لیپ ٹاپ بند کر کے سائیڈ میں رکھا اور کالج کی ٹیبل سے ریوٹ اٹھایا ارادہ توئی وی آف کرنے کا ہی تھا مگر جب نظر فل سائز اسکرین پر پڑی تو نظر ہٹانا ہی بھول گیا تھا۔ ٹائی نیک فلم کا کوئی رومیکس سین چل رہا تھا۔ اس سین نے فلم انڈسٹری میں ایک تہلکہ مچا دیا تھا۔ رابع ملک کے جذبات میں بھی ایک تلاطم سا برپا ہو گیا تھا، دل نادان نے شدت سے انشراح کی قربت کی چاہ کی تھی۔ اپنی اصروری فکری کو مٹانے کے لیے انشراح کی فرقت اس کے احساس کی ضرورت تھی، وہ اسے اپنی نظروں کے سامنے دیکھنا چاہتا تھا، اپنے قریب اپنی ہانہوں میں قید کیے والہانہ پیار کرنا چاہتا تھا اپنی دیوانگی اپنے جنون کا یقین دلانا چاہتا تھا، اپنی چاہت و محبت کی موسلا دھار بارش میں بھگونا چاہتا تھا اس کے گرد اپنی محبت و عشق کا وہ مضبوط حصار کھینچنا چاہتا تھا کہ انشراح کا ہر راستہ صرف اور صرف رابع ملک پر آ ختم ہوتا۔

رابع ملک کی براؤن آنکھوں میں انشراح کا وہ عجیب سا ابا گھوم گیا جو انابیہ کی سالگرہ میں آخری بار دیکھا تھا، ناراض ناراض سا انداز، خفا خفا لب و لہجہ، اکھڑی اکھڑی سی انشراح کو اس کی محبت پر یقین نہیں تھا۔ ”مگر کب تک میری جان، آتا تو بالآخر آپ کو میرے پاس ہی ہے۔“ اس کے عنابی لبوں پر دلکشی سے بھرپور مسکراہٹ ریگ گئی۔

رابع ملک نے اپنا سیل فون اٹھایا اور دائم خان کو کال کرنے لگا تھا، دائم خان نے دوسری میل پر ہی فون ریسیو کر لیا تھا۔

”تجھے سکون نہیں ہے۔“

”سکون کو گولی مار یہ بتا تو اس وقت کیا کر رہا ہے اگر بڑی ہے تو برائے مہربانی کچھ ٹائم کے لیے اپنا پروگرام ملتوی کر اور میری بات غور سے سن۔“

”سوری ڈیر! میں اپنا پروگرام ملتوی نہیں کر سکتا کیونکہ اس دن کے لیے کافی ٹائم تک انتظار کیا ہے میں نے۔“

”مجھے نہیں معلوم تھا کہ انابیہ تجھے اتنا زرد و کوب میں رکھتی ہے۔“ مسکراتا شریر لب و لہجہ دائم خان کو سمجھ میں نہیں آ رہا تھا۔

”مطلب انابیہ..... اوہ.....“

دائم خان کے اس کی ذمہ داری بات اور شریر لہجہ اب سمجھ میں آیا تھا۔

”تو واقعی بے غیرتوں کا سردار ہے میں اس وقت لیپ ٹاپ پر اپنی فیمیلی سے اسلام آباد بات کر رہا تھا۔ تو نے پتا نہیں کیا سوچ لیا۔“ دائم خان سوچ کر ہی بھینپ سا گیا مگر موبائل کے اس پار رابع ملک کا نہایت ہی

”اربش..... اربش..... آنکھیں کھولیں۔“ ڈاکٹر نے اس کا رخسار چھپتھپایا۔

”یہ لیجیے ڈاکٹر باپو! سارا سامان آگیا جو آپ نے منگوایا ہے۔“

”جی جلدی دیجیے۔“ ڈاکٹر نے فوراً سے پیشتر انکشن لگایا اور پھر ڈرپ کو سیٹ کرنے لگا۔

”بس میری بچی ٹھیک ہو جاؤ گی۔“ رحمت اربش کے سر ہائے بیٹے کو اس کا سر سہلانے لگی تھی۔

انکشن سے اتنا تو ہوا کہ اربش کی بگڑتی طبیعت سنبھل گئی تھی اس کا تھوڑی تھوڑی دیر میں سر نیچے پر پٹخنا اور کھٹکھٹا کرنا بند ہو گیا تھا۔ وہ پرسکون نیند سونے لگی تھی۔

”شکر ہے میرے سوئے رب کا اس نے اربش پر اپنا کرم کر دیا۔“ رحمت نے دونوں ہاتھوں کو دعائیہ انداز میں آسمان کی طرف کیا تھا۔

”یہ آپ کی بیٹی ہیں۔“ رحمت کی اتنی فکر اور پریشانی دیکھ کر ڈاکٹر نے پوچھا تھا۔

”نہیں۔“

”تو جو ملی سے ان کا کوئی رشتہ ہے۔“

”جی ڈاکٹر باپو! جتنا مضبوط اور گہرا اس سے کہیں زیادہ کمزور اور ریشم کے کچے دھاگے کی طرح نازک۔“

”میں سمجھا نہیں کیا کہنا چاہ رہی ہیں آپ۔“

ڈاکٹر نے رحمت کی پہلی انجوائی بیٹی بات سمجھ میں نہیں آئی تھی۔

”قصہ صرف اتنا ہے کہ یہ کسی کی زندگی کی قیمت ہے رہی ہے کسی کی موت کا قرض اتنا رہی ہے اور جانے اس بد نصیب کی سانسوں کا یہ قرض کب تک اترے گا۔“ رحمت کی آنکھیں پانی سے بھرنے لگی تھیں۔

”کب تک اپنی زندگی کی سانسیں چپکے کسی کے دل کی روح اور کسی کی زندگی کے سکون و قرار کا باعث بنتی ہے۔“ ہونہر رحمت استہزائیہ مسکرا دی اور سوئی ہوئی اربش کا پیرہنے لگنے لگی تھی۔

”کاش کہ رب سائیں اس پر اپنا خاص رحم و کرم کر دے مگر میں جانتی ہوں ابھی اس کو مزید دوسہنا ہے مزید تکلیفیں جھیلنی ہیں اور مزید ظلم برداشت کرنا ہے۔“ رحمت کا دل اربش کے دکھ اور اس کے غم سے بہت زیادہ بھر گیا تھا کہ پیٹا نہ لیریز ہونے لگا تھا جیسی اس نے ایک انجان شخص کے آگے اپنا تھوڑا ٹائم لگا کرنا چاہا تھا مگر وہ یہ بھی جانتی تھی کہ اگر سالار شاہ کو معمولی سی بھی بھنگ پڑ گئی تو وہ اس کی بوئیاں بوئیاں کر کے چلیوں کو کھلا دے گا یا پھر زندہ ہی زمین میں گاڑ دے گا، رحمت کو شدت سے اس بات کا احساس ہوا تھا، اس نے چونک کر ڈاکٹر کو دیکھا تھا۔

”ڈاکٹر باپو! جانے انجانے میں میرے منہ سے جانے کیا نکل گیا ہے مگر میں آپ کے آگے ہاتھ جوڑتی ہوں خدا کے واسطے آپ شاہ سائیں سے کچھ مت کہیے گا۔“

اسی اثناء میں ڈاکٹر نے کافون نیچے لگا تھا، ڈاکٹر نے اپنا فون دیکھا اور پھر روتی ہوئی رحمت کو دیکھنے کے بعد لحاف میں پرسکون نیند سوئی اربش کو دیکھتے ہوئے باہر نکل گیا تھا۔

رحمت کے دل میں ڈرنے شدت سے اپنی جگہ بنائی تھی۔

”اگر ڈاکٹر باپو نے شاہ سائیں کو کچھ بتا دیا۔“ یہ سوچ کر ہی رحمت پوری طرح کانپ کر رہ گئی تھی۔

www.urduqem.com

گلابی شیدہ ہوا تھا کہ وہ بہرہ کی تھی

جلدی جلدی برش کر کے اس نے اپنے سیاہ سلی بالوں کی چٹیا بنائی اور اس میں اپنے من پسند چھیلی کے پھولوں کے ہار پروئے، ہلکے گلابی شیدہ کی لپ اسٹک سے ہونٹوں کے کنارے کو مزید دلکش دی، چھنی پتلوں پر ہلکا سا

کارا لگا کر آنکھوں کو خوبناک بنایا تھا، ہلکے گلابی رنگ کا کٹن کا نیا شلوار سوٹ زیب تن کیا تھا، جس پر سفید اسٹیکٹ اور نلکیوں کا کام کیا ہوا تھا، کٹن کا بڑا سا کلف شیدہ دوپٹہ شانے پر نکاتے ہوئے اس نے سفید رنگ کے پانی بیل کے جوتے اپنے گورے گورے پاؤں میں پہنے، بی روز سے اپنی ملبوس اور بالوں کو مہکایا، سفید اسٹریپ وان رست و اج کلائی پر باندھنی، گلابی اور سفید میچنگ جوڑیائی کلاہوں میں بھریں اور بہت نازک سا سفید تلیوں کا چوہری سیٹ پہن کر اس نے اپنی سیاہ چمکدار آنکھوں سے آئینے میں اپنا عکس دیکھ کر اپنی تیاری کو تہیدی نظروں سے جانچا اور ”فریکٹ“ کہہ کر مسکرا دی۔

”ہاں تم تو اوپر سے ہی فریکٹ ہو کر آئی تھیں آئینے کے سامنے کھڑے ہو کر تو خواہ مخواہ آئینے کو شرمندہ کر رہی ہو اور اپنا وقت ضائع کر رہی ہو، پارٹی گیارہ بجے شروع ہونی ہے اور ساڑھے دس ادھر ہی بج گئے ہیں، تم

رہلا حصہ



نے پروگرام کی کمپیئرنگ کے فرائض بھی انجام دینے ہیں تبھی تو پہلے وہاں پہنچنا چاہئے۔ رمشا تیار ہو کر اس کے کمرے میں کھڑی اسے پھر دینے کے موڈ میں دکھائی دے رہی تھی۔

”چلتے ہیں پروگرام تو ہمیشہ دیر سے ہی شروع ہوتا ہے، چلو میں راستے میں اپنا افسانہ بھی رسالے کے آفس میں دیتی جاؤں گی وہیں سے گزر کر جانا ہے ہم نے۔“ رمشا نے افسانے کا مسودہ اٹھاتے ہوئے کہا۔

”اور اگر انہوں نے تمہیں روک لیا تو پارٹی رہ جائے گی اور تم مسز ڈی سے خوب ڈانٹ سنو گی، کمپیئرنگ نہیں کرنی تم نے کیا؟“ رمشا نے اسے ڈرانے کی کوشش کی۔

”کوئی نہیں روکے گا مجھے چلو تم۔“

”آج تو لوگ رک رک کر تمہیں دیکھیں گے، قسم سے غضب ڈھا رہی ہو۔“

”کس کے دل پر؟“ رمشا نے شوخی سے پوچھا۔

”کوئی صاحب دل اور جرأت والا ہو گا تو اظہار بھی کر دے گا بے صبری کیوں ہوئی جاتی ہو، لو وہ آگئے تمہارے عاشق، شہر یار، ثاقب، جوشہر یار میں آتے ہیں اور ”یار“ انہیں لفٹ ہی نہیں کراتے۔“ رمشا نے اپنے خالد زاد بھائی شہر یار کو ٹیٹ سے داخل ہوتا دیکھ کر شوخ لہجے میں کہا تو وہ اسے گھور کر رہ گئی، شہر یار کی پسندیدگی سے وہ انجان تو نہیں تھی۔

”ہیلو رمشا! کبسی ہو؟ کہیں جانے کی تیاری ہے کیا؟“ شہر یار نے مسکراتے ہوئے رشنا کے گلاب چہرے پر نظریں جما کر پوچھا تو اس کے جواب کے بدلے ہی رمشا بول پڑی۔

”شہر یار بھائی! میں بھی یہیں موجود ہوں، کبھی پہلے دیکھنے کی حمت گوارہ کر لیا کریں اور ویسے آپ کی اطلاع کے لئے عرض ہے کہ ہم کالج کی فیئر ویل پارٹی میں شرکت کے لئے جا رہے ہیں، آپ اندر امی کے پاس بیٹھیں ہمیں تو دیر ہو چکی ہے۔“

”چھاتو نظر انداز کئے جانے کا بدلہ اتار لیا تا تم نے فوراً۔“ وہ اس کے کمرے سے جیت لگا کر بولا وہ ہنس پڑی۔

”چلو رمشا! دیر ہو رہی ہے۔“ رشنا نے سوز کی مہر ان میں چائی گھما کر بے رحمی سے کہا۔

”رشنا! یہ پھول تمہارے لباس سے بیچ کر رہا ہے لے لو یوں بھی میں تمہارے لئے لایا تھا۔“ شہر یار نے ادھ کھلی گلاب کی ٹہنی اس کی جانب بڑھا کر کہا تا چارے لینا ہی پڑا کہ دیر ہو رہی تھی اور وہ فی الحال کسی کاموڈ آف کرنے کے موڈ میں ہرگز نہیں تھی۔

”شکر یہ شہر یار بھائی۔“ وہ تو جیسے اس کے پھول لینے پر نہال ہو گیا مگر اس کا بھائی کہتا اسے اچھا نہیں لگتا تھا، جیسی رمشا سے مخاطب ہوا۔

”رمشا! اپنی بہن کو سمجھا دو کہ دنیا میں بہت سے مرد ہیں بھائی بنانے کو مجھے آئندہ بھائی مت کہیں یہ۔“

”اسٹوپ۔“ رشنا زریب بڑبڑاتی جبکہ رمشا بڑے زور سے ہنسی بھی رمشا تیزی سے گاڑی نکال کر لے گئی اور رسالے کے آفس کے قریب روک کر افسانے کا مسودہ سنبھالا تو رمشا نے تاکید لہجے میں کہا۔

”دیکھو بہت دیر ہو چکی ہے، یوں جاؤ اور یوں ہی واپس لوٹ آؤ، چلو بھگتی ہوئی جاؤ اور بھگتی ہوئی آ جاؤ، آج تمہیں دیکھ کر تمہاری ایڈیٹر صاحبہ یا صاحبہ یہ ضرور کہیں گے کہ میں مس رشنا لگتا ہے کہ آپ اپنے ناولز اور افسانوں کی ہیروئن کا خاکہ لکھتے ہوئے اپنے آپ کو مد نظر رکھتی ہیں۔“

”تو بہہ رمشا! تمہاری زبان ہے کہ موٹر۔“ رشنا ہنستی ہوئی بولی۔

”موٹر نہیں ادیبہ بی بی! قینچی کا محاورہ ہے خیر ادیبوں سے ایسی اختراعات اور ایجادات کا سامنے آتا اب انہیں بھی بات نہیں رہی پھر حال بھگتی ہوئی جاؤ۔“

”جاری ہوں اپنی پیچی بند کرتی نہیں ہواؤ۔“ وہ تیزی سے ماہنامے کے آفس کی طرف دوڑی، چپڑاسی نے ایڈیٹر کے کمرے کا پوچھا اور رمشا کی ہدایت پر عمل کرتے ہوئے تیزی سے بھگتی ہوئی کوریڈر سے مڑی، کسی کے سامنے سے آنے والے ایک مضبوط جسم سے بری طرح ٹکرائی مسودے کی فائل زمین بوس ہو گئی تھی اور وہ خود زمین بوس ہوتے ہوئے چلی گئی۔

”اف! یہ رمشا کے مشورے اور ہدایت نامے ہمیشہ خوار کراتے ہیں۔“ وہ اپنا ماتھا سہلاتے ہوئے بڑبڑاتی اور مسودہ اٹھا کر جو نگاہ اٹھائی تو سامنے کھڑا شخص حیرت اور مسرت سے اسے نکلے جا رہا تھا وہ گھبرا گئی۔

”السلام علیکم۔“ رشنا نے گھبراہٹ آواز میں سلام کیا تو وہ چونک گیا۔

”علیکم السلام! چوتھ تو نہیں گئی آپ کو؟“ وہ مسکراتے ہوئے بڑے ترنوازہ لہجے میں بولا۔

”جی لگی تو ہے۔“ اس نے اپنا ماتھا سہلایا تو وہ معنی خیر لہجے میں بولا۔

”اوہ آئی ایم سوری! اس سچکے کے چوٹ اب کے بھی صرف مجھے ہی لگی ہے۔“

”جی۔“ وہ خاک نہ کھڑکی کا کھڑکیا کہہ رہا ہے۔

”آپ کس سلسلے میں یہاں شرف لائی ہیں؟“

”جی مجھے کامران کاظمی صاحب سے ملنا ہے۔“ اس نے ایڈیٹر کا نام لے کر بتایا۔

”ابھی ملی تو ہیں آپ کامران کاظمی صاحب سے؟“ وہ شوخی سے مسکرایا۔

”جی آپ۔“ وہ بری طرح نزوں ہو رہی تھی وہ مسکراتے ہوئے بولا۔

”جی! اس بندہ ناچیز کو بھی کامران کاظمی کہتے ہیں۔“

”اوہ۔“ رشنا کے منہ سے بے اختیار نکلا، سیاہ پیٹٹ اور کھلی کسان کی رنگ کی شرٹ میں وہ بے حد سادہ مگر افسانہ لگ رہا تھا، شرٹ کی آستین اس نے بڑی بے نیازی سے فولڈ کر کے کھانسی پر گھڑی تک نہیں بندھی تھی آنکھوں میں جلتی جھپٹی بجلیاں اسے نہ جانے کیا کہانی سنار ہی تھیں یہ تھا وہ جس جوان خیر دل سے دلوں پر سحر لاری کر دیتا تھا، لفظوں سے جذبول میں تھلاطم بپا کرتا تھا، الفاظ کی دنیا سے پیارا اور افسانہ نگار، ہر ایک ایک بات جانتا تھا، اپنے ایک ایک حرف سے ایک ایک دل پر حکومت کرنے کا فن جانتا تھا اور خود بھی تو اس کے انگریز ہیں کب سے گرفتار تھی کئی بار اسے خط میں اپنے یہ غیر معمولی محسوسات لکھنے کا ارادہ کیا تھا، مگر نہ جانے کیوں نہ تھی کسی اور قلم کو اس راز سے پردہ اٹھانے سے باز رکھتا تھا، اس کی کتنی کلاس فیلوز کامران کاظمی عرف کامی کی عین پڑھ کر دیوانی ہو چکی تھیں اور کئی تو اسے خط بھی لکھتی تھیں اور بڑے دھڑلے سے سب کے سامنے اس کی اپنی محبت کا اظہار کرتی تھیں اور رمشا حسد کے بجائے دل ہی دل میں حیرت سے سوچتی تھی کہ کتنا خوش کامران کاظمی شخص ہے کامران کاظمی جس کے اتنے چاہنے اور سربارنے والے ہیں وہ بھی تو دیکھے بنا، ہی اس پر اپنی ہنسی اور آواز دہ چا نک سامنے چلا آیا تھا تو اسے اپنی بصارت پر یقین نہیں آ رہا تھا۔

”آپ کا اسم مبارک کیا ہے؟“ کامران کاظمی کی آواز نے اسے ہلکے دلا لیا۔

”میری میرا نام رشنا بخاری ہے۔“

”میں تو آپ کو دیکھتے ہی سمجھ گیا تھا آپ تو اپنے ناولوں کی ہیروئن خود ہی بنتی رہی ہیں اب تک ہے نا“

دور ہی تھی حالانکہ کامران کاظمی نے کوئی بریفیوم نہیں لگا رکھا تھا وہ حیران ہی تو ہوئی تھی کہ اتنا مقبول و معروف اور ہر دلعزیز راسخ ہو کر وہ اتنا سادہ اور آرائش و زیبائش سے لاجواہ ہے اسے اس کی آنکھوں میں اتنی حیرت اور کمی تے اب تک پریشانی میں مبتلا کر رکھا تھا، وہ کس قدر حیرت اور حسرت بھری نظروں سے اسے دیکھ رہا تھا۔
نظام ہنسنا مسکراتا شوخ جملے بولتا ہوا مگر تجائے اس کے لیے کیسا کڑب تھا جو رشتا کو اپنے دل میں محسوس ہوا تھا۔
اس نے اس کی باتیں یاد آئیں تو لگا کہ جیسے وہ کوئی گہرا زخم کھائے ہوئے ہے اس کے دل پر کڑی ضرب لگ چکی ہے اس کی روح میں کانٹے چبھے ہوئے ہیں ان کا دل چاہا کہ اس سے پوچھے کہ اسے کیا دکھ ہے کیا دماغی اس کی روح میں اس کے دل میں کانٹے چبھے ہوئے ہیں ان نے یہ سوچ کر کاغذ قلم اٹھایا اور پہلی پاراں سے خط لکھنے کا وصال کر بیٹھی۔

”کامران صاحب السلام علیکم! امید ہے کہ مزاج بخیر ہوں گے، مجھ نے کیا سوچ کر میں آپ نے ایک ذاتی سا سوال پوچھنے کی جسارت کر رہی ہوں آپ سے مختصر ملاقات میں میں نے یہ محسوس کیا ہے کہ جیسے آپ کا دل کوئی بہت بڑا صدمہ اٹھائے ہوئے زخم کھائے ہوئے ہے کانٹے سے آپ کے دل کی زمین پر انگ گئے ہیں کیا یہ میرا وہم ہے یا واقعی اس ہے؟ اگر ایسا ہے تو کیا میں اس کا سبب پوچھ سکتی ہوں؟ اگر میرا پوچھنا آپ کو برا لگا ہو تو میں معذرت خواہ ہوں والسلام غلط رشتا بنجاری۔“

رشتا نے خط بند کیا اور سوئے کے لیے لیٹ گئی، مگر نیند آنکھوں سے کوسوں دور تھی لگا ہوں میں کامران کاظمی کی صورت گھوم رہی تھی اس کی باتیں مایوس کن تھیں سونے میں نہیں دے رہی تھیں اسے کامران کاظمی کی ڈارک براؤن آنکھوں میں تیرتی کمی حیرت اور حسرت اٹھانے نہیں بھول رہی تھی۔

”اس کی آنکھوں کی سادگی آتی

خواب کی باتیں سننے میں

صبح تک فاصلہ ہے صدیوں کا

☆☆☆☆

چند دن بعد اسے تازہ شمارے کے ساتھ اپنے خط کا جواب بھی موصول ہوا، اس نے دھڑکتے دل اور لڑتے ہاتھوں سے لفافہ چاک کیا، اس نے لکھا تھا۔

”پیاری رشتا! اتنی کم عمری میں اتنی گہرائی میں جھانکنے کا فن تم نے کہاں سے سیکھا ہے؟ خدا خواستہ تمہارے دل پر تو کوئی ضرب نہیں لگ گئی، میری دعا ہے کہ ایسا نہ ہوا ہو اور نہ آئندہ بھی ہو دل کے زخم بھر بھی جائیں تو ایمان نہیں مٹتے پھولوں کی تنہا میں کانٹے ہاتھ آگئے دل کا ہوتو ہونا تھا، تمہاری بات کا میں نے ہرگز برا نہیں منایا اور ناؤں کا بھی کیوں تم تو ہو بہو میری تنہا میرے خواب کا کس ہو، میں حیران ہوں کہ میرا ماضی میرے حال میں کیسے آگیا، تمہارا افسانہ بہت اچھا ہے، تمہاری تحریریں دلوں کو چھو لیتی ہیں تمہاری طرح رشتاء سورج کی پہلی آنکھ میں میری زندگی کی اندھیری راتوں میں کرنیں بکھیر دی ہیں، تمہیں دیکھ کر میں پھر سے جی اٹھا ہوں مگر آج بھی ہوں، تم نے دل پہ چوٹ کا سبب پوچھا ہے کیا ناؤں کی میری ہنسی کے پیچھے آنسوؤں کی کمی کیوں رہتی ہے؟ کوئی سمجھ لو۔“

”مہزرت ہو کہ زرد موسم ہو

دل میں کانٹے سے چیتے رہتے ہیں

آئیے آفس میں آ کر بات کریں۔“ وہ خوشگوار لہجے میں بولا اسے آفس میں لے آیا، رشتا کو رشتا کی کہی ہوئی بات یاد آئی اس نے بھی تو یہی کہا تھا مگر اسے خود بھی سمجھی یہ احساس نہیں ہوا تھا کہ وہ اپنا سراپا اپنی ہیروئن میں سمو دیتی ہے اب جب وہ بھی کہہ رہا تھا تو اسے اپنی غیر محسوس طریقے سے کی گئی اس خوبصورت گھٹکی پر کچھ تجالست سی ہو رہی تھی وہ آفس میں آتے ہی تیزی سے بولی۔

”جی دراصل مجھے جلدی ہے کالج پہنچنا ہے، گیارہ بجے ہماری فیکر ویل پارٹی ہے اور گیارہ تو ادھر ہی بج گئے ہیں، آپ یہ سوڈہ پڑھ لیجئے گا افسانہ ہے اگر پسند آئے تو شائع کر دیجئے گا میں اب چلی ہوں۔“
”ارے ارے آپ تو میری سانسیں روکے دے رہی ہیں ذرا دیر کو تو بیٹھے چائے پی کر جائیے گا۔“ وہ ہنس کر بولا۔
”جی شکریہ نہیں چائے نہیں پینی۔“

”تعب ہے آپ راسخ ہو کر چائے نہیں پیتیں۔“ وہ حیرانگی سے اس کے چہرے کو دیکھ رہا تھا، اس نے مسکراتے ہوئے کہا۔
”راسخ کے لیے اس کے پاس قلم اور داغ کا ہونا ضروری ہے، چائے پینا ضروری نہیں ہے۔“

”ویل سیڈ۔“ وہ ہنسا۔
”جلیے کافی پی لیجئے۔“
”شکریہ ابھی مجھے جلدی ہے۔“

”تو گویا آپ کو کافی پسند ہے اور آفس میں جلد فراغت سے مجھے حیات نو کا احساس دلانے تشریف لائیں گی۔“

”جی۔“ وہ غم سے ہو گئی حالانکہ بہت پر اعتماد اور یقین رکھتی تھی مگر ایسا مرحلہ اس کی زندگی میں پہلی بار آیا تھا اور آج اسے اپنے ناؤں اور افسانوں کی ہیروئن کے احساسات کا حقیقی ادراک ہو رہا تھا، حالانکہ وہ کردار بھی اس کے اپنے تخلیق کردہ ہوتے تھے۔

”جی میں کوشش کروں گی اب اجازت دیجئے، نیچے گاڑی میں میری منظر انتظار کھڑی ہے۔“
”اور لگتا ہے کہ اب ہم بھی لذت انتظار کا مرحلہ طے کرنے کی طرف کامران میں آپ کو میں جانے سے تو نہیں روکوں گا مگر جیانیے سے پہلے صرف اتنا بتا دیجئے کہ کیا آپ واقعی اتنی گل رخ ہیں جی جیسے دکھائی دے رہی ہیں یا پھر میری نگاہوں میں گلاب کھل گئے ہیں۔“ اس کا لہجہ اتنا میٹھا اور مہکتا ہوا تھا کہ اس کا چہرہ تپ کر سرخ گلاب کا گھس دکھلانے لگا اور وہ گھبرا کر جلدی سے اللہ حافظ کہہ کر وہاں سے بھاگی ہوئی باہر آ گئی جہاں رشتا نے اسے خوب سنائیں اور کالج پہنچنے تک اسے کوئی رہی وہ تو اسے حواسوں میں ہی نہیں تھی اس کی کسی بات کا آج اس نے برا نہیں منایا تھا، کامران کاظمی واقعی سحر کا تھا وہ اپنے لفظوں سے لوگوں کے دلوں کو اپنی طرف مائل کرنے کا جادو جانتا تھا۔

”پارٹی جیسے تیرے اہتمام کو پہنچی رشتا کا تو دل ہی کہیں اور پہنچا ہوا تھا، آج اس کی کمپیوٹرنگ میں بھی پہلے جیسا جوش اور ولولہ نہیں نظر آیا، مجھے سننے والے یہی سمجھے کہ چونکہ آج کالج میں یہ اس کا آخری پروگرام، فائنل اور دن ہے شاید اس وجہ سے وہ اداس ہے اور اس کی یہ اداسی اس کے لہجہ اور انداز میں بھی اُٹھ آئی ہے۔ وہ تو خود کو ابھی تک کامران کاظمی کے رو برو اس کے آفس میں موجود محسوس کر رہی تھی اس کا روم روم اس کے اچانک ٹکرا جانے سے اس کے کس کی حدتوں میں جل رہا تھا، اس کے وجود کی خوشبو اسے اپنی سانسوں میں اب تک محسوس

”ایک خوشبو گلے ملی تھی کبھی!“
تم نے آنے کی آس دلائی تھی اب آج بھی جاؤ کہ دل و نظر کو روشنی مل جائے۔
”والسلام! تمہاری آمد کا منتظر کامران کا مانی۔“

”کاش! کامران میں آپ کے دکھ کا مداوا کر سکوں! آخر آپ کس بات سے خوفزدہ ہیں مجھے بتائیں کہ میں آپ کے ماضی کا حال ہوں تو کیا میں وہ خوشبو نہیں بن سکتی جواب آپ سے پچھڑ چکی ہے وہ سب جو آپ کھو چکے ہیں کیا میں آپ کو دے سکتی ہوں! آپ نے میری تعریف کر کے مجھے معتبر کر دیا مگر میں اتنی سن موٹی کہاں ہوں یہ تو آپ کا حسن نظر ہے! ایک اور افسانہ بھیج رہی ہوں میری تحریروں میں اگر اثر اور سحر ہے تو یہ سب آپ کی رہنمائی کا نتیجہ ہے آپ نے مجھے لکھنے کا فن اپنی تحریروں کے ذریعے سکھایا ہے میں آپ سے ملنے کے لئے نہیں آ سکتی کیونکہ میرے امتحانات شروع ہو رہے ہیں آپ نے بھی تو مجھے امتحان میں ڈال دیا ہے! بہر حال امتحانات کے بعد ضرور آؤں گی! دعا کیجئے گا کہ آپ کی یاد مجھے پڑھائی کے دوران تنگ نہ کرے ورنہ میرے پرچے اچھے نہیں ہوں گے اور ان کا کام بھی ہر ذمہ داری آپ پر عائد ہوگی آپ کی دلی خوشی اور روحانی سکون کے لئے ہمہ وقت دعا گو رہتا ہوں۔“ رشنا نے خط کا جواب لکھا اور افسانے کے ساتھ پوسٹ کر دیا۔

☆☆☆☆

رشنا کو امتحانات کے دوران کامران کا کوئی خط موصول نہیں ہوا مگر وہ غیر محسوس انداز میں اس کے خط کی منتظر ہی رہی تھی جس دن اس کا آخری پرچہ ملا اس دن اسے کامران کا خط اپنی شبیل پر رکھا نظر آیا اس نے جھٹ سے لفافہ چاک کیا۔

”ہاں! تو رشنا میری جان! کو امتحانات کیسے ہوئے؟ مری یاد تو نہیں تنگ تو نہیں کیا تھا دیکھ لو میں نے تمہیں ایک مہینے سے خط بھی نہیں لکھا صرف اس خیال سے کہ تم ڈسٹر نہ ہو جاؤ اور میں اپنی وجہ سے تمہارے پرچے برے نہیں کروانا چاہتا تھا! تم نے تو ساری ذمہ داری اپنے خط لکھنے والے کی دھمکی دے ڈالی تھی خیر چھوڑو! ان باتوں کو یہ بتاؤ کہ کیا میری وفات کی خبر کی منتظر ہو ایک سال گزر رہا ہے کہ تم نے اس کی قائل ہو میری زندگی میں تو دیوانہ وار تمہاری طرف بڑھا ہوں مگر تم ہو کے رہی ہی دکھائی جا رہی ہو اب ملنے آ بھی جاؤ کہ جب سے تم گئی ہو مجھے یوں لگتا ہے کہ جیسے میری بیٹائی بھی تمہارے ساتھ چلی گئی ہے تمہاری کتنی تمہاری کزنوں اور تمہارے اجالے سے میرے اندر باہر چراغاں سا ہو گیا ہے کہکشاں جگمگاتی ہے کیا تم اس کہکشاں کو دائم دیکھنا چاہو گی! اگر تمہارا جواب ہاں میں ہے تو مجھے یقین ہے کہ تم پہلی فرصت میں ہی آج کل میں ہی مجھ سے ملنے آؤ گی! گل سے منتظر تمہارا کامنی۔“

”اوہ کامنی! میں کل آؤں گی ضرور آؤں گی۔“ رشنا نے خوشی اور حیا سے متمتاتے چہرے کو خط کے پیچھے چھپاتے ہوئے کہا۔ وہ نہا کر تیار ہو کر کل کے لئے کپڑے منتخب کر رہی تھی کہ شہر یار دروازے پر دستک دے کر اس کے کمرے میں داخل ہوا ہاتھ میں حسب عادت گلاب تھا۔

”والسلام! عظیم شیری بھائی کیا حال ہے آج بڑے دن بعد آمد ہوئی ہے آپ کی خیریت سے تو رہے ناں آپ؟“ رشنا کا موڈ کامران کے خط کی وجہ سے بہت خوشگوار تھا! لہذا اس کے لہجے اور انداز میں بھی خوشی اور اپنائیت انداز آئی تھی شہر یار اس کے اس انداز کو کچھ اور ہی سمجھ بیٹھا تھا! خوشی سے کھل گیا تھا! گلاب کی کلی اس کی طرف بڑھاتے ہوئے سکرہاتے ہوئے بولا۔

”ہاں میں تو خیریت سے ہی رہا! تمہارے ایگز امز ہو رہے تھے اس لئے تمہیں ڈسٹر کرنا مناسب نہیں سمجھا! آج تو فارغ ہو گئی ہو سو ملنے کو دل چاہ چلا آیا ویسے کیا تم نے میرے نہ آنے کو محسوس کیا تھا؟“
”ہاں کئی بار خیال آیا تھا کہ شیری بھائی نہیں آئے لگتا ہے کہ ان کے لان کے پھول ختم ہو گئے ہیں۔“ وہ پر مزاح انداز میں بولی تو وہ خوشدلی سے ہنس پڑا۔

”تمہارے لئے پھول کبھی ختم نہیں ہو سکتے۔“
”مگر آپ آج کے بعد میرے لئے پھول نہیں لائے گا! میں نہیں لوں گی۔“
”کیوں؟“ وہ بے کلم ہو کر پوچھ رہا تھا۔

”کیونکہ پھولوں کی زبان بہت پچھتی ہے۔“ وہ نظریں چرا کر بولی۔
”اسی لئے تو میں اپنی زبان سے کچھ نہیں کہتا! پھولوں کے ذریعے اپنے دل کی بات تم تک پہنچا دیتا ہوں۔“ وہ اس کے چہرے کو اپنی نظروں میں سموتے ہوئے بولا۔

”یہ بات کہیں اور بھی پہنچ سکتی ہے اس لئے پلیز آئندہ مجھے پھول مت دیجئے گا۔“
”تم بات کے گھٹن اور پچھتے اور پھیلنے سے ڈرتی ہو تو میں امی کو کل ہی خالد جان کے پاس اصل بات کرنے کے لئے بھیج دیتا ہوں! میں تمہارے ایگز امز ختم ہونے کا انتظار کر رہا تھا۔“

”پلیز شیری بھائی! میرا سوا سوا خراب کریں میں ابھی پڑھنا چاہتی ہوں! اور رر مشکی شادی پہلے ہوگی میرا نمبر ابھی دور ہے۔“ وہ برہان کر بولی۔

”خالد تم دونوں کی شادی ایک ساتھ کر دے گا! میں وہ تو تیار ہی مکمل کے بیٹھی ہیں اور پڑھائی تو تم شادی کے بعد بھی مکمل کر سکتی ہو۔“ شہر یار نے اسے بتایا۔

”شیری بھائی! اب اگر آپ نے مجھ سے اس موضوع پر بات کی تو میں آپ سے ملنا بات کرنا چھوڑ دوں گی۔“ وہ ایدم تیز اور ناراض لہجے میں بولی۔
”اچھا ضدی لڑکی! انہیں کرتا بات مگر تم مجھے سرائے موت کی خبر تو نہ دلاؤ! وہاں کے آگے ہاتھ جوڑ کر بولا تو وہ ہنس پڑی۔

”مجھے تمہاری ہنسی اور خوشی عزیز ہے اس لئے دل پر جبر کرنے کو تیار ہوں لیکن اتنا غصہ نہ کرو! گا۔“
”اداسیوں کی رشتیں نہ چپکے سے اپنے گھر میں اتار لینا کبھی ضرورت پڑے جو میری تو بے تکلف پکار لینا۔“

شہر یار نے بہت گھمبیر لہجے میں یہ شعر پڑھا تو اس کے دل میں بیسی سی اٹھی اس کا انداز اور لہجہ کامران جیسا محسوس ہوا! اس نے بھی اس کی مصروفیت کا خیال کیا تھا! امتحانات میں اسے ڈسٹر نہیں کیا تھا اور شہر یار نے بھی ایسا ہی کیا تھا! کامران کا خط اور شہر یار کی آمد ایک ساتھ ہی ہوئی تھی! وہ اب کچھ کر رہی شہر یار آرمی میں بپٹن تھا اونچا لمبا خوش شکل تھا کامران کا فلمی سے زیادہ اسماٹ اور ہینڈم تھا! بہت ڈسینٹ اور زندہ دل تھا اسے دل کی گہرائیوں سے چاہتا تھا مگر وہ تو کامران کا فلمی کی تحریروں کے سحر میں نہ جانے کب سے قید ہو چکی تھی اور اب جب وہ اس کے سامنے آ گیا تھا اسے محبت بھرے خط لکھ کر ملنے کی آرزو کر رہا تھا تو وہ جیسے ہواؤں میں اڑنے لگی تھی لیکن وہ کسی کا دل دکھانے سے ڈرتی تھی! شہر یار کے معاملے میں اسے اپنے آپ غصہ آتا تھا! کہ وہ اتنے ڈسینٹ بندے کو دل میں وہ جگہ کیوں نہیں دے سکی جو جگہ وہ کامران کا فلمی کو دے بیٹھی ہے پڑھائی کی آڑ میں اس

”واہ شیری بھائی! کیلے کیلے پکڑے کھائے جارہے ہیں۔“ ریشا نے کچن میں داخل ہوتے ہوئے کہا اور بڑھ کر پلیٹ میں سے پکڑا اٹھا لیا۔

”واہ ریشا کے ہاتھ کے بنے پکڑوں کا تو جواب نہیں ہے۔“ وہ پکڑا کھاتے ہوئے بولی تو شہریار نے ریشا کے چہرے کو بغور دیکھتے ہوئے کہا۔

”جواب تو اس کا یوں بھی نہیں ہے یہ تو اپنی ہستی میں لا جواب ہے۔“

”ریشا پکڑے سب کے لئے ہیں ہو پرے۔“ ریشا نے اس کی بات نظر انداز کرنے کی کوشش میں ریشا کے پکڑے کھانے پر اسے ٹوکا تھا وہ مسکرا دیا۔

”شیری بھائی! آپ خاصی گہری گہری باتیں کر رہے ہیں کیا خیال ہے موسم بھی بہت خوشگوار ہے ایک آدھ شعر ہی سنا دیں۔“ ریشا نے کہا۔

”کیسے سناؤں؟“ اس کی نظریں تو جیسے ریشا کے چہرے پر سے ہٹنا ہی بھول گئی تھیں وہ نروس ہو رہی تھی ریشا شرارت سے بولی۔

”جیسے مسلسل چارے جارہے ہیں اسے۔“

”اچھا۔“ وہ ہنس پڑا لیکن ریشا نے ریشا کو غصے سے گھورا۔

”اے ہوا مہربان ساون کی

”ان کی جادوؤں سے کہہ دینا

”ایک لڑائی بھی سوچی ہے

شہریار نے برقی بوندوں اور حیاء سے دھکتے ریشا کے چہرے کو دیکھتے ہوئے یہ ہائیکو سنائی تو ریشا کا دل بڑے زور زور سے دھڑکنے لگا وہ اس کے اشعار کا مطلب سمجھنے کی اور ریشا واہ کہہ کر داد دے رہی تھی۔

”اس بھول کا کیا کروں؟“ شہریار نے ریشا کے جانے ہی اس سے یہ چھا تو وہ بولی۔

”اے کار میں لگالیں۔“

”اس کا اختیار تو میں صرف تمہیں دوں گا تم لگا دو۔“

”میں اگر یہ اختیار لینا چاہوں تو؟“ ریشا نے ٹرائی میں تمام لوازمات لگاتے ہوئے پلٹ لہجے میں کہا تو وہ چند سیکنڈ حیرت اور دکھ سے اسے دیکھتا رہا پھر بنا کچھ کہے کچن سے باہر نکل گیا ریشا کا دل دوب سا گیا وہ اسے ستا کر خود بھی بے چین رہتی تھی۔ پکڑے چٹنی، جانے سوجی کا حلوہ لے کر وہ برآمدے میں آگئی جہاں سب بارش کا لطف لے رہے تھے کہیں مار رہے تھے، پکوان دیکھتے ہی ٹوٹ پڑے ریشا نے پکڑے چٹنی اور سوجی کا حلوہ لٹفن میں رکھا اور امی کو ماہنامہ زینت کے آفس جانے کا کہہ کر افسانہ اٹھا کر گاڑی میں آ بیٹھی، بسین کی خوشبو سے اس نے خود کو خوب اچھی طرح بھگولیا تھا، ایسے موسم میں اسے لائٹ ڈرائیو کرنا بے حد پسند تھا اس لئے کسی نے اسے روکا بھی نہیں البتہ ہدایت ضروری کی کہ گاڑی دھیان سے ڈرائیو کرے اور جلد گھر آ جائے وہ کامران کا کٹی سے ملنے کے لئے بے تاب ہوئی جا رہی تھی راستے میں سے اس نے سفید گلاب کے پھولوں کا ایک کامران کے لئے خریدا۔

”اے گیس ریشا! مجھے یقین تھا کہ تم ضرور آؤ گی۔“ کامران نے اس کی جانب دیکھ کر کہا تو وہ خیران رہ گئی اور فوراً پوچھا۔

”اپنے دل کی چوری چھپا تو لی تھی مگر مطمئن وہ اب بھی نہیں تھی آگے دن اس نے ہلکے نیلے رنگت کے کٹن کے سوٹ پر سفید دوپٹہ لیا تیار ہو کر باہر نکلے تو موسم کا مزاج بھی اس کے دل کی مزاج کی طرف بہت خوشگوار ہو رہا تھا۔

دھوپ کا ایک چمکی گئی تھی آسمان پر گہرے سیاہ اور سرخی باڈل ٹولیوں کی شکل میں یہاں وہاں پھل رہے تھے ہوا میں خشکی در آئی تھی دن میں شام کا سماں ہو گیا تھا، ریشا اور خالد نے پکڑوں کی فٹ پاش کر دی اور پکڑوں سے سب کو ریشا کے ہاتھ کے پسند تھے سوائے کچن میں گھبنا پڑا جلدی جلدی اس نے پکڑوں کا مصلحت بنا کر رکھا، پھر سوجی کا حلوہ بنایا اور پکڑوں سے تلنے کے لئے کڑا ہی چوہے پر بھی پتی تھی کہ ساون کی پہلی بارش بیاسی دھرتی سے گلے ملنے لگی۔

”لو اب میرا جانا غارت ہو اسی سمجھو۔“ ریشا نے کچن کی کھڑکی سے باہر برقی بوندوں کو دیکھتے ہوئے کہا۔

”تو کیا خیال ہے ریشا بارش رکھوادی جائے؟“ شہریار نے کب آیا تھا اس کی بات مکمل ہوتے ہی جواب آیا تو وہ ٹھٹھک کر بولی۔

”ہرگز نہیں۔“ وہ بولی۔

”تو نام ہی تازگی کا ہے۔“ وہ بولی۔

”لوں پر پھول کھلتے ہیں کسی کے نام سے پہلے

”دلوں میں بجتے جلتے ہیں چراغ شام سے پہلے

”یہ سارے رنگت وہ تھے تمہاری شکل بننے تک

”یہ سارے رنگت وہ تھے تمہارے نام سے پہلے“

شہریار نے اس کے چہرے کو دیکھتے ہوئے بڑے گہرے لہجے میں یہ اشعار پڑھے تو حیاء سے اس کا چہرہ سرخ ہو گیا وہ رخ پھیر کر پکڑوں سے تلنے لگی اور مسکرا کر بولی۔

”شیری بھائی! لگتا ہے کہ آپ پر موسم کا کچھ زیادہ ہی اثر ہو رہا ہے۔“

”کچھ اثر تو بھی قبول کر لو میرا نہ ہی موسم کا ہی سہی۔“ وہ حسبِ وقت جواب دے کر پھول اس کی جانب بڑھا کر مدھم لہجے میں بولا۔

”پلیز میرا دھیان نہ بنائیں مجھے پکڑے تلنے دیں اور یہ پھول آپ پھر لے آئے گی، دو دے دیں۔“ وہ بیزار لہجے میں بولی۔

”تمہارے لئے لایا ہوا پیارا بھرا تھنہ کسی اور کو کیوں دے دوں؟“ وہ اس کا ہوا کر بولا۔

”تو مجھے کیوں دے رہے ہیں؟“ وہ جھلا گئی کامران سے ملنے کی بے چینی تھی اسے اس پر بارش کے بعد شہریار کی والہانہ نظریں معنی خیز باتیں اسے غصہ دلانے لگی تھیں۔

”جذبات اور احساسات کی زبان تم خوب سمجھتی ہو راکٹر ہو کر یہ سوال کر رہی ہو؟“

”آپ کسی اور راکٹر کا دروازہ کھٹکھٹائیں یقیناً آپ کو شرف پذیرائی حاصل ہوگا۔“ وہ پکڑوں سے پلیٹ میں نکالتے ہوئے بولی۔

”مگر مجھے تو اسی دروازے سے اسی راکٹر سے شرف پذیرائی کی تمنا ہے اور مجھے یقین ہے کہ میری تمنا ضرور پوری ہوگی کیونکہ میرا جذبہ صادق ہے لگن کچی ہے۔“ وہ پکڑا اٹھا کر مدھم اور پر یقین لہجے میں بولا تو ایک لمحے کو ریشا کا دل رک سا گیا ہاتھ کا پگھے چہرے پر پسینے کے قطرے ابھر آئے۔

”آپ کو کیسے پتا چلا کہ میں آئی ہوں۔“

”تمہاری خوشبو سے تمہارے قدموں کی آہٹ ہے۔“ وہ اس کی جانب مڑا۔
”یہ رنگ تم پر بہت چر رہا ہے تمہیں لباس برتنے کا سلیقہ خوب ہے بیٹھونا کھڑی کیوں ہو آج تو میرے آفس میں بھی سورج کی کرنیں پھیل گئی ہیں حالانکہ باہر بادل برس رہا ہے ساون کی پہلی بارش کھلکھلا رہی ہے۔“

”آپ کو ساون پسند ہے؟“ رشنا نے اس کے چہرے کو دیکھتے ہوئے سوال کیا۔

”پسند تھا اب تو برسات کی بوندیں دیکھ کر یہ شعر یاد آتا ہے۔“

”رنگ برسات نے بھرے کچھ تو

زخمِ دل کے ہوئے ہرے کچھ تو“

جانتی ہو آج کی برسات میں رنگ بھرنے والی تم ہو۔“ اس کا لہجہ مہک رہا تھا۔

”اور زخمِ دل کس نے ہرے کئے ہیں؟“ وہ لاج سے تپ کر بولی۔

”اس کی بات پھوٹو جب وہ دنیا ہی چھوڑ گئی تو۔“ اس نے ایک بار پھر کھڑکی سے باہر جھانکا اس کا ادھورا جملہ بھجا بھسا لہجہ نکلا۔ ”وہ کون تھی جو دنیا چھوڑ گئی کیسا زخم ہے اس کے دل پر؟“

”تو آپ کو کیسے پتا چلتا ہے کہ ساون آ گیا ہے؟“

”جب ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا اس کے گونگھڑانے لگیں پھول بے گنگھانے لگیں آنکھوں میں رنگ بھرے سپنے جھلکانے لگیں اور رجم برستی بوندوں کی ٹپ ٹپ سے دل کا ٹیل بھی صاف ہونے لگے جب گھروں سے پکڑوں اور حلوے کی سوندھی سوندھی خوشبو ماحول کے اندر عجیب ہی لذت بڑھانے لگے کوئل جھونے سر نہکھرانے لگے تو اس وقت چپکے سے من کے اندر یہ خبر شور برپا کر دیتی ہے کہ ساون اپنی تمام تر رعنائیوں اور عنایتوں کے ساتھ ہمیں شرفِ میزبانی بخش چکا ہے۔“ کامران نے کسی پورے سانسے بیٹھ کر بڑے جذب سے کہا۔

”نثر نگار ہو کر بھی آپ کا مزاج تو بہت شاعرانہ ہے۔“ وہ بولی۔

”مدمقابل آپ ہوں تو شاعری کا نزول ہونا ناممکن تو نہیں ہے تمہارے دم سے ہی تو شاعری کا وجود ہے تمہیں دیکھ کر شاعری پر پیار آنے لگا ہے شاعری لفظوں سے پھوٹنے والا احساس ہے ہر ساقیوں سروں اور دھنک کے ساتوں رنگ اپنے اندر سموئے ہوئے ہواؤں کی سرسراہٹ برستی بوندوں کی جلیترنگ کنواری دوشیزہ کی چوڑیوں کی سہی کھنک ٹپ ٹپیلی سہانگن کے ہاتھوں پر رچی بسی حنا سے پھوٹی ہوئی مینی مینی سی مہک۔“

”آپ سچ لفظوں کے جادوگر ہیں آپ کو بلانا، لوٹانا، ہنسانا، رلانا بھی آتا ہے مگر آپ اندر سے خوش نہیں ہیں کیوں؟“ رشنا نے اپنے احساسات کو قابو کرتے ہوئے پوچھا تو وہ ہنس پڑا وہی ہنسی جس کے پیچھے آنسوؤں کی کمی چھپی ہوئی تھی۔

”کیا کرو گی جان کر؟“

”یہ میں آپ کے لئے لائی ہوں۔“ اس نے بکے اس کی جانب بڑھا کر کہا۔

”شکر یہ تمہارا آنا کیا کم قیامت ہے جو یہ پاکیزگی بھی میرے دامن میں بھرنے کو لے آئیں تمہیں سفید گلاب ہی لانے چاہئے تھے کیونکہ سرخ گلابوں کی میرے پاس کوئی جگہ نہیں ہے۔“ وہ بکے لے کر مسکراتے بولا۔

”یہ لٹن تم لائی ہو کیا ہے اس میں موسم کے پکوان لائی ہو کیا؟“ وہ اس کی بات نظر انداز کرتے ہوئے ٹٹن

اٹھا کر کھولنے لگا وہ بھی سمجھ گئی تھی وہ اب اس موضوع پر بات نہیں کرنا چاہتا۔

”جی گھر میں سب کے لئے بنائے تھے تو سوچا آپ کے لئے بھی لے چلوں۔“

”تو گو باتم مجھے بھی اپنے گھر کا فرد سمجھتی ہو۔“ وہ پکڑا اٹھا کر مسکراتے ہوئے بولا۔

”میرے گھر کے فرد تو آپ کب کے بن چکے ہیں۔“ اس نے حیا سے نظریں جھکا کر کہا۔

تو وہ چند لمحوں سے اس کے چہرے کو دیکھتا رہا پھر گہرا سانس لے کر بولا۔

”تمہیں کسی اور کے گھر جانا ہے کسی اور کا گھر بسانا ہے اس لئے مجھے اپنے گھر سے نکال دو۔“

”کیا ایسا ممکن ہے؟“

”یہ دنیا ہے میری جان! اور یہاں ایسا ویسا سب ممکن ہے مجھے دیکھو میں جن کے بغیر زندہ رہنے کا تصور بھی نہیں کر سکتا تھا اب تک زندہ ہوں ان کے بغیر اور وہ وہ سب مردہ ہو چکے صرف میری یادوں میں زندہ ہیں۔“

”وقت پھیلا گیا ہے چپکے سے

رد کی خار دار جھاڑی پر

زندگی ہے روائے بوسیدہ“

”آپ نے کہا تھا کہ اب مجھ سے مل کر پھر سے جی اٹھے ہیں کیا وہ جھوٹ تھا؟“

”نہیں مجھے جھوٹ کی ضرورت ہی نہیں بڑی کبھی سوچ ہے اسے سچ ہی لکھتا اور کہتا ہوں۔“

”مگر سچ چھپاتے بھی تو ہیں کیا مجھے سچ نہیں بتائیں گے کون بھی وہ جس نے آپ جیسے مخلص اور محبت

بھرے انسان کو ٹھکرایا کس نے بے وفائی کی ہے اس کے ساتھ؟“ رشنا نے سنجیدگی سے پوچھا۔

”قسمت نے۔“ وہ افسردگی سے مسکرایا۔

”اور یہ تم اتنے اچھے موسم میں کیا ذکر لے بیٹھیں؟“ وہ بے پرواہی سے پوچھا۔

”ہوں۔“ کامران نے کافی تھرماس سگ میں انڈیل کر اس کے سامنے رکھ دی۔

”آپ جانتے ہیں ناں کے آپ مجھے۔“

”اتنی جلدی خوابوں کی وادی میں مت جاؤ۔“ وہ اٹھ کر کھڑکی کے سامنے آ گیا اور اس کی بات کاٹ کر نرم لہجے میں بولا۔

”خواب ہمیشہ دکھ دیتے ہیں۔“

”کیا آپ نے بھی محبت کی ہے؟“

”کئی بار یہ حماقت کی ہے اور قسمت سے سزا بھی پائی ہے۔“ وہ آزر دگی سے مسکرایا۔

”آپ محبت کو حماقت کہتے ہیں۔“ وہ حیران ہو کر بولی۔

”تو اور کیا کہوں؟“ وہ اس کے قریب آتے ہوئے بولا۔

”آج کل کی سب سے بڑی حماقت محبت ہی تو ہے۔“

”تو آپ محبت کو اپنی کہانیوں کا موضوع کیوں بناتے ہیں؟“

”کیا کریں اس کم بخت محبت کے بغیر کہانیوں میں لطف ہی نہیں آتا زندگی کا رنگ ہی نظر نہیں آتا ضرورت ہے محبت۔“

”آپ کو اب اس کی ضرورت ہے۔“ باہر بادل زور سے گر جا تھا اور اندر رشنا کا دل۔

”چاہئیں، لیکن مجھے محبت سے نفرت ہو چکی ہے، قسمت سے نفرت ہو گئی ہے، محبت مجھے راس نہیں آتی یہ موسم اس موسم نے بھی مجھ سے میری محبت چھینی تھی، محبت کا اعتبار چھینا تھا اور میرے ضیاع پر میرے ساتھ رہا بھی تھا، محبت کچھ نہیں ہوتی۔“ وہ اپنے حواسوں میں نہیں رہا تھا شاید اس کا لہجہ اور چہرہ کرب اور ملال سے اٹ گیا تھا۔ وہ گھبرا کر کھڑی ہو گئی۔

”کیا آپ مجھے اپنی زندگی کا حصہ نہیں بنا سکتے؟“ رشنا کے منہ سے خود بخود یہ سوال پھل گیا اور پھر شرم سے نظریں خود بخود جھک گئیں۔

”تم تو مجھے میری زندگی کا مقصد ہی لگ رہی ہو، تم مجھ سے ہر رشتہ ہر جہد بہ ہر تعلق وابستہ کر سکتی ہو لیکن محبت کا نام مت لینا، میں تم سے محبت نہیں کر سکتا، میری محبت کے اقرار میں قیامت چھپنی ہے، تم بہت حسین ہو بہت پیاری ہو، کرن ہو روشنی ہو ستارہ ہو محبت کا استعارہ ہو، خوشبو ہو، لیکن میرے لئے نہیں ہو، مجھے تمہاری خوشبو میں مٹھنے کی اجازت نہیں ہے، میں تمہاری روشنی میں گم ہو کر تمہیں اندھیروں میں نہیں دھکیل سکتا، تمہارے نازک حسین بدن کی نرمائش اہل دل و دل میں میرے لئے سوان و روح بن جائیں گی۔“

”آپ ایک بلا رہا ہوں پکڑ کر تو دیکھیں ایسا کچھ نہیں ہوگا آپ ناحق خوفزدہ ہیں۔“ رشنا نے شرمگین آواز میں کہا۔

”نہیں میری حیات میری زندگی اس خوف ناحق نہیں ہے، بہت جان لیوا سبب ہے اس کا اور اگر میں نے تمہارا ہاتھ پکڑ لیا تو زندگی تمہارا ہاتھ چھوڑ کر چلی جاسکتی، میں تمہیں زندہ سلامت دیکھنا چاہتا ہوں، تمہاری سلامتی کے لئے میں خواہش کے باوجود تم سے وہ رشتہ آٹھواں کر سکتا جو تم چاہتی ہو۔“ وہ اسے والہانہ پن سے دیکھتے ہوئے بولا۔

”تو کیا آپ مجھ سے رابطہ ختم کرنا چاہتے ہیں؟“ رشنا نے پوچھا۔

”نہیں، میں ایسا کر کے ایک بار پھر ختم نہیں ہونا چاہتا، تم سے رابطہ مجھے وصلہ تیار ہے گا، نجانے تقدیر کو اب کیا سوچتی ہے کہ میرے خواب کا عکس حقیقت میں تمہاری من موہنی صورت میں ایک بلا پھر میرے سامنے آئی ہے، تم نہیں سمجھ سکتیں یہ موسم تم اور میرا دل میں کس طرح خود کو روک رہا ہوں، تمہارے حواسوں کے تم میری نہیں ہو، تم پر میرا کوئی حق نہیں ہے مگر نجانے کیوں تمہیں دیکھتے رہنے اور تم سے ملنے کو ہی دل چلا جاتا ہے عجیب دورا ہے بلا کھڑا کیا ہے تم نے مجھے۔“

”آئی ایم سوری اگر میری وجہ۔“

”تم کیوں ان پتھروں کو معذرت کے بھاری لفظوں سے ٹھیس پہنچاتی ہو؟“ وہ اس کی بات کاٹ کر نرمی سے والہانہ پن سے بولا۔

”تم پھول چہرہ فرشتہ، قبا، حیات رنگ، شبنم زباں، چاندنی لمس، چارہ گر ہو، مگر میری کرن میری جان! میں تمہارے ان پاکیزہ جذبوں ان احساسات کے قابل نہیں ہوں، مجھے تمہاری زندگی سے زیادہ کچھ نہیں چاہئے بس تمہاری دوستی چاہئے میرے دل میں تمہارا بہت احترام، مقام، عزت، خیال اور خلوص ہے اس سب کے ہوتے ہوئے محبت کا ذکر لازمی نہیں ہے، بس مجھ سے محبت کے اظہار کی تمنا مت کرنا، میری محبت تمہاری موت بن جائے گی۔“

”اور اگر میں یہ موت قبول کرنا چاہتی ہوں تو بھی آپ انکار کریں گے۔“ وہ سنجیدگی سے بولی۔

”معصوم لڑکی پیاری رشنا! یہی فرمائش مت کرو کہ جو مجھے موت کا لمحہ احساس دلاتی رہے، میرا اقرار مجھے بار بار یاد دلانا چکا ہے مگر اب ایسا نہیں کروں گا میں سنا تم نے اور تم بھی مجھ سے محبت کے لئے مت ملنا چھو، وہ بولتے ہوئے بیت جنونی لگی رہا تھا وہ ڈر گئی۔

”نہیں اب چلتی ہوں۔“ اس نے کافی کانگ میز پر رکھتے ہوئے کہا۔

”ڈر گئیں ناں۔“ وہ اس کے چہرے کو دیکھتے ہوئے بولا۔

”میرے قریب آنے والی ہر گئی ہر گئی اس طرح ڈر جاتی ہے اور بالآخر مر جاتی ہے، مر چھا جاتی ہے، تم ابھی

اسے اپنے دل کے قدم روک لو تا کہ بعد میں وہ راستہ کھن نہ ہوئے پائے۔“

”آپ روک کے مجھے اپنے دل کے بڑھتے ہوئے قدموں کو۔“

”روک سکتا تو یوں اذیت نہ اٹھاتا۔“ وہ ہنس کر بولا۔

”ایک بار میری خاطر۔“

”نہیں رشنا! تم ابھی بہت کم سن ہو، یہ دکھ مت اٹھاؤ، ابھی تو تمہارے بٹنے پھیلنے کے دن ہیں، تم مجھے اپنا اچھا

دوست، مخلص، ہمدرد، سہیلی سمجھ سکتی ہو، اس سے زیادہ کی طلب مت رکھنا، مجھے تمہارے جذبے تسلیم ہیں

میں تمہاری چاہت کا احترام کرتا ہوں، لیکن تمہیں دوستی کے سوا کسی رشتے میں خاص کر شادی کے رشتے میں قبول نہیں کر سکتا، تم خواہ مجھے ایب ناں، کچھ نفسیاتی مریض کہو یا سنگ دل اور تم کو کوئی سہیلی نام دے لو مگر میں

تمہیں اپنا نام نہیں دے سکتا، میرا نام تمہارا نام ملنا، ملنا کر رکھ دے گا، مجھ سے میرا نام مت ملنا، رشنا! احترام

تمہیں ہمیشہ ملتا رہے گا، کہ تمہارا احترام تو میرا ہی ہے، سستی کی طرح کرتا ہوں اور کرتا رہوں گا۔“ وہ اس کے

چہرے کو دیکھتے ہوئے نرم اور پر خلوص لہجے میں بولا۔

”پھر پکڑ لو، ہر جگہ پر سنا بند ہو گیا تھا، کامران نے دیکھا رشنا کے

رخساروں پر آنسو پھل رہے تھے اس نے دھیرے سے اس کے آنسوؤں کی پوریوں کی پوریوں سے صاف کئے۔

”یہ کیا بادل نے اپنے آنسوؤں گہری آنکھوں کو دے دیے، رشنا مجھے مت رلاؤ، پلیز ختم جاؤ، بری

طرح بھیگ چکا ہوں میں۔“ کامران نے بے قراری سے کہا وہ جلدی آنکھوں کو چہرے پر پھیر کر

جانے کے لئے مڑ گئی۔

”رشنا۔“ کامران نے تڑپ کر اسے پکارا۔

”جی۔“ وہ واپس پلٹی، تو اس کے چہرے کو بہت والہانہ پن سے دیکھتے ہوئے وہ اتنا ہی کہہ سکا کہ۔

”میں تم سے بہت۔“

”نہیں رشنا! میں نہیں کہہ سکتا، تمہیں ہلاکت میں نہیں ڈال سکتا۔“ وہ بے بسی سے بولا۔

”اللہ حافظ۔“ رشنا یہ کہہ کر آگے بڑھ گئی۔

”رشنا گاڑی احتیاط سے ڈرائیو کرنا اور سیدھی گھر جانا۔“ وہ پیچھے آتے ہوئے اسے ہدایت دے رہا تھا

رشنا نے جھپٹتی پلکوں سے اسے دیکھا اور مسکرا کر باہر چلی گئی اس کے لئے کامران کا انکار ہی اقرار تھا، وہ اس پر

شاداں تھی۔

”کچھ عشق تھا کچھ مجبوری تھی سو میں نے جیون ہار دیا

میں کیسا زندہ دل تھا اک شخص نے مجھ کو مار دیا“

کامران کاظمی کھڑکی سے باہر جھپکے موسم کو دیکھ رہا تھا رشنا نے اس موسم نے اس کے باطنی کے موسموں کو صدا

اور وہ منوں مٹی تلے چھپ کر سب کی نظروں سے اوجھل ہو گئی، ساون کی پوہی بارش برس رہی تھی، کامران سب سے زیادہ بلیک بلیک کر رہا تھا، موسم بھی اس کے غم میں برابر کا شریک تھا، اس کے آنسوؤں کا بھر مگر رہا تھا، کنول مر گئی تھی، کامران مر گیا تھا، کائنات کی ہر خوشی ختم ہو گئی تھی لیکن صرف کامران کے لئے سب رو دھو کر اپنے اپنے دھندوں میں لگ گئے تھے لیکن کامران کا دل اس من موئی لڑکی کی جدائی میں پل پل روتا، تڑپتا اور سسکتا رہتا، اسے کچھ بھی اچھا نہ لگتا، ہر چیز سے اس کا دل اچاٹ ہو گیا، پڑھائی سے اس کی دلچسپی ختم ہو گئی، مگر کب تک وہ کنول کا سوگ مناسکتا تھا، بالآخر سب کے بھانجے اور امی ابو کے ڈانٹنے پر اسے تعلیم میں دلچسپی لینا پڑی وہ پوری طرح کتابوں میں گم ہو گیا، ہر وقت کا ہنسنا، بولنا، کھیلنا اسے بھول گیا تھا، وقت کا دھارا بہتا رہا وہ کالج میں آ گیا تھا، اور بہت عمدہ ڈرامے افسانے اور ناول لکھنے لگا تھا، اس کے اندر ایک زبردست ادیب چھپا بیٹھا تھا، جو غم کے جھکے لگنے سے باہر نکل آتا تھا، کالج میں وہ بہت مشہور تھا، اپنی تحریروں اور خوش مزاجی کی وجہ سے سبھی اس کا احترام کرتے تھے وہ بہت جذباتی اور جنونی تھا، محبت کے لئے آخری حد تک چلا جانے والا اس کی محبت کی انتہا اس کی کہانیوں میں نمایاں ہوا کرتی تھی اس کے لفظ بولتے تھے دل کو چھو بتے تھے وہ پڑھنے والے کو رولانے اور ہنسانے کا فن جانتا تھا۔

پھر اچانک اس کی زندگی میں شمع آ گئی وہ اسے اپنی کزن صائمہ کی شادی میں نظر آئی تھی ہو بہو کنول کا عکس تھی شمع اور کامران پروانے کی طرح ایک طرف لپکا، اس کا دل پیار کے کول جذبے سے دھڑک اٹھا، اس نے صائمہ کے ذریعے شمع کو خوب لکھ بھجھا۔

”پروانے کی شمع؟“ تم حیران ہو رہی ہو کی، صائمہ نے ہنسی سے تنکفی سے تمہیں مخاطب کر رہا ہے، میں کامران ہوں صائمہ کا فرسٹ کزن باقی باتیں تم اس سے کہنا، تمہیں تو میں صرف اتنا بتانا چاہتا ہوں کہ تم نے میرا دل میرے سینے سے نکال لیا ہے اور وہ بھی ایسی مہلت کے کاغذوں کا کس کو خبر نہ ہوئی خود مجھے پتا نہیں چلا کہ آخر میرا دل کیا تو گیا کہاں؟ ارے رے تمہارا دل تو بہت میرا ہے، دھڑکنے لگا اور چہرہ بھی حیا سے مزید سرخ ہو گیا ہے، میں تمہیں دیکھ رہا ہوں ہاں بھی تمہیں تو میں نے اپنے اندر ہی آکھین میں بسا لیا ہے، تم صائمہ کی شادی میں کتنی سندرگتی پیاری لگ رہی تھیں، شمع کتنے پروانے تمہارے سن کے شعلوں سے جل مرے ہوں گے کتنے دل ہاتھ ملتے رہ گئے ہوں تمہارے اک کس خوشنما کے لئے، میں تو تمہاری شمع کی لہریں زلفوں کی چھاؤں میں خوشبو میں رات بھر سوتا رہا خواب دیکھتا رہا، تم میرے پاس رہیں رات بھر خوابوں کی حقیقت میں کب آؤ گی؟ ارے اتنی بے تکلفی برداشت نہیں ہو رہی مگر اس میں سراسر تمہارا قصور ہے تکلف کی دیوار تو تم نے اسی وقت گرا دی تھی جب میرے دل و نظر میں اترتی چلی گئی تھیں تم نے کب مجھ سے پوچھا تھا، اجازت لی تھی تم بھی تو بے دھڑک چلی آئی تھیں اب میں تمہارا منتظر ہوں، تم آؤ تو دل کو چین آئے، کل صائمہ کے سرال میں ہم سب کی دعوت ہے، تم بھی آ رہی ہو، صائمہ نے تمہیں بلایا تو ہوگا اگر نہیں بلایا تو بھی تمہیں میری خاطر آنا ہوگا، ہاں محبت کرنے والوں کا اتفاق تو ہوتا ہے نا، کیا کہا کوئی محبت؟ ابی اب انجان مت بنو کیا تمہارے دل میں میرے لئے کوئی نرم گوشہ پیدا نہیں ہوا، ہوا ہے نا، اور ہاں اپنی تصویر بچ رہا ہوں، دل تو تم لے ہی گئی تھیں اس صورت کو بھی لے جاتیں، اب اگر دل میں اس کی جگہ بن گئی ہو تو اسے اپنے دل سے لگاؤ، ہونٹوں سے اسے زندگی عطا کر دو، تمہیں یا کا خدشہ میں ذہن میں کیوں لاؤں؟ خط طویل ہو گیا ہے تمہیں نیند تو نہیں آ رہی نا۔ آئے گی ابھی نہیں آج کی رات میں آؤں گا، تم سے ملنے تمہارے پاس آؤ، اذکر نہیں، ابھی میں خواب میں آنے

دے دی تھی اس کے ہر صفحہ زیست پر غم کی تحریر لکھی تھی، یہ ان دنوں کی بات تھی جب کامران کاظمی صرف چودہ برس کا تھا، اس کی اپنی خالہ زاد کنول سے بے حدودتی اور بے تکلفی تھی وہ بچپن سے ساتھ پلے پڑھے تھے ایک دوسرے کا بہت خیال رکھتے تھے کنول کامران کی پسند کی چیزیں امی سے بنوائی اور اس کے پاس بڑے شوق سے لے کر اس کے ساتھ مل کھاتی اور کامران اپنی پاکٹ منی سے اس کے لئے چوڑیاں، مہندی اور چاکلیٹیں خرید کر لایا کرتا، اسے گلابی رنگت والی نازک سی کنول کی کلائیوں میں لال، ہری، نیلی، گلابی چوڑیاں بہت اچھی لگتی تھیں اس کی صراحی دار گردن کے لئے وہ ایک بازار سے لاکٹ خرید لایا اور بڑے شوق سے اسے پہنایا، اس کی سیاہ گھنیری پلکوں سے چھپائی سیاہ چمکدار آنکھوں میں اسے کابل کی دھار بہت بھلی لگتی، وہ ہر وقت ہنسی مسکراتی، شوخیاں شرارتیں کرتی، سب کی محبتوں کا مرکز بنی رہتی، کامران کو بھی اس سے بے پناہ محبت تھی مگر وہ اس محبت کو کوئی نام نہیں دے سکتا تھا، کم عمری اور ناچھی نے اس جذبے کے اصل معنی سے اسے آگہی نہیں دلائی تھی، ایک دن کنول کی طبیعت خراب ہو گئی وہ کھیلنے ہوئے اچانک گر گئی، امی ابو نے اسے ڈاکٹر کو دکھایا تو ڈاکٹر نے کمزوری کہہ کر نسخہ لکھ دیا مگر کنول کی صاف دن بدن بگڑتی جا رہی تھی اس کی گلابی رنگت میں سورج کی آمیزش ہو گئی تھی کامران حیران پریشان اور بے بس لگے، ان دنوں سے اسے دیکھے جاتا، پڑھتا، لکھتا، ہنستا، بولتا، کھانا، پینا، جیسے اسے یاد ہی نہیں رہا تھا، وہ ہر وقت کنول کے پاس سو دھرتا، تو کنول اس کے خیال سے اسے فقاہت بھری آواز میں کہتی۔

”کامی! کھانا کھا کر سو جاو، تم بیمار پڑ چلو گے جاؤ، ہر جا کر صائمہ پو کے ساتھ کھیلنے کے لئے تو کھانا بھی چھوڑ دیا۔“

”تمہارے بغیر میرا کھیلنے کھانے کو دل نہیں چاہتا، تم ٹھیک ہو جاؤ پھر ہم آکھیں اور کھائیں گے صائمہ مجھے اچھی نہیں لگتی مجھے تو صرف تم اچھی لگتی ہو، اور میری ساری دوست بھی صرف تم ہو، بس تم جلدی سے ٹھیک ہو جاؤ۔“ وہ اس کا نرم نازک ہاتھ اپنے ہاتھوں میں قلم کر کے ڈال دے کہتا تو وہ جیسے پھر سے جی اٹھتی اور اس کے چہرے کو دیکھتے ہوئے کہتی۔

”کامی! مجھے بھول مت جانا اپنی بات پر قائم رہنا، میں کسی اور کو یاد کرے یا نہیں آنے دوں گی، تم صرف میرے ہو۔“

”ہاں میں صرف تمہارا ہوں اب جلدی سے تندرست ہو جاؤ ورنہ میں صائمہ کے ساتھ جا کر کھیلنے لگوں گا۔“

وہ اسے مزاق سے کہتا تو وہ اس کی شرارت سمجھ کر ہنس پڑتی مگر اس کی ہنسی میں پہلے ہی رندہ دھندلکاری اور تابندگی نہ ہوتی، کامران کا دل کٹ کر رہ جاتا اور پھر جب کنول کی حالت بہت دن تک نہ سنبھلی تو اس کے تمام شیٹ اور ایکسے لئے گئے اور ڈاکٹروں نے جو خبر سنائی وہ سب کے دل پر بجلی بن کر گری، کنول کو ہڈیوں کے کودے کا کینسر تھا اور پاکستان میں اس کا علاج ناممکن تھا، امریکا میں علاج کی سہولت تو تھی لیکن علاج بہت تکلیف دہ طویل اور مہنگا تھا، کم از کم دو کروڑ روپے درکار تھے علاج کے لئے اور کنول اور کامران کے خاندان کے تمام افراد بھی اگر اپنی ساری جمع پونجی اور جائیداد بیچ دیتے تب بھی ایسا ناممکن تھا، صرف امریکا جانے کا بندوبست آسانی سے ہو سکتا تھا علاج کی فیس دینا ان کے بس سے باہر تھا، کامران بے بس اور دکھ سے کنول کے کانٹا بننے و جو کو دیکھے جاتا اور دل ہی دل میں اس کی تندرستی اور سلامتی کی دعائیں مانگتا لیکن اس کی دعائیں کا تب تقدیر کے فیصلے کو نہ بدل سکیں اور وہ نازک سی پھول کنول ہمیشہ ہمیشہ کے لئے مر چھا گئی۔ مر گئی۔

☆☆☆☆

دنیا کی جمیل سے اس کی زندگی کا پانی ختم ہو گیا، اس کی پتی پتی جھڑ گئی، شہنشاہ سوکھ گئیں، جڑیں خشک ہو گئیں

کی بات کر رہا ہوں! اچھا اب میری تصویر کو پیار سے دیکھو جو مڈل سے لگاؤ اور اچھے اچھے خواب دیکھو میں کل تمہیں دیکھنے کے لئے موجود رہوں گا! اور ہاں میری بے تاب نگاہوں کو تلاش کی برکت نہ دینا میرے سناٹے میرے استقبال کے لئے کھڑی ہونا۔ فقط تمہارا پروانہ کافی۔

”ہائے اللہ! کیسا رومینٹک خط ہے کسی نے پڑھ لیا تو“۔ شیخ خط پڑھ کر اپنے دل کی دھڑکنوں کو قابو کرتے ہوئے بولی اور چپکے سے باورچی خانے میں جا کر خط جلا دیا اور واپس کمرے میں آ کر کامران کی مسکراتی تصویر کو دیکھنے لگی! اس کے دل میں لطیف جذبات اور احساسات خود بخود ابھرنے لگے اور اس کے لب بے اختیار کامران کی تصویر کی پیشانی پر ٹپک گئے اور یہ رات اس نے واقعی اس کے رنگ خواب دیکھتے گزاری، شیخ کا حیران کن سے ملنے کی بے چینی تھی وہ صائمہ کے سسرال اپنے گھر والوں کے ہمراہ پہنچا تو اس کی نگاہ سب سے پہلے شیخ پر پڑی وہ اس کے کہنے کے مطابق گیٹ پر اس کے استقبال کے لئے موجود تھی سفید اور گلابی لباس میں ٹیکہ میک اپ اور میچنگ جیولری کے ساتھ وہ سیدھی کامران کے دل میں اتر گئی! اس کی نظریں بار بار اٹھ اور جھک رہی تھیں! اس کے لبوں پر شرمیلا خند تھا جو کامران کو اس کے دل کا پیغام سنارہا تھا! وہ اپنی ایک جھلک دکھا کر سہانوں کو لے کر اندر چلی گئی اور کامران بھی خوش خوش مردوں میں آ بیٹھا! اس کی نگاہیں مسلسل شیخ کی جھلک کی منتظر تھیں! سب کے لئے کھانا میز پرچون لگا دیا! صائمہ کے ساتھ شیخ بھی میز پر کھانے کے لوازمات پہنچا رہی تھی پانی کا جگ اٹھاتے ہوئے اس نے کامران کی نظروں کو ہار کاڑھا! مسلسل اپنے چہرے پر محسوس کرتے ہوئے اس کی جانب دیکھا تو وہ مسکرا دیا! شیخ کی نظریں حیا سے جھلک رہی تھیں! برسرِ میلی مسکان سج گئی۔

”آپ کا شکریہ اور مجھے دل میں بٹھانے کا کامران نے موقع ملتے ہی پانی لینے کے بہانے اس کے قریب آ کر آہستہ سے کہا۔

”آہستہ مجھے ویسا خط مت لکھیے گا! اگر کسی کے ہاتھ لگ جائے تو آپ اپنی زندگی سے ہاتھ دھو بیٹھے۔“ وہ آہستگی سے بولی۔

”وہ تو ہم پہلے ہی دھو بیٹھے ہیں۔“ وہ معنی خیز اور شوخ لہجے میں بولا وہ اس کے لئے بے چینی کے لئے تھا! ”میں تمہارے خط کا منتظر رہوں گا۔“ کامران یہ کہہ کر صائمہ کے شوہر کے پاس چلا گیا۔

تین دن بعد اسے شیخ کا محبت نامہ موصول ہو گیا! اس نے لکھا تھا۔

”کامران جی! آپ نے اچھا نہیں کیا دل و دماغ کیا ہر جگہ آپ ہی آپ نظر آنے لگے ہیں مجھے کسی کی چیزوں پر بھلا کوئی یوں قبضہ جاتا ہے! آپ نے تو ایسے پیار سے قبضہ جمالیا ہے کہ آپ کو اپنی حدود سے بے دخل کرنے کو جی بھی نہیں مانتا! خوش ہو جائیں میں نے ہار مانی! آپ کو اپنا مان لیا! اب شیخ صرف آپ کی محفل میں چلی گئی! آپ نے اپنے لفظوں سے میرے جذبات کو اپنا بنا لیا ہے! اب کسی اور کو اپنا بنانے یا مجھے چھوڑنے کی کوشش کی تو شیخ ہمیشہ کے لئے بچھ جائے گی! اب شیخ آپ کی ہے! اس کی ساری روشنی ساری حرارت ساری محبت آپ کی ہے! اپنی بے رخی کی ہوا سے اسے بھجھامت دینا! شیخ آپ کے رحم و کرم پر ہے! بولیں اب اور کیا لکھوں؟ آپ کی شیخ۔“

کامران نے خوشی سے اس کا خط چوم لیا اور فوراً ہی جواب لکھنے بیٹھ گیا۔

”میری شیخ! میری زندگی میری جان! تمہارا اقرار نامہ پڑھ کر میں ہواؤں میں اڑ رہا ہوں! تم سے بے رخی یا بے وفائی کا تصور بھی نہیں کر سکتا! تم روشنی ہو! جگنو ہو! جس نے میری زندگی میں اجالا بکھیر دیا ہے! میں تمہیں گوا کر اندھروں میں نہیں بھٹکانا چاہتا! میں تو پروانے کی صورت تم پر ہر لمحہ تار ہونے کو تیار بیٹھا ہوں! مجھے موقع تو دو

میری حیات۔ صرف اور صرف تمہارا کامی!“

کامران کو شہر سے باہر رشتے داروں کے ہاں دو تین شادیوں میں جانا پڑ گیا واپسی پر امتحانات نے گھیر لیا! اس مصروفیت میں وہ شیخ کو خط نہ لکھ سکا تو شیخ کا شکایت نامہ اسے صائمہ کے ذریعے موصول ہوا! جسے پڑھ کر وہ بے قرار ہو گیا اور فوراً ہی صائمہ کے ہاتھ جواب لکھ بیٹھا۔

”تم نے یہ کیسے سوچ لیا کہ میں تمہیں بھول گیا ہوں! صائمہ نے تمہیں بتایا تو ہوگا کہ میں کتنا مصروف رہا! مگر تمہیں میں بھولا تو نہیں تھا! میں تو تم میں گم ہو کر خود کو بھول گیا ہوں! خود کو آزار پہنچا کہ تم سے رابطہ نہ رکھ کے میں کیسے اور کتنے دن رہ سکتا ہوں! مگر نا کام رہا! تمہیں بھی شکایت ہوئی تو میری دربار شکایت اپنوں سے ہی ہوئی ہے! اور تم سے بڑھ کر میرا اپنا کون ہے؟ یہ انتظار یہ دوری بہت سہہ لی اب یہ بتاؤ کہ میں اپنی امی کو تمہارے گھر کب بھیجوں تاکہ تم میرے گھر آ جاؤ! ہمیشہ کے لئے! اور ایسی شکایتیں پھر سے پیدا ہی نہ ہوں! جواب کا منتظر تمہارا۔ کامی۔ کامران کو ایک ہفتے کے طویل انتظار کے بعد شیخ کا قیامت نامہ موصول ہوا۔

”میرے کامی! مجھے تم سے آشنا کرانے والے خواب دکھانے والے میرے پروانے! مجھے معاف کرو کہ میں نے تمہاری محبت کی شکایت کیا کرتی دل کو بانے کے ساتھ ساتھ کھونے کا دھڑکا جولاگر ہوتا ہے! اور مجھ پر اس عرصے میں قیامت گزرتی! پھول ابو اور بھانے میرا رشتہ طے کر دیا ہے! مجھے بھیا کی خاطر امی ابو کی خاطر اپنی محبت سے یعنی تم سے دستبردار ہونا پڑا ہے! مجھے معاف کر دینا کامی کہ ہم لڑکیوں کو مجبور یاں محبت کرنے اور اسے پانے نہیں دیتیں! والدین کی آن پر قربان ہوئے! والدینوں میں تمہاری شیخ کا نام بھی شامل ہو گیا ہے! مجھے بھول جاؤ! اور اپنا خیال رکھنا! میں تمہاری نہ بن سکی! اور کی محفل میں جلنے کا تمنا بھی نہیں ہے! مگر ہم لڑکیوں کو ان چاہے شوہروں کے ساتھ بھا کر نا ہی پڑنا ہے! میں دعا کرنا اور مجھے بھول جانا ایک خواب سمجھ کر والسلام۔ شیخ جو تمہاری محفل کے قابل نہ بن سکا۔“

”شیخ تمہارا پروانہ جل کر خاک ہو گیا! خاک ہو گیا۔“ یہ صدمہ اٹھا لیا! اور شیخ یہ تھا کہ وہ سرتاپا پائل کر رہ گیا تھا! کنول ایک بار پھر مر گئی تھی! وہ ایک بار پھر اکیلا ہو گیا تھا! غم غلط کرنے! اس نے سگریٹ بے تحاشا پینا شروع کر دیئے وہ تنہائی میں روتا! سلگتا! سگریٹ پیتا اپنا آپ جلاتا رہا! اس کے لفظوں میں تجھ بول میں نکھار آتا رہا! وہ خوب سے خوب تر لکھتا رہا! یونیورسٹی میں اس نے ڈرائیونگ سوسائٹی بھی تھی! وہ خود اس کا صدر تھا! وہاں بھی وہ ڈرائے لکھتا اور ڈرائیونگ کرتا رہا! اس کے دوستوں کا گروپ کافی وسیع تھا! اس میں لڑکے لڑکیاں سبھی شامل تھے! وہ بظاہر ہنسٹا بولتا اور توجہ لگا تا نظر آتا تھا! لیکن اس کے اندر ٹوٹ چھوٹ ہوئی رہتی! کنول اور شیخ ایک جیسی تھیں! دونوں چلی گئی تھیں! اس کا دل ویران! اجاڑ اور کھنڈر بن گیا تھا! اور وہ اب اس ویران! اجاڑ اور کھنڈر آستانے کے قریب کسی کو بھٹکنے نہیں دیتا تھا! کتنے ہاتھ اس کی طرف دوستی کے لئے بڑھے تھے مگر اس نے معذرت کر لی تھی! شگفتہ بھی اس کی طرح یونیورسٹی میں ادبی سرگرمیوں اور تعلیمی حوالے سے شاندار ریکارڈ رکھنے کی وجہ سے کافی مقبول تھی! ایک دن اس نے کامران سے دوستی کی خواہش کا اظہار کیا۔

”کامران میں تم سے دوستی کرنا چاہتی ہوں۔“ شگفتہ نے مسکراتے ہوئے کہا۔

”صرف دوستی ہی کرنا۔“ کامران نے معنی خیز انداز میں تو وہ چونک سی گئی اور پھر مسکراتے ہوئے اس کی بات سمجھتے ہوئے بولی۔

”دوستی سے زیادہ پیارا اور مقدس رشتہ اور کیا ہو سکتا ہے اس کے ہوتے ہوئے کسی ”ہی“ کی ضرورت نہیں ہوتی۔“
 ”بہت خوب۔“ وہ اس کے جواب سے محظوظ ہو کر ہنسا اور پھر ان کی دوستی دن بدن بے تکلفی میں دھلتی چلی گئی وہ درحقیقت ایک دوسرے کے بہت اچھے دوست بن چکے تھے ہمہ وقت ایک دوسرے کے ساتھ مل کر کام کرنے ایک دوسرے کے کام کرنے کے لئے تیار، کامران نے اس سچ ڈرامہ لکھا ”محبت کچھ نہیں ہوتی“ بہت مقبول ہوا اخبارات نے بھر پور کورنگ دی شگفتہ سمیت سب نے اس سے ٹریٹ لینے کی ٹھانی تو وہ صاف مکر گیا اور بولا۔

”میری کامیابی کی اگر تم سب کو خوشی ہے تو ٹریٹ تم سب مل کر مجھے دو۔“

”یہ کیا منطق ہے بھئی؟“ وہ سب ایک ساتھ بولے۔

”اگر دوست ہو تو یہی مناسب ہے شرم نہیں آتی الٹا مجھے ہی جیب خالی کرنے کو کہہ رہے ہو خالی خالی داد ستاش اور تعریف میں کیسے یقین کر لوں کہ تمہیں میرے ڈرامے کی کامیابی کی بے حد خوشی ہوئی ہے اپنی اپنی جیبوں کو کھنگالو شاید وہ ٹریٹ شرم لحاظ کر کے باہر کود ہی پڑے۔“ کامران نے مسکراتے ہوئے پینٹین کی ٹیبل کے گرد گھمائی کرسی پر بیٹھا ہوا سب کو ہنسی آ گئی۔

”یہ ہماری دوستی کو اور میرا بچہ! ہم معدے کے بہت بڑے ہیں تم بھی کیا یاد کرو گے کہ اپنے اپنے معدوں کی سلامتی کی خاطر اور پچھلے تہوار کی محنت کے دوام کی خاطر ہم سکہ راج الوقت خرچ کرنے کی قابل فخر حرکت فرما رہی دیتے ہیں“ کیوں دوستو! شامی نے اپنی جیبیں ٹٹولتے ہوئے کہا۔

”ٹھیک ہے خوشی کے موقع پر یہ قربانی“ شامی نے ہنسی سے کہا۔ سب نے ایک ساتھ جواب دیا اور حسب توفیق روپے نکال کر میز پر رکھ دیئے، شاید نے روپے اکٹھے کر کے اور غنیمت منانے شروع کر دیئے۔

”پہلی بار تم نے کسی بات پر اتفاق کیا ہے۔“ کامران نے ہنسی سے کہا۔
 ”کھانے کی بات پر اکثر اتفاقات رونما ہوتے رہتے ہیں۔“ شامی نے کہا۔
 ”لے سوسے“ کو لڈو رنگ اور کیک منگوائے گئے سب میزوں کے گرد بجاں بجاں کر جہاں نظر آئیں وہیں بیٹھ کر کھانے لگے۔

”کامی! تم نے کبھی محبت کی ہے؟“ شگفتہ نے سوسہ کھاتے ہوئے پوچھا۔

”میں ایک وقت میں ایک ہی کام تلی سے کر سکتا ہوں فی الحال کھانے سے محبت کا مظاہرہ کر رہا ہوں اسے ملاحظہ کرو۔“ وہ سوسہ چٹنی میں ڈبو تے ہوئے بولا تو شگفتہ نے اس کے چہرے کو دیکھتے ہوئے کہا۔

”ویسے تو بے بڑا گھنا“ چھپا رستم مجھے پتا ہے تو نے کسی سے محبت ضرور کی ہے اور نار سائی کا دکھ ہے جو تیرے ڈراموں میں تیری کہانیوں میں نظر آتا ہے تو اپنا اندر کسی کو دکھانا نہیں چاہتا“ مگر مجھے یقین ہے کہ تیرے اندر کوئی دکھ کنڈلی مار کے بیٹھ گیا ہے تو بتانا نہ چاہے تو اور بات ہے۔“

”کم آن شگفتہ کو فتنہ“ محبت، عشق میرے بس کی بات نہیں نہ ہی یہ سارے جذبات مجھے پسند کرتے ہیں۔“

وہ بظاہر لا پرواہی سے ہنس کر بولا مگر اس کا دل بہت شدت سے درد سے چچا تھا پرانا زخم ادھر مڑ رہا تھا۔

”اچھا اب مجھے بنانے کی کوشش نہ کر مجھے پتا ہے کہ تجھے سوائے عشق کے کوئی کام ڈھنگ سے کرنا نہیں آتا“ تیرے جیسا جذباتی اور شدت پسند آدمی محبت نہ کرے، عشق کے چکر میں نہ پڑے یہ ممکن نہیں ہے تو پکا عاشق“ عشق کا رنگی ہے۔“ شگفتہ نے اپنے مخصوص دوستانہ بے تکلف انداز میں کہا۔

”اچھا یہ بتاؤ کو فتنہ“ تو مجھ سے شادی کرے گی؟“ کامران نے ایک دم سے مسکراتے ہوئے کہا تو وہ مذاق سے بولی۔

”تیرے جیسے فلرٹی آدمی سے تو کوئی گدگدی ہی شادی کر سکتی ہے۔“

”اسی لئے تو میں نے تجھے پرپوز کیا ہے۔“

”کیا؟“ وہ جج اٹھی۔

”کامی! تم ایک دم بکواس ہو تم سے کم از کم میرے جیسی ہوش مند، عقل مند، خردمند لڑکی کبھی شادی نہیں کرے گی۔“

”اوہ ہوش، عقل، خرد، جانتی ہوان۔ کے معنی؟“ اس نے اس کا مذاق اڑاتے ہوئے کہا۔

”تم سے تو دور سے ہی کئی کئی بار گزر جاتے ہوں یہ اور میرے لئے لڑکیوں کی کمی نہیں ہے مجھ پر تو ہر روز سینکڑوں“ بلکہ ہزاروں لڑکیاں مرنی ہیں۔“

”کیون مجھے ابھی مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”نہیں مجھے اچھے مرنے کا کوئی شوق نہیں ہے اور ویسے بھی میں کسی لیزڈی کٹر سے شادی نہیں کروں گی۔“ وہ ہنس کر مذاق سے بولا۔

”کامی جی! بے رنجی تو کوئی آپ سے کبھی کہانی میں میری باتوں کا جواب دے دیا کیا خط کے ذریعے جواب نہیں دے سکتے تھے میں آپ کے ہاتھ سے لکھے لفظوں کو آنکھوں سے لگاتی آپ نے میرے حسن کی تعریف کی ہے اپنے افسانے نرگس کا پھول میں تو مجھے لگا جیسے آپ میرے روبرو بیٹھے ہیں آپ نے لکھا کہ نرگس کا پھول انتظار کی علامت نرگس انتظار کرتی ہی رہ جاتی ہے تو کیا ہوا کامی جی! میں ساری زندگی آپ کا انتظار کر سکتی ہوں آپ کو جب بھی میری ضرورت ہو مجھے آواز دے دیجئے گا، لکھ کر بلا لیجئے گا میں دوڑی چلی آؤں گی اور آپ کی ساری محنتیں اپنے اندر سمیٹ لوں گی اپنے جسم و جاں کی تمام تر رعنائیاں اور آسودگیاں آپ کے نام کر دوں گی صرف آپ کی منتظر نرگس۔“

”اوکا ڈایہ سب کیا ہے جب محبت میرا مقدر نہیں ہے تو کیوں چلی آتی ہے میرے دل کے راستے میں کانٹے بچھانے مجھے اپنی طرف بلا کر کانٹوں پر پھینک کر چلی جاتی ہے نہیں میں اب کسی کی طرف نہیں بڑھوں گا۔“

کامران نے بے بسی سے کہا اور نرگس کے خط کا جواب لکھنے لگا۔

”پیارے نرگس! میری ہوائیاری ہو پھول ہو پیار ہو بہار ہو مگر کیوں سراپا انتظار ہو پھول جاؤ مجھے اپنا وقت میری خاطر ضائع مت کرو میں تمہاری منزل نہیں ہوں تم اپنے حسن کا سونا روپ کی چاندنی لہجے کی مٹھاس بدن کی خوشبو اپنی محبت اور پیاری مدد میں مجھے انتظار میں سوچی مت کرو۔ اور لوٹ جاؤ اس کی طرف جو درحقیقت تمہارا ہاتھ تھامنا چاہتا ہے میں کبھی تمہارا نہیں چھو سکتا تمہاری محبت کا احترام میرے دل میں ہمیشہ اچھی یاد کی صورت باقی رہے گا مجھے بھول جاؤ اور اپنا گھر بسا لو اس خط کا جواب لکھنا کامی۔“

نرگس سے جان چھوٹی تھی کہ مونا اس کی جگہ لگتی زوہ اس سے خط کا جواب نہیں مانگتی تھی بہت خوبصورت انداز میں اس کی کہانیوں کی اور ہم لفظوں میں اس سے جتنی محبت کا اظہار کرتی تھی وہ اس کے خطوط پڑھ کر اندر سے کمزور پڑتا جا رہا تھا اس کا دل پھر سے محبت کی تمنا میں ڈوب جاتا تھا کوئلہ رہا تھا جہاں اس نے غم ہی غم جھیلے تھے مونا قومی ایئر لائن میں ایئر ہوسٹ تھی وہ کامران کی تحریروں کی بدولت اخبارات اور رسائل میں اس کی تصاویر دیکھ کر انہیں اپنے دل کی دیواروں پر آویزاں کر چکی تھی ایک بار کامران کو اچھے سے لاہور جانا پڑا تو اسی فلائٹ سے وہ لاہور جا رہا تھا اتفاق سے مونا کی ڈیوٹی بھی اسی فلائٹ میں تھی اور وہ تو کامران کو دیکھ کر حیرت اور مسرت سے دیوانی ہو گئی تھی مگر اس سے براہ راست اپنی پسندیدگی کا ذکر کرنے کی جرأت نہیں تھی اس میں بس وہ اس کا اپنے فرائض کے مطابق بہت خوشی سے خیال رکھتی رہی تھی اور پھر اگلے دن اس نے اس یادگار ملاقات کا شرف دیدار کا احوال حرف بہ حرف کامران کو لکھ بھیجا۔

کامران صاحب! محبتوں، عقیدتوں اور مسرتوں بھر اسلام قبول کیجئے، میں اب تک نہ جانے کتنے خط آپ کو لکھ چکی ہوں اور ہلکی سی نہیں ہوں حالانکہ آپ نے بھی میرے کسی بھی خط کا جواب نہیں دیا، مگر میرے لئے یہ اعزاز کیا کم ہے کہ آپ میرے بھیجے گئے کاغذ کے ٹکڑے کو اپنے حرارت بخش حیات بخش کس سے نوازتے ہیں آپ کی پر نور، حسن شناس اور خطرناک نگاہیں میری تحریروں کو زندہ کر دیتی ہیں ان کی اہمیت کو چار چاند لگا دیتی ہیں کامی صاحب! میں کل سے بہت خوش ہوں بہت زیادہ خوش اور میری اس خوشی کا محرک آپ ہیں جی ہاں آپ آپ آپ کل میرے خواب میں نہیں بلکہ حقیقت میں میرے سامنے موجود تھے لاہور سے کراچی جانے والی فلائٹ میں آپ سب سے الگ تھلگ سے سب سے منفرد اور جدا دکھائی دے رہے تھے آپ کے برابر والی سیٹ خالی تھی اور میرا دل چاہا کہ میں آپ کے برابر میں اس سیٹ پر بیٹھ جاؤں مگر ہمت نہ کر سکی شاید آپ الگ رہنا اندر کے غم

میں گم رہنا پسند کرنے لگے ہیں میں نے آپ کو پانی کا گلاس دیا تھا مسکراتے ہوئے شاید آپ نے میرا نیم بچ دانستہ نظر انداز کر دیا تھا ورنہ ایسا کیسے ممکن تھا کہ آپ مجھے میرے خطوط کے حوالے سے جانتے ہوئے بھی بچانے سے انکار کر دیں کوئی خوف ہے جو آپ کو دل کی بات کہنے سے روکے رکھتا ہے میرا کتا دل چلا تھا کہ کاش آپ کے ساتھ جو خالی سیٹ ہے وہ میری ہو جائے آپ اپنے برابر میں بٹھانا چاہیں گے ہاں تو بات ہو رہی تھی پانی کا گلاس دینے کی میں نے مسکراتے ہوئے کہا ہر پانی ”شکر“ آپ نے گہرے گھبرائے میں کہتے ہوئے گلاس پھرنے ہاتھ سے لے لیا تھا آپ کی نظریں میرے ہاتھوں پر تھیں اور میرے ہاتھوں میں مارے گھبراہٹ کے کمی کی اثر آئی تھی حالانکہ آپ نے کہا تو کچھ بھی نہ تھا رکی سے شکر یہ کہ سوائڈ کوئی حرف شناسائی نہ کوئی نگاہ آشنائی آپ نے دانستہ ایسا کیا تھا آخر کیوں؟ خیر محبت میں کیا کیوں اور کس لئے جیسے لفظوں کا کیا کام میرے لئے تو آپ کا نظر آنا اور نظر انداز کرنا دونوں جہاں کی دولت سے بھی انمول ہے کہ جسے ہم نظر انداز کر رہے ہوتے ہیں دراصل ہم اسی کو اپنے دل کی نظر میں سموئے ہوتے ہیں اسی کے خیال کو ذہن میں رکھنا محسوس کرتے ہیں اس سارے سفر میں جہاں آپ میرے ہمسفر رہے وہاں مجھے یقین ہے کہ میں آپ کی سوچوں آپ کے خیالوں میں آپ کی نظروں میں آپ کی ہمسفر رہی ہوں گی میں نے سچ لکھنا یاں۔“

”ہاں تم نے سچ لکھا مونا! میں تمہیں پہچان گیا تھا مگر انجان بن گیا تھا تم میرے دل کی دھڑکنوں کو محبت کے مفہوم سے ایک بار پھر روشناس کروا دیا دل کی محبت میں ڈوب کر دھڑکنے کی جانب مائل کر دیا تھا تم اپنے مخصوص سبز یونیفارم میں بے حد درہماد دکھائی دے رہی تھیں تمہاری سفید گلابی مائل رنگت ستواں ناک گہری ہلکی سی آنکھیں مجھے جیسے بہت پیچھے لگی تھیں پہلی آنکھ میں سرخ اور سفید موتی کا نازک سا تار تمہارے بہرے کے چاند کو مزید دو آتشہ بنا رہا تھا تمہاری صحرا کی دانگ دونوں سے عافیت کرنی سونے کی چین میرے دل و دماغ میں اظہار و اقرار کے جذبے پیدا کر رہی رہی مت پوچھو کہ کیا گہری رگلاٹ میں مجھ پر میں نے بس سے انہیں دیکھا رہ گیا ہاں میں چھپیں ہی تو دیکھتا رہا تھا، تم نے سچ لکھا ہے کہ نظر انداز کرنا ناظر میں مسلسل رہنا ہی تو ہوتا ہے میرے دل و نظر تم ہی کو تو دیکھ رہے تھے یہ تو میں نے بھی چاہا تھا مگر میری سیٹ پر میرے برابر آ بیٹھو مگر میرے اندر کا خوف مجھے ایسے ہر اظہار اور اقرار سے باز رہنے پر مجبور کر رہا تھا مجھ سے ہونے روئے نرگس نے مرنے کا یادگار انہیں سے اب مجھ میں دل کے اتنے ٹکڑے ہو چکے ہیں کہ مزید کی کچھائی کتنی دکھائی نہیں دیتی اب تو رونے اور ہنسنے کا بھی پتا نہیں چلتا، مگر یہ بھی سچ ہے کہ تم نے مجھے اپنا اسیر کر لیا ہے تمہاری محبتوں نے بے ریا اور بے لوث چاہتوں نے میرے اندر نقب لگائی ہے میرے اندر اپنے پیار کا چور بٹھا دیا ہے اور چور کو پناہ دینے کی سزا بھی وہی ہوتی ہے جو چوری کرنے کی ہوتی ہے اور میں اسی سزا سے خوفزدہ ہوں کہیں کسی کو خبر نہ دے جائے کہ میں نے اپنے دل میں اپنے اندر کی جولالت میں پیار کا چور چھپا رکھا ہے جو بی خبر عام ہوئی عمر تیری تمام ہوئی اور میں تمہاری چھپی حسین دلچسپ کے قتل کا تصور بھی نہیں کر سکتا تمہارا خون اپنی گردن پر نہیں لے سکتا اس اپنے پیاروں کے دلداروں کے جنازوں کو کندھا دیتے دیتے میرا دل میرے شانے تھک چکے ہیں بڑھال چکے ہیں ٹوٹ چکے ہیں پھر بھی میں تمہاری جانب بٹھنا چلا آ رہا ہوں اب آگے کیا ہوگا خدا جانے کہ میری اندر میں اب کتنی دھنسی آتسو جدائی دکھ ہیں خیر مجھے تسلیم ہے مونا میری جان کے مجھے تم سے محبت ہو گئی ہے تم نے مجھے تسخیر کر لیا ہے میں ہار گیا ہوں اب دل کے ٹکڑے ہوں کے رونا پڑنے دیکھا جائے گا اب تو میں

نے ایک بار پھر اپنے دل کو پیار کے اقرار پر آمادہ کر لیا ہے کہ یہ پاگل دل کہتا ہے کہ۔

”اب کیوں اس دن کی فکر کرو

جب دل ٹکڑے ٹکڑے ہو جائے گا

اور سارے غم مٹ جائیں گے تم خوف و خطر سے دور گزرو

جو ہونا ہے سو ہونا ہے

گر ہنسنا ہے تو ہنسنا ہے

گر رونا ہے تو رونا ہے

تم اپنی کرنی کر گزرتو جو ہوگا دیکھا جائے گا“

کامران نے مونا کا خط تہہ لگا کر اسے اپنے دل میں مخاطب کرتے ہوئے کہا اور گہرا سانس اپنے لبوں سے خارج کرتے ہوئے اس کے تصور میں کھو گیا تھک تین دن بعد اسے مونا کی طرف سے ٹکٹ پیک موصول ہوا اس میں کامران کا ذکر تھا۔ گفٹ تھا سفید اور ہلکے آسانی رنگ کی شرٹس، بلیک پیٹنٹی روز اور جیمین پر فیمو کے علاوہ ایک خط اور شک کا روضہ موجود تھا ایک مردانہ ریٹ واچ بھی تھی کامران یہ سب تحائف دیکھ کر حیرت زدہ رہ گیا، مونا نے اس کی پختی تمام اشیاء اسے خرید کر گفٹ کی تھیں اس قدر قیمتی گفٹ پا کر اسے اپنا آپ بھی بہت قیمتی محسوس ہو رہا تھا اس کے مونا کا خط پھول کر سامنے پھیلا لیا اس میں لکھا تھا۔

کامران صاحب! زندگی کی ساری دنیا ساری تمنا ساری محبتیں ساری چاہتیں ساری مسکراہٹیں اس جنم دن پر آپ کے نام اور میں تو کب سے آپ کے مہر ہو چکی ہوں ہاں اگر آپ اس ناچیز مونا کو اس کی چاندنی کو اسے لائق جانیں اس کی محبتوں کو مانیں تو اس کے لیے ہر شے ممکن ہے ان تحائف کو کل اسے جنم دن پر ضرور استعمال کا شرف بخشیں گے اس کے لئے اگر آپ کے خوبصورت دل میں محبت کا سماں ابھرے تو ان تحفوں کو استعمال کر کے اس کا اقرار کیجئے گا میں یہ تحائف لے کر خود آپ کی خدمت میں حاضر ہونا چاہتی تھی مگر میری فلائٹ ہے میں ایک ماہ کے لئے انٹرنیشنل فلائٹس کے لئے ڈیوٹی پر جا رہی ہوں اور آپ کی یادوں کو ساتھ لے کر جا رہی ہوں آپ ہر لمحہ میرے ساتھ ہوتے ہیں کیا میں بھی آپ کے ساتھ ہوتی ہوں؟ اور ہاں میں ہے اپنا تمام دل آپ کے لئے فراس اور لندن سے خریدے تھے جب میری ڈیوٹی ان ملکوں کو جانے والی فلائٹس پر رہی تو میں آپ کی پسند کی چیزیں خرید کر سنبھالتی رہی اب بھیج رہی ہوں امید ہے کہ آپ کو ان میں میری محبتوں کی تھک ضرور محسوس ہوگی انشاء اللہ ایک ماہ بعد وطن واپس آؤں گی جہاں آپ کی سانسوں کی خوشبو بکھری ہے اپنا خیال رکھئے گا، اور ہاں پلیز سگریٹ پینا ترک کر دیں میں آپ پر حکم چلائے گا اختیار تو نہیں رکھتی البتہ اور درخواست تو کر سکتی ہوں ناں اب جانے کی اجازت دیجئے اللہ حافظ آپ کے پیار کے اقرار کی منتظر آپ کی اپنی مونا۔

”میری اپنی مونا! تو تم جیتیں میں بار“ میں یہ اقرار کرتا ہوں کہ میں تم سے پیار کرتا ہوں بہت شدت سے تمہیں چاہتا ہوں! تو تمہارا انتظار میں نے ختم کر دیا اب تم بھی میرا انتظار ختم کر دو اور جلدی سے واپس آ جاؤ میں تمہارے تحفوں سے سچ کر تمہارے پیار کا اقرار کرتا ہوں میں تم سے پیار کرتا ہوں تمہاری وجہ سے میں ایک بار پھر پیار کی شاہراہ پر چل پڑا ہوں جہاں تم بھی اپنی تمام تر عنایتوں کے ساتھ میرے مقدم ہو میری مونا! کامران نے مونا کی محبتوں کا اقرار کر لیا اپنی محبتوں کا اقرار اور اعتراف اس کی تصویر کو دیکھتے ہوئے اس کے بھیجے ہوئے تحفوں سے سچ کر کر دیا تو جیسے قسمت کو اس کی یہ خوشی ایک آنکھ نہ بھائی وہ اس سے اس کی محبت اس کی خوشی اس

کی زندگی کا سامان چھین کر موت کی وادی میں لے گئی، عین اسی وقت جب کامران مونا سے اپنی محبت کا اقرار کر رہا تھا، مونا کا کلبو جانے والا جہاز گر کر تباہ ہو گیا، کامران اس کے تحفوں سے سچا سنورا رات کو ڈنر پر جانے کے لئے تیار ہو رہا تھا نی روز کی پیشی اس کے ہاتھ میں تھی ریٹ واچ اس نے کلائی پر باندھی ہوئی تھی خوشی اس کے انگ سے پھوٹ رہی تھی فی وی چل رہا تھا، نو بجے خبر نامہ شروع ہو چکا تھا، پہلی خبر ہی جہاز کے حادثے کی تھی کامران اپنی دھن میں مگن تھا کہ جہاز کے حادثے کی خبر نے اسے بری طرح چونکا دیا اس کی تمام توجہ فی وی اسکرین پر مرکوز ہو گئی، نیوز ریڈر بتا رہی تھی کہ کراچی سے کلبو جانے والی فلائٹ کلبو ایئر پورٹ پر پہنچنے سے تھوڑی دیر پہلے حادثے کا شکار ہو گئی، جہاز کے تمام مسافر اور عملے کے تمام ارکان بھی جاں بحق ہو گئے وہ باری باری عملے کے اراکین کے نام اور ان کی تصاویر اسکرین پر دکھا رہی تھی جو مونا کا نام کامران کی سماعتوں میں پڑا اور اس کی تصویر اسکرین پر دکھائی گئی کامران کے پورے جسم میں جیسے ہزاروں ٹکٹ کا کرنٹ دوڑ گیا اسے زبردست جھٹکا لگا فی وی روز کی پیشی اس کے ہاتھ سے پھسل کر برش پر گرتے ہی ٹکڑے ٹکڑے ہو گئی اور کامران کا دل بھی ایک بار پھر ٹکڑے ٹکڑے ہو گیا، تقدیر نے ایک بار پھر اس سے اس کی محبت چھین لی تھی اس کے دل کا خون کر دیا تھا، مونا نے جان ساہو کر صوفے پر گیا اور کلائی پر باندھی ریٹ واچ اتار کر میز پر رکھ دی اور بچوں کی طرح پھوٹ پھوٹ کر رنے لگا اتنا روپا کہ اس کی حالت پر شاید تقدیر کو بھی رونا آ گیا وہ وہ ایک بار پھر ٹوٹ گیا تھا، بکھر گیا تھا، کتنے دن اسے اپنا ہوش نہیں رہا بخار میں جلتے، مونا کی موت کے کم میں تڑپتے کتنے سارے دن گزر گئے اور پھر اس نے طبیعت کے منتقلی ہی مونا کے تمام تحائف ڈبے میں بند کر کے رکھ دیے مگر یادوں کے در بند کرنا اس کے اختیار میں نہ تھا وہ اپنے دل کے لہجے یاد آتی اس کی محبتوں کی شدتیں اسے پل پل تڑپا کر تھیں وہ خالی خالی آنکھوں سے اس کی تصویر کو دیکھتا تھا، کتنے دنوں سے رگوں سے محبت سے نفرت ہو گئی تھی شدید نفرت اب اگر وہ زندہ تھا تو صرف نفرت کے لئے زندہ رہتا، اس نے ایک بار پھر ہمت کر کے قلم اٹھالیا کہ کہی اس کی روزی روٹی کا ذریعہ بھی تو تھا اس کی تحریروں میں محبت کے ساتھ ساتھ جبر، جدائی اور فراق کا درد بہت شدت سے جھلکنے لگا، وہ پہلے سے زیادہ محرک فکر بن گیا تھا اس کے چہرے والے پہلے سے کہیں زیادہ ہو گئے تھے وہ محبت نامے موصول کرتا اور پڑھ کر ایک طرف ڈال دیتا اب وہ کا کا محبت اسے اپنی طرف ہاتل نہیں کرتا تھا، کوئی چاہت بھرا جملہ اسے بے چین نہیں کرتا تھا، اسے الفت و پیار محبت کی لفظ میں اپنے لئے کشش نہیں محسوس ہوتی تھی وہ جلتا بجھتا چراغ بن گیا تھا، بظاہر ہنسنا بولتا، مسکراتا اور اندر سے روتا تڑپتا اور سلگتا رہتا اس سے ملنے والے اس کے اندر کے حال سے واقف ہی نہ ہو پاتے وہ خود کو اس عمدہ اداکاری پر داد بھی دے لیا کرتا اس کی تحریروں نے اس سے پیار کرنے والیاں اور والے جہاں بڑھائے تھے وہاں ان چاہنے والوں کے خطوط کی آمد بھی بڑھ گئی تھی مگر وہ دل کی جانب کسی کی آمد کا منتہی نہیں تھا اب کسی لڑکی کے خط کا جواب نہیں دیتا تھا بہت سا وقت گزر گیا، یونیورسٹی کے ساتھی گھر بار والے ہو گئے، شگفتہ بھی بیاہ کر شادی چلی گئی اور جاتے جاتے اسے بھی شادی کرنے کی نصیحت کر گئی کیونکہ اس کا خیال تھا کہ اسے کوئی محبت کرنے والی لڑکی ہی سمیٹ سکتی ہے اب وہ اسے کیا کہتا کہ وہ محبت کرنے والی ہر لڑکی کی موت بن جاتا ہے، محبت اسے راس نہیں آتی اس کی قسمت میں محبت لکھی ہی نہیں ہے، محبت تو ہے ملاپ نہیں ہے اور یہ سچ بھی تھا کہ اسے محبت تو بہت سی پڑی پیکر حسیناؤں کی ملی مگر ملاپ کسی سے نہ ہو سکا، بھی موت ان کے آڑے آ گئی اور بھی معاشرہ۔

☆☆☆☆

”ریکھا“

”انڈیا سے بسنت منانے آئی ہو“ کامران کا اندازہ بالکل درست تھا۔

”جی میں بسنتی کی رہنے والی ہوں اپنے مانتا پتاجی کے ساتھ یہاں آئی ہوں“ سچ تو یہ ہے کہ میرے من کے بھگوان کے میں آپ سے ملنے کی چاہ میں لاہور آئی ہوں“ کراچی بھی جاؤں گی“ میں آپ کو کب سے ڈھونڈ رہی تھی یہاں بھی دیر تک آپ کو دیکھتی رہی پھر ہمت کر کے آپ کے پاس چلی آئی۔“ وہ حیرت اور خوشی سے بتا رہی تھی۔

”تم میرے پاس کبھی نہیں آ سکتیں اس لئے واپس لوٹ جاؤ“ اس نے معنی خیز لہجے میں کہا تو وہ نظریں جھکائے بے بسی سے بولی۔

”میں تو اتنی دور آ گئی ہوں کراہ واپسی کا راستہ بھی بھول گیا ہے۔“

”ریکھا میرے ہاتھ کی ریکھاؤں میں تمہارے نام کی ریکھا نہیں ہے اور نہ ہی تمہارے ہاتھ کی ریکھا میں میرے نام کی لکیر ہے۔“ یہ کہہ کر اتہار املاپ نہیں ہو سکتا۔“ کامران نے گہرا سانس لے کر کہا۔

”کیوں نہیں ہو سکتا؟“ آپ سے پریم کرتی ہوں۔“ وہ تڑپ کر بولی۔

”برا کرتی ہو۔“

”میں نے آپ کی تصویر اپنے مکانے اپنی ڈائری میں اپنے من میں بجا رکھی ہے۔“

”اسے باہر نکال دو۔“ کامران نے کرب سے اس کے چہرے کو دیکھا۔

”پر کیسے؟“ بھگوان کو من سے کوئی بھلائی نظر آتا ہے“ میں تو آپ کی چچان ہوں آپ کی سیوا کرنا چاہتی ہوں۔“

”ریکھا اتم نے دنیا میں ابھی کچھ نہیں دیکھا تم کیوں اپنی جان کی دشمن ہو رہی ہو۔“ کامران نے حیرت سے اسے دیکھتے ہوئے کہا۔

”میں نے آپ کو دیکھ لیا ہے اب کچھ اور دیکھنے کی چاہ نہیں ہے مجھ کو اس آپ میرا ہاتھ تھام لیں تو میں سمجھوں گی کہ مجھے سارے سنسار کی دولت مل گئی ہے۔“

”تمہارے ہاتھ میں میرے نام کی ریکھا نہیں ہے اور جو چیز میری قسمت میں ہو اس سے میں اس کی طرف طلب گار نظروں سے کیوں دیکھوں جو محبت میرا مقدر بن ہی نہیں سکتی میں اس کے حصول کے خواب کیوں دیکھوں جس خلوص اور چاہت کو پریم اور عشق کو تقدیر نے میرے لئے وقف ہی نہیں کیا میں کیوں اس کی تمنا کروں؟ تم میرا مقدر نہیں ہو ریکھا تم میری قسمت کا ستارہ نہیں ہو تم سے شادی کرنا تمہارا ہاتھ تمہارا میری تقدیر نہیں ہے میری زندگی میں محبت تو ہے ملاپ نہیں ہے تکمیل نہیں ہے تم لوٹ جاؤ کہ میں تو ہجر و فراق اور جدائی کے پریمی کے سنگ جیسے عادی ہو چکا ہوں۔“ کامران نے سنجیدہ اور رنجیدہ لہجے میں کہا تو اس کی آنکھوں میں آنسو اُڑ آئے“ کامران نے بے بسی سے اسے دیکھا دل پر گزرنے والے ان عذابوں سے اس سے زیادہ کون واقف تھا وہ اس کی دلی کیفیت محسوس کر سکتا تھا مگر اسے حوصلہ دے کر اس کے جذبات کی پذیرائی کر کے اسے اُڑی دکھ اور جدائی سے دوچار نہیں کرنا چاہتا تھا اس کے سندر سراپے کو راکھ بننے نہیں دیکھنا چاہتا تھا سوچ چاہ اس پر سے نظریں ہٹا گیا۔

”آپ کو ایسا ہی ہونا چاہئے تھا سب سے جدا سب سے منفرد آپ سادہ اور پروقار شخصیت کے مالک ہیں“

”آپ کو ایسا ہی ہونا چاہئے تھا سب سے جدا سب سے منفرد آپ سادہ اور پروقار شخصیت کے مالک ہیں“

”آپ کو ایسا ہی ہونا چاہئے تھا سب سے جدا سب سے منفرد آپ سادہ اور پروقار شخصیت کے مالک ہیں“

”آپ کو ایسا ہی ہونا چاہئے تھا سب سے جدا سب سے منفرد آپ سادہ اور پروقار شخصیت کے مالک ہیں“

”آپ کو ایسا ہی ہونا چاہئے تھا سب سے جدا سب سے منفرد آپ سادہ اور پروقار شخصیت کے مالک ہیں“

بہار کی آمدنی لاہور میں بسنت میلے کا انعقاد ہو رہا تھا اس میلے میں ملکی اور غیر ملکی مندوبین فنکار اور دوسرے لوگ شرکت کر رہے تھے کامران نے اپنے میگزین کے لئے اس میلے کی جشن بہاراں کے نام سے روداد بمعہ تصاویر اور فنکاروں اور لوگوں کے تاثرات سمیت شائع کرنے کا پروگرام بنایا اور تا حوال کی تبدیلی کے خیال سے خود ہی اس کام کے لئے لاہور چلا آیا بسنت میلے اپنے پورے جوہن پر تھا اس نے فنکاروں سے میلے میں شریک غیر ملکی مہمانوں سے انٹرویو کئے آسمان نیلی پکلی لال ہری ارغوانی پتنگوں سے سجا ہوا تھا بوکا ناٹو کا ناکی آوازیں دھول کی تھاپ بیوزک کا بچان انگیز شور لڑکیوں کے شور لباس، بسنتی جوڑے گیندے کے پھولوں سے سجے ہاتھ اور بال ٹفرنی قمقمے لڑکیوں جو انٹوں اور بوڑھوں کا جوش و خروش تھے اور بچپن کے کھانوں کی خوشبو میں جو جابجا لگائے گئے اسٹالوں سے اٹھ رہی تھیں ماحول کو بہت حسن اور جوش بخش رہی تھیں ہر چہرہ رنگین ہو رہا تھا سب لوگ کل کے مسائل سے بے خبر اندھا دھند روپیہ بہا کر خوش ہو رہے تھے اچھل رہے تھے تانچ گا رہے تھے اور کامران اس سارے نظارے کو کورج کرتے کرتے جت تھکت گیا تو ایک طرف سب سے الگ تھلک کھڑا ہو کر آسمان پر اڑتی پتنگوں کو تنگ لگا۔

”ایسا لگتا ہے جیسے ان لوگوں نے کبھی کوئی غم نہ دیکھا ہو کوئی درد نہ سہا ہو کتنے خوش ہیں یہ سب اور ایک میں ہوں کہ اس بھرے میلے میں بھی ایسا ہوں مدتیں ہوئی جبر کے غم سب سے مگر اس دل کی خانہ دہانی ہے کہ جانے کا نام ہی نہیں لیتی کاش یہ لوگ ہمیشہ اسی طرح جتنے مسکراتے رہیں میری طرح نہ کسی کو کوئی غم ملے۔“ کامران نے لوگوں کی طرف دیکھتے ہوئے دل میں کہا۔

”تمہارے کامران المعروف کامی صاحب اسے یہ نقش سنوانی آواز سنائی دی تو اس نے بری طرح چونک کر دیکھا اور ایک لمحے کو دیکھتا ہی رہ گیا۔“ کوئی اس کی ہند لڑکی تھی اس نے زاد اور تاریکی رنگ کی ساڑھی زیب تن کر رکھی تھی ہاتھوں میں گیندے لگائے تھے تھے تھے پر بند یا لگی تھی بلکہ میک اپ میں اس کی ہندی رنگت دسک رہی تھی بالوں کی کسی سی چٹیا میں اس کے بھولے تھے جو اس نے آگے ڈال رکھی تھی سیاہ آنکھوں میں شناسائی کے رنگ لئے وہ اس کے آگے بڑھے محسوس مانداز میں ہاتھ باندھے کھڑی تھی۔

”سیلو“ کامران نے دوسرے پل خود کو نائل کرتے ہوئے کہا اور نگاہ دوبارہ لوگوں کی جانب مبذول کر لی۔

”آپ کامران کاظمی ہیں ناں کہانیاں لکھنے والے۔“ اس نے تصدیق چاہی۔

”ہاں۔۔۔ وہ اس کی جانب دیکھے بغیر بولا۔

”میں آپ کی کہانیاں بہت شوق سے پڑھتی ہوں اور آپ کی بہت مداح ہوں میں نے آپ کی ساری کہانیاں بہت پریم سے سنبھال کے رکھی ہیں۔“ وہ بہت خوشی سے بتا رہی تھی اب کی بار کامران نے چونک کر اس کے چہرے کو دیکھا اور پوچھا۔

”کیوں؟“

”کیونکہ میں آپ سے پریم کرتی ہوں اور جن سے پریم ہونا کی ہر چیز سے بھی پریم ہوتا ہے اور وہ سنبھال کر رکھنے کو بھی من چاہتا ہے۔“ اس لڑکی نے نظریں جھکا کر ساڑھی کا کونہ انگلی کے گرد لپیٹتے ہوئے شرمیلے پن سے کہا تو وہ چند لمحے بوٹ کا شمار اسے دیکھتا رہا پھر بولا۔

”کیا نام ہے تمہارا؟“

”وہ مدلل لہجے میں بولی۔

”ریکھا! آپ مجھے حیران ہی نہیں پریشان بھی کر رہی ہیں۔“ کامران نے بھاری لہجے میں کہا۔
 ”میں تو آپ کو صرف خوش کرنا چاہتی ہوں! پیار کرنا چاہتی ہوں! آپ نے پہلی ملاقات میں مجھے تم کہہ کر
 مہربان بڑھایا تھا! تکلف میں بے تکلفی کا راستہ بنایا تھا! اب کیوں آپ کے کہے جارہے ہیں مجھے اپنا آپ
 اپنی محسوس ہو رہا ہے ایک ایسے کی زبان سے آپ سن کر اپنی ہی لگے گا! میں تو یہ اجنبیت مٹانا چاہتی ہوں!
 آپ مجھے اپنے جیون میں شامل کر لیں! میں آپ کے سارے دکھ درد سارے غم آپ پریم بھرے جسم و جاں
 میں جذب کر لوں گی! اپنے وجود کی ساری آسودگیاں آپ کے نام کر دوں گی! اپنا آپ پوری سچائی سے آپ کو
 سونپ دوں گی! بس ایک بار ریکھا کو اپنے ہاتھ کی ریکھا بنائیں۔“ وہ بہت سچی محبت بھرے لہجے میں بول رہی تھی
 اور کامران کے اندر محبت کے سرکش بودے پھر سے سر اٹھانے کی کوشش کر رہے تھے اس نے گھبرا کر ریسیور
 لٹریڈل پر رکھ دیا! اس کے بعد بھی کھنسی مسلسل جیتی رہی مگر اس نے فون اٹینڈ نہیں کیا کہ خطرے کی پہ گھنٹی اس کے
 اندر بھی مسلسل بج رہی تھی! دل کے قبرستان میں بنی قبروں میں اسے ایک اور قبر کا اضافہ ہوتا دکھائی دے رہا تھا!
 ٹھیک دو دن بعد ریکھا کامران سے ملنے اس کے آفس چلی آئی اب کی بار اس کے لب و لہجے میں نگاہ میں انداز
 انشیت میں حیا اور حجاب کے نگاہ نمایاں تھے پہلے سے زیادہ کے وہ تو اظہار محبت اقرار و وفا اعتراض الفت
 کر چکی تھی۔

”ریکھا! تم دیوانی ہو۔“ کامران نے اس کے سندر سرائے کو دیکھتے ہوئے کہا۔

”کسی اور کی نہیں صرف آپ کی دیوانی ہوں! تو میرے من مندر کے دیوتا ہیں میں آپ کی پجاری
 آپ کی دای بن کر آپ کے جیون میں بڑی رہوں گی! فقط ایک بار مجھے اپنے پریم کا اعتبار دے دیں!
 باقی مجھے اپنے جیون میں شامل کر لیں میں آپ سے سب کچھ کر سکتی ہوں! میں تو صرف آپ کی سیوا کرنا
 چاہتی ہوں آپ کے جیون میں میری بے کل روح کو شامی سے لگا۔“ ریکھا نے سنجیدہ لہجے میں کہا۔

”شناختی ہی تو نہیں ملتی ریکھا! نہ ستارے ملتے ہیں نہ پیارے ملتے ہیں! اور میرا میل تو یوں بھی ناممکن
 ہے تمہارے اور میرے بیچ مذہب کی تفریق ہے ملک اور مذہب بدلنا آسان نہیں! ہال محبت بدلنا پھر بھی
 آسان ہے مذہب کے بدلنے سے۔“ کامران نے اس کی من موئی صورت دیکھتے ہوئے کہا۔

”کامی جی! میرے لئے سب آسان ہے سوائے محبت بدلنے کے میں جو مقام آپ کو اپنے من میں دے
 بتلی ہوں وہ کوئی دوسرا بندوق یا دولت کے زور پر بھی نہیں لے سکتا! رہی بات مذہب کی تو جب سے میں نے
 آپ سے پریم کا ٹھوک باندھا ہے آپ کے مذہب سے بھی ناطہ جوڑ لیا ہے! ادھر ممی اور کلکتہ میں میری ایک
 ملان سہیلی سعید ہے میں نے اس سے اسلام کے متعلق کتنا ہیں اور لٹریچر لے کر پڑھا ہے! میں آپ کے
 مذہب کو آہستہ آہستہ بھڑھ رہی ہوں اور اس نتیجے پر پہنچی ہوں کہ اللہ کو ماننے والے اسلام کے ماننے والے ایک
 بصورت مذہب کے پجاری خود بھی خوبصورت ہوتے ہیں! ان کے من میں کوئی میل کوئی کھٹ نہیں ہوتا! کامی
 جی! آپ اچھے آپ کا مذہب سب سے زیادہ اچھا! میں اس اور محبت کے اس مذہب کو من کی آشا کے ساتھ
 اپنا چاہتی ہوں۔“ وہ اس کے سامنے انکشاف ہی تو کر رہی تھی اور وہ حیران ہو کر سوچ رہا تھا کہ محبت کیا ہے
 ! وہ نہ پن جنون ہی تو ہے محبت کے کرنے والا ہر سو دوزیاں سے بے نیاز ہو کر اس خاردار جنگل میں بے
 وف و خطر اتر جاتا ہے۔

میں سمجھی تھی کہ آپ کو تو ڈھیروں لوگ چاہتے ہیں تو آپ بہت مغرور ہوں گے مگر آپ تو ذرا بھی مغرور نہیں ہیں!
 اپنی کہانیوں میں تو پیار کی بات کرتے ہیں پر حقیقی زندگی میں پیار کرنے سے ڈرتے ہیں کیوں کامی صاحب!
 ریکھا خود ہی چند لمحوں بعد خود کو سنبھالتے ہوئے بولی۔

حقیقت میں چھین جانے کا ڈر ہوتا ہے! ریکھا بی بی! جبکہ کہانی میں ہم خود اپنی مرضی سے محبت کا ملاپ دکھا سکتے
 ہیں کہانی کا انجام خوشگوار دکھا سکتے ہیں اب تم جاؤ میلڈ انجوائے کرو مجھے بھی کام کرنا ہے۔
 ”میں کراچی آؤں گی آپ سے ملنے۔“ ریکھا نے اسے سگریٹ سلگاتے دیکھ کر کہا تو اس نے فضا میں دھواں
 چھوڑتے ہوئے اسے دیکھا اور نرمی سے بولا۔

”میں تمہیں کبھی نہیں مل سکوں گا تم ناخن اپنا وقت اور سحر کھونا کر رہی ہو تمہاری میری راہیں جدا ہیں مل کر بھی
 جدا ہونا ہی ہمارا مقدر ہے اس لئے فضول کام میں وقت ضائع مت کرو جاؤ سنت انجوائے کرو اور پلٹی خوشی اپنے
 دیں واپس جاؤ۔“

”پلٹی نہ تھی! آپ کے پیار کا آپ کے پریم کا اقرار سن کر ہی جاسکوں گی! میں تو آپ کی تصویروں سے
 دن رات باتیں کرتی ہوں آپ کے میگزین سے میں نے آپ کی تصاویر اکٹھی کر کے فریم کرائی تھیں! سوتے
 جاگتے میرے سر ہائے آپ ہی آتے ہیں! میں تو اپنی ساری حیاتی کے قدموں میں رہ کر بسر کرنا چاہتی
 ہوں۔“ ریکھا نے دم اور شریں لہجے میں کہا تو وہ چند لمحے اسے دیکھتا رہا سگریٹ پھونکنے پر پھر فضا میں سگریٹ کا
 دھواں چھوڑ کر آگے بڑھ گیا۔

”تم سناؤ میرے ماننے نہ ہی جیارا
 بیابا بولے جی! سن کا پتہ لرا“

ٹیپ ریکارڈ سے نغے کے بول فضا میں بھر رہے تھے! وہ کھاتے جاتے کامران کو حسرت اور محبت سے تنگ
 رہی تھی جو خود کو اندر سے مضبوط رکھنے کی کوشش میں ایک بار پھر زخمی ہو گیا۔
 ☆☆☆☆

تیسرے دن وہ کراچی اپنے آفس میں بیٹھا تھا جب ریکھا کی طرف سے اسے ایک ریویٹ واپج موصول
 ہوئی! اور تھوڑی دیر بعد ریکھا کا فون بھی آگیا۔

”السلام علیکم کامی صاحب!“ ریکھا نے اسے سلام کیا تو وہ حیران ہو کر بولا۔

”آپ سلام کب سے کرنے لگیں؟“

”جب سے آپ سے پریم کرنے لگی ہوں جب سے آپ سے ملی ہوں۔“

”یہ گھڑی کا تکلف کس لئے ہے؟“ کامران نے بھاری اور گھمبیر لہجے میں پوچھا۔

”اس تکلف کو مٹانے کے لئے جو آپ کے اور میرے بیچ حائل ہے۔“

”چیزوں سے تکلف کی دیواریں نہیں گرا کرتیں۔“ کامران نے کہا۔

”صحبتوں سے تو گرا کرتی ہیں ناں اور چیزیں بھی ان کو دی جاتی ہیں جو محبتوں کے قابل ہوں۔“ ریکھا نے
 بہت سنجیدگی سے جواب دیا۔

”ریکھا بی بی! آپ غلط دروازے پر دستک دے رہی ہیں! صحیح دستک پر دروازہ نہ کھولنے کی غلطی کر رہے
 یہ بھی تو ہو سکتا ہے کہ آپ درست سائل کو ٹھکرا رہے ہوں! صحیح دستک پر دروازہ نہ کھولنے کی غلطی کر رہے

”ریکھا! تمہارے گھر والے جانتے ہیں کہ تم“۔

”نہیں جی! جس دن وہ جان گئے تھے مجھیں کہ وہ دن میرے چوں کا آخری دن ہوگا میرے مانتا تھا تو کٹر ہندو ہیں پر میرے من میں تو آپ کے پریم نے اور ہی روشنی بکھیرنی شروع کر دی ہے اور آپ کہتے ہیں کہ میرے ہاتھوں میں آپ کے نام کی ریکھا نہیں ہے لیکن نہیں ہے تو دیکھیں کامی جی! میں آپ کا نام خود اپنے ہاتھ پر لکھ سکتی ہوں۔“ ریکھا نے سنجیدگی سے کہا اور اپنا بایاں ہاتھ اس کے سامنے کھول دیا کامران اپنا نام اس کی دل اور زندگی کی لائن پر کندہ دیکھ کر ششدر رہ گیا۔

”یہ پریم نے کیا کیا ریکھا تمہیں بہت تکلیف ہوئی ہوگی تاہم نام لکھتے ہوئے“۔

”تکلیف کیسی کامی جی! مجھے تو ایسا لگا جیسے میں نے اپنی پھٹی پر کامی کے نام کے گلاب اور موتیے کھلا دیئے ہوں ان کی خوشبو سے من مہکتا ہے روح کو سرور ملتا ہے اور پتا ہے کامی جی! میں نے تو آپ کا نام اپنے دل کے مقام پر بھی لکھا ہے پر دکھانے سے لاج آتی ہے۔“ ریکھا نے شریلے پن سے کہا اور شرما کر تیزی سے وہاں سے اٹھ کر بھاگ گئی کھارن کی بیوی دیر تک غم مسم ہٹھا رہا۔

”میں بڑھ کر تمام لوں تیری محبتوں کو مگر

تقدیر کے ظلم و ستم مجھ کو باز رکھتے ہیں“

”میں کس قدر خوش نصیب ہوں کہ مجھے اتنی بے ریا بے لوث بے غرض محبتیں ملیں اور مل رہی ہیں مگر میری محبت میری قسمت کی قسم نظر لی ایسی ہے کہ مجھ سے پیار کرنے والی ان پیاری ہستیوں کو مجھ سے چھین لیتی ہے ہمیشہ کے لئے میں اتنا رو رہی ہوں اب ریکھا کی محبت کی شدت ہے اس کے جذبے میں کہ مجھ جیسا محبت سے نفرت کرنے والا دل و فکر شخص بھی ایک بار اندر سے بدل کر رہا ہے اور اپنی قسمت کو ایک بار پھر آزمائے کی ٹھان رہا ہے، کیا خبر اس بار دیو یا نہ ہو میرے ساتھ جیسا اب ہو چکا ہے۔ کامران نے دل میں سوچا اور اس کی تمام تر خوشنصیبیاں چلی گئیں وہ خود کو ریکھا کے خیال سے آڑ کر لکھنے لگیں کہ پیار سے انکار کر سکا اس کے ہونٹوں پر ایک بار پھر محبت کا لفظ بہت حلاوت کے ساتھ ابھرنے لگا تھا وہ ان ہونٹوں میں ایک بار پھر پیار کے سنے چکارا تھا، دل میں ایک بار پھر چاہت نے سراٹھایا تھا وہ ریکھا سے ملنے بات کرنے کے لئے بے کل بے کل رہنے لگا تھا، اور ریکھا اپنی محبت کی شدتوں سے اسے اپنا بنا کر واپس بھیجی چلی گئی مگر جانے سے پہلے اسے اپنا ایڈریس اور فون نمبر خط میں لکھ کر دے گئی تھی اور اس کی دی ہوئی گھڑی کامران نے اس کے جانے کے بعد اپنی کلائی پر باندھ لی تھی اب اسے ہر گھڑی ریکھا سے ملنے کی آرزو رہنے لگی تھی ریکھا کے خط محبت سے بھرے خط اسے متواتر موصول ہو رہے تھے مگر وہ اب تک اس سے اپنی ہار کا اپنی شکست کا اعتراف نہیں کر پایا تھا اسے بھی خوابوں میں اپنے سنگ ریکھا دکھائی دینا شروع ہو گئی تھی وہ حقیقت میں اس کے ساتھ کی خواہش کا اظہار کرنے سے گھبرا رہا تھا، چھ ماہ سے وہ ریکھا کی محبت میں گرفتار تھا آج جب ریکھا کا خط موصول ہوا تو جیسے اسے ساری کائنات کی خوشیاں مل گئیں ریکھا نے اسے خط میں اپنے مسلمان ہونے کی نوید سنائی تھی تو بھلا وہ کیسے خوش ہوتا اس کا خط مختصر مگر محبت سے مزن تھا اس نے لکھا تھا۔

”میرے کامی جی! آداب! بلکہ السلام علیکم! میں آپ کے عشق میں تو پور پور ڈوبی ہی تھی آج آپ کے مذہب میں بھی شامل ہو گئی ہوں میں اسلام کی محبت میں مسلمان ہو گئی ہوں میری پہلی سعیدہ کی دادی نے مجھے کلمہ پڑھا کر دائرہ اسلام میں شامل کر لیا مجھے نماز پڑھنا سکھائی ہے سعیدہ کی دادی حافظ قرآن ہیں ابھی میرے

مسلمان ہونے کی خبر صرف اللہ کو ہے میرے گھر والوں کو پتا چلا تو شاید کسی کو میرا پتا نہ چلے میں نماز صرف فجر اور عشاء کی پڑھ پاتی ہوں تو ابھی چھپ چھپ کر کمرے کا دروازہ اور کھڑکیاں بند کر کے جب سب سو رہے ہوتے ہیں تو میں جاگ رہی ہوں سجدے میں جو سکون ملتا ہے وہ بتوں کے سامنے ہاتھ جوڑنے میں کہاں؟ آپ کو جب مخصوص کرنی ہوں خوشی اور سکون کی لہر میرے تن میں سرایت کر جاتی ہے کامی جی! کتنے مہینے ہو گئے آپ کے درشن نہیں ہوئے من کی آنکھ تو آپ کو ہر لمحہ کھلتی رہتی ہے ریکھا آپ کے من کی آنکھ میرا عکس دیکھتی ہے کہ نہیں؟ میں بھی کتنی پاگل ہوں پیار کی طاقت کو دایمان سمجھتی ہوں مجھ تو آپ کے سامنے احتراماً ہاتھ بائیں سے کھڑی ہوں کامی جی! ان ہندو ہاتھوں کو آپ کے ہاتھوں کا لمس آپ کی محبت کب نصیب ہوگی ان آنکھوں کو دیدار کب نصیب ہوگا؟ آپ کی محبتوں میں رزواں دواں صبرت آپ کی ریکھا جس کا مسلم نام آپ رکھیں گے اب اجازت جواب کی ازل سے منتظر آپ کی پریمی آپ کی واسی۔

”ریکھا! تم تو سب پر نازی لے گئیں نسبت کو پیچھے چھوڑ گئیں جب تم لڑکی ہو کر اپنی جرأت و محبت کا مظاہرہ کر سکتی ہو تو دل سے دھوکا دے کر اپنے جذباتوں کی تکمیل اس کے اظہار سے کب تک غمہ موٹے رکھوں اب نہیں ہاں اب نہیں میری جان! میری زندگی میں تمہارا ہونا تم سے ملنے کے لئے تڑپ رہا ہوں تمہاری دید کو آنکھیں ترس رہی ہیں تمہاری محبت میں ہر لمحہ ڈوب چکا ہوں میں آ رہا ہوں میری جان! میں بہت جلد آ رہا ہوں تم سے ملنے تمہیں اپنانے اور اپنے ساتھ لانے کے لئے میں اگلے ماہ کی سولہ تاریخ کو تمہارے ملک تمہارے شہر آ رہا ہوں اور تمہارا مسلم نام ”نسب“ تجویر کر رہا ہوں اس سے مقدس نام بھلا اور کیا ہوگا تو میری زندگی اپنا خیال رکھنا میرا انتظار کرنا میں بہت خوش ہوں اور میرے دل پیار آ رہا ہے جسے میں تم پر بھروسہ کرنے کے لئے بے تاب ہو رہا ہوں جب تم میری ہو کر میرے نام سے یہ شہر کو رونق بخشنے کے لئے ہمیشہ کے لئے میرے پاس آ جاؤ گی تب میں وہاں گزرے محلوں کی بے فراہیوں اور بے جیجیاں تم پر عیاں کروں گا اپنی محبتوں کے سارے موسم تم پر بھروسہ کر دوں گا، بس وہ وقت آئے گا اور میرے لئے تم تو خوشی اور حیا سے فوق رنگ ہو گئیں میں تمہیں دیکھ رہا ہوں تمہارے رخساروں پر پھیلی لالی تمہارے چہرے کے حسن کو اور بھی نکھار دیا ہے، اور جب تم میرے پاس ہو گی تب تو اس حسن میں قیامت کی حد اضافہ ہو جائے گا بے ناچلو اب خوشی خوشی میرا انتظار کرو میرے سنگ خوابوں کی وادی کی سیر کرو اور ہونٹوں کو شکر کا نغمہ گانے کے خوالے لے کر آ نکھیں موندو میں آؤں گا اور تمہیں پیار سے جگا کر حقیقت میں اپنے سنگ اپنی محبت کی وادی میں لے آؤں گا۔ تم سے ملنے کے لئے بے تاب صرف تمہارا کامی۔“ کامران نے ریکھا کے خط کا جواب لکھ کر پوسٹ کر دیا خوشی سے اس کا روم روم جھوم رہا تھا محبت نے اسے پچھلے سارے غم بھلا دیئے تھے مگر پھر بھی وہ سرخوشی کی پھیل پر آہستہ آہستہ قدم یوں رکھ رہا تھا کہ جیسے اس کے پاؤں پٹی نیند میں ہوں اور ذرا بھاری قدم رکھے گا تو پانی ٹوٹ جائے گا اس کے خط کے جواب میں ریکھا کا مسرت نامہ فوراً ہی آ گیا اس نے لکھا تھا۔

”کامی جی! میرے کامی جی! آپ نے مجھے اپنے پریم کی سوغات کیا بھیجی ہیں تو ہواؤں میں اڑنے لگی ہیں سجدہ شکر ادا کرتے میری پیشانی نہیں ٹھکتی میرے من کی ساری آشتائیں کامنا میں جیسے آپ کا پریم ملنے سے پوری ہو گئی ہیں بس اب آپ کی دید کی بے کٹی طاری ہے سعیدہ! میری بے کٹی اور خوشی دیکھ کر ہستی ہے کہتی ہے تو پیار کی دیو کی ہے تیرے پیار پر تو خود پیار بھی رشک کرتا ہوگا اور کتنا خوش نصیب ہے وہ شخص جسے تیرے پیار کی دولت ملے گی پردہ کیا جانے کے خوش نصیب تو میں ہوں جسے آپ کے پیار کی دولت ملی ہے اپنی پھٹی پر

لکھے آپ کے نام کو میں دن میں سینکڑوں دفعہ چومتی ہوں مانتے سے لگاتی ہوں سب سے چھپاتے چھپاتے بھی ایک دن مانتا جی کی نظر پڑی گی پوچھنے لگیں۔

”یہ تیرے ہاتھ پر کیا لکھا ہے؟“ میں نے کہا۔

”ماتا جی! یہ پریم دیوتا کا نام ہے جو بھی اس کو دیکھے سنے بڑھے اور سوچے وہ اسی کا ہو جاتا ہے اور اسے پریم کرنے اور خوش باس رہنے کا ہنر آ جاتا ہے ماتا جی! جو اب مجھے ابھی ابھی اور کھوجتی نظروں سے ہٹتی رہیں اور میں آپ کے نام کو آج کل ہر لمحہ میں خفیہ مینگلز ہونے لگی ہیں میرے صبح و شام کی مصروفیات بقول پتا جی حرکات پر نظر رکھی جا رہی ہے کیونکہ پچھلے جمعے میں نے خطیب کا خطبہ جو قریبی مسجد سے لاؤ ڈاؤن کیا کے ذریعے گھر تک آ رہا تھا بڑے انہماک سے سنا تھا اور درود پاک پڑھتے ہوئے مجھے یہ دھیان ہی نہیں رہا تھا کہ پتا جی! اسانے حقہ لئے بیٹھے ہیں اور اخبار میں میرا چہرہ بڑھ رہے ہیں خبریں بھی کیا باتیں لے بیٹھی جب پیار کیا تو ڈرنا کیا! میرے من سے خوف خدا کے سوا کسی خوف کی صدا نہیں اٹھتی اور من آپ کے سوا کسی کے پیار میں نہیں جھومتا جس آپ آ جائیں تو میری دل کو کشتا قتل مل جائے گی آپ کے آنے کا پڑھ کر ایک ایک پل کا حساب رکھنے لگی ہوں ہر ہر آہٹ پر من یوں زور سے دھڑکتا ہے کہ جیسے آپ آ گئے ہیں میرے مانتا ہے تو آپ سے ہمدست ملے میں سرسری سے ملے تھے اب کوئی طرح نہیں گے میری سمجھ میں نہیں آ رہا اور میں سمجھنے کی کوشش بھی کیوں کروں آپ کس لئے ہیں یہ مسئلہ خود ہی سمجھنے کا اور مجھے اپنے سنگ بیاہ کر لے جائے گا! آپ بھی ہنسنے ہوں گے کہ یہ دیوانی لڑکی تو دن میں بھی سنے دیکھنے کی سیکھاتی ہے جب سے آپ کو دیکھا ہے تب سے دن میں بھی آپ کے سنے دیکھنے لگی ہوں آپ کا محبت بھرا جملہ سنے تو ہر لمحہ کالہ چل رہے ہیں آپ کا ہاتھ اپنے ہاتھ پر محسوس کرنے کو میرا ہاتھ باوجود رہنے لگا ہے آپ کی صورت دیکھنے کے لئے میرے آنکھوں کے آنے صاف شفاف ہو گئے ہیں آپ آ رہے ہیں ناں میرے من کا چین بن کر میرے من کے رانج بن کر میری ساری محبتوں کے خزانے آپ پر خالی ہونے کے منتظر ہیں آپ کی منتظر آپ کی زینتی زینب جیسا پیارا نام آپ نے مجھ پر کیا اب تو میرا نام بھی آپ کا رکھا ہوا ہے اب تو آپ اپنے نام کی حفاظت خود کریں گے سعدیہ مجھے یہ سہجائی کہنے لگی ہے پر سب آپ کا رکھا ہوا ہے اب تو آپ اپنے نام کی حفاظت خود کریں گے سعدیہ مجھے یہ سہجائی کہنے لگی ہے پر سب کے سامنے نہیں کہتی میری محبت میرا مذہب دونوں ہی خفیہ عشق بن گئے ہیں پر سب کے سامنے بدل تو نہیں جانا نا یہ سچ ظاہر ہو کر بھی سچ ہی رہے گا! آپ کے میرے پیار کے جیسا سچا گھر اور ہر اماں جہرہ ہوں اب آپ آ جائے کہ نگاہیں پھول بجھائے ابھی سے راہ نکلنے لگی ہیں۔ والسلام صرف آپ کی زینب کا مران۔“

”ہاں زینب تم میری ہو جب میں نے تمہارا نام رکھا ہے تو تمہیں بھی میرا نام اپنے نام کے ساتھ لکھنے کا جوڑنے کا حق حاصل ہے اور میں تو ویسے بھی حق اب تمہیں دینے آ رہا ہوں یہ نام تمہارا ہی تو ہے کا ہی سمیت۔“

کا مران نے اس کا خط بند کرتے ہوئے پر مسرت لہجے میں کہا ابھی اس کے جانے میں ایک ہفتہ باقی تھا کہ اسے دیکھا تو مسلم زینب کی پہلی سعدیہ کا خط موصول ہوا وہ خط کیا تھا قیامت نام تھا اس کی موت کا پروانہ تھا ایک خنجر جو اس کے سینے کے آ رہا ہو گیا تھا ایک تیر تھا جو اس کے دل میں پیوست ہو گیا تھا سعدیہ نے لکھا تھا۔

کا مران صاحب السلام علیکم! میں سعدیہ ہوں آپ کی دیکھا آپ کی زینب کی سہیلی اور ہمرازہ دوستی خوش تمہارے آپ کی آمد کا خط پڑھ کر اس کے لئے ہنسی کا لفظ لکھتے ہوئے میرا ہاتھ کانپ رہا ہے آنکھیں مسلسل آنسوؤں میں ڈوب رہی ہیں وہ اب دیکھا جسے آپ کی محبت نے مذہب اسلام کی محبت بھی عطا کر دی تھی جو دیکھا ہے زینب بن علی تھی جو بتوں کے آگے ہاتھ جوڑنے کے بجائے خدا کے آگے اللہ کے حضور اپنا ہاتھ لگنے لگی تھی وہ

لڑدی گئی زمین بوس ہوئی اور اس کی را کھ دریاے گنگا میں بہادی گئی وہ را کھ را کھ کر دی گئی آپ کی محبت آپ کی سب کے گھر والوں کو علم ہو گیا تھا کہ وہ مسلمان ہو چکی ہے اس لئے اس کے مانتا نے پہلے تو اسے بہت مار پیٹا۔ وہ مذہب تبدیل کرے دوبارہ ہندو ہو جائے مگر وہ نہیں مانی اس کے تایا کے سینے پر مل داس سے اس کی شادی نے کی کوشش کی گئی مگر اس نے انکار کر دیا وہ کہتی تھی کہ میں کامی کی سچ پر نہ بیٹھ سکتی تو کسی ہرمل کرل داس کی سچ نہ بیٹھ نہیں دیکھ کے کی میرا مذہب میری محبت ہے اور میری محبت میرا مذہب ہے میں سنسار چھوڑ دوں گی لیکن یہ پیار نہیں چھوڑوں گی اور وہ بھی یہی وہ اپنا کچھ ثابت کر گئی آج کل ملک میں ویسے ہی ہندو مسلم اور عیسائی اماندات زور و شور سے ہو رہے ہیں بھارت کے سیکولر ازم ہونے کا بھاٹڑا پھوٹ رہا ہے فسادات کی اسی لہر میں سب کی زندگی کی کشتی بھی بہہ گئی ہرمل داس نے اس سے زبردستی شادی کرنا چاہی اپنے آوارہ اور کٹر ہندو متوں کو لے کر اس کے گھر آ گیا اسے اغواء کرنے کی کوشش کی مگر وہ اپنے گھر سے ایک قدم باہر نکالنے کو تیار نہ ملی اس کے مانتا نے بھی ایک نہ چلی آخر کار زینب کو مسلمان ہونے کے جرم میں گولیوں سے پھانسی کر دیا گیا۔

مل داس نے اپنی طاقت اور بے عزتی کا بدلہ اسے موت کے گھاٹ اتار کر لے لیا قریب کے مسلمان گھروں میں آگ لگادی ہلاک کر دی جل گیا ہم بھٹکل جان بجا کر اپنے ماموں کے گھر نکلے بیٹھے تھے زینب نے آپ کے سارے افسانے رسالے آپ کی تصاویر اور خط پتھے بطور امانت دے دیئے تھے تاکہ کوئی آپ تک نہ پہنچ سکے آپ کو نہ نقصان پہنچ سکے نہ کسی لاش پر بھی جھگڑا ہوا مسلمانوں کا کہنا تھا کہ جب اسے مسلمان ہونے کے جرم میں قتل کیا گیا ہے شہید کیا گیا ہے تو اسے جلانے نہیں دیں گے اسے پورے اسلامی طریقے سے غسل کر دیا میں گئے اس کی نماز جنازہ پڑھا اس کے اس بات پر اور زیادہ ہنگامہ ہوا ہرمل داس نے اپنے مانتوں کو ساتھ ل کر زینب کے والدین کو گھر سے باہر نکالا اور زینب پر مٹی کا تیل پھینک کر آگ لگادی ہاں اب وہ تو کب کی اپنے بدن سے نکل کر آسمانوں پر روانہ ہو چکی ہے آگ کیا کہتی وہ تو خود کہتی تھی کہ مجھے من میں تو عشق کی آگ جل رہی ہے یہ لوگ مجھے کیا آگ لگا دیں گے مجھے یہ ساری باتیں میرے بھائی جان نے بتائیں کچھ محلے والوں نے جو اس حادثے کے وقت وہاں موجود تھے میرا مطلب کی عظمت بہادری اور بات قدی کو وفاداری کو سلام پیش کرتی ہوں اور آپ سے دلی تعزیت کرتی ہوں کہ میرے نزدیک یہ دنیا کا سب سے اذیت ناک کام ہے کہ آپ کسی کو اس کے پیارے کے انتقال کی خبر سنائیں میں نے سنا ہے کہ کب تک نبی کے لئے روتی رہوں فاتحہ خوانی کرتی رہوں مگر میری دلی دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ آپ کو صلہ اور صبر عطا فرمائے میں نے اس کی امانت آپ کے خطوط تصویروں اور کہانیوں کو جلا کر مٹی میں دبا دیا ہے زینب کی قبر بنادی ہاں میں اس قبر پر پھول بھی چڑھاتی ہوں فاتحہ خوانی بھی کرتی ہوں آنسو بھی بہاتی ہوں وہ را کھ خاک ہو کر آسمان پہنچ گئی ہے وہ زندہ ہے ہمارے اور آپ کے دلوں میں مرتے وقت اس کی زبان پر کلمہ شہادت تھا اللہ کا نام تھا اور آپ کا نام تھا وہ حق ہند کی حق دوستی حق عاشقی ادا کر کے سرخرو ہو گئی اب ہمیں اس سے حق دوستی اور حق عاشقی ادا کرنا ہے اس کے لئے قرآن پاک پڑھنا ہے اس کی روح کو اس کا ثواب پہنچانا ہے اللہ تعالیٰ ہمارے دلوں میں صبر پیدا فرمائے آمین والسلام آپ کی شریک عم سعدیہ۔ خط اس نے کس حوصلے سے پڑھا یہ وہی مانتا تھا ہاں مگر خط پڑھنے کے بعد اس میں اپنی جگہ ہے اٹھنے کا حوصلہ نہ رہا اس کے لان میں جیسے زلزلہ سا آیا تھا وہاں ڈھیر ہو گیا اس کے حواس ساکت ہو گئے غم کا پہاڑ ٹوٹا تھا اس کے تن خستہ پر۔ پورے چھ دن بعد وہ اٹھ آئی تھی اس پر نروس بریک ڈاؤن کا شدید حملہ ہوا تھا اس کے جسم کا دایاں حصہ بازو سے پاؤں تک

لے کر اپنے کے بعد اس کا شیوہ کر دیا ہی تھی تو وہ ٹوٹے پھوٹے لہجے میں غصے سے بولا۔

”تو تم کیوں میری جان کو آگئی ہو؟“
”کیونکہ میں تمہاری جان بچانا چاہتی ہوں۔“ وہ اس کے بولنے پر خوش ہو کر بولی تو وہ معنی خیز لہجے میں

اب کچھ نہیں بجا جانے کے لئے۔

”سب کچھ بچ گیا ہے تم بچ گئے ہو تو سب کچھ بچ گیا ہے اور اگر تم قوت ارادی سے کام لو گے تو چند دن میں
نود سے جلنے پھرنے لگو گے اور اپنی زبان کو قفل لگا کر مت رکھو بولو بے شک غصے میں بولو لیکن بولو تو سہی تمہارا
بدن تمہاری سخت کے لئے تمہاری قوت گویائی کی بحالی کے لئے بے حد ضروری ہے۔“ مریم نے مسکراتے ہوئے

”تم اچھی ہو لیکن میں بولنا نہیں چاہتا۔“

”کیوں بولنا نہیں چاہتے تو اور کیا چاہتے ہو؟“

”مرنا چاہتا ہوں۔“

”پتا ہے میں نے یہ سب کچھ سنا ہے کہ اگر کتنی دعائیں مانگی ہیں تمہاری زندگی کی میرا دل چاہتا تھا کہ
تم زندہ رہو صحت یاب ہو کر کسی خوش بختی سے واپس جاؤ اب تم زندہ ہو تو مرنے کی بات کر رہے ہو تم کو اگر مرنا
دوتا تو تب ہی مر گئے ہوتے ہوش میں ہی اس لئے مگر یہ معجزہ ہے کہ تم زندہ بچ گئے اور تمہیں زندہ دلی سے زندہ
رہنا ہے۔“ وہ اس کے ہاتھ کو سہلاتے ہوئے بولی۔

”محبت مجھے زندہ نہیں رہنے دیتی۔“

”محبت ہی تو آدمی کو زندہ رکھتی ہے زندہ رہنے پر مجبور کر دیتی ہے تم سے کس نے بے وفائی کی ہے؟“ مریم
نے اس کے بالوں میں گھسی کرتے ہوئے کہا۔

”قسمت نے۔“

”تمہارا نام کیا ہے؟“ مریم کو یاد آیا کہ اس نے اب تک اس کا نام تو پوچھا ہی نہیں تھا اور یاد آنے پر پوچھ
ایا۔

”من جوس منخوس۔“ وہ ٹوٹے لہجے میں بولا۔

لو بھلا اتنے من موہنے شخص کا نام منخوس کیسے ہو سکتا ہے؟“ وہ مسکرائی۔

”تو موت سمجھ لو۔“ وہ ڈھکی لہجے میں بولا۔

”موت تو خود تمہارا صبر اور حوصلہ دیکھ کر واپس چلی گئی ہے تم تو زندگی ہو۔“ مریم نے اس کے ہاتھ بچھے
پہرے کو دیکھتے ہوئے نرمی سے کہا۔

”زندگی تو؟“ تم ہو میری زندگی تمہاری دعاؤں سے بچی ہے مگر کاش! تم نے یہ دعائیں کسی اور کے لئے مانگی
تھیں۔“ وہ انک انک کر بولا۔

”تم بھی تو میرے لئے کی اور تھے اب اپنے اپنے سے لگے تو دعاؤں میں شامل ہو گئے یہ بتاؤ کہ تمہارے
لہروا لے کہاں ہیں؟“

”میرا کوئی نہیں ہے۔“

(جاری ہے)

مفلوج ہو گیا تھا اس کی قوت گویائی سلب ہو گئی تھی وہ نیم مردہ حالت میں اسپتال کے آئی سی یو میں پڑا تھا اسے
وہاں کون لایا کوئی نہیں جانتا تھا وہ کون ہے کسی کو علم نہیں تھا البتہ اس کے ہوش میں آ جانے سے ڈاکٹر ز اور نرسوں کو
حیرت اور مسرت ہوئی تھی ان کے خیال میں تو وہ مر ہی چکا تھا چند سانسوں کا ہیر پھیر تھا جو کسی بھی وقت اس کا
روح سے جسم کا رابطہ توڑ سکتا تھا مگر اس کا یوں ہوش میں آ جانا ان کے لئے معجزے سے کم نہیں تھا بچانے وہ کسی
دعاؤں کا ثمر تھا کسی کی دعاؤں میں اتنا تھا کہ اس کے مردہ وجود میں زندگی کے آثار نمایاں ہو گئے تھے وہ ہوش
میں کیا آنا گزریے محلوں کی اذیتوں نے ایک ایک کر کے اس کے ذہن کے پردے پر نمودار ہونا شروع
کر دیا کنول سے زینب تک غم ہی غم تھے دروہی دروہی آنسو ہی آنسو تھے وہ کہ اس کا دل بند ہوئے کو ہو گیا مگر
کسی مسیحا کی دعا نے اسے پھر سے سنبھال لیا اب اسے رونا نہیں آ رہا تھا اسے ایسا محسوس ہو رہا تھا جیسے اس کے
سارے آنسو خشک ہو گئے ہوں سارے لفظ مر گئے ہوں وہ خود بھی تو میری گناہ تھا زینب کی عمر کی ہی اسے یوں لگا
جیسے کنول ایک بلبل پھر گئی ہے اس نے اپنے دل کے قبرستان میں ایک اور قبر کا اضافہ پایا قبر پر زینب کے نام کا
کتبہ لگا تھا۔

”ہوں۔“ کا جواب دے لے چین ہو کر تڑپ کر سردا بنیں بائیں ہاتھ پر چلے۔

”ارے بھئی کیا ہے مجھے بتائیے؟“ سس مریم نے اس کے کندھے پر ہاتھ رکھ کر نرمی سے کہا تو وہ
خالی خالی ویران آنکھوں سے اسے دیکھنے لگا وہ اس کی آنکھوں سے جھلکتے دروہی کی تڑپ کر تڑپ کر گئی اس نے
تو اس کی زندگی کی دعائیں مانگی تھیں دن رات اس کی تیار داری میں گزار دیتے تھے۔

”کنول دیکھا تم نے؟“ میں نے زینب کو ہی اشارہ کیا اس نے اس سے محبت نہیں کی تھی نفرت کی تھی دشمنی کی تھی
اس سے دیکھو آج وہ بھی میری محبت کے اقرار کے لئے میری طرف آ رہی ہے جوڑی محبت کی سوغات لئے میرے
باس آتی ہے کنول! تم اسے اپنے پاس بلا لیتی ہو میری بھالی بھالی خیال نہیں آیا مجھے اتنی ہی شدید محبت
گرتی تھیں کہ کسی اور کو میرے پاس آنے نہیں دے سکتی تھیں تو تم خود بھی چلی گئی تھیں مجھے چھوڑ کر بلا نا ہی تھا تو مجھے
اپنے پاس بلا لیا ہوتا ان بے چاریوں کا کیا قصور تھا؟ جرم محبت کی سزا موت کیوں نہ ہو میری ماور مجھے کیوں زندہ درگور
کر دیا گیا ہے آخر تقدیر مجھ سے کیا چاہتی ہے؟ میں اب بھی محبت نہیں کروں گا میں اب بھی محبت نہیں کروں گا میرا دل مردہ
ہو چکا ہے بہت فریب دیئے ہیں مجھے محبت کے نام پر میری قسمت نے بہت مذاق اڑایا ہے تقدیر نے میرے
جذبوں کا بہت اذیتیں اور تکلیفیں دی ہیں مقدر نے میرے جسم و جاں کو اب مجھے اب نفرت ہے
شدید نفرت ہے اپنی قسمت سے اپنی تقدیر سے جس نے مجھے غم و درد دکھ چھائی اور نارسائی کی کانٹے دار چادر میں
لپیٹ دیا ہے نفرت ہے مجھے ہر چیز سے ہر جذبے سے نفرت ہے اب اگر میں زندہ رہوں گا تو صرف نفرت کے
لئے میری نفرت مجھے زندہ رکھے گی۔“ کامران نے سوچوں کا جال بننے ہوئے گہرا درد بھر اسانس اپنے لبوں سے
خارج کیا۔

اسے آئی سی یو سے جنرل وارڈ میں شفٹ کر دیا گیا تھا نرس مریم اس کی تیار داری پر مسلسل اور مستقل مامور
تھیں وہ اس کی اس قدر توجہ اور دیکھ بھال سے بیزار ہو گیا تھا وہ دوا کھلاتی تو ہاتھ مار کر گرا دیتا کھانا کھلانے لگتی تو
منہ سر ڈھانپ کر پڑ جاتا بلا خر مریم اسے پیار سے اپنائیت اور نرمی سے منانے لیتی اور کھانا لور دوا کھلانے میں
کامیاب ہو ہی جاتی اس کی فربہ تھراپی بھی وہ اپنی نگرانی میں کر داری تھی خود اسے اٹھنے بیٹھنے میں مدد دیتی اسے
بولنے پر اکساتی اس کے بازو اور پاؤں کا مساج کرتی وہ غصے سے اسے گھورتا رہتا اس روز بھی وہ اس کا مساج

عطیہ مری

پھر وہ لڑکی.....!

اسفند بار ٹیپو سیٹھ کی نظریں گاہے بگاہے اپنے سامنے بیٹھی لڑکی کی جانب اٹھ رہی تھیں جس کے ہر انداز میں سادگی اور معصومیت سی تھی۔ ہینسل سے جو انداز میں پیپر پراکچ بناتے وہ ایک پل کو ہینسل

تھے۔ ہر بار کچھ غلط ہو جانے پر وہ کاغذ کو ہاتھوں میں مسل کر ڈسٹ بن کی نذر کر کے پھینک دیتے تھے۔ اسفند یار کی نظریں اب اس کا سر سرری جائزہ لینے لگیں، سفید تانے کے کرتے پر پینک ٹمر کی کوئی اور بلیک ٹائٹ ہاتھوں کو کسی پن اسٹائل میں باندھے وہ اس اپنے کام میں مگن تھی کہ ارد گرد کا ہوش ہی نہ رہا۔ شرجیل کو بھی اس کا انداز مشکوک سا لگنے لگا۔

ڈاکو کے گینگ سے تعلق ہو۔“
”بالکل!“ چائے سرو کرتے سینیٹی اس کے نظریے اور تجزیے سے متفق ہو کر کہنے لگا۔ جیسی شرجیل کا ضبط جواب دے گیا۔
”محترمہ! اتنے وقت میں تو پورے کراچی شہر کا نقشہ بن جائے اور آپ سے ابھی تک ایک معمولی سے کتا کا اچھ نہیں بن پایا۔“
”ارے حد کرتے ہیں آپ بھی یہ کوئی معمولی کتا نہیں ہے۔ میرا ٹیپو شیر سے شیر، ہی از آسو لجر، اپنی جان پر کھیل کر اس نے مجھے غنڈوں سے بچایا



تھا۔

”ہم! ہم۔“ سیفی معنی خیزی سے کھاتے چائے میں شکر کھولنے لگا۔ جب کہ اسفند یار نے فقط گھورنے پر اکتفا کیا۔

”دیکھیں اب ہم نے آپ کی رپورٹ درج کر لی ہے جیسے ہی اس کتے کا آئی مین آپ کے ٹیپو کا پتا چلے گا ہم آپ کو افطار کر دیں گے۔“ شرجیل کا انداز صرف جان چھڑانے والا تھا۔

”ایکریٹیلی یہ تو آپ کا کام ہے پر میں بھی تو آپ کی ہیلپ کر رہا ہوں۔ دیکھیں نہ جب آپ کے پاس اس کی کوئی سوجھ بوجھ ہوگی تو آپ اسے کیسے ڈھونڈیں گے اور یہ سچ تو کہ کپیٹ ہونے والا ہے۔“

”محترمہ! آپ شاید بھول رہی ہیں یہ سب نشان ہے یہاں دن دہاڑے کوئی بچہ بھی کم ہو جائے تب بھی لوگ رپورٹ تک درج نہیں کرواتے اور آپ ایک معمولی کتے کے لیے کیوں اتنی ہلکان ہو رہی ہیں۔“

”ایکسیکو زمی۔“ اس نے تیزی سے شرجیل کی بات کاٹی۔

”میں آپ کو سمجھا چکی ہوں کہ وہ صرف ایک معمولی کتا نہیں پھر بھی آپ مسلسل وہی رٹ لگائے جا رہے ہیں۔ کچھ اندازہ ہے آپ کو کہ میرا ٹیپو اس وقت نجانے کہاں کس حالت میں ہوگا۔ ویسے ٹھیک ہی کہتے ہیں لوگ تم پولیس لوگ بھی تری نہیں کر سکتے۔ سارے کے سارے کرپٹ، رشوت خور، تم لوگوں کی بلا سے کوئی بچے یا مرے۔ پر میری ایک بات کان کھول کر سن لو اگر میرے ٹیپو کو کچھ ہوا۔ یا ایک خراش بھی آئی تو آئی سوئیر..... مجھ سے برا کوئی نہ ہوگا۔“ عنیض و غضب بھرے انداز سے کہتے اسچ میز پر پختی وہ وہاں سے نکل آئی اس کی حرکت پر ٹیپو کے ماتھے پر شکنیں نمودار ہوئیں۔

”ذرا یہ سمجھو! خود ہمارے آرٹسٹ بھروسہ کر کے اسچ بناتے نہ دیا۔ اب خود ٹیپو کے نام پر چوہے سے ملتی جلتی کوئی چیز بنا گئی میرا مطلب کتے کی۔“ اسچ اس کے سامنے رکھتے اس کی گھور پر اس نے اپنے فقررے کی سچ کی، شرجیل اب فوراً اینڈ کرنے باہر چلا گیا تو اس نے سرسری سی ڈالتے وہ بھی شرجیل سے متفق لگنے لگا۔ ابگلے دن پھر سے اس کے رو برو تھی۔

”بہت ڈھیٹ چیز ہے یہ تو، کل کے ایپی ڈکھا کر چلی گئی اور آج پھر منہ اٹھا کر آگئی۔“ اسفند یار انٹر کام پر چائے کا کبہ کر اب تسلی سے اس جائزہ لینے لگا۔ کل کے مقابلے میں وہ آج خانہ فریش لگ رہی تھی۔ بلیک کلر کے رنگین دھماگوں ایمر اینڈری شرٹ اور پنک ٹائٹ میں بالوں کی اونچی پونی باندھے اور گھوڑی کے بیچوں سچ تل لکڑی کا کارڈ اس کی بات پر ٹوٹا۔

”اتنی شہید کی اور توجہ سے آپ مجھے دیکھنے بجائے۔“ اس پر توجہ دیتے تو اب تک یہ محالہ solve ہو چکا ہوتا۔ ”اگلے طرز پر وہ سٹپا ہی شرجیل تو اس کے تکی گھر سے کے سر پر سینگ کی طرح غائب ہوا تھا اور وہ بھی اب یہاں نہ ہونا ہی زیادہ بہتر تھا۔ وہ بالوں پر جل ہانپھر ہو جاتا اور ایسے میں وہ اگر کچھ التا سیدھا دینی تو، تو، میں، میں سے معاملہ بننے کی مزید بگڑ جاتا۔

”اچھولی سرا! میں بہت پریشان ہوں نجانا ٹیپو اس وقت کہاں کس حال میں ہوگا۔ میرے کوئی آپشن ہوتا تو شاید میں یہاں نہ آئی۔ جب کہ میں شہر میں کسی کو نہیں جانتی اس لیے ٹرسٹ بھی نہیں کر سکتی اور پولیس پر تو بالکل نہیں۔“ اسفند یار کے چہرے کے عضلات سے گھٹے۔

”میرا مقصد آپ لوگوں کو آئینہ دکھانا یا بتانا نہیں ہے پر اس کے ہونکوئی چارہ بھی تو سیفی ناک کر کے چائے لے آیا چہرے پر اپنی خیر مسکراہٹ اب اس کے سامنے وہ اسے اپنی نہیں سکتا تھا۔

”کیونکہ میں ٹیپو کے بغیر نہیں رہ سکتی اب آپ طرح ہاتھ پر ہاتھ رکھ کر بیٹھے رہیں گے تو کیسے

”تو آپ چاہتی کیا ہیں۔“ اس نے حتی دان لے کر نازل رکھا۔

”میں بس اتنا چاہتی ہوں آپ چائے تھوڑا کم اس کے ساتھ۔“ سیفی بھی چونک سا گیا۔

”ایک دن میں نوبت یہاں تک پہنچ گئی اتنی بے

”شترمہ میں نے آپ سے آج کا مشورہ نہیں کیا۔“ اب کی بار وہ آواز سخت ہو کر

”لو! مفت کا مشورہ ہے فری ایڈوائس رکھ لیا شاید انداز تھا۔ سیفی کی تو لمبی چھوٹ گئی

”مفت یار کے کن اکھیوں سے دیکھنے پر وہ فوراً

”ایب منٹ میں آپ سیدھے سے بتا سکتی ہیں! اپنے گمشدہ ٹیپو کی رپورٹ ہی درج کرنے آئی میں باغیر ہمارے ڈیپارٹمنٹ کے

ہو گیا۔ جب کہ خود اس کی سی گم ہو گئی۔

”آپ خود کو تو سمجھتی کیا ہیں۔ لڑکی ہیں اس لیے آپ کی یہ ہوا اس ن لی میں نے کوئی اور ہوتا تو اس بکواس پر اس کا وہ حشر کر دیتا کہ۔“ اپنی جگہ سے اٹھ کر اب وہ اس کے سامنے کھڑا تھا۔ دونوں جانب چیخ پر ہاتھ رکھے اب وہ اس کی راہیں مسترد دیکھے وہ اس پر جھک گیا۔ اس کی تو سانس بند ہونے لگی۔ اسفند یار غصے میں اس کے تاثرات نوٹ نہ کر سکا۔ جس کا چہرہ لٹھے کی مانند سفید پڑ گیا تھا۔ اس غلط وقت پر غلط بات کہہ کر اس کے غصے کو لگا رہا تھا بلکہ اپنی شامت کو آواز دی تھی۔ اس کا حلق تک سوکھ گیا۔

”ہونہ جیسے ساری دنیا کی شرافت اور ایمانداری تم لوگوں پر آ کر ختم ہو گئی۔ اگر اتنی ہی پر خاش تھی ہمارے ڈیپارٹمنٹ سے تو یہاں آئی ہی کیوں اور کس ڈیپارٹمنٹ پر کرپٹ اور رشوت خور کے کا الزام لگا رہی تھیں اسی ڈیپارٹمنٹ کے

”سورہ ٹیپو کی وجہ سے نجانے میرے منہ سے کیا انا پ نکل گیا۔“ آواز میں ارتعاش برپا ہو گیا تو ٹیپو کو اپنی پوزیشن کا احساس ہوا غصے میں یہ بھی بھول گیا۔ سامنے پیشی نازک اندام سی لڑکی بھلا کہاں اس کے غصے کہ تاب لا سکے گی۔

جس طرح کے حالات ہیں وہ آج کل اور پھر اس عمر میں اتنی نگریں۔

”فکر میں تو تم بھی پالتے ہو بیٹا جو بھی پورے شہر کی، کبھی کسی نے آپ کو ذمہ داری سے روکا؟ تو مجھے کیوں منع کرتے ہو۔“

”اچھا بابا نہیں روکتا آپ کو۔“ وہ جیسے ہار مانتے ہوئے بولے۔

”اب میں بھی کوشش کروں گا وقت پر گھر آنے کی۔“

”ٹیوہو شافیہ بی بی آئیں تھیں شام کو، آپ کا پوچھ رہی تھیں۔“

”شافیہ..... آئی تھی اس کے چکر آج کل کچھ زیادہ نہیں ہو گئے۔“ جب سے بوانے اس کی شادی کا ذکر چھیڑا تو شافیہ کی تو گویا دل کی مراد بر آئی تھی۔

”کیا ضرورت تھی بوا کو اپنی چیپٹی کو امید کا دلا جانے کی۔“ اس کے چہرے پر ناگواری سی

”ابھی ابھی آپ کے لیے کوریئر آیا تھا۔“

جلدی سے لفافہ کھینچ کر اس نے الٹ پلٹ کر دیکھا تو کوئی ایڈریس یا نمبر تھا ہی نہیں کوئی دروازے پر دے گیا تھا۔ بابا نے کوریئر کے ڈیوڈ سے

پیشہ کرکھولنے لگا اندر سے پرچی برآمد ہوئی۔

”سیانے کہتے ہیں چور اور caps پر کبھی بھروسہ نہیں کرنا چاہیے پر نہ جانے کیوں دل آپ پر

ٹرسٹ کرنے کو کہہ رہا ہے اس دن کی بدتمیزی کے لیے آپ سے معافی چاہوں گی پر اب میری آخری

امید اور سہارا صرف آپ ہیں پلیز میرے بیٹو کو ملو ادیں بڑی مشکل سے بیٹو کی ایک تصویر ڈھونڈ پائی

ہوں امید ہے اس کی مدد سے آپ بیٹو کا با آسانی پتا لگا سکیں گے۔ جمانمہ“ تصویر سفید رنگ کے چھوٹے

سے کتے کی تھی جس کے گلے میں بلیک اینڈ وائٹ

فیر اور سیاہیوں کی ناگہانی موت نے سب کو

”وہ کر دیا تھا۔ چار جانبازوں کو قربان کرنے کے

”نود ان کے عزم میں خلل نہ پڑا۔ وہ ابھی

مازے پر تھا کہ شرجیل کا فون بلنگ کرنے لگا۔

مات میں غیر معیاری اور ملاوٹ شدہ دواؤں

”اٹل کرنے والے گروہ کا پتہ چل گیا۔ دواؤں

”نام پر زہر دے کر انسانی جانوں سے کھیلنے

”اٹل انسانی شکل کے درندے ملک کے لیے ناسور

”تھے۔ پولیس ریڈ لگائی گئی ڈی ایس پی اسفند یار ٹیپو

”کی شاندار کارکردگی ہر طرف سراہا جانے لگا۔

”لی ملاوٹ شدہ دواؤں کے دوڑکوں کے ہمراہ

”اس مافیہ گروہ کا ہم رکب کی کڑا گیا۔ اخباری وی

”بلند خبریں نشر ہونے لگیں۔ تقریباً دو بجے

”اس کی واپسی ہوئی۔ پورے گھر پر اندھیرے کا راج

”سیٹ عظمت بابا نے ہی کھولا۔ چمکدار تھیں

”ان سے چھٹی پر تھا اور پھر ویسے بھی جب تک وہ

”اٹل کر نہ آتا بابا اس کے منتظر رہتے بچپن کے

”سجا کر اس نے گویا مصوہیت کی حد کر دی۔

”اے لو پورے شہر کی خبر لیے پھرتے ہو اور

”اپنے گھر میں کیا چل رہا ہے کچھ خبر ہی نہیں۔ کل

”پورے چار چور گھس آئے تھے گھر میں یہ کالے

”کالے شکل دیکھ کر ہی متلی، تے ہو جائے۔ اتنا وہ

”گھر اور میں ایل؟ اگر وقت پر یہ داور نہ آتا تو میر

”تو ہارٹ فیل نہ ہو جاتا۔“ اب کی بار ٹیپو کے چہرے

”پر چھینٹا نظر پھیل سا گیا۔

”اوہ ہو بھائی کس کی سنتے ہو آپ، دادو تو خ

”خواہ سین کری ایٹ کرتی ہیں کارکروچ کی بات

”رہی ہیں دادو کا کارکروچ کی۔ وہ تو اچھا ہوا اسپر

”بچن کمینٹ میں ہی پڑا مل گیا میں نے فٹنٹ ان

”صفایا کر دیا۔“

”اور نہیں تو۔“ داور کی بات پر وہ فوراً پولیس

”کوئی ایسی ویسی تو ہے نہیں تیری دادو جو چ

”ٹیکوؤں سے ڈریں تو بس ذرا کارکروچ سے نہیں

”پتی تھی۔“ دادو کا واقعی کوئی جواب نہ تھا وہ دونوں

”بکواس بند کرو بتاؤ کیا کچھ کہہ رہے تھے۔“

”وہ اب شرجیل سے متوجہ تھا۔ جمانمہ بھی ساٹس بحال

”ہوتے تیزی سے وہاں سے نکل آئی، تب تک اسفند

”یار بھی اپنی سیٹ سنبھال چکا تھا۔

”ایسا کیا کر دیا تم نے جو مختصر کے تو چھکے ہی

”جھوٹ گئے کچھ کہنا تو دور وہ تو خود ایسے غائب

”ہو گئیں جیسے۔“

”ہو گیا تم تو ہر وقت بکواس ہی کرتا، کبھی تو

”سیریس ہو جا۔“ ایک پل کو اس کا سہا سہا انداز اس

”کی نظروں میں گھم گھمائیوں پر دھیمی سی مسکراہٹ

”آن رہی۔

”کہاں کھو گئے بھائی اب اس لڑکی کا تو نہیں

”پتا پروہ آپ کے ہوش ضرور۔“ لڑکی ڈی ایس پی

”صاحب پہلے ہی وہ اتنا کچھ سنا کہ اب کبھی عیش

”مزاج یا فلکری ہونے کا بھی لیبل نہ لگ جائے۔

”شٹ اپ شرجیل! ایک تو پہلے ہی سر میں ہر

”شروع ہو گیا اب تم بھی ذرا سنی سے کہہ کر اسٹرنگ

رہن بندھی تھی اور تصویر میں جس چیز پر اس کی نظر ٹھہری گئی وہ ٹیپو کو گود میں لیے پیار کرتی جمانہ کے معصومیت بھرنے انداز کی تھی مگر وہ دیر وہ تصویر کو ہاتھ میں لیے جو انداز سے اسے دیکھتا رہا اسے افراتفری میں وہ جو اسے یکسر فراموش کر بیٹھا تھا۔ ”یہ میرا وعدہ رہا آپ کو آپ کے ٹیپو سے ملوا کر رہوں گا۔“ وہ دل ہی دل میں خود سے عہد کرنے لگا۔

☆.....☆
فجر کی نماز ادا کر کے اور جاگنگ کے بعد وہ گھر لوٹا تو سب سے پہلے سب ممبروں لان میں دادو سے سامنا ہوا۔

”ٹیپو! آج فارغ ہو تو مل کر کھانا کھا کر چلے جاتے ہیں۔ کب سے تم نال مشول سے کام لے رہے ہو۔ پر آج کوئی بہانہ نہیں چلے گا۔ موحد نے تمہاری طرح c.ss کر لیا ہے اتنا ہم موقع ہے بہت خوش ہوگی اگر تم بھی چلے تو۔“ اسے ہوا کے گھر جانے پر کوئی خاص اعتراض تو نہ تھا پر وہی ایک مسئلہ شافیہ صاحبہ ان کے شوہر کی نیکی کی موجودگی۔ ایک عدد پینڈم بیٹے کی موجودگی کے باوجود اپنی اس لاڈلی کو اس کے سر کیوں ڈالنا چاہتی تھیں۔ اور وہ خود کو اس محترمہ کا سامنا کرنے سے بھی حتی الامکان گریز کرتا رہی ہوا جس کا ڈر تھا۔ محترمہ نہ صرف گھر پر موجود تھیں بلکہ اپنی چرب زبانی سے ہر ایک کا دل موہ کر اپنا گرویدہ بناتی۔

”ٹیپو! یہ کیا بات لڑائی کریں نا۔ اور دادو آپ نے تو کچھ لیا ہی نہیں یہ لیسن چلن لیں نا۔ بالکل ٹو کو بیٹرول اور زیر و فیٹ۔“

”کسی نوڈ براڈ کٹ کا چلتا پھرتا نمونہ۔“ دل میں سوچنے لگا۔ گھر آکر بھی اس کا پارہ اچھا خاصا ہائی ہو چکا تھا۔ مجال ہو جو محترمہ ایک منٹ کے لیے سر سے ٹکی ہوں۔ ہر وقت موجود اور اس کے سر پر

سوازی ہی تھیں اور کڑ پڑ جھک ماری، کم کھانے کے فائدے، زیادہ کھانے کے نقصانات گنوائی وہ مجھے ڈاکٹر کم۔ اور باورچن زیادہ لگتی ہے۔ حد ہوگئی یعنی.....

”تو برائی ہی کیا ہے اتنی اچھی تو ہے سکھڑ، خوب صورت، اتنی قابل تو ہے وہ بھی میں تو ملکہ کی بات سے نہو فیصد متفق ہوں۔ اب کب تک تم اس طرح زندگی گزارو گے اور پھر نیکی کو بھی تو ماں کی ضرورت ہے جب لڑکی دیکھی بھالی سانسنے پلی بڑھی تو پھر کیا حرج ہے۔ وہ بھی اتنی فہم دار، سلیقے شعار۔“ دادی باقاعدہ اس کی تعریفوں میں زمین آسمان کے فلاپے ملانے لگ گئیں۔

”ہو گیا دادو! جب میں نے ایک مرتبہ کہہ دیا کہ نہیں پسند تو بات ختم، کیوں اس بے چاری کو بھی تھیں دلار رہی ہیں۔ میری زندگی میں نہ ان سب کی ضرورت ہے اور نہ ہی مجھ پر اس لیے بہتر ہوگا آپ آئندہ اس نا پاک ربات نہیں کریں گی۔“

”یوں نہ کرو دادی۔ اسی دن کے لیے تجھے پال پوس کر بڑا کیا۔ تو ان بھالوں کرتا پھرے اور پھر میری نیکی بن ماں سے کب تک رہی پھرے۔“

”استغفر اللہ دادو! کہاں رہی رہی ہے آپ بھی.....“

”ایک ہی بات ہے جب خود نباہ نہ کر سکے تو سزا بھی کو دو گے بھلا اس کا کیا قصور ہے میں نے سوچ لیا اگر تیری نظر میں کوئی لڑکی ہے تو ٹھیک ورنہ میں مٹھائی لے کر جا کر ملکہ سے بات بھی کر آؤں گی پھر جو کرنا ہے سو کر لینا۔ یہ فقط دادی کی خالی خولی دھمکی نہ تھی ان سے اس قسم کی حماقت کی بھرپور توقع کی جاسکتی تھی۔ دل چاہا دونوں ہاتھوں سے اپنے بال ہی نوچ لے۔ اگلی صبح ایک اور ہنگامہ اس کا منتظر تھا۔ وہ آفس جانے کے لیے تیار ہو رہا تھا جی صغریٰ ملازمہ ہانپتی کانپتی بھاگی چلی آئی۔ ”وہ صاحب

بڑی بی بی گئی کام سے۔“ صغریٰ کا انداز وہ تیزی سے دادو کے کمرے کی بہت دیر اندازہ خالی تھا البتہ واش روم کا دروازہ کھلا اور اندر سے پانی گرنے کے ساتھ کراہ کی آواز برابر آ رہی تھی، اندر داخل ہو کر دیکھا تو اس کے حواس ساتھ چھوڑ گئے دادو شب میں بڑی کراہ رہی تھیں۔

”اوہ نو دادی۔“ وہ تیزی سے آگے بڑھا انہیں سہارا دے کر باہر بند تک لے آیا۔

”ہائے میں مرگئی میری کمر۔“ بیڈ پر آرام وہ پوزیشن میں لیٹ کر ان کی دہائیاں جاری تھیں۔

”پر یہ سب ہوا کیا۔“

”وہ صاحب بڑی ساری کتے کے بچے کو بھلا رہی تھیں تو شاید پیر پھسل گیا۔“

”دادی کمال کرتی ہیں آپ بھی تھی حد ہوگئی ایک معمولی سے کتے کے بچے کے لیے آپ نے ایک بڑی پہلی ایک.....“ کتے سے اسے ایک دم احساس ہوا کتے کا بچہ پر کہاں سے، دماغ میں ایک دم جھماکا

”وہ بیکی کو اسکول کے باہر سے ملا اتنا پیارا کہ دیکھتے ہی پیار کرنے کو دل چاہے۔“ دادی ایک مرتبہ پھر پر جوش ہو گئیں۔

”کہاں ہے وہ۔“ اس کی چھٹی حس نے گویا خبردار کیا۔

”وہ تو اندر پانی میں ہے پاپا۔“ بیکی نے اطلاع فراہم کی تو وہ تیزی سے اندر بڑھا اور سامنے بیٹھے کتے کو دیکھ اس کے خدشے کی تصدیق بھی ہوگئی سفید کلر کا کتا مکمل طور پر بھیگ چکا تھا اور گلے میں بندھا رہا۔

”اوہ تو۔“ آگے بڑھ کر اسے اٹھا کے اب نادل سے لپیٹ کر باہر لے آیا۔

”ارے کہاں جا رہے ہو ٹیپو اسے لے کر۔“

اسے جاتا دیکھ کر دادی بے چینی سے گویا ہو گئیں۔

”جس کی امانت ہے اسی کے حوالے کرنے۔“ بیکی کا منہ اتر گیا۔

”پتا تھا جب پاپا کو پتا چلے گا تو وہ اسے یہاں نہیں رہنے دیں گے۔“ دادو بھی افسردہ سی ہو گئیں پوتی کا موڈ آف ہوتا دیکھ کے، شرجیل اسے دیکھ کر چونکا۔

”ارے تم نے کمال کر دیا اتنی جلدی ٹیپو کو ڈھونڈ بھی لیا۔“ شرجیل اسے دیکھتے شروع ہو گیا۔

”اس لڑکی نے کوئی ایڈریس یا فون نمبر نہیں چھوڑا۔“ اندر داخل ہو کر اس کی بات کو یکسر نوٹس لے بنا کہنے لگا۔

”محترمہ کا کچھ اتنا پتا نہیں آندھی کی طرح آتی ہے طوفان کی طرح چلی بھی جاتی ہے۔“

”ہو گیا اب کچھ کام کی بات کریں۔“ ٹیپو کو سلمان کے حوالے کر کے وہ اندر داخل ہو کے کہنے لگا۔

”اچھا بی بی۔“ وہ بہت ہی ڈھیٹ قسم کا شخص ہے۔

”تو اتنی مار کھا کے بھی نہ گھبراؤ۔“

”ہاں اس کی چیزوں سے map برآمد ہوا ہے اور نقشے کے حساب سے اس وقت وہ اندرون سندھ میں ہوں گے اور یقیناً مارکیٹوں تک پہنچانے میں ان کے پیچھے کوئی بڑا ہاتھ ہی ہے۔“ نقشہ میز پر پھیلاتے اب کی بار شہادت کی انگلی سے اشارہ کرتے وہ سنجیدگی سے گویا ہوا۔

”میرا نہیں خیال کہ اب کی بار وہ کوئی غلطی کریں گے وہ اسے چھڑانے کے لیے ایڑھی چوٹی کا زور لگائیں گے۔ پر تم لوگ کوشش جاری رکھو آئی ایم شیور اس کے پاس ضرور کوئی ایسی انفارمیشن ہے جو ہمارے کام آئے گی۔“

”ایاز سے کہہ کر ڈاکٹر نور کس کی فائل بھجواؤ ذرا۔“ تبھی اس کا فون بنگ کرنے لگا شرجیل کی نظریں استہمامیہ اس کی جانب اٹھیں دوسری جانب سے ڈری سہمی سی نسوانی آواز ابھری۔

”سرٹیپو کی تلاش میں میں دھوکے سے یہاں جنگل میں لائی گئی۔ بڑی مشکل سے ان کے چنگل سے نکل آئی پر اب راستہ بھٹک گئی۔ مجھے نہیں پتا کہ یہاں سے کیسے نکلوں۔“

”واٹ۔“ اس کے سر پر دھچکا لگا۔

”جنگل میں آئی۔“ وہ باقاعدہ چنچا۔

”سر پلیز کچھ کریں۔“ اس نے وقت نہیں مرنا چاہتی۔ وہ روپاسی ہو کر بولی۔

”او کے ریلیکس، کرتا ہوں کچھ۔“ اس نے اس وقت تم ہو کہاں۔“ شرجیل کو فون ٹریس کر کے اس کو روہ بولا۔

”کچھ آئیڈیا نہیں۔ مجھے کچھ نہیں پتا سر! آؤ چ۔“ کہنے کے ساتھ وہ شاید کسی چیز سے ٹکرا کر گری گئی۔

”کیا ہوا آپ ٹھیک تو ہیں ہیلو، جیل.....“ اس کے ساتھ ہی فون کٹ گیا۔

”کیا ہوا ٹیپو! ایوری تھک از او کے۔“ اور ساری چویش جان کر وہ بھی اپنا سر تھام کر رہ گیا۔

”سر! ٹریس کے مطابق وہ اس وقت اندرون سندھ کسی جنگل میں ہیں۔“

”شرجیل! جلدی سے گاڑی نکالو۔“ میگزین میں گولیاں بھرتے اس نے غلت بھرے انداز سے کہا۔

”سر کیا آپ اکیلے جائیں گے۔“ ایاز حیران سا رہ گیا۔

”ہری اپ جتنا کہا ہے بس اتنا کرو۔“

”میری جیب باہر کھڑی ہے۔“ شرجیل نے فوراً خدمات پیش کریں جب تک ٹیپو گولیاں بھر چکا

تھا۔ پر جیب پر شرجیل کو بیٹھا دیکھ کر وہ سوالیہ نظروں سے اسے دیکھنے لگا۔

”مجھے اس لڑکی پر زور برابر بھی بھروسہ نہیں اور تمہیں اکیلا بھیجے کارسک نہیں لے سکتا۔“ اس نے خاموشی سے گاڑی اشارت کر کے سڑک پر رواں کی۔ ساڑھے تین گھنٹے کی مسافت طے کرنے کے بعد شرجیل بولا۔

”اس کے فون کے سنگلز یہیں کہیں آس پاس ہی مل رہے ہیں۔ آئی ایم شیور وہ اب زیادہ دور نہیں ہوں۔“ اس کے کہنے پر اسفند یار نے گاڑی جنگل کے درمیان میں چکی پکڑ ڈی پر ڈال دی۔ گھنے جنگلوں کے طویل سلسلے، گاڑی کے ساتھ اس کی ہمت بھی جواب دینے لگی پر کچھ دور جا کر ہی کہیں آواز کے ساتھ جھکا کھا کر رکی نیچے ٹوٹے ٹوٹے شیشوں کے ٹکڑے کاٹنے اور خالی بوتلوں کے بکھرا ہوا اور چٹانوں جیسے سخت پتھر اس کا ٹائر پھرنے لگا تھا۔ اسے بھی ابھی جواب دینا تھا۔

اسٹیرنگ پر مکمل کنٹرول سے گویا ہوا۔

”میں ٹائر چھین کر دیتا ہوں۔“ شرجیل اب پیچھے سے ٹائر اور دیرینہ درمیانی چیز لے آیا۔

اسفند یار مسلسل اس کا فون ٹرائی کرنے میں لگا تھا مگر دوسری جانب سے فون نورپوس جا رہا تھا۔ سمجھ نہ آیا کرے تو کیا غصے سے گاڑی کو ہی لات دے ماری۔

”بھائی! اپنا غصہ اس بے چارے پر کیوں نکالتے ہو۔“ جب کہ شرجیل کا اطمینان قابل دید تھا۔

”اور پھر میں نے کہا تھا سانپ کے بل میں ہاتھ ڈالنے کو یہ سب تو ہونا ہی تھا۔“ اس کا دھیان شرجیل کی جانب کب تھا۔ اس کی نظر تو ہوا میں پھڑ پھڑاتے اس رومال پر تھی۔ درخت سے الجھا وہ رومال، وہ تیزی سے راستہ بناتا آگے بڑھ کر اس

رومال تک پہنچا۔ سفید رنگ کا پرغز رومال جو ہمہ وقت اس کے ہاتھ پر لپٹا ہوتا اب تو مزید کسی شک کی گنجائش ہی باقی نہ رہی، یہیں کہیں اسی جنگل میں تھی اور اس وقت یقیناً کسی بڑی مصیبت میں تھی۔

”ٹیپو! شاید گاڑی کے انجن میں کوئی براہیم ہو گئی ہے میں اسے روڈ پر لے جا کر کسی ملینک کا بندوبست کرتا ہوں پر مجھ سے رابطے میں رہنا۔“

”ہاں تم اسے مین روڈ پر لے جاؤ اب ہم تمہیں وہیں ملیں گے۔“ رومال تھا اسے اس نے پر عزم لے کر کہا اور اس کی طرف راستہ بناتا بڑھ گیا۔ یہ کوئی خطرناک تھا۔ جنگل تو نہ تھا جس میں جنگل جانور یا خطرے کا فائدہ اس کی پیٹھی حس کچھ نہ کچھ غلط ہونے کا پتا دے رہی تھی۔ چاروں اطراف دیکھتے اور کافی دور نگاہ سے

بعد بھی اسے کوئی سراخ نہ ملا ساری محبت غارت ہوئی دکھائی دینے لگی، کچھ دور چل کے اسے پتوں کی چڑھاہٹ اور کسی کے قدموں کی آہٹ اپنے عقب سے آتی محسوس ہونے لگی۔ نائن ایم ایم نکالی اس سے قبل وہ مڑ کر فائر کرتا سامنے ریٹکٹر کے گھٹنوں تک آتے جدید تر اش فراک اور بلیک پا جاے میں وہ کھڑی تھی۔

”تم.....“ پسل نیچے کرتے وہ تیزی سے اس کی سمت بڑھا۔

”آریو او کے؟ ٹھیک تو ہیں آپ۔“ تو وہ نفی میں سر ہلانے لگی کوئی جواب دیے بنا وہ وہیں دوڑانوں بیٹھ گئی۔ اس کی نظر اس کے پیچھے بندھے ہاتھوں پر پڑی۔

”کس نے کیا یہ سب۔“ وہ سی کھولتے پوچھنے لگا پر پیچھے سے پڑتی ضرب سے اس کے ہاتھوں کی قوت گویا جواب دے گئی۔ دونوں ہاتھوں میں سر تھا وہ بند ہوئی آنکھوں کے ساتھ وہیں ڈھے سا گیا۔ اور کانوں میں پڑنے والی آخری چیخ اسی کی تھی۔

☆.....☆

اسفند یار کا فون مسلسل ٹرائے کرنے کے باوجود کوئی رسپانس نہ دے رہا تھا۔ شام کے سائے ہر طرف پھیلنے لگے ایسے میں جنگل میں جا کر اسے ڈھونڈنا سراسر اس کے نزدیک حماقت تھی پر وہاں ٹھہر کر بھی تو اس کا انتظار نہیں کیا جاسکتا تھا۔ اس لڑکی پر الگ غصہ آنے لگا۔ جس کی وجہ سے اسفند یار اس مصیبت میں پھنسا تھا۔ اب کرے تو کیا اس نے پولیس کو انعام کرنے سے بھی تو منع کیا تھا بھی نسوانی چیخ پر اس کے دماغ نے خطرے کا الارم بجایا۔ ٹارچ لیے اس کے قدم تیزی سے اندر کی جانب رواں تھے جہاں خطرہ تھا پل پل موت دستک دے رہی تھی اس کے پاس ایک حفاظتی پسل کے علاوہ کچھ نہ تھا۔ پر اس کے سوا اب کوئی چارہ بھی تو نہ تھا۔

☆.....☆

پسل سے آنکھیں کھولنے کے بعد سر میں درد کی لہر لپٹنے لگی۔ یہ جنگل کا ایک نیم روشن اور آباد حصہ تھا۔ سامنے درمیان میں جلتی آگ، ان سب سے قدرے دور درخت سے وہ درخت کے ساتھ رسیوں سے جکڑا ہوا لٹکا ہوا تھا۔ ہوتا تب بھی اس میں اتنی سکت نہ تھی کی کوئی بھی مدافعت کر سکے۔ اسے نہ وقت کا اندازہ تھا نہ ان کے مقصد کا علم وہ یہاں کیوں لایا گیا اس سے وہ فی الحال لاعلم تھا۔ وہ بس دھندلائی بند ہوئی آنکھوں سے درختوں کی اوٹ سے اوپر آسمان اور ستاروں کو دیکھنے لگا۔ سر سے خون بہہ کر کان تک آ کر جم گیا تھا۔ اس سے آنکھیں مزید کھولنا دشوار سا ہو گیا۔ رات رفتہ رفتہ سر کٹنے لگی۔

”نجانے اس وقت کہاں کس حال میں ہوگی۔“ اس کے دماغ میں اس وقت بھی وسوسے مڈلانے لگے۔ بھی درخت کے پیچھے سے اور اپنے

ہاتھوں پر کسی کے لمس کا احساس ہوا اس خیال سے کہ کوئی سائب وغیرہ ہوگا۔ اس نے پٹ سے آنکھیں کھول لیں۔ بدن میں سنناٹہ سی دوڑ گئی۔ پڑا سانسے جمانے کو دیکھ کر اس سے قبل وہ کچھ بولتا اس نے فوراً اپنا ہاتھ اس کے سر پر رکھ دیا۔

”پلیز سر کچھ مت کہیے میں جیسا کہتی ہوں بس دیکھ لیں۔“ اس کے ہاتھ کھول کر وہ اسے لیے اندر جنگل میں راستہ بناتی آگے بڑھنے لگی۔ کچھ دور ٹارچ کی روشنی جھلکی لگتی۔ تکلیف کی شدت کے باوجود اسے سانسے سانسے کھینچتے ہوئے راستہ طاف تھا۔ سانسے دو سپاہیوں کو بے ہوش پڑے دیکھ کر وہ بھی دل میں اس کی بہادری کو مان گیا پر آگے جا کر یہ سانسے شریلوں ہو گیا۔ یہ اس کے اکیلے کا کام نہ تھا۔ سانسے شریلوں کھڑا تھا جو اسے دیکھ کر شروع ہو گیا۔

”اگر آج ٹیپو کو کچھ ہو جاتا تو میں تمہارا وہ حشر.....“ غصے سے اس کی رگیں تن گئیں اس کی کیفیت سے اندازہ لگانا مشکل نہ تھا کہ وہ کب سے انہیں تلاش کرتا پھر رہا تھا۔ جمائے پانی جگہ چوری بنی کھڑی رہی۔

”میں مانتی ہوں سر میری وجہ سے اس مشکل میں.....“

”سٹ اپ۔“ اس کی بات پر وہ سہم ہی گئی۔ ”اسٹاپ اسٹریٹل!“ اسے ہی ٹوکنا پڑا، ”نو ٹیپو تمہیں نہیں پتا اس کی وجہ سے آج کون سی قیامت آجانی۔ صرف چند لمحوں کی خاطر اس نے تمہیں دھوکے سے یہاں بلایا۔ یہ بھی ان کرملوں کے ساتھ ملی ہوئی ہے۔ اس اشرف کو جیل سے چھڑانے کی خاطر یہ سب گیم کھیلا گیا اور اگر میں وقت پر نہ پہنچتا تو.....“ اس کا تومارے خفت سے سر مزید جھک گیا۔ اس سے قبل وہ کچھ کہنے کے لیے لب کھولن گن فائر پر وہ تینوں بیک وقت جھکے تھے۔

یعنی انہیں ان دونوں کے فرار کی اطلاع مل چکی تھی اور اپنے سپاہیوں کو زخمی دیکھ کر وہ انہیں تلاش کرنے لگی تھیں۔

”تم اس طرف رات جاؤ ٹیپو یہ ہی راستہ سیدھا روڈ کو نکلتا ہے۔ سانسے جیب کھڑی ہوگی میں تب تک ان سے نمٹ لوں گا اسفندیاری کی مدد تو وہ لوگ پہلے ہی ہتھیار چکے۔“ جمائے کے چہرے پر ہوائیاں سی اڑنے لگیں۔ اسے ڈر تھا کہ انہیں جج جاننے کے بعد نہیں وہ اسے یہاں سفاک درندوں کے حوالے کر کے ہی نہ چلا جائے پر یہ محض اس کا خیال تھا۔ ٹیپو اس کا ہاتھ تھامے تیزی سے آگے بڑھا تھا۔ درختوں کے کتنے کانٹے اور خاردار جھاڑیاں ان سے اندھیرے میں ٹکرائیں۔ جمائے تو باقاعدہ ان جھاڑیوں سے الجھ کر گر پڑی۔ جنگل کے چاروں طرف اچھلے پھلے سپاہیوں کا جال پھیلا ہوا تھا ایسے میں اس کی فحاشات انہیں موت کے راستے لے جاسکتی تھیں۔ اس کی چیخ پر وہ کیسے متوجہ نہ ہوتے۔ ٹارچ کی روشنی اور قندیلوں کی آہٹ انہیں اپنے بے حد ترس پر غور کرنے دیتی تھی۔ تیزی سے اس کا ہاتھ کھینچ لیا اور دونوں کے گود میں جھاڑیوں میں چھپ کر بیٹھ گئے ایسے وہ ان لوگوں کی نظر سے تو مخفی تھے پر جمائے کی سانس گویا بند ہونے لگی کیونکہ ٹیپو نے جتنی سے اس کے منہ پر ہاتھ جو رکھا تھا اور دونوں ہاتھ بھی اس کی مضبوط گرفت میں تھے۔ وہ چاہے کبھی اپنا آپ چھڑا نہ پائی۔ وہ دو لوگ تھے جو تیزی سے آگے بڑھ گئے۔

”سر میرا ہاتھ۔“ درد کی شدت کے سبب اس کے لبوں پر کسی نما آواز برآمد ہوئی۔ خطرہ لگنے دیکھ کر اس نے فوراً اسے چھوڑ دیا پر یہ کیا اس کی گرفت ہلکی پڑتی ہی وہ بے جاں ہوتے قدموں سے زمین ڈھیر سی ہو گئی۔ وہ بھی تیزی سے اس پر جھکا۔ وہ جو سمجھنے لگا کہ اس کے حصار کے سب وہ مداخلت کر

ہی تھی جب کہ اصل پتویشن کوئی اور تھی۔ اس کے ہرے کا رنگ خطرناک حد تک زرد پڑ گیا تھا نیلے پاتے ہونٹ ہولے سے ہلنے لگے پر اسے کچھ سمجھ نہ آیا اس کے کمال تھپتھپاتے اس کی گردن پر انہاں دیکھ کر وہ چونک گیا۔

”یہ نشان یہ نشان تو کسی سائب کے ڈسنے کا تھا۔“ یعنی وہ درد کی وجہ سے کراہ رہی تھی اور وہ اپنا سر تمام کر رہا گیا۔ بڑی مشکل سے وہ اسے اٹھا کر زمین پر ڈنک لے آیا۔ بل بل موت کی طرف بڑھتا وجود ہندیل میں اس کے لیے کھڑی ہو گیا تھا۔ مین روڈ پولیس کے عملے کو دیکھ کر وہی با اسے شریلوں کی ہانت کا قائل ہونا پڑا اسے با نہیں میں بھرے وہ تیزی سے آگے بڑھا ان کے ساتھ۔ ہم چلتے چلتے وہ نو گیم کا شکار بن گئی تھی۔ وہ اگر اس پتویشن کی دلی تو وہ کبھی شریلوں کو تھما چھوڑنے کی غلطی نہ کرتا۔

اس کے بل بل ٹھنڈے پڑتے وجود نے اس سے فیصلہ کر لیا۔ اسے جلد از جلد ہسپتال پہنچا دینا پڑا۔ کیونکہ ذرا سی غفلت اور لا پرواہی اس کے لیے جاں لیوا ثابت ہو سکتی تھی۔ تین گھنٹے کے آپریشن کے بعد بالآخر چھ بندوں پر مشتمل گروپ نے سرینڈر کر دیا۔ ڈھیر سارا اسلحہ برآمد ہوا۔ پولیس کی اعلیٰ کارکردگی کو ہر جانب سے سراہا جانے لگا۔ ہر جانب ان کی کامیابی کے چرچے عام ہونے لگے اور وہ ہاسپٹل کے ہال میں گم صم سا بیٹھا تھا۔ جہاں وہ اندر زندگی اور موت کی کشمکش میں گھری تھی۔ شریلوں جیسے قدم اٹھاتا اس کے پاس آیا۔ اس کے اندھے پر ہاتھ رکھے جیسے حوصلہ دے رہا ہو اس سے ٹیپو کی کیفیت چھپی نہ گئی۔

”سب ٹھیک ہو جائے گا۔“ تو وہ خالی خالی انٹروں سے اسے دیکھنے لگا۔

”کہیں ہماری کسی غلطی کی سزا اسے تو نہیں مل رہی۔“ تو شریلوں خاموشی سے اس کے برابر آ بیٹھا۔

”تمہیں لگتا ہے کہ ہم نے کچھ غلط کیا۔“ جواباً اس نے سوال کیا۔

”وہ ایک گیم کھیل رہی تھی۔ جس کا شکار وہ خود بن گئی۔ بہر حال نقصان تو اسے ہی اٹھانا پڑا۔ پتا نہیں شریلوں اب دل کیوں تو انہوں کا شکار ہو رہا ہے اگر اسے کچھ ہو گیا تو مجھے میں اب اسے کھونے کی سکت نہیں۔“ اسفندیاری ٹیپو کے زبان سے یہ الفاظ اسے یقین کرنے میں چند پل لگے۔ چند پل وہ خوشی سے کچھ کہہ نہ سکا۔

”مجھے اچھا لگا تمہارے سے یہ سب سن کر انٹیکٹ میں یہ سننے کو ترس رہا تھا۔“ وہ بے حد خوش تھا اسے میں ڈاکٹر نے باہر آ کر اس کی جان خطرے سے باہر ہونے کی اطلاع دی گویا اسے زندہ رہنے کا مژدہ سنا دیا ہو۔ زندگی ہمیں دورا سے دیتی ہے اور انتخاب کا حق بھی پر غفلت وہی ہوتے ہیں جو جج ہوتے ہیں۔ راستے کا انتخاب کرتے ہیں اور وہیں لوگ ججیت جیت بھی ہوتے ہیں اور اگر آج وہ اسے اس کی ججیت سے دیتا تو شاید خود بھی خوش نہ رہ پاتا اس دور میں ججیت نہ بدل سکی تو کیا ہوا اسے یقین تھا وہ ضرور اس کی ججیت میں بدل جائے گی اس کے رنگ میں اس نے اپنے کی انگوٹھی اس کی سرسری انگلیوں میں پہنائی جیسے اسے اپنے محبت کے عہد میں باندھ لیا۔ گرے ٹکر کے اتار کٹی فراک اور ریڈو پٹے میں اس کا حسن سراہے جانے کے قابل لگ رہا تھا۔ اس نے اس کے ہاتھ پر اپنا ہاتھ رکھتے اپنی محبت کا احساس دلایا۔ شافیہ دور پور سی بیٹھی تھی۔ اور ایک منٹ آپ سے سوچ رہیں ہوں گے کہ وہ اکیلی نہیں جی شریلوں آئسکریم کے دوکپ لیے ایک بار پھر اس کے کی جانب بڑھ رہا تھا اس کا سر کھانے اسے واقعی قدرت کے فیصلوں کو ماننا پڑا وہ واقعی دونوں ایک دو جے کے لیے ہی بنے تھے۔

☆.....

بہسی فم فی الزمیر

اس نے بیرونی دروازے سے جھانک کر دیکھا پکڑ کر منہ کا زاویہ بالکل بگاڑ کر سیٹھی لے رہی تھی بکرا
وہ برآمدے کے ایک کونے میں اپنے سفید بکرے کو بے چارہ معصوم سی صورت بنائے کبھی کشمالہ کو دیکھ رہا



تھا تو کبھی موبائل اسکرین کو وہ ہنسی دبا کر اس کے پاس آیا وہ ابھی بھی اپنے عظیم کارنامے میں لگی ہوئی تھی، گویا کوئی سیٹھی پر ٹیکٹ نہیں آرہی تھی۔
”تم سے اچھی سیٹھی تو بکرے کی آرہی ہے بکری کے جیسے منہ والی کشمالہ“۔ وہ ہنسی دبا کر بولا کشمالہ نے منہ مزید بگاڑ کر اسے کھا جانے والی نظروں سے دیکھا۔
”تم سے اچھا تو میرا یہ بکرا ہے چوہے کے جیسے منہ والے عمار“۔ وہ سر جھٹک کر بولی عمار نے منہ چڑایا۔
”قربانی کے بکرے کے ساتھ تم سیٹھی بنو آرہی ہو تو یہ تو یہ“۔ اس نے زچ کرتے ہوئے عملاً کانوں کو ہاتھ لگائے۔
”میری مرضی“۔ وہ آنکھیں سکیڑ کر بولی۔
”جب جہنم میں جاؤ گی تب بھی یہی کہنا میری مرضی“۔ وہ اسی کے انداز میں سر جھٹک کر بولا۔
”کیوں اپنے گھر کو یاد کرتے ہو اتنا“۔ وہ تلملا



کریولی۔

”اچھا چوبیا“۔ وہ دونوں ہاتھ سینے پر باندھ کر ہنسا۔ وہ دوبارہ سے کمرے کے ساتھ کٹنگنی کا سلسلہ شروع کر چکی تھی جیسے اس کی بات پر کان ہی نہ دھرا ہو مگر وہ بھی ارادہ کر چکا تھا آج اسے پوری طرح تیار کر رہے گا پاس جا کر چیئر پر بیٹھ گیا۔ وہ اس طرح کٹنگنی کے جیسے اس کے آس پاس کمرے اور اس کے علاوہ کوئی موجود نہ ہو۔

”اچھا“ جب تم جاب کے لئے انٹرویو دینے جاؤ گی تو تمہیں شرمندگی نہیں ہوگی؟“ پاؤں پر پاؤں رکھ کر پرسوج انداز میں پوچھا گیا۔ کشمالہ نے گردن گھما کر سوالیہ نظروں سے اسے گھورا۔

”وہ تمہارا نام ہی کچھ ایسا ہے کشمالہ“۔ وہ اس کے نام کو خاصا کھینچ کر بولا اور زبردستی کٹنگنی کرنے لگا۔ وہ بچپن سے ہی اس کے نام کو لے کر ہنسی مٹاتا تھا اسے اس قدر احساس دلایا گیا کہ وہ خود بخود اسے نام کو ناپسند کرنے لگی تھی۔

”کیا اور نام کم پڑ گئے جو اپنی اماں کا نام رکھ دیا میرے اوپر“۔ وہ دادی پر دھاڑی دادی نے غم زدہ نگاہوں سے اسے گھورا۔ گھر کے باقی کچھ افراد کو ہنسی آئی تو کسی نے تنبیہی نگاہوں سے ڈبٹا عمار کو نے میں کھڑکی کھلی کر تازمید سے تیار ہاتھ۔

”اتنا اچھا نام تو ہے“۔ دادی ہلکی سی خفگی کے ساتھ بولیں۔

”کیا خاک اچھا ہے“۔ وہ جھنجھلا کر بولی دادی نے مزید غمزدگی سے اسے گھورا۔

”کشمالہ! بدتمیزی نہیں“۔ امی نے چاول صاف کرتے ہوئے اسے خاصے سخت لہجے میں ڈبٹا۔

”اس چوے پر بھی اپنے ابا کا نام رکھیں“۔ وہ خاصا کھینچ کر بولی عمار اور عین کا زوردار قہقہہ خاموش کمرے میں گونجا تھا اس نے اس قدر اسے زچ کر رکھا تھا کہ وہ آج پھٹ ہی پڑی تھی اور لگتا تھا کہ کسی

کے ہاتھ نہیں آنے والی تھی۔

”کشمالہ“۔ دادی نے غمزدہ آواز میں پکارا۔

”نا انسانی کی ہے آپ سب نے میرے ساتھ“۔ وہ رونے والی شکل بنا کر بولی عمار کی ہنسی ابھی بھی نہیں رک رہی تھی جبکہ عین ماحول کی سنگینی دیکھ کر کنٹرول کر رہی تھی۔

”تین دن اب مجھ سے کوئی بھی بات نہیں کرے گا“۔ وہ دھمکی آمیز لہجے میں بول کر مڑ کر چلی گئی۔ اور پھر تین دن کیا شام کو ہی اس کے قہقہہ گھر میں گونج رہے تھے امی نے خوب اسے ڈبٹا چاچی نے پیار سے گھمایا جبکہ دادی اس سے خفا ہوئی تھیں اور پورا ایک ہفتہ لگا تھا دادی کو راضی کرنے میں اب اس نے بھی تہیہ کر لیا تھا کہ چاہے اس کے نام کا کتنا بھی مذاق اڑایا جائے وہ کنٹرول کر لے گی خود پر۔

”مس کشمالہ! آپ خاموش کیوں ہیں؟“ عمار نے اس کے سرخ ہوتے چہرے کو مزے سے دیکھتے ہوئے پوچھا۔

”مائی فٹ“۔ وہ سخت لہجے میں بولتی ہوئی اس کی نظروں سے غائب ہو گئی۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

”کیا کر رہی ہو عین؟“ کمرے کے دروازے سے صرف اس کے پیر نکال کر پوچھا عین پینڈ پر بیٹھی ناول پڑھ رہی تھی جب کہ کشمالہ رائٹنگ ٹیبل پر بیٹھی پڑھاتی۔

”آ جاؤں آپ“۔ وہ سیدھی ہو بیٹھی کشمالہ نے اس کی آمد کو مسر نظر انداز کیا۔

”یونو تم میری سب سے اچھی کزن ہو“۔ ترچھی نگاہوں سے کتاب پر جھگی کشمالہ کو دیکھتے ہوئے بولا ارادہ اسے زچ کرنا ہی تھا۔

”لیس آئی نو“۔ عین کھی کھی کرتی ہوئی بولی۔

”تو پھر آج شام کا پروگرام پکا ہے ہائپر جار ہے ہیں ہم دونوں“۔ ہائپر کا نام سننے ہی کشمالہ نے سر

اٹھا کر ان کی جانب دیکھا تھا۔ وہ ہی تو کچھ دن پہلے ای سے ضد کر رہی تھی ہائپر جانے کے لئے عمار نے اس کے چہرے کے تاثرات سے حظ اٹھایا وہ گہری سانس لے کر پھر کتاب پر جھک گئی جبکہ کان ان دونوں کی جانب ہی تھے۔

”آئی کو بھی لے چلیں گے“۔ عین کو بہن کی یاد آئی، کشمالہ کو دل ہی دل میں عین پر پیار آیا۔

”ارے چھوڑو“۔ وہ انگریزی لیتے ہوئے بولا۔

”میں جاؤں گی اس ڈن“۔ وہ خاصی اونچی آواز میں خود کلامی کے انداز میں بولی۔

”چلو عین! اگر تم کہتی ہو تو میں دل پر پتھر رکھ کر برداشت کر لوں گا“۔ دل جلانے والا آخری جملہ بول کر وہ روم سے باہر چلا گیا۔ شام کو وہ خوش خوش تیار ہوئی تھی اور پہلے ہی سوچ لیا تھا کہ ان دونوں سے الگ تھلک ہی رہے گی کیونکہ وہاں بھی وہ اپنا موڈ خراب نہیں کرنا چاہتی تھی۔

”عین میں آتی ہوں“ فون بھول گئی ہوں“۔ عمار کی بیٹی نے اسے یاد آیا تھا وہ اتر کر چار قدم آگے ہی بڑھی تھی کہ گاڑی اشارت ہوئی اور آگے بڑھ گئی۔

”عمار بھائی!“ اس کی سماعتوں نے نہیں یہ سنا وہ باتی ہوئی کار کو صدمے اور بے یقینی سے دیکھتی رہی۔ آسو شدت تو بچن سے گالوں پر پھسلے۔ یہ پاننگ پہلے سے ہی عمار نے کر رکھی تھی وہ ہی اس کا ذہن اوچھل کر آیا تھا کشمالہ سمجھ گئی تھی اس نے طیش میں بیہوش ہو گئی۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

اسے چین تک نہیں آتا تھا جب تک وہ عمار بدلہ نہ لے لیتی اور یہ بات عمار بھی اچھی طرح جانتا تھا ان دونوں کی یہ دشمنی بچپن سے ہی ہوئی تھی وہ اسے ایک سال بڑی تھی وہ دونوں اس گھر کی جان تھے مگر جانے کیوں دونوں کی

آپس میں کبھی نہ بن پائی وہ اکلوتا تھا جبکہ عین کشمالہ سے چار سال چھوٹی تھی عمار عین کو اپنی چھوٹی بہن سمجھتا تھا اور بہت پیار کرتا تھا تین دن بعد آخر کشمالہ کو موقع مل ہی گیا اور اس نے عمار کا فون چرا کر ایسے ایسے میسج پچا کو سینڈ کئے کہ ظاہر ہے شام کو عمار کی کلاس لگنا لازمی تھی پچا جان خوب بھڑکے وہ بے چارہ صفائی دینے سے قاصر تھا وہ کن اکھیوں سے اسے دیکھ کر اس کی اڑی اڑی شکل کا مذاق اڑا رہی تھی۔

”دادی! یہ سب اس چڑیل نے کیا ہے“۔ سب کے چلے جانے کے بعد وہ منہ بسور کر دادی کے پاس آ بیٹھا۔

”ہائے“ کتنا لڑتے ہو“۔ دادی کا لہجہ اکتا ہٹ بھرا تھا کشمالہ نے مخصوص انداز میں اسے منہ چڑایا۔

”میں نے اپنی اتل تلیل کا بدلہ لینا ہے دادی! بول دیں لوگوں کو“۔ وہ ہاتھ پر ہاتھ دھر کر منہ بسور کر بولا۔

”کیا کیا نہ سوچا میں نے ساری خواہشیں مٹی میں ملا دیں“۔ دادی سرد آہ لے کر خود کلامی کے انداز میں بولیں۔

”کیا خواہشیں باری دادی؟“ عمار نے لاڈ سے ان کے کندھے پر سر دھرتے ہوئے استفسار کیا۔

”کہ تم دونوں کی شادی کراؤں گی“۔ اس کے بالوں میں ہاتھ پھیرتے ہوئے تاسف سے بولیں اس نے جھٹکے سے سر اٹھا کر حیرت انگیز انداز میں دیکھا کشمالہ کے منہ کا ذائقہ بھی خراب ہو گیا۔

”میں خود کو پھانسی نہ لگا لوں“۔ وہ اٹھ کر کھڑا ہوا۔

”اور میں زہر کھالوں“۔ کشمالہ دونوں کے انداز میں بولی دادی نے ہاتھ پیٹ لیا۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

چاندرات کی مسرت ہی اتنی تھی پورا گھر دھک رہا تھا ہر جانب سے آوازیں آرہی تھیں لاؤنچ میں

سب بیٹھے خوب گپ شپ میں مگن تھے وہ سب کے بیچ سے اٹھ آئی تھی اور تادیب کرے کے پاس بیٹھی رہی تھی اگلے روز وہ صبح ہی صبح تیار ہو گئی تھی تک سب سے تیار ہو کر وہ اٹھلائی ہوئی برآمدے میں آئی تھی گھر کے مرد حضرات نماز عید ادا کر کے واپس آچکے تھے اب سنت ابراہیم کی تیاری شروع ہوئی تھی۔

”کیا ہوا؟“ سب کے چہروں پر سنجیدگی دیکھ وہ پریشان ہوئی۔

”سفید والا بکرا نہیں مل رہا۔“ امی نے دہمی آواز میں بتایا۔

”بکرا؟“ اس نے دھڑ سے پوچھا۔ پھر خود ہی بول اٹھی۔

”رات تادیب تک وہ نہیں تھا۔“ اس نے انگلی سے سامنے کی جانب اشارہ کرتے ہوئے کہا۔

”مل جائے گا عمار گلیا ہے“ لیتے۔“ وہ بولی۔

”ضروریہ حرکت اس عمار کی ہی ہوگی۔“ وہ جھٹکتے ہوئے منہ پھاڑ کر بولی امی نے تائیدی نظروں سے اسے دیکھا۔

”پلیز اس وقت مت شروع ہونا۔“ عرین نے چکی کا کڑا ہستی سے کہا۔ کچھ ہی دیر بعد عمار بیرونی گیٹ عبور کر کے بکرے کے ہمراہ داخل ہوا تو گویا چہرے پر سکون چھا گیا۔

”یہ کیا حرکت تھی؟ معلوم بھی ہے سب کتنا پریشان ہو گئے تھے۔“

”کوئی حرکت؟“ وہ بے حد سنجیدہ تھا۔

”یہی بکرے والی۔“ اسے سنجیدہ پا کر اس کے لفظ ذرا لرزہ کھائے تھے۔

”بڈھنری۔“ وہ تپے ہوئے انداز میں بولی آواز اتنی دہمی تھی کہ صرف وہی سن پایا تھا۔

”انتا گرا ہوا نہیں ہوں۔“ اسے غصہ تو بہت آیا تھا مگر گھر کے بزرگوں کا لحاظ کر کے وہ آرام سے بولا تھا کشمالہ نے منہ چڑایا۔

☆☆☆☆

اور پھر کچھ ہی دن میں اسے کسی کی گواہی سے یقین ہو گیا تھا کہ بکرے کو کم کرنے والی حرکت عمار کی نہیں تھی کچھ پہلے کے لئے ندامت محسوس ہوئی تھی مگر پھر سر جھٹک دیا۔ کچھ ہی دن گزرے تھے کہ گھر میں اس کے لئے ایک نئی پریشانی پیدا ہو گئی تھی یعنی اس کے رشتے کی اس نے خوب واویلا کیا۔

”تو کونسا ابھی شادی ہو رہی ہے رشتہ لگ جائے گا تو اطمینان رہے گا۔“ امی نے کپڑے لپیٹتے ہوئے طمانیت سے جواب دیا۔ امی سے دو ٹوک جوابات سننے کے بعد وہ دادی کے پاس گئی دادی برآمدے میں تخت پر بیٹھی ورد کر رہی تھیں۔

”میں نہیں کرتا چاہتی یہ شادی روک دیں ان آنے والے خصوصی مہمانوں کو۔“ خود میں پوری ہمت جمع کر کے وہ بنا تمہید باندھے بولی تھی دادی کو اس کے رویے اور انداز پر بالکل بھی حیرت نہیں ہوئی تھی انہوں نے بغور اس کے چہرے کو دیکھا۔

”اگر میری خواہش پوری ہوتی تو تمہیں کسی اور رشتے کی ضرورت ہی نہ ہوتی۔“ دادی کے جواب نے اس کا بوزا ہی خون جلا دیا مگر اس نے بڑے صبر کے ساتھ بروا داشت کیا۔

”گھر میں بہو لائے گی فکر کریں اس کے لئے رشتے تلاش کریں۔“ وہ سخت سے ابرو اچکا کر بولیں۔

”پہلے بیٹیاں اسے گھر کی ہوجائیں۔“ دادی نے سر جھٹکا کسر دہا بھر کر کہا اس نے ہونٹ سیڑھے۔

”ایچھے خاصے امیر گھرانے کا رشتہ ہے تمہاری ماں کے رشتے دار ہیں اور کل خود لڑکا بھی آ رہا ہے۔“ دادی نے دھمکایا۔

”لیکن پیاری دادی!“ اس نے ان کے گلے میں بانٹیں ڈالیں۔

”میں کچھ نہیں کر سکتی۔“ وہ آہستگی سے اس کی بانٹیں اپنے گلے سے نکال کر بولیں اور پھر خاموشی سے آگے بڑھ گئیں کشمالہ نے بے چارگی سے انہیں

بانتے دیکھا وہ بے بس ہو کر تخت پر بیٹھ گئی۔ عجیب سی بے چینی تھی دل پریشان تھا دماغ سن تھا اس کے بارے میں کوئی سوچ ہی نہیں رہا تھا سب اس کے رویے اور احتجاج کو اس کا بچپنا سمجھ کر ٹال رہے تھے بے بسی اس قدر تھی کہ آسوفیک کرگالوں پر پھسل رہے تھے۔

☆☆☆☆

اس کی خوش قسمتی تھی کہ جانے کیا جولا کے والے اسے دیکھنے آئے تھے اگلے روز خود ہی رشتے کے لئے منع کر دیا تھا گھر کے کچھ افراد افسردہ ہو گئے ہیں اس نے یہ خبر سننے ہی روم میں عرین کے سامنے بھنگڑا ڈالا تھا۔

”یقیناً اور کسی کے بی کا کہ ہے یہ۔“ ہاتھوں میں چائے کی ٹرے پکڑے وہ لان کی جانب جا رہی تھی کہ اس کی سماعتوں نے عمار کی آواز سنی وہ اس کی اس بات پر دھیان نہیں دیتی مگر اس نے اس کے نکلنے سے حیران کر دیا تھا۔

”میں نے ہی اسے جھوٹ بولا کہ میں کشمالہ کو پلندہ کرتا ہوں پلیز آپ انکار کر دو۔“ بولنے کے ساتھ ہی اس کا جان دار بقیہ گونجا تھا عرین بھی اس کی ہنسی میں شامل تھی اسے لان کی جانب آتا دیکھ انہوں نے ہنسی دبا دی تھی جبکہ کشمالہ اپنے چہرے کے تاثرات چھپانے میں مصروف تھی۔

”میں آئی ہوں۔“ عرین کو کچھ یاد آ گیا تھا وہ بانے لگی۔

”جلدی آنا تمہاری چائے بھی ہے۔“ وہ سرسری انداز میں بولی چند ٹائٹل ان دونوں کے درمیان خاموشی رہی۔

”بکری تمہیں جو دیکھنے آئے تھے ان کو پسند نہیں آئی تم۔“ وہ تنگ کرنے والے انداز میں بولا کشمالہ نے تپ کر اس کے طمانیت بھرے چہرے کو دیکھا۔

”تم نے کچھ کیا ہے نا؟“ اس نے ابرو اچکا کر

مشکوک نگاہوں سے اسے دیکھا۔

”میں نے کیا کرنا ہے۔“ اس نے کندھے اچکا کر کہا۔

”سن لی تھی میں نے تم دونوں کی گفتگو ابھی جو آپ عرین سے فرما رہے تھے۔“ اس نے دوسری جانب دیکھتے ہوئے جتانے والے لہجے میں کہا تھا۔

”ہاں جی! میں نے سوچا اتنا پنڈ سم لڑکا اور کہاں تم بکری۔“ وہ تن کر بولا کشمالہ نے کھا جانے والی نظروں سے گھورا۔

”مجھے چاہئے بھی نہیں پنڈ سم۔“ چائے کا سپ لیتے ہوئے انکا ہٹ بھر جواب حاضر ہوا۔

”ہاں تمہیں تو کوئی کمرای ملے گا۔“ وہ بول کر خود ہی ہنسنے لگا وہ کڑھ کر رہ گئی۔

”اب تو خوش ہونا؟“ ایک دم سنجیدگی سے پوچھا گیا کشمالہ نے خاموشی سے ایک نظر اسے دیکھا۔

”زور ہی تھی بے چاری دادی سن رہی تھیں اور نہ تائی امی۔“ اس نے گویا انکشاف کیا یعنی وہ اس کی فطرت کی کیفیت سے واقف تھا زندگی میں پہلی بار کچھ پہلے کے لئے وہ اسے اچھا لگا تھا وہ کچھ بھی بولنے سے قاصر تھی شاید چوہائی ہو گئی تھی پھر کھلے آسمان کو خاموشی سے تنگنے کی۔

”زیادہ خوش ہونے کی ضرورت نہیں ہے یہ سب میں نے خود کے لئے کیا۔“ ہاتھ موڈ پر پانی پھیرتا وہ اچھی طرح سے جانتا تھا اس نے غصے سے اس کے شرارت بھرے چہرے کو دیکھا۔

”سو جو اگر تم چلی گئیں تو میں کس کو تنگ کروں گا۔“ وہ آنکھیں سیڑھ کر شرارت سے بولا تھا وہ سر جھٹک کر اٹھ کھڑی ہوئی تھی۔

”اور ہر بار ایسا ہی کرتا رہوں گا۔“ اس نے پیچھے سے بانک لگائی تھی کشمالہ کے لبوں پر ہلکی سی مسکراہٹ چلی تھی۔

☆☆☆☆



زونا نشہ کے ہاتھوں پر مہندی کا رنگ بہت گہرا آیا تھا، شام لگے تو کئی دفعہ سراپا بھی چکی تھی، زونا نشہ پارلر سے آ کر بیٹھی تھی بلڈ ریڈ لہنگے میں میچنگ جوبلی میں مکمل ہارنگھار کئے پور پور ایسے ہمسفر کے لئے سجائے نہایت حسین و خوش رنگ رہی تھی۔
 ”زونا نشہ! آہ! اذہان مرضی کی خیر نہیں۔“
 شام لگے آہستگی سے پھیرا اٹھا۔ زونا نشہ کو گھبراہٹ ہو رہی تھی۔

”شام لگے پلیز! میرے ساتھ نہ ملو! میں طرح کی باتیں۔“ لیکن بنی زونا نشہ نے نفی سے کہا تھا۔
 ”اوہ تو پھر کس طرح کی باتیں کروں۔“ شام لگے کہاں باز آنے والی تھی۔
 ”شام لگے۔“ زونا نشہ چیختی تھی۔

”زونا نشہ! یہ رویہ تیرا۔“ شام لگے کو اچھٹا ہوا تھا۔
 ”شام لگے! یوں انجان نہ بن میرا رویہ ایسا ہی رہے گا۔“
 ”زونا نشہ! تو اذہان بھائی کے ساتھ بنی زندگی کا آغاز کرنے جارہی ہے پرانی یادوں کو بھلا دے، باتوں کو ذہن سے نکال دے، اذہان بھائی تجھے بہت چاہتے ہیں، تجھے بہت خوش رکھیں گے ہر طرح سے خیال رکھیں گے۔“ شام لگے آہستگی سے اسے سمجھا رہی تھی شادی کی رسومات کا آغاز ہو چکا تھا، زونا نشہ لبوں پر جھولی مسکان سجائے مسکرا رہی تھی۔

☆☆☆☆

”زونا نشہ! تو اپنی بنی زندگی کا آغاز محبت اور خوشی کے ساتھ کر اذہان بھائی تجھے بہت چاہتے ہیں، ہر انسان کی زندگی میں اس کا ماضی حسین و دلخیز ضرور ہوتا ہے چلا رہی تھی۔“

”زونا نشہ! میں تیری دشمن نہیں ہوں تو چار دن کی محبت کے لئے اپنی دوست کو اتنا ذلیل کر رہی ہے احسن رضا کے بارے میں تجھے کچھ بھی نہیں پتہ میں نے اس کے بارے میں جو کہا سب سچ ہے اذہان بھائی تجھے اب سے نہیں بچپن سے چاہتے ہیں تو اپنی کی بچپن کی مانگ ہے۔“ شائلہ بھی ہار نہ مان رہی تھی۔

”بس اب تم جاسکتی ہو مجھے اکیلا چھوڑ دو۔“ زونا نشہ کی سرد مہری پر شائلہ کی آنکھیں نم ہو گئی تھیں۔ ”ہم جنہیں چاہتے ہیں ہم اپنی ضرورت تکلیف میں نہیں دیکھ سکتے“ بغض اوقات ہمارا مان ہی قدر و خیال کرنا ہمیں ان سے قریب کی بجائے دور کر دیتا ہے شائلہ جتنی زونا نشہ کی قدر کرتی تھی خیال کرتی تھی زونا نشہ نے غلط فہمی میں آ کر غصے میں آ کر شائلہ کو فوٹو سے دور کر دیا تھا۔

☆☆☆☆

”زونی! تمہیں مجھ سے محبت ہوتی ناں تو تم آج میرے ساتھ ہوتیں۔“ زونا نشہ موبائل پر احسن رضا سے بات کر رہی تھی احسن رضا نے دھی ہو کر کہا تھا۔

”احسن! محبت دل کی گہرائیوں سے ہوتی ہے محبت کو دل سے کوئی نکال نہیں سکتا“ رشتے زبردستی کے نہیں محبت سے نہتے ہیں اذہان اور میرا رشتہ بے معنی ہے زبردستی کا رشتہ ہے میرے ماں و باپ نے میرے آگے سر جھکا دیا تھا کہ ان کی عزت میرے ہاتھ میں ہے میں چار دن کی محبت کے لئے پچیس سالہ محبت کو نظر انداز نہ کر سکتی تم نے فکر ہو ماں و باپ کی عزت کی خاطر یہ شادی ہو گئی ہے یہ شادی کامیاب نہ ہو سکے گی میں اذہان صاحب کو مجبور کر دوں گی کہ وہ مجھے چھوڑ دیں میں تم سے شادی کر لوں گی۔“

”زونا نشہ! میں طلاق یافتہ لڑکی سے شادی نہ کر سکوں گا ہاں ویسے ہم دوست ہیں اور ہیں گے۔“ احسن رضا خباثت سے مسکرا کر بولا تھا۔ ”احسن! نہ لگ کیا کہہ رہے ہو میں طلاق تمہاری خاطر لوں گی۔“ وہ اس کی باتوں پر ششدر رہ گئی تھی۔

”زونا نشہ! تم کسی کی بیوی ہو شوہر بیوی سے اپنا حق نہ وصول کیا ہو نہیں سکتا مجھے استعمال شدہ چیزیں استعمال کرنے کی عادت نہیں۔“ زونا نشہ کا دل زوروں سے دھڑک رہا تھا وہ جس شخص سے محبت میں پاگل ہو گئی تھی کہ اپنی کو یمنین کر دیا تھا آج جب وہ اس کی طرف پلٹنا چاہ رہی تھی تو وہ ہی ہاتھ چھڑا کر دور چلا گیا تھا محبت کی راہوں میں ساتھ چلنے کا عہد کرنے والے نے ہی اپنی راہ الگ کر لی تھی وہ تو صدمہ تھی حواس معطل ہو چکے تھے شدید پیش کے عالم میں اس نے ہاتھ میں پکڑا قیمتی مہنگا فون بیٹ ساٹنے دیوار پر دے مارا تھا خود پھولوں بھری سیج سے اٹھ کر کمرے کے باس آ کھڑی ہوئی تھی اس کے اندر بہت زیادہ جوش و خروش بھر رہا تھا رات کی بھنڈی ہوا بھی اسے تیار ہی بھر ادا احساس دلانے میں کامیاب نہ ہو سکی تھی۔

”میں دنیا کی پہلی لڑکی ہوں گی جو نکاح کے چار گھنٹے بعد طلاق کا مطالبہ کرے والی تھی میں محبت کی خاطر ہر حد پار کرنے جا رہی تھی اور مجھے ملتا کیا صرف اور صرف خسارہ اچھا ہوا احسن رضا نے اپنے خیالات ظاہر کر دیے میں تو کہیں کی نہ رہتی۔“ زونا نشہ خود احتسابی کے قہر سے گزار رہی تھی۔

”یہ اذہان روم میں کیوں نہیں آئے۔“ کافی گھنٹے گزر جانے کے بعد زونا نشہ کو فکر لاحق ہوئی تھی وال کلاک پر نگاہ پڑی تو وہ حیران رہ گئی تھی صبح کے ساڑھے پانچ بج گئے تھے۔

”میرے رویے کی وجہ سے ہی وہ روم میں نہیں

آئے ہوں گے۔“ زونا نشہ نے خود کو ہی قصور وار شہر بایا تھا۔ ”شائلہ کو متیج کرتی ہوں۔“ شائلہ کا خیال آتے ہی اس نے موبائل اٹھایا تھا اس کی اسکرین ٹوٹ چکی تھی موبائل آن نہیں ہو رہا تھا وہ کار پیٹ پر بیٹھی دوچ رہی تھی اب کیا کرے اسی اثناء میں کمرے کا گیٹ داہوا تھا وہ فوراً کھڑی ہوئی تھی۔

”زونا نشہ! معذرت چاہتا ہوں چچا جان کا بلڈ پریشر ہائی ہو گیا تھا ان کو ایمرجنسی میں ہاسپٹل لے لئے تھے بس اسی سبب میں دیر ہوئی تمہیں انتظار کے بہانہ گسل بھارت سے گزرتا پڑا۔“ اذہان کمرے میں آتا ہی آہستگی سے کھٹے لگا تھا۔

”ابو! کی طبیعت خراب ہوئی اور مجھے کسی نے بتانا بھی گوارہ نہیں کیا۔“ اس نے جھکی بھری نگاہ اذہان پر ڈالی تھی اور روم کا گیٹ کھول کر باہر جانے کا انداز کرتی سیدھی نیچے پورٹ میں چلی گئی تھی۔

”زونا نشہ! یہ تم کس طرح چلی آئی ہو آج تمہاری شادی ہوتی ہے تمہیں اپنے روم میں ہونا چاہئے۔“

”میں ابو کو دیکھنے آئی ہوں اتنی طبیعت خراب ہوئی کہ ہاسپٹل سے ہو کر آئے ہیں اور میں کمرے میں بیٹھی پریشان ہو رہی ہوں کہ کیا ہو گیا ہے کوئی مجھے بتا بھی نہیں رہا۔“ ماں کی ڈانٹ کو نظر انداز کرتی وہ تروٹھے پن سے بولی تھی۔ احسان خان نے بیٹی کو پاس بلا کر بٹھا لیا تھا زونا نشہ اپنے کپے پر نام لکھی۔

”ابو! مجھے معاف کر دیجئے گا میں نادانی میں اپنی زندگی برباد کرنے جا رہی تھی شائلہ نے ہر لمحہ مجھے بھٹکے سے بچایا ہے جو ہوا میری نادانی سمجھ کر ریزر کر دیجئے گا“ آئندہ کبھی بھی میں اپنے والدین کا سر نہیں جھکاؤں گی میں اچھی بیٹی ہوں گی۔“

بہو بن کر دکھاؤں گی۔“ زونا نشہ پشیمانی میں گھری ندامت سے پر لہجے میں بولی تھی۔ احسان خان فاطمہ بیگم کی آنکھیں اشکبار ہو گئی تھیں اذہان بھی سر جھکائے کھڑا تھا۔

”شکر الحمد للہ رب العالمین میری دعائیں رنگ لے آئیں میری بچی کو اب اللہ تعالیٰ نے برائی کی راہ سے ہٹالیا۔“ فاطمہ بیگم نے تشکرانہ انداز میں کہا تھا شائلہ کے چہرے پر مسکان رکھا تھا۔

”زونا نشہ! تم کیسی بیوی ہو شوہر کی اجازت کے بغیر میکے چلی آئیں۔“ اذہان نے ماحول پر چھائی کشاف کو پر مزاح انداز میں دور کیا تھا زونا نشہ اس کی بات پر جھینپ گئی تھی۔

”زونا نشہ بیٹا! اپنا دل ہر دم کے صاف رکھو ہمیں اپنی بیٹی پر بہت بھروسہ ہے تم بہت اچھی بیٹی ہو گزری باتوں کو چھوڑ دو آنے والے کل کو اچھا بناؤ اور سنو اور سدا شاد و آباد رہو ہماری دعائیں تمہارے ہمراہ ہیں۔“ احسان خان نے اٹھ کر بیٹی کے سر پر دھڑکتی شفقت رکھ کر مسکرا کر کہا تھا زونا نشہ کی آنکھیں ٹھنک گئی تھیں اک انجان شخص کی خاطر اپنوں کا جان و اعتبار توڑنے والے کب نہ رہتے ہیں میں اس کی جھوٹی محبت میں اپنوں کی خالص محبت کو رد کر رہی تھی زونا نشہ اذہان کے ہمراہ اپنے روم میں چلی آئی تھی غلط فیصلے سے بچ گئی تھی اب بہاریں اس کی منتظر تھیں بچی محبت موسم بہار کی مانند ہوتی ہے جو ہماری روح کو سرسبز و شاداب کر دیتی ہے۔

☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆☆☆

☆☆☆☆

☆☆☆☆

☆

زندگی کے رشتے

شہرہ کا رشتہ طے ہو گیا تھا رشتہ کس طرح طے ہوا
بند جو طوفان کھڑا ہوا اصل کہانی تو اس کی ہے۔
وہ تو ایک الگ داستان ہے لیکن رشتہ طے ہونے کے
”یہ کیسی بے گئی تاریخ دکھ دی تیاری کی 28 اپریل“



”ہاں کو چھٹیاں نہیں ملیں گی۔“ بچوں والوں کا اعتراض۔
مہینہ کے آخر میں رکھ دی تاریخ جب میں ڈھیلا
ہی نہیں ہوتا بنیان اور نیکر پہن کر آ جا میں گے بھی
م بھی تو کوری والوں کا اعتراض۔ تو بہ تو بہ اپریل کا
نر اتنی گرمی ہوتی ہے تو یہ رستمی کپڑے تو پہنے ہی
نہیں جانے اور شادی میں لان کے کپڑے تو ویسے
میں اچھے نہیں لگتے عورتوں کے اعتراضات۔
”میرا نمک کا ٹرک آتا ہے اپریل کے آخر
م۔“ بڑے پھوپھا کا انوکھا اعتراض۔
”لو جی 28 رکھ لی جمعہ شامل جاتا تو کیا تھا۔“

بچوں کا اعتراض۔
”بارات کا انتظام کرتے دم نکل جائے گا اتنی
گرمی میں اس قدر پچھے کہاں سے لائیں گے۔“ دہن
لے بھائیوں کے اعتراض۔

”میرے بچوں کے پیپر ہیں۔“ شہینہ چچی کا بے
”نا اعتراض جس پر دادی کی بس ہو گئی اور وہ بڑی
ناپسند (شہرہ کی امی) ان پر چڑھ دوڑیں۔
بھوتی کی اولاد نہ ہو تو مجھے دس کے اپریل میں
ہانا اسکول پیپر لیتا ہے وہ بھی تیسری چوٹی
اور ساتویں کلاس کے ایو بس دادی کا بس چلتا تو
انہیں پٹرول ڈال کر ماچس کی تلی سے جلا دیتیں اس
قدر شعلہ جوالہ ہو رہی تھیں اور تیرا ٹرک جیسے تیرے
گندہ توں پر کھڑا ہو کر اترے گا ہے ناں اور تو زبان
مے جاٹ جاٹ کے تھیلوں میں بھرے گا فضول
امان۔ بہو کے مقابلے میں داماد کی پھر بھی ذرا
پاپ ہو گئی۔

”لنگے نہ ہوں تو جس نے آنا ہے آؤ جس نے
نہیں آنا نہ آؤ۔“ انہوں نے بڑی پھپھو کا کیس خود لڑا
اور جیت گئیں 28 کی رات تک پھپھو کی طرف
نہی اترتے رہے ہر آنے والا ان پر احسان دھر
یا۔ ہمیں پتہ ہے کہ کیسے آئے ہیں اور پھپھو کھول کر
دہائیں۔

”تھریا وہ لوگ تیرے زیادہ سکے ہیں جو انہیں
اندر کمرے میں بٹھا کر کھانا دیا ہے اور ہمیں باہر صحن
میں؟“ بڑی چچی کو پھپھو کی اپنے سسرال والوں کو دی

”بارات میں کتنے لوگ آئیں گے؟“ سب کا
مشترکہ سوال۔
”تقریباً ایک سو۔“

”تو بہ تو بہ بارات لے کر آ رہے ہیں یار بی لے
کر۔“ بے گئی تو ہوں گے نا۔
”پھر بھی اتنے لوگ منہ اٹھا کے آ رہے ہیں حد
ہے بدلی گئی کی۔“ بڑے پھوپھا کا بی بی ایسی باتیں سن
کر 150 پہ پہنچا ہوا تھا ہر آدمی کھٹے بعد تان لگا
دیتے۔

”تھریا ایک گولی اور لا دو۔“ اور تھریا کا بس نہیں
چل رہا تھا کہ شہرہ کے جینز میں کیا کچھ دے دیں انہیں
فرش صاف کرنے والا واپس اور نہانے ڈونگا ڈبہ لانا
دیکھ کر دادی کھول گئیں۔

”نی تیری کڑی نہ تو انٹارکٹیکا جا رہی ہے اور نہ
صحرائے گولی ان ٹخروں کے گھر فرش صاف کرنے
والا تو ہوگا لیکن پھپھو بس سنی ان سنی کرتے ہوئے
چیزوں کا انبار لگائے جا رہی تھیں بے گئی چیزیں اچار
بھانے کے لئے ہالٹی ماچس، کپڑے دھونے والا
صابن تکی کے کس والے چوبے کا پائپ بھی باہا ہا۔
عاشق بیچارہ تو مجھے جنم کے لئے پر لگا ہوا تھا جہاں پنکھا
مانگتے جاتا۔

”انتی گرمی میں شادی کیوں رہی؟“
”اوجی سردی سے لڑائی ہو گئی تھی۔“ رات کو
برادری کا کھانا کھلا تو ایک اور طوفان لو چاول تو ہیں
ہی نہیں نمکین چاول کیوں نہیں بنوائے تو بہ بیٹھے
چاولوں میں کتنی تجبوسی سے سیوہ ڈالا ہے تو بہ تان تو
سارے جلے ہوئے ہیں تو بہ چکن تو سارا گل کے کس
ہو گیا ہے۔“ بچہ پارٹی نے چن چن کر زردے میں
سے کشش رس ملا لیا اور بادام چن لئے۔

”تھریا وہ لوگ تیرے زیادہ سکے ہیں جو انہیں
اندر کمرے میں بٹھا کر کھانا دیا ہے اور ہمیں باہر صحن
میں؟“ بڑی چچی کو پھپھو کی اپنے سسرال والوں کو دی

تبت

ٹالکم پاؤڈر



اب 3 نئی خوشبوؤں میں دستیاب



تبت ٹالکم پاؤڈر - صبح سے شام ہلکے ہلکے

آؤ جھگت ایک آنکھ نہیں بھاری تھی۔
 ”چل فرکی ہو یا“۔ وادی نے بات رفع دفع
 کرنی چاہی۔
 ”میں امی جی اسے کی گل ہوئی یہ بس ان کے ہی
 آگے پیچھے پھر رہی ہے جھٹائی جی یہ کھالو دیورانی جی یہ کچھ لو
 ہم لوگ تو نہ تین میں نہ تیرہ میں“۔ بڑی چچی پھر گئیں۔
 ”مجھے بتاؤ میں کی کراں رہا مینو چک لے“۔
 بڑی پھپھو کے پاس یہ آخری حربہ تھا۔
 ”اس سے اچھا گوشت تو میں بنا لیتا ہوں“۔
 پھپھو کے جیسے نے چار پائیں سالن کھا کر تیرہ کر گیا۔
 ”بس فوکل اس کو کھاتے تو ہی کھڑا ہونا اے ٹائی
 کو منج کر دو“ وادی نے مسند اودھ اودھ اودھ بوجی کرتے رہ
 گئے بارات کے دن ہنگامے کی ہنگامے رہے شمرہ بھاری
 کا مدار سوٹ پہنے ایک ایک کوگالیاں نکال رہی تھی۔
 ”اللہ کرے ان سب کی شادیاں بھی مل جائیں
 میں ہوں انہیں لگ پتہ جائے امی نے اپنی کوکھ میں
 کروالی ہے مجھے پھنسا دیا“ اس نے ماں کو بھی نہ بٹھا
 دلہے پر سو نقص۔
 ”اوئے ہوئے اس کی ناک کتنی لمبی ہے“
 مشترکہ نقص۔
 ”لمبی نہیں ہے اونچی زیادہ ہے“۔ فقہ شدہ نقص۔
 ”اونچی بھی اور مونی بھی آلو جیسی توبہ ہوگئی“۔
 ”یہاں بھی اپنے سسرال والوں کو الگ کھانا
 دے دیا“۔ بڑی چچی باز نہ آئیں۔
 ”لہن کا میک اپ ذرا نہیں اچھا“۔ ہر بارات کا امتزاج۔
 کھانا کھانا تو ایک بار پھر نقص بڑے پھوپھا کی بس
 ہوگئی سارا غصہ ٹائی پر نکل گیا بارات میں آئے بچوں
 نے بوٹیوں کا وہ حشر نشر کیا تو یہ توبہ کوئی نہ رہا ہے کوئی
 بہا رہا ہے وادی تو بس دیکھ دیکھ کڑھ رہی تھیں کتنی ہی
 بوٹیں میزوں کے نیچے سے غائب ہو گئیں خدا خدا
 کر کے رخصتی ہوگئی شمرہ اپنے سارے تحائف اور
 لفافے فی الحال ادھر ہی چھوڑ گئی تھی رات ہوتے ہی

☆.....☆.....☆

لکھی بابت سوری

نیلے آسمان پر سفید بادل روئی کی مانند بھر رہے تھے یوں لگ رہا تھا جیسے نیلی چادر پہ سارے جہان کی سفید روئی اڑتی پھر رہی ہو۔ سڑکوں پر طرح طرح کے بلبوسات پہنے نہ جانے کس کس مذہب اور نسل سے تعلق رکھنے والے لوگ چل پھر رہے تھے اسی ہجوم میں زوار حیدر بھی شامل تھا۔

پنجاب کے دل شہر لاہور کا باسی جس کا آبائی تعلق کسی اور گاؤں سے تھا مگر جمال ہے ذرا برابر بھی اس کے چہ

فٹ کے نکلنے دراز قد کے حامل وجود کو دیکھنے سے کسی کو اس کے دیہاتی ہونے کا گمان ہوا ہو۔ پڑھی لکھی فیملی نے اس کا آبائی دیہاتی پن چھوڑ دیا تھا۔ وہ گندی رنگت بھی نہیں رکھتا تھا وہ زیادہ صاف شفاف جلد والا بھی نہیں تھا اس کے تین نقوش زیادہ جادو سے نظر نہیں تھے پھر بھی وہ دیکھے جانے کے قابل تھا، وہ سراپے جانے کے قابل تھا۔ زوار حیدر کی آنکھیں سیف الملوک جھیل کی طرح گہری تھیں بس جو دیکھے جیسا ہو ویسے ہی دیکھتا رہے۔ اس کی آنکھوں کا رنگ پسندیدہ لالہ جادو سے نظر رنگوں سے نظر آئے والوں میں سرفہرست بھی نہ تھا لیکن پھر بھی اس کی لائٹ براؤن آنکھوں میں ڈوب جانے کو جی چاہتا تھا۔

اس کی آنکھیں علم حاصل کرنے کی خواہش میں ہمیشہ جگمگاتیں نظر آتیں آج اس کی جھیل جیسی آنکھوں میں پہلے سے بھی زیادہ گہرائی تھی۔ اس کی آنکھوں میں پہلے سے زیادہ حاذ بیت بھی اضطراب تھا۔ وہ بے مقصد اپنے

منسل ناول



دوست ابرام کے ساتھ الماتے کی سرکوں پر گھومتا پھرتا رہا۔ اپنی بلیک لیدر جینٹ کی جیب میں دونوں ہاتھ ڈالے بنائے وجہ کے ریشم جوڑوں کو دیکھتا رہا، ابھی اپرن ڈال کے پتھر سے بنے کاؤنٹر پر گوشت بنانے والے کو گوشت کے ٹکڑے کرتا دیکھتا رہا۔

ایسے ابرام، زوار حیدر کا یونیورسٹی فیلورہ چکا تھا، آکسفورڈ یونیورسٹی میں وہ دونوں اکٹھے پڑھتے رہے۔ ایسے برنس بڑھ رہا تھا سوزوار حیدر نے بھی برنس اینڈ منسٹریشن میں گریجویٹ کر لیا۔ ایسے ابرام قازق سنی مسلم تھا اور زوار حیدر کا تعلق پاکستانی سنی مسلم گھرانے سے تھا یہ چیز بھی دونوں کو خاصی قریب لے آئی تھی۔

زوار حیدر ان لوگوں میں سے نہیں تھا جنہیں ہر چیز تو ان کا ملک دیتا تھا اور دیتا ہے مگر وہ اپنے ملک کی بجائے دوسرے ملکوں میں جاکے عیش و آرام کرتے ہیں۔ کمایا پاکستان میں کھانا دیکر ممالک میں۔ آکسفورڈ یونیورسٹی میں بھی اسے علم کا شوق لے گیا دولت کی کمی تو تھی لیکن پھر بھی اسے اپنا ملک یاد آتا رہا۔ جڑال و ملی، وادی نیلم، کوئٹہ شہر گلگت کے سادہ لوح لوگ، فیصل آباد کا گھنڈ گھر، گوجرانوالہ کی سرزمین پر سونے کی مانند روشن نظر آتیں گندم کی فصلیں، پھل نواز دیہاتی، مینار پاکستان کو اپنے سینے پر کھڑا کیے فخر سے سینہ چوڑا کر کے لیٹا شہر لاہور۔ وہ ایک ایک چیز یاد کرتا رہا۔ جہلم کا بک کارنر شوروم بھی جس کی چھت تلے وہ ڈیڑھ لاکھ کے قریب موضوعات پر لکھی ہیں ان میں لاکھ کے خریدتا رہا، پڑھتا رہا تھا۔

ٹائیکل دیکھتا چند صفحوں پر سرکے نگاہ ڈال کے چند انہیں پڑھتا اور خرید لیتا۔ لاہور کی کئی لائبریریوں کی ممبر شپ اسے حاصل تھی۔ زوار حیدر کو پڑھنے لکھنے میں لائبریری تک یاد آتے رہے، پھر وہ خوشی خوشی پاکستان آیا لیکن یہ خوشی چند لمحوں کی تھی زندگی میں پہلی بار اسے پتا چلا تھا کہ مجبوریاں صرف عورت کو ہی نہیں گھیرتیں بعض دفعہ یہ انسان کو اتنا بے بس کر دیتی ہیں کہ مضبوط اعصاب کا مالک مرد بار جاتا ہے۔

”اور..... مجبوریاں جیت جاتی ہیں۔“ زوار حیدر کے ساتھ بھی ایسا ہی ہوا اس کی آنکھیں سمجھ گئی، کتاب پڑھنے لگتا تو سمجھ نہ آئی اول تو دل ہی نہ کرتا، اگر پڑھتا تو الفاظ و جملے بڑھ جاتے رخسار پہ ہاتھ لگتا تو گالوں پر آنسو بہہ رہے ہوتے وہ اچھٹے سے بڑبڑاتا۔

”میں رو رہا ہوں۔“ بے یقین سا آنسو پونچھ لیتا یہ وہی تھا جو کہتا تھا میں کئی برس روؤں گا۔ اللہ کے سوا کسی کے سامنے بھی نہیں۔

لیکن وہ غلط کہتا تھا وہ اتنا نرم دل بن گیا کہ قازقستان آنے سے چند دن پہلے ماں کے کہنے سے لگ کے پھوٹ پھوٹ کے روتا رہا تھا۔ اس کا تکیہ آنسوؤں سے بھج جاتا جائے نماز اس کے رونے کا گواہ بن جاتا۔ گھر والے زیادہ ٹوکتے باتیں کرتے تو وہ واش روم میں جا کے رو آ کر تکیوں روتا ضرور تھا گھر والوں سے چھپ کر ہی لیکن روتا اس نے چھوڑا نہیں تھا۔

پھر اسے ایسے ابرام نے اپنے ملک بلالیا وہ اسے سمجھاتا دلا سہ دیتا اور اب وہ اسے پھر بھلانے کی کوشش میں مصروف تھا۔ کبھی اسے میڈیو لے جاتا۔ کبھی آستانہ شہر کے پارکوں میں گھماتا جہاں کہیں کوئی فیسٹیول ہوتا ایسے ابرام زوار حیدر کو کھینچ لانا تھا کہ زوار حیدر کا دل بہل جائے۔

دنیا کے رقبے کے لحاظ سے بڑے ملکوں میں سے بڑے ملک میں گھمانا پھر انالیس کے لیے اتنا آسان نہیں تھا۔ اس لیے وہ کئی کئی دن صرف زوار حیدر کے نام پہ وقف ہوتا۔ اپنے ہاتھ سے اسے ”سوریہ“ بلایا کرتا یہاں کی روایتی ڈشز اسے کھلاتا جہاں سب سے مزید ارسہ (سموسہ) ملا کرتا وہ زوار حیدر کو وہاں سے سہہ کھلاتا، لکھ میں

(قازق ڈش) جیسی لذیذ ڈش کھلا کے بھی اسے زوار حیدر سے تعریف کی امید نہ ہوتی۔ وہ اس کا شکریہ ادا کر دیتا تو ایسے ابرام کے لیے یہی کافی ہوتا۔ آج بھی حسب معمول ایسے ابرام اسے اپنے ساتھ دھکیل کے لایا ہوا تھا وہ یہاں ”الماتے“ کا سب سے پر رون گریں بازار زوار حیدر کو دکھا رہا تھا۔

عورتیں لائنگ کوٹ اور جینز میں ملبوس سرکواسکارف سے ڈھانپے خرید و فروخت میں مصروف تھیں جوتوں سے لے کر کھانے پینے کی اشیاء تک یہاں مہیا تھیں ایسے ابرام ایک ایک چیز زوار حیدر کو دکھاتا اب اس نے زوار حیدر کو کھانے پینے کے اسٹال کے قریب روک دیا جہاں تک نظر آتا درمیان میں کھلی جگہ چھوڑ کے دونوں اطراف کھانے پینے کی اشیاء تھیں۔ نیلی شیٹ بچھا کے خوب صورت ٹوکریوں میں تازہ چیزیں بچھیں تھیں۔

”یہاں کیوں روکا ہے مجھے؟“ زوار حیدر نے انگلیش میں ایسے ابرام سے کہا تھا۔

نیلی شیٹ پر پونجی آف وائنٹ شیٹوں پر سب سے طرح طرح کے پھل سبزیاں اور ساسز دیکھتا زوار حیدر اب کی بار چڑکے بولا۔

اسے شے کے جانوروں میں پڑی مختلف ساسز کو دیکھنے میں کوئی خاص دلچسپی نہیں تھی۔ وہ بھلا کوئی شیف تھا جو ان میں دلچسپی لیتا۔

”تمہیں تو یہاں کا مشہور ماہر دیکھنے میں بھی کوئی دلچسپی نہیں ہے میں جانتا ہوں۔“ ایسے ابرام نے بھی انگلیش میں کہا تھا۔

”پھر یہاں روکنے کا مقصد؟“ زوار حیدر نے اسے پوچھا۔

”مجھے کچھ ڈرائی فروٹس خریدنے ہیں۔“ ایسے ابرام نے اسٹال کی طرف ہو گیا جہاں سرخ رنگ کھلے ڈیہ نما ہار پر بے شمار میوہ جات پڑے تھے۔ ایسے ابرام سیاہ اور سرمہ جیڑیں خریدنے میں لگ گیا۔ تب زوار حیدر ارد گرد کا جائزہ لینے لگا یہاں اس بازار میں بہت سی عورتیں بھی ساتھ لے کر یہاں پہنچ رہی تھیں بازار میں ریشم، پانیٹر، یوکر انجین، ازبک اور بھی بہت سے لوگ آ جا رہے تھے۔

تھوڑی دیر بعد ہی اسے پتا چل گیا کہ نیلی شیٹ جسے وہ سمجھ رہا تھا وہ ٹائیکل کا رنگ تھا، اس پر نیلی شیٹ نہیں پائی تھی۔ ایسے ابرام جب چیزیں خرید کے فارغ ہوا تو زوار حیدر نے اسے بھی یہ بات بتائی اسٹل دونوں میں نیلی بار الماتے کے گرین بازار میں زوار حیدر کے لیوں پر ہلکی سی مسکراہٹ آئی تھی۔ ایسے ابرام نے تم آنکھوں سے زوار حیدر کو دیکھا تھا۔

”مسکراؤ زوار حیدر مجھے یقین ہے کہ پاکستان جا کر تم اتنا بھی مسکرا نہیں سکو گے۔ اتنا بھی خوش نہیں ہو سکو۔“ ایسے تیس سالہ زوار حیدر کو دیکھتا سوچ رہا تھا۔

☆.....☆

الماتے کا شہر روشنیوں سے نہایا ہوا تھا۔ قازق لوگ اور قازقستان میں رہنے والے مسلمان عیسائی تمام لوگ پہنچ پونجی ڈے منار سے تھے، قومی ترانہ گایا جا رہا تھا فوک رقص جاری تھا، مختلف شہروں کے روایتی لباسوں میں ماہر لوگ متحد ہو کے گول گول گھومتے خوشی کا اظہار کر رہے تھے۔ ڈھول کی تھاپ پر سفید پاجامے اور سفید ٹائٹ فریک میں ملبوس قازق لڑکیاں سرخ ویلوٹ کی جیکٹس ڈالے ہاتھوں میں سرخ رومال لہرا رہی تھیں۔ انہیں مختلف چیزوں کی نمائش لگتی تھی اور کہیں قومی ڈشیں ٹیبلو پر رکھی تھیں۔ اتنے ہجوم میں ایسے ابرام اور اس کی بیٹی بہنیں رہنما اور ایانہ بھی اماں عزیزہ کے ساتھ الماتے شہر میں پہنچ پونجی ڈے کی رنگارنگ تقریب میں

رات کی تاریکی میں دونوں بے تاب رہے تھے۔ دو تین دن سے ہونے والی مسلسل بارشوں نے ہر صاف ستھری کردی تھی۔ ہر طرف نکھار اور رونق نے ڈیرہ جمایا تھا لیکن یہ بارش لان میں ٹہلنے والے دو دن کے دل میں کسی قسم کا نکھار لانے میں ناکام رہی تھی۔ رات تاریکی کے پہروں سے گزر رہی تھی۔ لاہور میں زمین کی مٹی خوشبو سے رپٹی تھی اور آسمان پر آدھا چاند بادلوں کی اوٹ میں چھپا مسکرا رہا تھا۔ رابعہ بیگم بچل چل کے تھک گئیں تو لان میں پڑی کرسیوں میں سے ایک پر بیٹھ گئیں، ناصر رضا نے ٹھنڈی آہ بھرتے باقی سے کہا تھا۔

”بس کر دو رابعہ! کتنا ترپوگی، آخر تمہیں چین کیوں نہیں آ جاتا کب تک زوار حیدر کا سوگ مناؤ گی؟“
”کیوں سب کچھ جانتے ہوئے بھی انجان بن رہے ہیں ناصر صاحب۔“ آپ نہیں جانتے زوار حیدر کی زندگی جو ہماری ہمارے لیے کس حد تک خطرناک ثابت ہو سکتی ہے۔“ رابعہ بیگم نے کرسی کی پشت پر کمر لگاتے ہوئے موندھ لیں سرور ہوان کے مرمیں جسم کے اندر تک جا رہی تھی۔

”میں سب کچھ جانتا ہوں رابعہ!“ سب کچھ یہ وہ زور دے کے بولے۔
”زوار حیدر کے پر میں کے کاٹ دیے ہیں وہ کہیں نہیں اڑ سکتا چاہے وہ اڑان بھرنے کی جتنی بھی کوشش کرے اس نے کرنا نہیں ہے۔“ ناصر رضا نے اپنے قدموں کی جانب اشارہ کیا ان کے لیے جس میں اعتماد تھا۔
”اگر اس کے پر پھر سے اگ آئے تو پھر“ ناصر رضا نے سوت پر گرم چادر لیے رابعہ بیگم نے اس انداز سے کہا

”ناصر رضا کا سارا اعتماد رخصت ہو گیا۔“
”تو دیر وہ لب بھینچے رہے رابعہ بیگم انہیں دیکھتیں رہیں۔“ ناصر رضا نے سرگھٹاں پر چمکتے جگنو کو دیکھ کر رابعہ سے کہا۔
”تم فکر نہ کرو رابعہ بیگم! وہ ضرور واپس آئے گا۔“ ناصر رضا نے سرگھٹاں پر چمکتے جگنو کو دیکھ کر رابعہ سے کہا۔

”ویسے کے فنانس میں صرف چند روز ہی باقی ہیں اگر کب تک زوار حیدر نہ آجائے تو ہو جائے کیا ہوگا؟“ رابعہ بیگم نے اسے اٹھ کھڑی ہوئیں، ناصر رضا جذبات میں چلائے۔
”ایسے ہی نہ آیا۔ بار بار کیوں یہ بول بولتی ہو میرے سامنے بس اتنا یاد رکھو کہ اس کے پر گئے ہوئے ہیں پھر اسے اسے نہیں آتا ہے ہمارے پاس، اور عینا کے پاس۔“

اردو اپنے برطانوی طرز تعمیر جیسی کوٹھی نما سفید و سرخ رنگ والے گھر کے ٹیرس پر کھڑی تھی۔ آسمان پہ بادل اُڑ رہے تھے اور ہوا تھیں جیسے سر کو چھو کے جا رہا ہو۔ ٹیرس پر کھڑی اردو ناچاب میں لپٹی تھی۔ دور سے الماتے کے پہاڑ نظر آ رہے تھے، مغرب مٹی کے کھلے میدان تھے۔ اردو ناچاب پہاڑوں اور مٹی سے بھرے میدانوں کو دیکھتی رہی اور وہی رہی کاش وہ خود بھی مٹی کا کوئی میدان ہوتی الماتے کا کوئی پہاڑ ہوتی، ٹیرس پر کھڑے کھڑے اس کے ہمارے رخسار آنسوؤں سے بھگ گئے تھے۔ وہ چاہتی تھی وہ ایلٹ شفق کی طرح کوئی شہرہ آفاق کتاب لکھے۔
”وہ جیسی شاعری کر سکے لیکن یہ سب کہاں ممکن تھا۔“

جس کی ماں گھریلو خاتون اور باپ معمولی سا بڑھی ہو، لکڑیوں کے خوب صورت تھال بنا کر اپنے گھر کے افراد کا پیٹ پالتا ہو، اس کی بیٹی کیسے کوئی کتاب لکھ سکتی تھی، وہ کیسے آستانہ جا کر اپنی پسندیدہ کورین پیچر سے

شرکت کے لیے آئی تھیں۔ ایسے ابرام اور زوار حیدر دونوں ایک جگہ کھڑے رقص دیکھ رہے تھے۔ ارد گرد سارا آٹھ افراد کیلئے لباس پر آدھے بازوؤں والی گولڈن کاڈا سبز ویلیوٹ کی جیکٹ پہن مختلف میوزک انسٹرومنٹس رہے تھے۔ کئی کے ہاتھ میں دف تھا اور کوئی کاڈا تھ آڈرگن ہلیوں سے لگائے مشہور گیتوں کی دھن بجا رہا تھا۔
”شہر میں عین اسی وقت پہلے لا تعداد غباروں کو قازقی پرچم میں جس نیل زمین پر سورج کی تپیں کر رہی تھی خوش حالی کی علامت ظاہر کر رہی تھیں اور جس پر بنا شہر انبار طاقت کا اظہار کیا تھا غباروں میں چھوڑا گیا۔“
اسی لمحے میں ایک خوب روڑ کی ایسے ابرام کے ساتھ کھڑے زوار حیدر سے ٹکرائی تھی۔

”اندھے ہو، نظر نہیں آتا۔“ ٹکرانے والی نے بجائے سوری کرنے کے خود ہی بلاوجہ کا رعب جھاڑا۔
زوار حیدر کے لیے خاک پڑی تھی کچھ نہ سمجھ آئی وہ لڑکی اب اسے گھورنے کے ساتھ ساتھ قازقی اور زوار حیدر کے بول رہی تھی۔

ایسے رقص دیکھنے میں ہوش و حواس اسی جانب کے گرد و پیش سے بے خبر کھڑا تھا۔ زوار حیدر نے ایک نظر کر لڑکی کو دیکھا وہ ہلکی حسین تھی اس کے ہونٹ سرخ اور گال سرخ تھے لہجے سیاہ بال ترش اسٹائل اسٹارٹ لپٹے تھے زوار حیدر بنا چلک چمکے اسے دیکھتا رہا۔ اس میں چائینز جھلک تھی مگر وہ چائینز سے زیادہ پیاری تھی۔ لائٹ کوٹ کے نیچے جینز اور شووز ڈاکے لگی کڑیاں یا ماتر دھڑکی ہی بولتے ہوئے اس کے بائیں گال میں ہلکے ڈمپل پڑ رہا تھا۔ زندگی میں پہلی بار زوار حیدر کو کوئی لڑکی پسند آئی تھی اور یہ نہیں دیکھی تھی کون۔ مسلمان یا پھر مسلم۔ وہ اندازہ لگانے لگا۔ کچھ سوچتے ہوئے زوار حیدر نے آنکھیں بند کر لیں پہلی نظر کی محبت کیا ہوتی ہے وہ بات آج سمجھا تھا۔ مسلمان نہ ہوتی تو اس کا رعب کیوں ہوتی؟ دل کو دلا سہ دیتے اس نے جو آنکھیں کھولیں تو سارا

سے پری و ش کو غائب پایا۔ زوار حیدر ہمارے جہوم کو چھتا ہوا بھگا۔
”کہاں ہو تم؟“ کی آواز لگتا زوار حیدر لوگوں کی جھپٹیں اور گھوریاں نظر انداز کرتا بھاگتا جا رہا تھا۔ اردو سے لائق ہو کر کسی دیوانے کی مانند۔

”کسے ڈھونڈ رہے ہو تم؟“ پھلتی سانسوں سے جہوم میں سے زوار حیدر کی کلائی پر اپنی گرفت مضبوط کر لیا۔ ابرام چیخا تھا۔ اس کی نظریں زوار حیدر کے چہرے پر مرکوز تھیں۔

”اسے وہ جو میرے ساتھ۔“ زوار حیدر کہتے کہتے رک گیا اسے جیسے اب ہوش آیا تھا۔ وہ تو اس لڑکی کے سے بھی ناواقف تھا اور ویسے بھی وہ اسے ڈھونڈنے کا حق نہیں رکھتا تھا۔ زوار حیدر منہ ہما ہو گیا اور اس نے ابرام سے نظریں چرائیں۔

”یار تم پاگل کر دو گے مجھے۔ گم ہو جاتے اگر تم اس جہوم میں تو میں کیسے ڈھونڈتا ہوں۔“
ایسے ابرام نے زوار حیدر کی حلقی مٹانے کی خاطر دوسری طرف بات موڑ لی۔ اب وہ دوبارہ رقص دہانے لگے تھے۔

سرخ ویلیوٹ کی پوشاک میں ہلیوں سر پر کاڈا ٹوپی ڈالے ایک بوڑھی قازقی عورت بازوؤں کو ہوا میں رقص کر رہی تھی۔ اور کوئی وقت ہوتا تو دور سے اس عورت کو دیکھتا زوار حیدر لا حول و پہتا مگر اب وہ اسے بھی خوش ہو رہا تھا۔ ڈھول کی تھاپ پر سمجھ میں نہ آنے والی دھنیں بھی اچھی لگنے لگیں۔

زوار حیدر کے دھکی دل پر بارش کا قطرہ پڑا تھا رقص دیکھتیں اماں عزیزہ نے پرسوج نظروں سے اسے دیکھا تھا۔

رائٹنگ کورس کر سکتی تھی۔ وہ انگلش، قازقی اور جائیز زبان بڑی روانی سے بول لیتی تھی لیکن اس کے پاس کوئی ڈگری نہیں تھی اس کے پاس جذبہ تھا، لگن تھی، آسوتے، اضطراب تھا، کچھ کرنے کا جنون تھا لیکن اس کے پاس ڈگری نہیں تھی۔ جن کے پاس ڈگریاں تھیں وہ جذبے جنون اور لگن کے بغیر بھی ایک مقام اور اہمیت رکھتے تھے لیکن ارونا۔ اس کی ذہانت و فراست بس اسی پر ختم ہو جاتی تھی۔ جب کوئی پوچھتا تھا تھاماری ڈگری؟ اس پر ارونا اعتماد و رخصت ہو جاتا، ساری خود اعتمادی اڑن چھو ہو جاتی۔ سب کچھ ختم ہو جاتا۔ پھر بس مایوسی رہ جاتی اس نے ملنے والے اس کے علم سے متاثر تو ہوتے تھے لیکن جسے بھی یہ پتا چلتا کہ وہ ان پڑھ ہے بس ان کا متاثر نہیں ہوتا۔

بھی ارونا کا دل کرتا کہ وہ بتائے سب کو چیخ کے چلا کے کہ اس نے اس وجہ سے تعلیم حاصل نہیں کی کیونکہ اپنے بابا کے ساتھ الماتے کے گرین بازار میں سبزیاں بیچا کرتی تھی۔ بطور مددگار، اپنے بابا کے ساتھ ہر روز الماتے کے بازار میں آتا، سبزیوں کو سیلتے سے لگا کر رکھتا، ہاتھوں پر شاپر زچہا کر پھر ان سبزیوں کا چھوٹی مشین پر ویسٹ کر کے پیڈ کا کبوں کو دینا اس کا تب سے معمول تھا جب وہ تعلیم حاصل کرنے کی عمر میں تھی۔ اس کے بابا کمال انگن مرہٹن تھے جب دق نے انہیں لاغر کر دیا تھا۔ ماں گوبر بوڑھی بیمار تھیں وہ اپنے والدین کو کھانے کے سہارے چھوڑ کر علم حاصل کرنے جاتی، چاہے اسے پڑھنے کا لاکھ شوق ہی کبھی مگر وہ اپنے والدین کو بے آہٹ نہیں کر سکتی تھی۔ تب اس نے اپنے تعلیمی شوق کو کہیں اندر چھپا لیا ماں اسے بھی ڈھکے چھپے انداز میں دلائل کہ ایک دن وہ ضرور کچھ بنے گی۔ پھر ضرور اس کے لیے جس سے وہ اپنی پچان سے ایک دن پہچانی جائے گی۔ ارونا انتظار کرتی رہی صرف انتظار اور قاسم کی سہارا دینے میں تھی کہ جیتنے والا جو ہے وہ اپنی جیت کے لیے تیار ہے جب کہ ہارنے والا صرف اپنی جیت کا انتظار کرتا ہے اور یہ بھی اسی ارونا نے بھی کی وہ انتظار کرتی رہی وہ خوابوں کی نیکیل کے لیے تیار نہیں تھی اور اسی غلطی نے ارونا کو ایک تک خالی دامن رکھا تھا۔ بیس سال کی عمر کے سال کے آخری مہینے میں بیچ چکی تھی اب نئے سال کے شروع ہوتے ہی اسے کیسواں سال شروع تھا۔ تاحال کوئی خوش خبری اسے نہیں ملی۔ اس کے شوق کو دیکھتے کسی نے بھی اسے یہ آفر نہیں دی کہ ان کی یونیورسٹی پھر اسکول میں بھی وہ اپنی تعلیم کا آغاز کر سکے۔

جہاں تک سوال تین زبانوں پر عبور کا تھا تو وہ الماتے کے گرین بازار میں روز بائیں سیکھنے کی کیونکہ وہ ان زبان کا گاہک آثاروی میں بات کرنے والا چائیز پونے والا اسی لیے وہ کسی تعلیمی ادارے کے بغیر یہ دوز بائیں سیکھ گئی۔ تیسری زبان قازقی تو اس کی مادری زبان تھی۔ اس لیے وہ با آسانی تین زبانیں بول لیتی تھی اس کو بھی نما گھر کے تیسرے کمرے میں بابا کمال انگن نے لکڑی کا کاروبار شروع کر دیا۔ انہوں نے چند مہینے قبل اس کام کا آغاز کیا تھا ان کی بیماری خاصی منجھل چکی تھی اب وہ محنت کو اپنا شعار بنائے لکڑیوں کے تھال بنانا شروع کر چکے تھے۔ یہ تھال روایتی تہواروں پر خاصے فروخت ہو جاتے تھے لیکن عام طور پر ابھی وہ معاشی طور پر مستحکم نہیں تھے۔ گزر اوقات مشکل سے ہو رہی تھی۔ ان کا گھر دیکھنے والوں کو انہیں خوش حال گھرانے کا فرد تھا لیکن کے خیر تھی یہ گھر کمال انگن کے بڑے بھائی کا تھا جو کہ الماتے کے ایک ٹیکسٹائل بازار میں اپنی شاپ رہے تھے۔ ان کا ایک فضائی حادثے میں انتقال ہو گیا تو بہن کا بہترین گھر خود بخود ہی کمال انگن کی جھولی آ گیا تھا تو بڑے بھائی کی شادی ہوئی تھی نہ بچے تھے، بہنیں تھیں نہیں اور بھائی صرف ایک۔ وہ بھی تھے انگن تو یہ گھر ایسے کمال انگن کا ہو گیا۔

ارونا سوچوں میں گھری کب سے ٹیرس پر کھڑی تھی خشکی والے ملک کا خشک حصہ اس کی آنکھوں کے سامنے تھا۔ ”ایساں بھی شفیاب ہو چکی ہیں بس میرا ہی نہیں کچھ ہوا۔“ ارونا نے سوچا تھا۔ ”بد قسمتی میرے ہی حصے میں کیوں؟“ ارونا صرف میرے ہی مقدر میں کیوں؟“ ارونا یہ جانے کس سے کہہ رہی تھی حالانکہ جانتی تھی وہاں اس کے پاس صرف رب کے سوا کوئی نہیں لیکن وہ نہیں جانتی تھی جس کے پاس رب ہو اسے سب کی ضرورت ہی کہاں رہتی ہے۔

☆.....☆

”ہو کوئی رابطہ زوار حیدر کے گھر والوں سے؟“ ماں عزیزہ نے ایسے ابرام سے پوچھا تھا۔ ”نہیں ماں، وہ کسی طور بھی اپنے گھر والوں سے رابطہ نہیں کرنا چاہتا۔ میں تو اسے سمجھا سمجھا کے تھک گیا۔“ ایسے ابرام ٹانگوں کو بیڈ سے نیچے لٹکائے نیچے جھکا اپنے بوٹوں کے تسمے کھولتا ہوا بولا۔ ”وہ بھی کیا کر رہے، ان کے گھر والوں نے بھی تو بہت نا انصافی کی ہے ناں اس کے ساتھ۔“ ٹھنڈی آہ ”تے ماں اس کے قریب ہی بیٹھ گئیں۔“ ”پھر بھی اسے سمجھاؤ، ان کی ماں کا فون آیا تھا سمجھ تو مجھے آئی نہیں لیکن اس کا لہجہ بہت غصیلا تھا۔“ ایسے ابرام پر پریشان ہو گیا۔ ایک طرف زوار حیدر سے اس کی دوستی دوسری طرف زوار حیدر کے گھر والوں کی نظر۔ وہ تصویر وار ہو رہا تھا۔

”مجھے تو خود ترس آتا ہے اس پر، لیکن میں کیا کر سکتی ہوں۔“ ماں عزیزہ نے سر ہٹا لیا۔ ”میں خود بھی پریشان ہوں ماں، لیکن کیا ہو سکتا ہے اب۔ سارا ملن زوار حیدر کا بجھا بجھا ادا اس چہرے میرے سامنے ہوتا ہے۔ اس کے جانے کا وقت بھی قریب آ رہا ہے۔“ ایسے ابرام اپنی ساکس اتارنے لگا۔ ماں اس کی طرف متوجہ تھیں۔ ”اب تو اور بھی مسئلہ ہو گیا ہے دیکھا نہیں گوبر بہن کی ارونا اس کی آنکھوں میں بس گئی ہے۔ جب سے پیپلز ڈے کی تقریب سے ہو کر آیا ہے آدھا نہیں رہا ہے بے چارہ۔“ ایسے ابرام نے ہاں کے تھکا اور نرم ہاتھ پٹا ہاتھوں میں لے لیے۔

”کیا یہ نہیں ہو سکتا ماں کہ ہم زوار حیدر کی شادی کروادیں ارونا سے۔“ ”یہ کیا بک رہے ہو ایسے، تم پاگل تو نہیں ہو گئے ہو؟“ ماں نے جھٹکے سے اپنے دونوں ہاتھ ایسے ابرام کے بازو ہاتھوں سے نکالے تھے۔ ”میں صبح بک رہا ہوں ماں اتنا تو ہم اس کے لیے کر ہی سکتے ہیں پھر واپسی پر تو اس کی زندگی عذاب ہونی پ۔“ ایسے ابرام نے انہیں قائل کرنا چاہا۔

”تم چاہتے ہو کہ زوار حیدر کے ساتھ ارونا کی زندگی بھی عذاب ہو جائے۔“ ماں نے اسے گھورا۔ ”میں چاہتا ہوں ارونا کی وجہ سے زوار حیدر کی زندگی میں بہار آ جائے۔“ ایسے ابرام نے اپنا موقف واضح کیا۔ ”لیکن گوبر بہن کو کس طرح اس رشتے پر قائل کیا جائے بالفرض اگر وہ مان بھی جائے تو کمال انگن اس پر ضرور ناگ اڑائیں گے، میں اچھی طرح جانتی ہوں آخر بہنوئی ہے وہ میرا۔“ ماں کچھ دیر سوچنے کے میں تھیں ایسے ابرام نے ماں کے گھٹنے پر ہاتھ رکھتے کہا۔

”خدا آپ کو اس کا اجر ضرور دے گا، ماں مجھے بھی علم ہے کہ خالو کمال ایک غیر ملکی اجنبی سیاح کو اتنی آسانی

سے رشتہ دینے پر راضی نہیں ہوں گے لیکن ہمیں انہیں منانا ہے چاہے جیسے بھی ہو یہ میرے دوست کی خوشیوں کا سوال ہے۔“

”یہ صرف تمہارے دوست کا ہی نہیں میرے بیٹے کا بھی سوال ہے ایسے۔“ ماں نے ایسے ابرام کے سر پر شفقت سے ہاتھ پھیرتے کہا تھا۔ وہ بڑی آسانی سے قائل ہو چکی تھیں۔

”شکریہ اگر آپ میرا ساتھ نہ دیتیں تو میں ایک مسلمان بھائی کی مدد نہ کر سکتا۔“ ایسے ابرام ماں کے ساتھ لپٹ گیا۔

”آپ بہت اچھی ہیں، جنہوں نے نہ صرف اسے گھر رکھا ہوا ہے بلکہ اس کی خوشیوں کے لیے بھی اتنا کچھ کر رہی ہیں۔ ورنہ مجھے کیسے پتا چلتا کہ وہ اردن سے محبت کرنے لگا ہے۔ یہ جشن گوئی بھی آپ ہی نے کی تھی جو بالکل درست ثابت ہوئی۔“ ماں سے لپٹا ہوا ایسے خوب صورت نوجوان کی بجائے اس وقت پیارا سا بچہ لگ رہا تھا۔ ماں نے بے اختیار اس کا چہرہ چوما تھا۔

☆.....☆

”بتاؤ دوسرا ماں اتنا اہتمام کس کے لیے کروا رہی ہیں۔ پہلے تو کبھی خالہ کے لیے اتنا انتظام نہیں کروا آپ نے۔“ شیل بیک طرح کی (قازقی پوری) کی تیاری کے لیے وہ کچن میں آنا گھومتے ہوئی۔

”تمہارے لیے ہی کروا رہی ہوں یہ سب کچھ اتنی جلد بازی کیوں دکھا رہی ہو، پتا چل جائے گا کہ میں۔“ ماں نے اسٹوپر کر ڈیڑھ گھنٹے جواب دیا تو اردن نے نا اچھی سے انہیں دیکھا۔

”میرے لیے بھلا مجھ سے خالہ عزیزہ کا کیا تعلق بنتا ہے۔ سوائے خالہ بھانجی کے۔“

”تم نہیں سمجھو گی نادان لڑکی۔ بس تھوڑا اور انتظام کرو اور ہاں شیل پیک کا سامان تیار ہو جائے تو اسے اس کڑائی میں مل لینا۔“

اسٹوپر پر کڑی کڑی کی جانب اشارہ کر کے ماں کو ہر کھنکھناتے ہوئے نکال گئیں۔ جب کہ اردن بے ثباتی سے قیافے لگا رہی تھی۔ قیافے لگاتے اس نے شیل پیک تیار کر لیں۔ جب وہ دیگر چیزوں کے ساتھ شیل پیک تیار کر کے اس میں سبزیاں ڈال کے شیل پیک کو فولد کرتے بڑول سا بنادی تھی، تو قیافے لگاتے آئیں آوازوں سے اسے اندازہ ہوا کہ خالہ عزیزہ آچکی ہیں۔

اردن کے قیافوں کا نتیجہ آنے میں تھوڑا وقت ہی رہ گیا تھا اسی لیے وہ روایتی مشروب سے جھکت پڑنے لگی تھی۔

سے آقا فانا کٹری کی لا تعداد میزیں اترتے بے ثباتی سے نیچے چلی گئی آگے وہ ہوا جو اس کے دم و گمان میں نہیں تھا۔

☆.....☆

ناصر رضا سورہے تھے جب رابعہ بیگم ان کے کمرے میں آئیں یہ ان دونوں کا مشترکہ کمرہ تھا۔ نرم ملائم فرش چٹ والی وائنٹ بیڈ شیٹ والے بیڈ پر آڑھے ترے بیچھے لیٹے ناصر رضا کو دیکھ کر رابعہ بیگم کو غصہ سا چڑھ گیا۔

”آفس نہیں جانا آپ کو آج، ابھی تک سو رہے ہیں۔“ اپنے جذبات کو حتی الامکان قابو میں رکھتے رابعہ نے ناصر رضا سے کہا تھا۔

”میں نے میجر کو سب کچھ سمجھا دیا تھا وہ ہنڈل کر لے گا۔“ ناصر رضا نے نیند سے بوجھل آواز کے ساتھ کہا تھا۔

”کمال کرتے ہیں آپ بھی، کبھی ایم ڈی جیسا کام بھی میجر انجام دیتے ہیں کیا۔“ زیبوٹ کارپٹ سے اٹھ کر

رابعہ بیگم ہونے کی مانند دیکھنے والے سنہری سائیزڈ ٹیبل پر کھتے ہوئے بولیں۔

”رابعہ یار! تم بھی ناں پیچھے پڑ جانی ہو تم کتنی اور طبیعت بھی کچھ خاص ٹھیک نہیں تھی اسی لیے آج گھر آؤ۔ سوچا تھا آرام کروں گا لیکن۔۔۔۔۔“ ناصر رضا جانی روکتے اٹھ کر بیٹھ گئے۔

”تم کہاں آرام کرنے دیتی ہو۔“ انہوں نے آنکھیں ملیں۔

”وہ اصل میں، میں نے پیسے لینے تھے وارڈروب کی چابیاں نہیں مل رہی تھیں، کہاں ہیں؟“ رابعہ بیگم نے ناشی لگا ہوں سے ادھر ادھر دیکھتے ٹائٹ گاؤن میں ملبوس ناصر رضا کو بیڈ سے اٹھتے دیکھ کر پوچھا۔

”یہیں تھیں، بولیہ ہیں۔ ویسے باقی دواؤں سے صبح کیا ضرورت پڑ گئی پیسوں کی۔“ سائیزڈ ٹیبل سے چابیوں کا پتار رابعہ بیگم کے ہاتھ میں دیتے انہوں نے سرسری انداز سے پوچھا تھا۔

”نعینا نے شاپنگ کرنے جانا ہے ویسے بکے کنکشن کے لیے۔“ رابعہ بیگم نے وارڈروب کھولتے بتایا تو وہ المین سے ہو کر داس روم کی جانب بڑھ گئے تھے۔

☆.....☆

”بہن میں اتنی لادنا کا رشتہ لینا چاہتی ہوں۔“ کھانے سے فراغت کے بعد چھوٹے سے گیٹ روم میں عزیزہ نے بات آگے بڑھا کر کی۔

گوہرنے صوفے پر بیٹھی اردن کو دیکھا اس کے چہرے پر حیرت ضرور تھی مگر ساتھ ہی خوشی بھی جھلک رہی تھی۔

”یہ تو ہمارے لیے اور بھی خوش قسمتی ہوگی۔“ گوہرنے سے پہلے کمال آگن نے کہہ دیا۔

”مجھے تو اپنا ایسے سب سے اچھا لگتا ہے۔“ گوہرنے نے کمال آگن سے گرین سگنل دیکھ کر ایسے ابرام کو پکارا۔

ایسے ابرام نے اردن کی شرمائی، لپٹائی نظروں کو دیکھا اپنی توجہ دوسری جانب کر لی۔ عزیزہ نے ذرا سا گلا کھار کر کہنے لگے بات شروع کی۔

”اصل میں کمال بھائی، میں۔۔۔۔۔“ انہوں نے اپنی دھڑکن پر قابو نہ پا کر کہا۔

”میں ایسے ابرام کے دوست زوار حیدر کے لیے اردن کا رشتہ۔۔۔۔۔ ان کے محلے اتنی بات نکلی تھی کہ جیسے بکوسو پ ہو گئے۔ گوہرنے نے پریٹھی اردن اور ساتھ بیٹھے کمال آگن دم بخود رہ گئے تھے۔

”معذرت کے ساتھ بہن عزیزہ میں کسی اچھی کو اپنی بیٹی کا ہاتھ نہیں دے سکتی۔“ کمال سے بھر نکلتے ہی گوہرنے ہری جھنڈی دکھادی، ایسے ابرام گردن جھکائے پاس بیٹھا رہا۔

”میں ایسے سے بھی کہہ رہی تھی۔“ بیٹا تمہارے پیالو اور خالہ نہیں مائیں گے لیکن بہن زوار حیدر بہت اچھا ہے۔“ عزیزہ نے اسے اردن کا ہاتھ دے دو۔“ عزیزہ بھی ہوئیں۔

”ٹھیک ہے وہ اچھا لڑکا ہے لیکن چند ملاقاتوں کے سوا اور کچھ بھی نہیں ہم اس کے بارے میں جانتے۔“ کمال آگن غصے سے بول رہے تھے، ان کی چھوٹی چھوٹی آنکھوں پر سوچے ہوئے سفید پوٹے ان کے نیم

اپنے خاندانی روایات کا بخوبی اندازہ ہے پھر تم یہ رشتہ کیوں ہمارے گھر۔“ گوہر بھی سنجیدہ ہو گئیں تھیں۔ مسئلہ سنبھلنے کی بجائے الجھ رہا تھا۔

”ایک اجنبی کو میری بیٹی کے رشتہ دینے کے متعلق تم نے سوچا بھی کیسے اور رشتہ لے کے آئے بھی بھلا کون ہیں آپ۔ کیا تعلق ہے آپ کا زوار حیدر سے۔“

کمال اٹکھن زیادہ جذباتی ہو گئے عزیزہ گھبرا گئی تھیں۔ ایسے ابرام کا دل چاہ رہا تھا اٹھ کے واپس چلا جائے مگر بات ابھی جاری تھی۔ سو اسی لیے اسے بیٹھنا پڑا۔

”اگر زوار حیدر کے گھر والے یہ رشتہ لے کر آتے تو ہو سکتا ہے ہم سوچ لیتے لیکن صرف ایک دوست کا رشتہ لے آنا، یہ کیا پاگل پن ہے۔“ گوہر نے پریشانی سے سر تھا م لیا اور بات بتائی۔ بیٹی تھی۔

”دیکھو کمال بھائی! میں تو صرف اچھا رشتہ سمجھ کر اس گھر میں آئی تھی اگر آپ کو یہ رشتہ منظور نہیں تو آپ نہ کریں بات ختم۔“ عزیزہ نے ہار مانتے مسئلہ سلجھانا چاہا حالانکہ وہ دل سے یہ رشتہ لینے آئی تھیں مگر اب وہ اتنا گھنے پر مجبور ہو گئی تھیں۔

”اگر زوار حیدر دانتا ہی اچھا ہے تو عزیزہ بہن تم اپنی رینا نہ یا امانہ میں سے کسی کا رشتہ کیوں نہیں اسے دے دیتیں۔“ کمال اٹکھن کچھ زیادہ ہی بول گئے تھے۔ عزیزہ کی برداشت ختم ہو گئی۔

”مجھے بیوہ سمجھ کر اتنی باتیں شادی سے ہوناں آپ لوگ، میرے بچوں کا اگر اکی (باپ) ہوتا تو میں دیکھتی کیسے تم یہ الفاظ بولتے۔“ ایک منٹ بھی رکے بغیر ایسے ابرام کو جانے کا اشارہ کیے عزیزہ کمال اٹکھن کی معذرت قبول کیے بنا اس گھر سے باہر آ گئی تھیں۔ کمر کی طرف جانے والی لمبی پتھریلی میز پر عیادہ کھڑے انہوں نے ایک لمحے کے لیے خشک گھاس کے میدان میں بڑھنے والے بے بالوں والے سیاہ کتے کو دیکھا تھا اور پھر سر سر پینٹ سے رنگے برطانوی طرز تعمیر کی جھلک والے گھر کو جہاں حرکت برسر خانکوں سے تین چار فٹ اونچے مینار بنے تھے اس کو دیکھتے ان میں رہنے والے کینوں کو دو چار شاخے وہ بٹلے سے نیچے اترنے لگیں۔

☆.....☆

”میں نے تم سے کہا تھا ناں ایسے! میری قسمت میں کوئی خوشی نہیں اگر کبھی ملے ہے مجھے کوئی سکھ مل جائے تو اس کے بعد مجھے اتنی ہی پریشانی ملتی ہے۔“ ساری بات سننے کے بعد زوار حیدر نے سانس لیا تھا۔

”تم مسلمان ہو اور مسلمانوں کو ناامیدی زیب نہیں دیتی زوار۔“ کھڑکی کے قریب کھڑے زوار حیدر کو ایسے ابرام نے شانہ تھپک کر حوصلہ دیا تھا۔

”میں کیا کروں۔ تم ہی مجھے بتاؤ ایسے!“ زوار حیدر نے اپنا چہرہ ایسے ابرام کی طرف موڑتے کہنا شروع کیا۔

”میں نے سنا تھا ایسے کہ آنسو بھی بارگاہ الہی میں روئیں کیسے جاتے لیکن کیا میرے آنسوؤں میں اتنی تڑپ ہی نہیں تھی جو رب کا عرش ہلا دے۔“ زوار حیدر رسکا۔

”میں جب سے اپنی تعلیم مکمل کر کے آیا ہوں ایک رات بھی میں نے چین کی نہیں پائی۔ تب سے میں زندہ ہوں اب تک۔“

ایسے ابرام اپنی زندگی میں پہلی بار ایک مرد کو پھوٹ پھوٹ کر روتے دیکھ رہا تھا۔ آکسفورڈ یونیورسٹی کا ہونے والا طالب علم، استادوں کا چیتا شاگرد، ماں باپ کا لاڈلا بیٹا، اس سے صرف دو فٹ کے فاصلے پر کھڑا اور ہاتھ اٹا

نصیب کو اپنے مقدر کو۔

تب سے لے کر اب تک کوئی ایک بھی آنسو میرا اس تڑپ کے مقام کو نہیں پہنچا جس سے اس کا عرش بل با۔ ان سالوں ان دنوں میں جو مجھ پر صدیوں سے بھی بھاری تھے میرے حق میں کوئی بہتری نہیں کی گئی۔“

”بچیاں لے کر زوار حیدر کھڑکی کی ایک سلائیڈ پکڑے روتا رہا۔“

”مجھ پر رحم کیوں نہیں کیا گیا مجھے کس جرم کی سزا ملی؟“

”جب کر جاؤ زوار! تمہارے ماں باپ کو تمہاری ضرورت ہے، بس میرے دوست۔“ ایسے ابرام نے زوار حیدر کو گلے لگاتے دلا سدا آنسو زوار حیدر کی ہلکی ہلکی بنی شیو کو گلیا کر رہے تھے اس کی داڑھی کے باریک

بہ بال آنسوؤں سے پوری طرح بھیگ چکے تھے۔ اب کئی قطرے اس کے گلے سے ہوتے اس کی وائٹ ٹی شٹ کو چھو رہے تھے۔

”میرے ماں باپ کو بھی تو میری ضرورت نہیں ہے۔“ زوار حیدر ایسے ابرام کے گلے لگا اس سے علیحدہ ہوتے بولا۔

”انہیں ایسا بیٹا چاہیے تھا جو ان کی خاندانی عزت کی حفاظت کرتا اپنے سے پچیس تیس سال کی بڑی عمر کی اورت سے محض اس لیے شادی جاتا کہ اس کی پیچھو کو باہر کے خاندان میں نہ جانا پڑے۔“

”وہ میں نے کر دیا اپنی خواہشات کا گلا کھونٹ دیا۔“ زوار حیدر کے پرانے زخموں کی تکلیف زیادہ ہو رہی تھی۔ اسی لیے وہ ایک بار پھر ایسے ابرام کے گلے لگ گیا۔

”میں اچھا نہ ہوتا تو چاہے بابا کچھ بھی کر لیتے میں اس شادی کا اقرار نہ کرتا لیکن میں کیا کرتا بابا نے جب اپنی پتی پر پستول رکھ لیا تھا کہ جب اولاد کہنا نہ مانے تو ایسی اولاد کے لیے جیسے کا کیا فائدہ اس سے تو بہتر ہے کہ

”میں نے اپنے سے پچیس تیس سال بڑی عمر کی عینا سے شادی کر لی صرف اس لیے کہ بابا اپنے سر پر رکھی بات کا ٹریگر نہ ہادیں۔ ان کی عزت ان کے گھر آ جائے، بس اس لیے۔“ ایسے ابرام نے زوار حیدر بول رہا تھا۔

”مجھ سے زیادہ اہم عینا ہے۔ ابھی بھی وہ مجھے یاد نہیں کر رہے انہیں صرف یہ چیز مجھ تک لارہی ہے کہ میں

”لیکن میں ایسا نہیں کر سکتا۔“ زوار حیدر ایسے ابرام کے دائیں کندھے پر سر رکھے چیخا تھا۔

”میں نہیں ایسا کر سکتا۔“ لاؤنج کی صفائی کرتی رینا نے اور امانہ اس انگشت گفتگو کو سن کر خود بھی سسک رہی تھیں اور عزیزہ جو بچن میں ان (آنا) گوندھ رہی تھیں انہیں بھی اس کا ترجمہ بتا رہی تھیں۔

☆.....☆

”ہو کوئی رابطہ زوار حیدر سے؟“ رائے بیگم نے سوئمنگ پول کے صاف شفاف پانی کو دیکھتے ناصر رضا سے پوچھا تھا۔

”آئے کا نہیں بتایا، ویسے فی الحال بات تو ہو گئی تھی اس سے اور ایسے ابرام سے بھی۔“

پرسکون ہو کر ناصر رضا سوئمنگ پول کی نیلا ہیٹ دیکھنے لگے عینا سوئمنگ پول میں اترنے والی میزھی کے

”اس سرے پکڑے یوں نیچے سے نیلا پانی دیکھ رہی تھی جیسے ابھی جب لگانے لگی ہو۔“

”میں تو بھی اپنی بہو کے لیے دماس کی جیولری لوں گی، کیوں ناصر صاحب؟“ اپنے قریب میں عینا کی

موجودگی کو محسوس کرتے رہا۔ بیگم نے بات بلیٹی۔

”جیسے مرضی، میری بیگم کی۔“ ناصر رضا شاہ نے کندھا چکا کر بولا۔

”دھکی جو چاہے کرو تم جانو اور تمہاری بہو۔“ زابعہ بیگم مسکرا پڑیں۔

عینا بھی تب تک زابعہ بیگم کے پاس آگئی پھر کیا تھا۔ ایونٹ منجمنٹ سے لے کر ویسے کے ڈریس کے رنگ تک سب باتیں ڈسکس ہونے لگیں۔

☆.....☆

سیبوں کی سرزمین ڈوبتے سورج کی نارنجی شعاعوں سے نہائی ہوئی تھی، ایسے ابرام اپنے دوست کو لے کر تفریح اور اس کی پڑمردہ طبیعت کے پیش نظر اسے سینٹرل پارک لے آیا تھا، تاکہ کہیں کسی گوشے میں آرام سے بیٹھ کر ارونا کے متعلق سوچا جائے اور پھر کسی طریقے سے بات آگے بڑھائی جائے۔

داخلی کٹ لینے کے بعد ایسے ابرام پارک کی اندرونی سڑک پر دو دو درختوں کے ٹھنڈے گزرتا زوار حیدر کو سینٹرل پارک آف الماتے کی تاریخ سے آگاہ کر رہا تھا۔ جھولن کے جلنے کی آواز آرہی تھی۔ وہ دونوں اپنے بیٹھنے کے لیے جگہ تلاش کر رہے تھے سامنے ریگ زون تھا اس سے آگے چلتیں تو پتھر کا سیاہی مائل پراؤن کھڑکیوں اور دروازے والا قلعہ سامنے جلوہ افروز تھا، پتا نہیں یہ قلعہ نما عمارت کس چیز کے لیے استعمال ہوتی تھی۔

دونوں آگے چلتے چلتے کہیں پہنچی سوئمنگ پول میں کھلونا نما کشتیاں بچوں کو اپنے اوپر بٹھائے مصنوعی سوئمنگ پول میں شیر رہتی تھیں اور نہیں ہوا بھری لٹخیں چھوٹے بچوں کو سوار کیے سوئمنگ پول کی سیر کر رہی تھیں کچھ نوجوان لڑکے لمبے اونچے درختوں کے ساتھ چلیاں باندھے جمپنگ پوائنٹ کو بجوانے کرتے ہو ہمارے تھے۔

”یار پہلے کچھ کھائی نہ لیں۔“ ایسے ابرام نے جگہ تلاش کرتے سامنے کینٹین کو دیکھتے زوار حیدر سے پوچھا۔

”ہاں، اوکے کھا لیتے ہیں۔“ زوار حیدر ایسے ابرام کے ہم قدم ہوا۔

کینٹین ٹرین کے ڈبے کی شکل کی عکاسی کر رہی تھی اور سڑک کی ٹرین نما کینٹین کے بیو اور سرورنگ رنگ پیسے اور کینٹین کی ٹرین کی طرز پر بنی چھت منفرد نظر آرہی تھی۔

ایسے ابرام نے کینٹین میں بیٹھی گولڈن بالوں والی سفید فام سے کچھ بڑی لڑکی لیں اور پھر وہ دونوں ایک بیٹھ گئے۔

”شکریہ ایسے میرے لیے تم نے اپنا وقت ضائع کیا مجھے اتنا وقت دیا اس کے لیے جس نے تمہارا بہت مشکل ہوں۔“ کولڈ ڈرنک کین ہاتھ میں لیے زوار حیدر نے اس سے کہا تھا۔

”شکریہ تو مجھے اپنے انکل کا کرنا چاہیے جنہوں نے مجھے اتنی چھوٹ دی ہے ورنہ میرا تو ہر پل فریج فریج میں گزرتا تھا، اب دیکھو تمہارے جانے کے بعد فریج پر پھر نے والا امیر سے اوپر چلتا ہے یا میری خواہ پر کھل کر تہہ لگاتے ایسے ابرام اپنی کین سے ہلکے ہلکے سپ لینے لگا۔

”ویسے تمہارے گھر والے بھی کتنے اچھے ہیں ناں، سب ہی تمہارا ساتھ دیتے ہیں۔ میں اگر اپنے دوست کے لیے یوں اپنی نوکری چھوڑتا ناں تو مت پوچھو کیا ہوتا۔“

زوار حیدر نے کانوں کو ہاتھ سے چھوتے کہا۔ اس کے نیچے والے ہونٹ کے درمیان کولڈ ڈرنک کا ایک ڈرا سی دیر کے لیے ٹھہر گیا تھا جسے زوار حیدر نے اپنی زبان پھیر کے صاف کیا ایسے ابرام اس کی بات کے جواب میں مسکرا پڑا۔

”ایک بات پوچھوں؟“ زوار حیدر نے سنجیدہ ہو کر پوچھا۔

”وائے ناٹ۔“ ایسے ابرام نے کندھے اچکائے۔

”تمہیں میرا ارونا سے محبت کرنا برا تو نہیں لگا، آئی مین کہ وہ تمہاری خالہ زاد ہے اور میں جانتا ہوں قازقستان میں کھلم کھلا پیار کرنا منع ہے۔ یہ لوگ مطلب یہاں کی لڑکیاں بوائے فرینڈ بنانا پسند نہیں کرتیں۔“ زوار حیدر جھجک کر بولا۔

”یہ تمہاری باتیں تو بچ ہیں۔ لیکن میرا اور میرے گھر والوں کا ذہن خاصا کھلا ہے براڈ مائنڈ ڈاور ویسے بھی تمہاری شادی کرنا چاہتے ہیں ارونا سے۔ تم کون سا اس سے فکرت کر رہے ہو جو ہمیں برا لگتا۔ دوسرے یہ کہ تم نے تو کوئی بات بھی نہیں کی اس سے تو ہم اعتراض کس پر کرتے۔“ ایسے ابرام شوخ نظروں سے مسکرایا۔

”وہ الگ بات ہے سوتے ہوئے تم اپنی محبوبہ کو سامنے پا کر باتیں کر رہے تھے جو اتفاق سے میں نے سن لیں۔“

”او ہوا! میں سوتے ہوئے کیا کہہ رہا تھا۔“ زوار حیدر جھینپ گیا۔

”کچھ خاص نہیں ہے چھوڑو اس بات کو اصل میں ارونا جب تم سے ٹکرائی تھی اور پھر تم اس کے پیچھے جیسے بالوں کی طرح بھاگے تھے، ان عزیزہ نے تمہیں دیکھ لیا تھا۔“

”انہوں نے تو تمہارا بارے میں تب ہی مجھے بتا دیا تھا جب وہ پیپلز بونی ڈے کی تقریب سے واپس آئی تھیں، میں تو انکار کر رہا تھا کہ صرف ایک ہی نظر میں محبت کیسے ہو سکتی ہے لیکن جب سوتے ہوئے تم باتیں کر رہے تھے تو سارا پول کھل گیا کیونکہ تم ہانکنا شروع کر رہے تھے۔“ زوار حیدر کے چہرے پر ہوائیاں اڑنے لگیں۔

”یار میں زیادہ ہی تو نہیں بول گیا کہیں۔“ زوار حیدر رشک سے ہوا۔

”ارے نہیں، نہیں۔“ ایسے ابرام نے اسے تسلی دی۔

”وہ تو شکر ہے بعد میں ماں نے پوچھ لیا تم سے کہ زوار بولزی کی سے ٹکرائی تھی وہ کتنی خوب صورت تھی اور اس کے سیاہ بال، اس نے جھلا کون سا لکڑی کا لباس پہنا تھا اور ہاں اس کے سر پر کالو بھی تھا ناں، کیسے میزائل کی طرح غائب ہوگئی تھی وہ۔ اور تم نے وہ نشانیاں بتا دیں جب میں ماں کا سوال کیا تھیں تو جبر کر کے بتا رہا تھا وہ ماری نشانیاں ارونا کی تھیں۔“ ایسے ابرام ایک ایک سلیکھا رہا تھا۔

”اچھا یار اب تو مجھے عجیب لگا تھا پوچھنا، لیکن میں تو گھبرا کے ہی شاید بتا گیا تھا سب کچھ زوار حیدر کی جب کہ ہونے لگی وہ اب کھل کے بات کرنے لگا تھا۔“

”سنو زوار! اب ہمیں یہ کرنا ہے کہ تم کسی طریقے سے ارونا سے اظہار محبت کرو تا کہ وہ خود اس رشتے پر انہی ہو جائے کمال انکل اور خالہ کو بینڈل کرنا پھر آسان ہو جائے گا۔“

”لیکن میں اس سے کیسے کہوں گا اور کیا کہوں گا۔“ خالی کین بیچ پر رکھتے زوار حیدر نے پوچھا تھا۔

”یہ بھی تو بتاؤ ناں۔“

”دیکھو میرے ملک کے لوگ اسٹے لبرل نہیں ہیں کہ تمہیں میں بنا کسی تعلق کے ارونا سے ملوانے لے ہاں۔ ہاں تمہیں یہ دھیان رکھنا پڑے گا کہ جب بھی ارونا مارکیٹ جائے تو تم اس سے اپنے دل کی بات کہہ دو۔ دیکھنے والوں کو یہ محسوس نہ ہو کہ تمہارا ارونا سے کیا تعلق ہے۔“

”ٹھیک ہے۔“

میں رکھتے اس نے اردنا کے سامنے دو جملے کہے اور پھر آگے سے بھول گیا اردنا انگارہ برقی آنکھوں سے اسے دیکھ رہی تھی۔

”آئی ایم رینگی سوری۔“ زوار حیدر گڑ بڑایا۔

”پلیز ون منٹ ویٹ۔“ اس نے ایک بار پھر جیب سے نکالی اور پھر ٹوٹی پھوٹی زبان میں پڑھ ڈالی۔ اردنا نے ہاتھ میں پکڑا ایک جھٹکے سے چھوڑا اور پھر وہ سخت سے ناک چڑھاتی آگے بڑھنے لگی تھی۔

”نہیں اردنا نہیں اس بار میں تمہیں ہجوم میں گم ہونے نہیں دوں گا۔“ اس سے پہلے کہ اردنا آگے بڑھتی زوار حیدر نے بے اختیار اس کا ہاتھ تھام لیا۔

اردنا کو اس چیز کی توقع نہیں تھی مگر اب اس میں وہ اپنا ہاتھ چھڑانا بھی بھول گئی۔

زوار حیدر موقع سے فائدہ اٹھاتے ہوئے رٹے جملے قازقی زبان میں دہرا رہا تھا عین اسی لمحے میں کمال آگن کہیں سے نکل آئے تھے۔

”ہم قازقی مردوں نے کبھی غیر عورتوں سے ہاتھ نہیں ملا یا اور تم دو دن کی لڑکی اس اجنبی مرد کے ہاتھ میں ہاتھ دے کر شوق لڑ رہی ہو۔“ کمال آگن نے اپنا بھاری ہاتھ اردنا کے نازک گال پر پھڑکی صورت مارا، شیلیفوں کے پیچھے گھڑا ایسے ابرام سامنے آ گیا۔

”پلیز خالو کمال کول ڈاؤن۔“ ایسے ابرام نے کمال آگن کا بازو زنی سے پکڑتے انہیں ٹھنڈا کرنے کی کوشش کی۔

اردنا اب بیٹے تھر تھر کانپ رہی تھی۔ وہ اپنے رفلکس ہاتھ کی اچھی طرح جانتی تھی۔ اس میں اتنی ہمت نہیں رہی تھی کہ وہ اپنی صفائی میں ہی بول سکے۔

”کیسا سارا کام تمہارا ہے۔ اور اب اس کی سزا بھی تمہیں ہی ملے گی۔“ میرا پہلا اور آخری فیصلہ ہے یہ پرسوں شام تک برائت لے آؤ اور لے جاؤ اس بے غیرت کو۔“ کمال آگن کی یہ بات سن کر اردنا کے سر پر لگ رہی تھی۔

”ایسا نہ کرو ایکٹیو میں نے تصور ہوں۔“ اس کے سر سے آسمان غائب ہو چکا تھا۔ اردنا حواس باختہ سی کمال آگن کے ہاتھوں کو چھوتی منت کرنے لگی۔

”تمہارا تصور تو میں اپنی آنکھوں سے دیکھ چکا ہوں۔“ کمال آگن نے اس کے ہاتھ ایک جھٹکے سے پیچھے ہٹائے۔

ایسے ابرام بھی اردنا کی طرح منٹ کرنے لگا لیکن انہوں نے اس کی باتیں سنیں ان سنی کر دیں۔

”گھبرئیے!“ ٹیکسٹائل مارکیٹ سے باہر نکلتے کمال آگن جو اردنا کا بازو پکڑ کر اسے ٹھیکتے ہوئے لے جا رہے تھے انہوں نے ایسے ابرام کی منت بھری آواز بھی نہیں سنی۔

زوار حیدر انہیں جاتے ہوئے دیکھ رہا تھا، اردنا نے ایک نظر اس پر ڈالی آف وائٹ شرٹ پر ریڈ برنڈ پانکی باندھے انتہائی معصوم نظر آ رہا تھا جتنا کہ وہ تھا۔ لیکن اس کے بارے میں اب اردنا کی رائے مختلف ہو چکی تھی،

اردنا نے اسے ایسے دیکھا کہ زوار حیدر جیتے جی مر گیا۔ اس نے یہ تو چاہا تھا کہ اردنا اسے مل جائے لیکن اس نے یہ نہیں چاہا تھا کہ وہ اسے اس طرح ملے۔ کچھ ہی دیر بعد وہ دونوں ٹیکسٹائل مارکیٹ کی چمکتی لائٹوں والے چھت سے باہر نکل آئے۔ کئی درختوں کی سرخی نما پتوں کی شاخیں ٹیکسٹائل مارکیٹ کے اوپر جھکی ہوئی تھیں۔ آخری بار

”اور ہاں اردنا کے بچپن کا لمبا عرصہ گرین بازار میں گزرا ہے ہر طرح کے کسٹرز کو ہینڈل کرتے وہ بہت سی زبانیں سیکھ گئی ہے تم اس سے انگلش میں بات کر سکتے ہو لیکن وہ اس پر اتنا عبور نہیں رکھتی کہ تمہاری ساری بات سمجھ کے اسے انگلش میں تمہارے منہ پر مار سکے۔“ ایسے ابرام مسکرایا زوار حیدر نے ابرو اچکا کے۔

”بھئی! غلط فہمیت پر وہ دو باتیں منہ پر بھی مارے گی ناں۔ محبت کا جواب محبت میں دینے سے تو رہی۔“ زوار حیدر کے گھبرانے پر ایسے ابرام نے اس کا شانہ چھتھایا۔

”کچھ نہیں ہوتا کچھ ہونے کے لیے کچھ تنگ و دو کرنا ہی پڑتی ہے۔“

”اُس اوکے۔“ زوار حیدر مطمئن ہو گیا۔ کیٹین کے قریب ہونے سے انہیں کیٹین کے قریب لگا کر واضح نظر آ رہا تھا۔

”اب ہمیں دھیان رکھنا ہے وہ کب مارکیٹ جاتی ہے۔ میں تمہیں چند جملے قازقی زبان کے لکھ دوں گا تم اچھی طرح رٹ لینا اور جیسے ہی تمہیں ایسے سامنے اردنا نظر آئے سب سے پہلے اپنے پیل فون پر ریکارڈ لگا لیں تاکہ تمہیں میں بتا سکوں اردنا نے تمہیں کئی گالیاں دی ہیں۔“ زوار حیدر نے ایسے ابرام کی بات پر اس کی کمر زور دار گھونسا رسید کیا، پارک میں چلتے پھرتے چند ترکش نژاد لوگوں نے انہیں عجیب نظروں سے دیکھا تھا وہ دونوں ہی الرٹ ہو گئے اور اگلے لمحوں کی طرح بیٹھ گئے۔

”اچھا سنو! میں گھر جاتے ہی میں ایک جٹ پر سب کچھ لکھ دوں گا تم بس اسے یاد کر لینا۔“

اختتامی بات کرتے وہ دونوں اب اٹھ کھڑے ہوئے۔ زوار حیدر کے سر سے جیسے بوجھ اتر گیا تھا۔ ایک امیہ تو لگ گئی تھی اور انسان کو جب امید لگ جائے تو انسان ہواؤں میں اڑنے لگتا ہے۔ یہی حال زوار کا بھی تھا۔

ان کا رخ اب پارک کے دیگر گوشوں کی طرف تھا وہ وہیں جمیل میں کئی چلتے رہے دوستوں سے گھر کے ہلکے سبز پانی والی جمیل نے زوار حیدر کا دل خوش کر دیا تھا۔ پارک کے بنسٹوں سے لطف اندوز ہونے کے بعد زوار حیدر نے ایسے ابرام کے ہمراہ باہر کی راہ کی پارک کا مین اینٹر نہیں انتہائی لمبے ستونوں سے سجایا ہوا تھا وہ دونوں پرسکون سے باہر آ گئے تھے۔

☆.....☆

ٹیکسٹائل مارکیٹ کی سفید اور نیلی بے انتہا دلکش عمارت لوگوں سے کچھ کچھ بھری ہوئی تھی، کچھ لوگ شیلیف میں رکھے کپڑے تھان کھلوا رہے تھے۔ کچھ لوگ لٹکے انیمز اینڈ ڈریس خرید رہے تھے قریب ہی چند شین فاکس سے سجے سیاہ کوٹ پہنے مارکیٹ کا جائزہ لے رہے تھے۔ انہی لوگوں کے پاس ذرا آگے اردنا راڈ پر لڑکا خود صورت ٹیڑا دکھ رہی تھی۔ سبز اور بلیک پھول دار سرخ لپ پلک سے سجایا ایک دلکش پٹرا تھا، اس لٹکا تھا اس نے جا کے اسے سلائی کرنا تھا۔

رینات کی سانگرہ بھی سو اسی لیے ایسے ابرام اور زوار حیدر وہاں رینات کے لیے کچھ خریدنے آئے ہوئے تھے۔

تب ہی ایسے ابرام نے کہنی ماری اور پھر کہیں کھسک گیا۔ سامنے جب اس نے دیکھا تو اردنا کھڑی تھی۔ ہاتھ کے کپڑے کی پہچان کرتی۔

والس ریکارڈر آن کر کے زوار حیدر اردنا کی طرف آیا۔ اردنا نے ایک نظر اسے دیکھا پھر وہ کپڑا دیکھنے مصروف ہو گئی۔

گلا کنکھا کر زوار حیدر نے اپنی بلیک پیٹ کی جیب سے وہ چٹ کمال ایک نظر دیکھ کے پھر اسے واپس

زوار حیدر نے کریم کلر کی ہلکے نیلے شید کے فیروز کی مائل لکڑی کے کام والی کھڑکیوں دروازوں والی ٹیکسٹائل مارکیٹ کی بلڈنگ کو دیکھا تھا اور پھر اس کا سن بھاری ہوتا وجود ایسے ابرام کے ہمراہ واپسی کی راہ پر تھا۔ دل تھا کہ سینے سے نکل کر الماتے کی سرکوں پر نکلتے محسوس ہو رہا تھا۔ اضطراب بے چینی افسردگی متحمل طبیعت غرض نفسیاتی مریض والی ہر علامت اس پر ظاہر ہو رہی تھی۔
قدم اٹھانا مشکل تھا لیکن چلنا لازم تھا۔ یوں جیسے چلنا کوئی فرض تھا یا واجب تھا۔

☆.....☆

سفید ریشمی پیرا بہن نیچے سے بے انتہا فرل سے سجا ہوا تھا جس کا اوپری حصہ سرخ ویلوٹ اور سنہری دھاگوں کی کڑھائی سے مزید دغریب لگ رہا تھا۔ ارونا کے سر پر دھنوں کو ڈالی جانے والی مخصوص اونچی سی برتھ ڈے کپ کی طرز کی نقش و نگار والی ٹوپی تھی اس کے چہرے کو سفید روئی کی مانند دکھنے والے ریشمی کپڑے نے ڈھانپ رکھا تھا جو کہ ٹوپی کے ساتھ ہی سلا ہوا تھا۔
لوٹنے کی طرف سے ادا کی جانے والی رسمیں ایسے ابرام کے گھر والے ادا کر رہے تھے۔ برأت وہاں کے رسم

ورواج کے مطابق آئی تھی۔
زوار حیدر قدرت کے چھلے پر گشت بدنداں تھا۔ نکاح مسجد میں ہوا زوار حیدر ہلکے نیلے رنگ کی پوشاک میں ملبوس سنہری کام والی ٹوپی میں ملبوس دوہا بنا بیٹھا تھا۔ ایسے ابرام کے ساتھ رہنے سے وہ تھوڑی قازنی زبان بھی سمجھنے اور بولنے لگ گیا تھا۔ گوہر بار بار اپنے آنسو بونچھ رہی تھیں۔ ایسے ابرام کے گھر والوں کے ساتھ ان کا رویہ بہت سرد تھا۔ کمال انگن تو ارونا کی طرف نظر نہ دیتے تھے کہ روادر بھی نہیں تھے۔ ان کے بقول جب ان کی بیٹی نے اپنی روایت کی پاسداری نہیں کی تھی تو وہ اب ارونا کے لیے کچھ کیوں سوچتے۔

اب یہ بوجھ ارونا پر تھا اسے ہر حال میں گزارہ کرنا تھا ایک اجنبی زبان رکھنے والے اجنبی لوگوں میں۔ نکاح اور دیگر رسموں کے بعد الماتے کے کھلے میدان میں دوہرائی سیاہ چوٹیاں دائیں بائیں کیے لوہے کی پتروں کی طرز پر بنا ہلکا سا زور پور پہنے سرخ اور سفید عروسی لباس میں ارونا زوار حیدر کے ساتھ گھوڑا دوڑا رہی تھی۔ زندگی میں بھی بکھاری گھڑ سواری کرنے والے نے بڑی بڑی آنکھوں اور سرخ گھوڑا رکبت کی حامل ارونا کو دیکھا وہ بہت اچھے طریقے سے گھوڑا دوڑا رہی تھی اور دوڑائی بھی کیوں ناں۔ یہ وہ گھوڑے تھے جنہیں پالتو جانور بنانے کی روایت نہیں سے چلی تھی۔ اسی ملک سے چلی تھی تو پھر بھلا اسے گھوڑا دوڑانا کیوں نہ آتا۔

گھوڑے دوڑتے جا رہے تھے ایک دوسرے کے آگے پیچھے۔ گھوڑوں کے ستوں کی آواز تیز ہو رہی تھی۔ زوار حیدر نے اس کے آگے جا کے ایک رسم ادا کر لی تھی۔ اپنے گھوڑے پر اس کے گھوڑے کے قریب۔ اس کے پیچھے گھوڑا دوڑا تے ہوئے زوار حیدر ٹوپی کے پیچھے کیے ہوئے سفید پھولدار کڑائی والے کپڑے کو پیچھا ہوتے دیکھ رہا تھا جو اسے اڑکھ بار بار کمر سے ہوتا ارونا کے دائیں رخسار کو چھو رہا تھا۔

”میں ہر حال میں ارونا کو سب کچھ سچ سچ بتا دوں گا۔ میں مجبور ہوں مجرم نہیں۔“ زوار حیدر سوچنے لگا۔
”جب میری مجبوری کا علم ارونا کو ہو جائے گا تو سب کچھ ٹھیک ہو جائے گا۔ تب تک کمال انگن اور گوہر کا غصہ ٹھنڈا ہو چکا ہو گا اور پھر میں پاکستان سے ملوانے قازقستان میں ارونا کو لاؤں گا۔“ زوار حیدر سوچتا ہی چلا گیا۔

☆.....☆

ویسے کی ساری تیاریاں پوری ہو چکی تھیں، عینا کے لیے زرقون سے سجا گلو بند ترک اور اطالوی اسٹائل کی

نفس چوڑیاں، خوبصورت ڈیزائن کردہ عروسی جوڑا، بیوٹی پارلر میں میک اپ کا اپنا ٹھکانہ سب کچھ مکمل تھا۔ رابعہ بیگم نے یہ فنکشن بطور خاص لوگوں کے لیے منعقد کیا تھا کیونکہ عینا اور زوار حیدر کا نکاح بہت عجلت میں ہوا تھا۔ بہت سے لوگ اس شادی سے لاعلم تھے رابعہ بیگم کا خیال تھا کہ جلد سے جلد ویسے کروا لیا جائے۔ لیکن نکاح سے چند دن بعد ہی اسٹریٹس اور قذافی اذیت سے وقتی طور پر نکلنے کے لیے زوار حیدر قازقستان چلا گیا اب وہ واپس آ رہا تھا۔ تو سب سے پہلے اسی کام کا سوچا گیا جس کے لیے زوار حیدر کا انتظار کیا جا رہا تھا۔
کل رات کو زوار ہاؤس میں ویسے کا فنکشن تھا۔ زوار حیدر کے آنے کی خبر نے عینا، ناصر رضا اور رابعہ بیگم کے اندر ایک نئی روح پھونک دی تھی۔

☆.....☆

”اب یا کبھی نہیں۔“ کوئی تھا جو اس کے کانوں میں سرگوشیاں کر رہا تھا۔ ڈرائیور لاہور کے ایئر پورٹ پر اسے لینے گیا تھا ارونا مشرقی لباس میں پچھلی سیٹ پر بیٹھی ہوئی تھیں سے باہر دیکھ رہی تھی۔ اجنبی دیس، اجنبی زبان مقدر نے اسے کہاں سے کہاں لا کھرا کیا تھا۔ زوار حیدر اسے بیک ویو مر سے دیکھنے لگا، پڑھنا، شاعرہ بننا بہت دور رہ گیا۔ صرف اب اسے کچھ جانا تھا کلم نہیں۔ سب خواہشات، سب تمنائیں، سب آرزوئیں، ایک ایک کر کے رخصت ہو رہی تھیں۔

چھوٹی تھی تو سبزیاں بیچتی رہی بڑی ہوئی تو روایات سے جڑی رہی اور اب اسے قربانی دینی پڑی اور یہ قربانی اس کی زندگی کی سب سے بڑی قربانی تھی۔ زوار حیدر چاہتے ہوئے بھی ارونا کو اپنے نکاح کے بارے میں نہیں بتا سکا۔ پھر پھر کرتے یہ دن آ گیا تھا وہ ڈر رہا تھا کہ ارونا اس کے نکاح کے متعلق جان کے نہ جانے کیا کہے؟ وہ ارونا کو اعتماد میں نہیں لے سکا ڈرائیور گھر کا جو تھا اسی لیے ارونا کو اپنے ہی انسنے پوچھا تھا۔

”یہ بی بی جی کون ہیں؟“
”تمہاری بھالی یعنی میری بیوی۔“ اپنے سر کے بالوں پر ہاتھ پھیرتے زوار حیدر نے کہا۔
”مسلمان تو ہیں ناں؟“ ڈرائیور نے ارونا کی غیر ملکی صورت کو دیکھتے بہت اچھے سے پوچھا زوار حیدر اس غیر متوقع سوال پر سکرا پڑا۔

”مسلمان ہیں۔“ وہ بے اختیار مسکرانے لگا۔ اب اگر اسے اس کے مقدر میں لکھ ہی دیا گیا تھا تو وہ اسے قبول کیوں نہ کر تا لیکن ابھی گھر والوں کو قائل کرنا ضروری تھا۔
”شو پیپر سے آنکھیں رگڑتے ارونا نے اپنے دیس کو الوداع کہہ دیا تھا۔ اس بات سے بے خبر کہ اس کے دیس کے گھروں پر سورج کی کرنوں والا قومی پرچم لہرا تھا اور زوار حیدر کے دیس پاکستان میں سبز ہلالی پرچم چاند کی ابتدائی حالت کا ہلال تھا اب نے چاند سورج کی جوڑی بنادی تھی۔

یہ بیٹیوں کے مقدر بھی کتنے عجیب ہوتے ہیں ناں پل میں یوں والدین سے جدا ہوتی ہیں جیسے اس گھر میں ان کا کوئی رشتہ ہی نہ ہو۔
ارونا بھی تو ایک بیٹی ہی تھی اس کے پسندیدہ شاعر امیر خسرو کی ایک خوب صورت نظم اس کے آگے پیچھے کانوں میں سرگوشیاں کر رہی تھی۔

بھائیوں کو دینوں کو دو محلے ہم کو دیار دیس رے لکھی بابل موزے

میں کیا طوفان آنے والے تھے۔
”اشو لڑکی بہت تماشا ہو گیا۔“ روتے پیٹنے کے بعد رابعہ بیگم جنگی بجاتے ارونا کے سر پر کھڑی اس سے کہہ رہی تھیں۔

”آپ میری بیوی سے اس طرح بات نہیں کر سکتیں امی۔“ زواران سے کہنے لگا جو غصے میں بے قابو کھڑی تھیں۔

”جب تم بیٹا ہو کے ہمارے ساتھ اتنا بڑا دھوکا کر سکتے ہو تو میں بھلا کیوں نہیں۔“ رابعہ بیگم تپ کر بولیں۔
”اور جو آپ نے میرے ساتھ کیا وہ کم تھا کیا؟“ زوار ترکی بہ ترکی بولا۔

”لاتوں کے بھوت باتوں سے نہیں مانتے، یہی حال ہے تمہارا میں تمہاری باتوں کا جواب دینا ضروری نہیں سمجھتی۔“ زوار حیدر کو ہاتھ سے دھکا دے کر پیچھے ہٹاتے رابعہ بیگم صوفے کے قریب کھڑی ہوئی کھڑی ارونا کی طرف بڑھیں۔

”میری طرف سے بھی اس بے غیرت لڑکی کو دو چار لگا دو میں اس ہلکے کردار کی لڑکی پر اپنا ہاتھ اٹھا کے سزا نہیں کرنا چاہتا۔“ رابعہ بیگم کو ناصرخدا نے کہا تھا۔ عینا آنسو بہانی سامنے کھڑی بار بار زوار حیدر پر چلا رہی تھی۔

”تم اندر چلو ارونا۔“ زوار حیدر نے انگش میں سامنے والے کمرے کی طرف اشارہ کر کے کہا تھا ناصرخدا نے آنکھیں دکھائیں۔

”میں سنبھالتا ہوں انہیں پلیز تم اندر جاؤ۔“ ارونا کوشش و خنج میں مبتلا دیکھ کر اس نے تقریباً کمرے کی طرف اسے گھسیٹا تھا اور پھر اس کے جانے کے بعد وہ وہیں صوفے پر بیٹھ گیا۔

”کوئی ضرورت نہیں ہے بابا! اس طرح ہنگامہ کرنے کی اب سب کچھ ہو چکا ہے اب کیا باقی رہ گیا ہے۔“

ارونا کو کمرے میں بھجوانے کے بعد وہ ناصرخدا کو قائل کرنے لگا۔

”ہنگامہ تو اب میں کھڑا کروں گی۔ آپ نے تو قسمیں کھائیں تھیں کہ ہم تمہاری آنکھ میں ایک آنسو بھی نہیں آنے دیں گے اور اب.....“ عینا غصے سے لالہ جھبھو کا چہرہ کیے بولی۔

”سارے آنسو ہی آپ کی وجہ سے آرہے ہیں۔“ وہ صوفے کے قریب فرش پر ہی بیٹھ گئی۔

”کیا قصور تھا میرا کہ میں بڑی عمر کی ہوں۔“ عینا ہذیبی انداز میں چلانے لگی رابعہ بیگم اسے سنبھالنے میں مصروف تھیں۔

”اس سے تو اچھا تھا میں خاندان سے باہر ہی بیابانی جاتی اگر آپ کے بیٹے نے اپنے سے بڑی عمر کی بیوی کے ساتھ کچھ دماغ کر دیا تو میں نے بھی تو اپنے سے چھوٹے عمر کے شوہر کے ساتھ کچھ دماغ کر دیا ہے۔“

”بیٹا رومت! اس زوار کا تو میں وہ حشر کروں گی کہ یاد رکھے گا۔“ رابعہ بیگم نے غن آنکھوں سے زوار حیدر کو دیکھتے عینا کو ساتھ لپٹا لیا۔ زوار صوفے پر سر پکڑے بیٹھا تھا۔

”ای آپ تو میری بات سمجھیں۔“ زوار حیدر بے بسی سے بولا۔

”دیکھیں اگر میں نے اپنی پسند سے شادی کر لی ہے تو اس میں کیا ایسی بری بات ہے میں نے کوئی گناہ

ہم تو رے باہل کی نکلیاں گھر گھر مانگی جائیں رے لکھی بال مورے
ارونا کی سسکیاں نکل پڑیں۔ یہ نظم اس نے فیٹ پر اپنی مادری زبان میں پڑھی تھی۔

ڈولی کا پردہ اٹھا کر جو دیکھا آپر اپنا دیس رے لکھی باہل مورے
ارونا نے کار کی کھڑکی سے برائے دیس کو دیکھا اس میں کوئی شک نہیں تھا پاکستان امن پسند صلح جوار مہمان نواز تھا لیکن یہ دیس اس کے لیے اجنبی تھا یہ لوگ اس کے لیے اجنبی تھے۔ نظم کے بول کا نوں میں جتنے لگے۔

ارونا نے ہوش میں آتے جیسے آنکھیں کھول لیں۔ زوار حیدر باہر نکل گیا تھا۔ ڈرائیور نے پچھلی سیٹ کا دروازہ کھول دیا۔ محل نما گھر سامنے تھا۔

ارونا پینڈ بیگ تھا بے نکل آئی ڈرائیور نے بریف کیس اور پینڈ کیری تھا لیا۔ بلا اختیار زوار حیدر نے ارونا کا ہاتھ تھام لیا تھا۔

سارا گھر کسی محل کی طرح خوب صورت تھا ارونا کو زوار حیدر کی موجودگی نے بہت حوصلہ دیا تھا لیکن پھر بھی ایک ڈراس کے سینے میں موجزن تھا۔

زوار حیدر سوچ لانا سے ہوتا ہوا اندر آ رہا تھا لاؤنج کا سنہری شاہی طرز پر بنا دروازہ کھول کے وہ اندر آ گیا۔ لاؤنج کے دروازے سے لگی سنہری روش فلورل ڈیزائننگ کی مدد سے کی گئی تھی چھت پر سنہری کام کیا گیا تھا۔ لاؤنج میں آگے آگے چائینر اسٹائل صوفے رکھے تھے سارے گھر میں وائٹ اور شاہی رنگ یعنی زرد رنگ کی بہار تھی۔

زوار حیدر کے اشارہ کرنے پر ارونا صوفے پر بیٹھ گئی۔ سامنے والے بیڈروم سے ناصرخدا لگے تھے ایک لمحے کے لیے زوار حیدر بھی اندر سے کانپ گیا۔ ناصرخدا کے پیچھے حواس باختہ سی رابعہ بیگم تھیں وہ دونوں حیرت سے صوفے پر بیٹھے جوڑے کو دیکھتے ان کی طرف آگے۔

”یہ کون ہے زوار؟“ بنا سلام دعا کے ناصرخدا نے چلا کر پوچھا۔
ارونا سہم کر صوفے سے اٹھ کھڑی ہوئی، ڈرائیور بریف میں اور پینڈ کیری لاؤنج کے صوفے کے قریب رکھ کر چلا گیا اس کے جانے کے بعد زوار حیدر نے جواب دیا۔

”یہ میری بیوی ہے بابا!“ زوار حیدر کسی معمول کی بات کی طرح بتا کر اٹھ کھڑا ہوا۔
رابعہ بیگم اور ناصرخدا کے سر پر جیسے کسی نے بم پھوڑ دیا تھا دونوں ایک دوسرے کو دیکھ رہے تھے وہ جھپٹنے ان کی زبان پر تالے لگا دیے تھے۔

”زوار!“ ناصرخدا دھماڑے۔
”بابا میں اونچا نہیں سنتا۔“ زوار کا لہجہ گستاخ ہوا۔

تب تک کسی کمرے سے عینا بھی وہاں آ چکی تھی۔ اگلے دس منٹ کے بعد وہاں تماشا لگ گیا تھا۔
”میں تم سے کہہ رہی ہوں زوار اسے ابھی اور اسی وقت طلاق دو۔“ عینا پچھلے چند منٹوں سے یہی جملہ دہرا رہی تھی۔

رابعہ بیگم صوفے پر ڈھسے گئیں۔ اس گھر کا ہر فرد سوائے زوار حیدر کے ارونا کو کھا جانے والی نظروں سے دیکھ رہا تھا۔ زوار حیدر دل میں رب کا شکر ادا کر رہا تھا کہ ارونا کو اردو کی سمجھ نہیں آتی تھی لیکن وہ ہاڈی لیکو تو سمجھ سکتی تھی ناں۔ یہ اندازہ زوار حیدر کو بھی تھا لیکن اس کے تو وہم و گمان میں بھی نہیں تھا کہ آگے ارونا کو لے کر اس گھر

”تو اس میں رونے کی کیا بات ہے اتنی سی بات پر اتنا واویلا۔“ ارونا کچھ مطمئن ہو گئی۔
”جیجی تمہارے والدین ناراض ہو رہے تھے۔“

”بس وہ ایسے ہی ہے اسے یہ شوق تھا میں کپڑے بناتی ساڑھیاں خریدتی ایمپوریم مال سے شاپنگ کرتی لبرٹی مارکیٹ کے چکر لگاتی تو مجھے بھی مزہ آتا۔“ وہ دانستہ والدین کی وضاحت دینے سے باز رہا۔
”اچھا! ارونا مسکرا پڑی۔

”پھر تو یہ رونا بنتا ہے۔ ظاہر ہے اس کے بھی کچھ ارمان ہوں گے اپنے کزن کے حوالے سے میں سمجھ گئی۔“
ارونا کی بے وقوفی کو سلام کرتے زوار حیدر نے اس کے قریب نشست سنبھالی۔
”بابا اور امی بھی اسی لیے ناراض ہیں بھی تم پر بھی غصہ کر گئے۔ تم بالکل بھی ٹینشن نہ لیتا میں تمہارے ساتھ ہوں۔“

”زوار! مجھے کبھی تنہا مت چھوڑنا، میرے ساتھ زندگی نے پہلے ہی بہت کھیل کھیلے ہیں، میں نے اگر تمہیں سچے دل سے قبول کر لیا ہے تو اب مجھے کوئی دھوکا مت دینا۔ میں نے بہت مشکل سے گمروماز کیا ہے۔“ آنسو بھری آنکھوں سے ارونا بکھینچا۔

”ایسا بھی سوچنا بھی مت۔ زوار نے اس کے آنسو اپنے پوروں میں جذب کیے۔
”چلو یہ رونا چھوڑو، تمہیں میں اچالا ہور دکھاؤں گا۔ یہاں کی ٹیس ٹیس کاؤنٹ کرواؤں گا۔“
زوار حیدر اسے ایک نیچے کی طرح حرکت دے کر روٹا اور اپنے ہنڈسم شوہر کی بات پر مسکرا دی تھی۔
طوفان کچھ دیر کے لیے ٹپ گیا تھا۔ زوار نے دیکھا کہ جس مسئلے کو حل کی بجائے اگلے وقت پر ڈال دیتے ہیں وہ ہمارے لیے زیادہ خطرناک بن کے سامنے آجاتا ہے جتنی ملتا ہے کبھی بنتا نہیں۔

☆
صبح جب ارونا کی آنکھ کھلی زوار ڈریسنگ ٹیبل کے آگے کھڑا کھانے پینا پاتا تھا۔
دل میں شرمندگی محسوس کرتے ارونا فوراً اٹھی۔ واش روم سے فریش ہو کر اپنے کمرے میں آئے کپڑے جو اس نے وارڈروب میں سیٹ کر دیئے تھے ان میں سے ایک ڈریس نکال لائی۔
”گڈ مائنک ارونا!“ پرفیوم خود پر چھڑکتے زوار حیدر بہت خوشگوار انداز میں بولا تھا۔
”گڈ مائنک۔“ ارونا نے جواب دیتے وارڈروب میں پڑے لباسوں کو دوبارہ دیکھنا شروع کر دیا یوں دیکھتے دیکھتے نکالے گئے لباس پر مطمئن نہیں تھی۔
”یہ بہن لوارو نا!“ ایک تخت ہی زوار سامنے آیا تھا اور اس کے آگے اس نے پھولدار سیاہ شرٹ اور ساتھ ساتھ اسکرٹ کر دی۔

ارونا حیران ہوئی کہ زوار حیدر دل میں چھپی بات جان لیتا ہے۔
”نی الحال یہی پہن لو، ایک دو دن تک میں تمہیں شاپنگ کروا دوں گا۔ تب تم اپنی مرضی سے ڈریس پہن لیا۔“
”دروازے کی طرف جاتے ہوئے وہ ڈرونا پر ہاتھ رکھے مڑ کر مسکرایا۔
”ارونا بہت پیاری لگ رہی ہو اور ناشتے کی میز پر جلدی آجانا میں انتظار کر رہا ہوں۔“ جاتے جاتے وہ بات کر گیا اور نا سربلائی ہاتھ روم میں گئی کچھ دیر بعد ہی وہ تیار ہو کر باہر نکل آئی۔
”ڈرائنگ ٹیبل پر بیٹھے تمام افراد اسے دیکھ کر ہلکے تھے مگر خاموش رہے، زوار نے اس کے لیے خالی کرسی کی

نہیں کیا۔ قانونی بیوی ہے میری وہ۔“

”اور میں تو پہلے بھی مجبور تھا اب بھی مجبور ہوں۔ پتا نہیں ہر بار مجبوری کی شادیاں میرے ہی مقدر میں کیوں لکھی جاتی ہیں۔“ زوار حیدر نے سچتی ہوئی کنٹینٹوں کو مسلتے کہا تھا۔ عینا سے وہ خود کو دور ہی رکھ رہا تھا اور اس کی باتوں کے جواب دینے سے بھی اجتراز کر رہا تھا۔

”اگر دوسری شادی ہی کرنی تھی تو کوئی دوسری کیوں نہ ملی۔ تمہاری نظر اجنبی ملک میں ہی اس لڑکی پر ٹپک گئی اور سیدھا ہمارے سینوں پہ مونگ ورنے کے لیے پناہ لے آئے ہو اسے یہاں پر۔“ رابعہ بیگم بازوؤں کا سہارا دے کر عینا کو صوفے پر بٹھاتے اس کا شانہ چھتھاتے ہوئے بولیں۔

”اف..... اللہ میں کیا کروں۔“ زوار اٹھ کر ٹیبل کے آگے اس کی آنکھیں سرخ اور چہرہ بھی سرخ تھا اس کی نبض بھی اس طرح تیز چل رہی تھی کہ اس کی رس و راج ہلنے لگی ہو محسوس ہو رہا تھا جیسے اندر سے کچھ ابل کے باہر آجائے گا۔

”تم..... اس کو طلاق دو جسے لے آئے ہو یہاں۔“ ناصر رضا اتنا کہہ کے وہاں سے چلے گئے تھے۔
”چپ کر میرا بچہ..... بس۔“ رابعہ بیگم روتی ہوئی عینا کو ساتھ لگائے نشوونما پر سے اس کی آنکھیں صاف کرنے لگیں۔

”پریشان مت ہو جلد سے وہ لڑکی سے دو دن بعد ادھر ہی جائے گی۔“ ان کی اس بات پر زوار حیدر نے انہیں ایک نظر دیکھا تھا اور پھر وہاں سے اٹھ کر اپنے کمرے میں چلا گیا۔
پچھلے سے مسلسل رابعہ بیگم کی زوردار بددعا سننے پر اس کے ذہن میں ہتھوڑے کی طرح برس رہی تھیں۔
وہ جب اندر آیا تو ارونا ٹیبل پر اس انداز سے بیٹھی ہوئی تھی کہ اس کی گود میں تکیہ رکھا ہوا تھا اور وہ بیٹھنے کے انداز میں اوندھی ہوئی جھک کر پھوٹ پھوٹ کر رو رہی تھی۔

”ارونا آرواؤ؟“ ملائمت اور تشویش سے کہتے وہ بیگم کے قریب آیا۔ ارونا فوراً سیدھی ہوئی اس کا چہرہ آنسوؤں سے تر قطرے سرخ گلاب پر پڑی، بیگم کی طرح حسین لگ رہے تھے۔
”وہ عورت کون ہے زوار! جو باہر بہت رو رہی تھی اور تم پر چلا رہی تھی۔“ زوار حیدر کی بات کا جواب دینے کی بجائے ارونا نے اس سے انگٹس میں پوچھا۔

”زوار حیدر سوچ میں پڑ گیا۔ ذہن میں کچھ نہیں آ رہا تھا کہ وہ نئی نوہلی دہن کو اس کی سوتن کا مخالف کس الفاظ سے کروائے کہ سوتن نام کا زہر ہم ہو جائے۔
”میں پوچھ رہی ہوں کون ہے وہ۔“ ارونا زوار کے جواب نہ دینے پر گھبرا کر ذرا غصے سے پوچھنے لگی اس کے

دل میں انجانا ڈر پچھنے کا ڈر ہے ہوئے تھا۔
”میری پھوپھو زاد کزن۔“ زوار حیدر نے اسے آتے ہی بری خبر سنائی مناسب نہ سمجھی اس کا خیال تھا کہ وہ چند دنوں میں آہستہ آہستہ اسے قائل کر لے گا اسے اپنی مجبوری بتائے گا تو وہ ضرور سمجھ جائے گی۔“

”وہ اتنا چلا کیوں رہی تھی۔“ ارونا نے مصیبت سے پوچھا۔
”وہ کہہ رہی تھی کہ تم نے مجھے اپنی شادی میں نہیں بلایا۔ میں نے تو کزن ہونے کے ناطے دل کھول کر تمہاری شادی انجوائے کرنی تھی۔“ زوار اپنا کوٹ جو اس نے شرٹ کے اوپر پہنا ہوا تھا ایزی چیئر پر رکھتا ہوا

جھوٹ پھوٹ بولنے لگا۔

MOVEITA
The Touch of Softness

Time No More An Issue

انفاس اور سہولت مومو برائش کی

VIRGIN PLUS

ایک نیا اور بہتر ذائقہ
دوب کرے اسل سے صاف کر دیا

Slender Soft

Super Roll
& Kink Roll

مومو برائش کی

جانب اشارہ کیا ماحول کو سنجیدہ محسوس کرتے وہ وہیں بیٹھ گئی عینا جوس پیتے اسے گھور رہی تھی جسے ارونا اپنا وہم سمجھنے کے نظر انداز کر گئی۔

”ہے مومو آج آفس کا؟ یا ہمیشہ کی طرح چھٹی۔“ ڈبل روٹی پر مکھن لگاتے ناصر رضا نے سنجیدگی میں اردو زبان میں پوچھا تھا ارونا کو کچھ سمجھ نہیں آتی۔

”آج میں ارونا کو شاپنگ پر لے کے جا رہا ہوں، اس کے پاس کپڑے نہیں ہیں اتنے، ایک دوسو ٹ ہی لیے ابرام نے پاکستانی اسٹائل کے مطابق سلوا دیئے تھے اسے، بس وہی ہیں اس کے پاس۔ بعد میں انشاء اللہ جانا ہی ہے آفس۔“ ماحول کی سنجیدگی کو کم کرنے کی کوشش کرتے زوار حیدر خاصی ملائمت سے بول رہا تھا۔

راجہ بیگم نے سرد مہری سے ایک نظر زوار اور ارونا پر ڈالی اور پھر ناشتے کی طرف متوجہ ہو گئیں۔ ناصر رضا بھی چپ رہے۔ بس عینا کی غصیلی نگاہوں کی تاک جاری تھی۔ ساتھ وقفے وقفے سے وہ قیمتی برتنوں کو بلا وجہ الٹ پلٹ رہی تھی۔ انڈوں پر نمک دانی سے یوں نمک چھڑک رہی تھی جیسے زوار حیدر کے زخموں پر چھڑک رہی ہو۔

چند گھنٹوں بعد زوار حیدر ارونا کو شاپنگ کروانے لے گیا۔ ڈھیر ساری شاپنگ کروائی۔ بعد میں آکس کریم کھائی اور پھر زوار حیدر اسے سارا لاہور دکھاتا رہا۔ مختلف جگہوں کا وزٹ کرواتا رہا۔

وہ جن لائبریریوں میں بیٹھ کر گھنٹوں کتابیں پڑھا کرتا تھا وہ اس نے ارونا کو دکھائیں ساتھ ساتھ وہ اپنی باتیں بتاتا رہا جو ارونا بہت دلچسپی سے سنتی رہی۔

”تمہیں کتابیں پڑھنے کا اشتیاق کیوں ہے زوار میری طرح۔“ ایک لائبریری میں چارلس ڈکنز کی کتاب کے صفحات الٹتے پلٹتے ارونا نے اس سے پوچھا۔

”اصل میں اللہ نے میرے اندر تجسس بہت رکھا ہے اور نئی نئی چیزیں جاننے اور اپنے تجسس کو سیراب کرنے کے لیے میں کتب پڑھتا ہوں۔“

اسے سن گلاسز کو اتارتا ہوا زوار جامع انداز میں بولا۔ ”اللہ نے اپنے دیکھا وائٹ ٹی شرٹ اور بلیو جینز میں وہ کمال کا حسین نظر آ رہا تھا۔“

”گڈ تجسس بہت کمال کی چیز ہے۔ البرٹ آئن اسٹائن میں بھی یہ بہت تھا۔“ بڑے خیال سے ہر کامیاب انسان میں تجسس کا ہونا بہت ضروری ہوتا ہے۔

ارونا ٹیکسی پیر کا کھٹا ڈراما کستانی شکل میں جو اس کے سامنے موجود تھا اس کے صفحات کھولتے بولی زوار حیدر مسکرایا اس کی اور ارونا کی یہ عادت نئی ملتی تھی وہ جب بھی کوئی کتاب خریدتا ابتدائی صفحات پر ضرور سرسری نظر ڈالا کرتا تھا۔

دونوں کافی دیر پھرتے رہے ارونا اردو سے ناواقف تھی۔ اسی لیے وہ لیونا لسانی اور دیگر انگریزی مصنفوں کی کتب خرید لائی کافی دیر بعد جب وہ گھر پہنچے تو وہاں معمول سے کچھ زیادہ چہل پہل تھی۔ ذرا نیور گھر میں موجود گاڑیوں کو دھو رہے تھے۔ مالی بابا لان میں لگے خوب صورت پودوں کی تراش خراش کے ساتھ پانی دے رہے تھے۔ وہ ارونا کو لیے جب اتر تو دل کچھ غلط ہونے کا احساس دل رہا تھا۔

لاؤنج کے سنہری دروازے سے اندر جانے کے بعد اس نے ارونا کو سامان اندر رکھنے کے بہانے پکچن میں بھجوا دیا تاکہ وہ کھانے پینے کی اشیاء وہاں رکھ آئے۔ خود زوار حیدر کھوتی نگاہوں سے ادھر ادھر دیکھ رہا تھا گھر معمول سے زیادہ صاف تھرا نظر آ رہا تھا۔

ارونا یکن میں شاپر زکھ آئی تو زوار نے اسے ہاتھ میں پکڑے کتابوں کے شاپر زکھ اور دینے اور خود رابعہ بیگم کو ڈھونڈنے لگا۔
”ہو سکتا ہے کسی فیملی کا ڈنر ہو گھر پر۔“ گھر کی تیاری دیکھتے زوار حیدر نے قیافہ لگایا۔

رابعہ بیگم تھیں کہ نظری نہیں آ رہی تھیں انہیں ڈھونڈنے وہ گھر کے دیگر گوشوں کی طرف چل پڑا۔
کمرے میں آ کے ارونا بہت خوشی اور اطمینان سے شاپر زکھ لے گئی اس کی پسندیدہ کتابیں اس کی دسترس میں تھیں یہ خوشی کون سا کسمی۔ ارونا کے گلے میں برعزاس کا فمفلر کی طرح لپٹا ہوا تھا وہ اشتیاق سے چھکن کی پرواہ کیے بغیر کتاب کھولنے لگی۔ زندگی بہت حسین تھکے لگی تھی امید کی کرنوں نے بیسرا کر لیا تھا۔ امید کی تاریخی شعاعیں ارونا کے دل کے آگن کو اجالوں میں بدلنے لگیں۔ دل مطمئن کی منزل پر پہلا قدم اٹھانے ہی والا تھا وہ یوں کی مانند خیماتی دنیا میں پرواز کرنے لگی یہاں کوئی مجبوری نہیں تھی۔ کوئی بندش نہیں تھی، دسمبر میں رونے والی نے مارچ کا استقبال امید سے کیا تھا۔ منزل سامنے تھی جہاں الماتے کا کوئی گرین بازار نہیں تھا جہاں گوہر کی بیماری کی فکر نہیں تھی جہاں کمال آگن کو محنت کرتے دیکھ کے آنسو نہیں تھے۔ خوشیوں کا جہاں تھا اور بس ارونا تھی۔ اس کی جیت ہوئے لگی ہمارا اس سے ہارنے لگی۔ پھر اچانک ہی پرستان کی اس پری کی خیماتی دنیا ٹوٹی تھی چھناک سے یک نخت ہوئے۔“

گھٹ..... گھٹ دستک ہوئے گی ارونا نے فوراً کتاب سے نظریں ہٹا کے آنے والے کو اندر آنے کا کہا تھا۔
”تم کس کی اجازت سے اس جگہ پر بھی ہوئے؟“ آنے والی نے بنا سلام دعا اور تیز کے دائرے میں رہنے کے بجائے بہت سختی سے اسے کہا تھا۔
ارونا گڑبڑائی اس کا اعتماد لیول خاصا کم تھا۔

”میں زوار حیدر کی بیوی ہوں، بیٹھ سکتی ہوں اس جگہ۔“ تھوڑی دیر بعد خود یہ قابو پاتے ارونا نے جبک سے کہا تھا اس کا لہجہ اس کی بات سے ممانعت نہیں رکھ رہا تھا۔
”خیر! بیٹھ تو میں بھی اس جگہ سکتی ہوں۔“ عینا شاہانہ انداز میں پاس بیٹھنے لگی۔ آئی۔ جیہ خیالی کروانے آئی ہوں سمجھیں۔“ عینا آنکھیں نکالتے چبا چبا کے بولنے میں مصروف تھی اس کی انگلیں لچک لچک کر رہی تھیں کہ ارونا کو بخوبی سمجھ آ رہی تھی عینا نے انگلیں میں ماسٹر زکر رکھا تھا بولنے میں روانی کیوں نہ ہوتی۔
”میں سمجھی نہیں ہوں۔“ ارونا عینا کے آگے کھڑی ہوئی نا سمجھی سے بولی اس کی پیشانی پسینے سے عرق آلود ہونے لگی تھی۔

”یہی تو میں سمجھانے آئی ہوں تمہیں۔“ عینا نے سر تا پا عجیب نظروں سے ارونا کو دیکھتے خاصے طنزیہ لہجے میں کہا تھا۔
”اتنے میں زوار حیدر آ گیا اسے عینا کو ارونا کے پاس کھڑے دیکھ کر کسی غلط خبر کی اطلاع موصول ہوئی۔
”اصل میں“ میں“ زوار حیدر کی پہلی بیوی ہوں اور آج ہمارا دلیم ہے۔“ ارونا کو سامنے کھڑا زوار نظر آئے میں دشواری ہونے لگی۔ تھوڑوں کی بارش بھی جو اس کے سر پر برسے لگی سڑا کو تو پیہ نہیں زہر کا پیالہ پیئے آئی تکلیف ہوئی تھی یا نہیں جتنی ارونا کو اس پل زہر میں مجھے الفاظ سن کر ہونے لگی تھی۔
زوار حیدر کا رنگ فق ہوا۔ عینا کی بات جاری تھی۔

”تمہیں خاص طور پر بتانے آئی ہوں خبردار اگر اس کمرے سے تم باہر بھی نکلیں۔ چلے تو تم نے جانا ہی ہے اس لیے بہتر ہے یہ دودن آرام سے گزارو۔“
یہ کیا سے کیا ہو گیا تھا۔ عینا ارونا کے دل پر ہزاروں نشتر چھوئے جا چکی تھی وہی کتابیں وہی شاپر جو کچھ لمبے پہلے ارونا کی امید بن کر اس کے سامنے تھے وہی اب اس کا منہ چڑا رہے تھے۔ پاؤں سے زمین کیسے نکلتی ہے یہ آج ارونا نے جانا تھا۔ سانس کے آتے ہوئے بھی سانس کیسے اٹکتے ہیں اس کا تجربہ ارونا کو ان کھڑیوں میں ہوا تھا۔ عرش سے فرش پر کیسے آتے ہیں یہ اندازہ ان کھوں نے اسے کروایا۔
”ارونا! دیکھو میں نے تمہیں کوئی دھوکہ نہیں دیا۔“ زوار حیدر مجسمہ بنی ارونا کے قریب کھڑا بول رہا تھا وہ جھوٹا نہیں تھا مگر چاہیں لگ رہا تھا۔
”میں نے تمہیں کہا تھا سب سے پہلے کہ زوار حیدر مجھے دھوکا مت دینا کہا تھا میں نے تم سے۔“ ارونا میں زبردست حرکت پیدا ہوئی وہ اب ہڈ سے اچھل کر زوار حیدر کے قریب کھڑی تھی۔
”کہا تھا میں نے تم سے مجھے زندگی نے رلایا ہے ستایا ہے۔ ہمیشہ مجھ سے قربانیاں مانگیں ہیں تم میرے ساتھ کوئی دھوکہ مت کرنا نہیں ہوں میں اس بوجھ کے قابل زوار حیدر۔“ وہ رونے لگی۔
”نہیں ہوں میں اتنا برا آدمی نہ تھا تو اب زوار حیدر کے کڑوی دوائی سمجھ کے حلق سے اتار لوں۔“ ارونا چیخ رہی تھی۔
”میرے مقدر نے مجھ سے بڑیاں کھائیں ان حالات میں جب بچے کھیلنے کودنے ہیں مجھے اس وقت بھی اپنی بوڑھی ماں کی بیماری کا غم ہوتا تھا۔ جب بچوں کو کھلیں سوچ کے رونا نہیں آتا لیکن تم نے تو میرا مان ہی توڑ دیا۔ میری امید ہی ختم کر دی۔“ اس کی آواز گنگے میں گونجنے لگی۔ حلق میں جیسے پتھر کا ٹکڑا لٹک گیا تھا۔
”تمہارے ساتھ مجھے مجبوری کی کھونٹے سے باز رہنا پڑا اس کے باوجود میں نے تمہاری نیک نیتی کی وجہ سے تمہیں دل سے قبول کر لیا۔
وہ یوں رونے لگی جیسے اپنوں کی موت پر رویا جاتا ہے۔ اپنوں کا خون ہو جائے تو رویا جاتا ہے آج اس کے اتنا دکا خون ہوا تھا ارونا ایسے رو رہی تھی۔
”دیکھو ارونا! میری بات سمجھنے کی کوشش کرو پلیز۔“ زوار حیدر ارونا کو روتا ہوا دیکھتا ہوا جانا ہو کر کہنے لگا۔
”تم مجھے بس اتنا بتاؤ کہ یہ لڑکی جو کچھ کہہ کر گئی ہے کیا وہ سچ ہے۔“ ارونا، زوار حیدر کا کارزور سے دونوں ہاتھوں میں لیے چلا کے اس سے پوچھ رہی تھی۔
”میں تمہیں پہلے ہی سب بتانے والا تھا ارونا۔“ وہ یقیناً پہلے تمہید باندھنے لگا تھا ارونا کے ہاتھ ہی نہیں اس کا ہوا وجود ہی لڑکھڑا گیا تھا۔ یوں جیسے اسے کسی نے کے کوئی بلندی سے پاتال میں پھینک دیا ہو یا جیسے وہ برج اظلیفہ سے منہ کے بل گرتی نیچے تنک آ گئی ہو۔
زوار حیدر جھٹکی باندھ کے اپنی طرف دیکھتی ارونا کو دیکھ رہا تھا جوشاک کے عالم میں یوں بت بنی بیٹھی تھی جیسے اندن کے مادام تساؤ موزیم میں رکھا کوئی مجسمہ ہو۔
”ارونا میری جان! امیر! اعتماد کرو۔“ زوار حیدر نے بے بسی سے ارونا کے دائیں شانے پر زور ڈالتے کہا تھا۔
”میں قصور وار نہیں ہوں، میں تمہارا جرم نہیں ہوں۔“ زوار حیدر یہ جانتے ہوئے بھی بول رہا تھا کہ اسے ارونا ایک سیکنڈ کے لیے بھی سننا نہیں چاہتی۔

اپنی دودھ شامل کر دے کبھی اعتبار اپنی پہلی رنگت پر واپس نہیں آ سکتا۔ عورت کے اعتقاد کے لباس پر اگر مرد کی بے نیکی کی چیونٹ چپک جائے تو مرد کے نرم لہجے کی بے لوث ٹھنڈی برف بھی اس چیونٹ کو اتارنے میں ناکام رہتی ہے۔“

”میں مجبور تھا ارونا! میں دھوکے باز نہیں ہوں۔“ زوار حیدر سسکتی ہوئی ارونا کے گھٹنوں پر ہاتھ رکھے کہہ رہا تھا۔ باہر مہمانوں کی آمد جاری تھی کسی وقت بھی رابعہ بیگم اسے باہر آنے کا کہہ سکتی تھیں۔ زوار حیدر عجیب مشکل میں پھنس گیا تھا۔

”جو بندہ اپنا دوسرا نکاح اپنی بیوی سے چھپا کر رکھے وہ دھوکے باز نہیں تو کیا ہے۔“ ارونا نے اس کے ہاتھ جھٹک دیئے تھے۔

”وہ میرا پہلا نکاح تھا۔ ارونا اور میں نے صرف اس لیے تمہیں نہیں بتایا کہ تم زندگی کی شروعات کرتے ہی اتنی بری خبر کیسے سن پائیں میں تمہیں ایک بات بتانا چاہتا تھا میری زندگی کا ایک ایک ورق تمہارے سامنے ہے۔ ارونا میرا یقین کرو۔“ زوار حیدر بول رہا تھا اور ارونا اپنے آنسو پونچھتی جاتی جا رہی تھی۔

”تمہیں کیا تھوڑا وار! میرے دل پر کیا غم ہے۔ میرے ماں باپ نے مجھے انجمنی دیں میں پھینک دیا کس لیے صرف تمہاری وجہ سے۔“

”لیکن میں نے اس مخالف کر دیا حالانکہ تمہیں معاف کرنا میرے لیے آسان نہیں تھا۔“

ارونا بڑی مصویت سے بولی اس کے دل میں درد کی صیسیں اٹھ رہی تھیں۔

”تم نے تو مجھے دھوکا دے دیا زوار! تم نے مجھے ہی ڈس لیا۔ اب خدا کے لیے میرے سامنے اپنی چاہت کا جھوٹا ڈراما بھی مت کرو۔“ آخر میں وہ سسکتی رہ گئی۔

”تمہیں کیا لگتا ہے ارونا میں مجبور نہیں تھا یا ہر دو کوئی مجبور یاں نہیں ہوتیں۔“

زوار حیدر اس کے چہرے پر آئی ہوئی لٹ کچھ پوچھ کر رہا تھا اور پھر اسے وہ سب سناتا گیا کیسے کھیر آ کسفر ڈیو نیورٹی سے لوٹ آنے کے بعد عینا اس کے پلے باندھ دی گئی۔ وہ ایک ایک بات بتا رہا تھا۔ کیسے اس کے گھر والوں نے اس سے پوچھے بغیر ویسے کانٹیشن رکھ لیا تھا۔

ارونا کچھ باتوں پر چونکی کچھ پر آہ بھرتی کچھ پر حیران ہو رہی تھی۔ پھر اس نے اپنے دونوں ہاتھ ارونا کے سامنے کر دیئے۔

”ارونا! میری عزت تمہارے ہاتھ میں ہے ایک بار بس میری لاج رکھ لو۔ ایک بار جو میں کہہ رہا ہوں وہ کرو۔“ ارونا کے دل کو جیسے کچھ ہوا وہ ایک ٹرانس کی کیفیت میں آگئی اور کارپٹ پر اس کے پاس بیٹھ گئی اسے کبھی ہی نہ آیا تھا کب اس نے اٹھ کر اپنے سرد ہاتھوں میں زوار حیدر کے معافی کی شکل کے ہاتھ لے لیے اور پتہ نہیں کیسے اس نے روتے ہوئے ان ہاتھوں کو بڑی نرمی سے علحدہ کر دیا تھا۔ اس کے بعد وہ پھوٹ پھوٹ کر رو رہی تھی جیسے صرف آج کے دن ہی سارے آنسو ختم ہو جانے تھے۔ آج کے بعد کوئی آنسو نہیں آتا تھا۔

☆.....☆

ناصر رضائے سکتے ہی گھٹنے اٹھا کر کیا تھا مگر عینا کے گھر سے کوئی بھی نہیں آیا باہر مہمان بیٹھے پورے ہو رہے تھے۔ مجبوراً انہیں خود جانا پڑا کیونکہ ان کا لینڈ لائن نمبر اور سیل فون مسلسل بند جا رہا تھا۔ اب جانے کے سوا کوئی چار انہیں تھا جی وہ کسی کام کے بہانے اپنی گاڑی نکال لے گئے تھے۔ چند منٹوں بعد وہ تیز ترین ڈرائیور کرتے عینا کے گھر پہنچ گئے تھے۔ وہ جلدی

”قصور وار تو میں ہوں۔“

”اس کے اندر کی عورت جاگ اٹھی تھی۔ وہ بولنے لگی۔“ مجھے اس لیے تمہارے ساتھ باندھ دیا گیا کہ میں ایک عورت تھی جسے صرف ایک ہی بات کہی جاتی ہے کہ اگلے گھر سے تمہارا جنازہ آتا ہے تو آئے لیکن تم بھی وہاں سے روکھ کے مت آنا۔ سسرال میں اسے مار پیٹ کی جاتی ہے تو کی جائے جو کچھ بھی ہے ظلم اس نے سہنا ہے کیونکہ وہ ایک عورت ہے۔“

”دیکھو ارونا! تم بات کو کہاں سے کہاں لے گئی ہو۔ ویسے میں تمہیں یہ بات کلیئر کروں کہ عورت مظلوم نہیں ہے یار، ایسا صرف مافی سوچ کی وجہ سے ہے تم اگر ایسا سوچو گی تو کمزور بن جاؤ گی مضبوط نہیں بن پاؤ گی۔“

دونوں ایک نئی بحث میں پڑ گئے تھے ابھی صبح وہ اور زوار حیدر شاپنگ کے لیے گئے تھے تو کتنے خوش تھے راستے میں زوار حیدر کیا کچھ ارونا کو بتاتا رہا تھا یہاں چلنے والے کلابی رکشوں سے لے کر شاہی قلعے تک، بہت کی کڑا ہی کھلانے کی یاد دہانی ہوئی تھی اور ساتھ چچا فیتے کی پیڑے والی سی کی بھی۔ شروع میں سب کتنا اچھا رہا تھا اور اب وہ بالکل ہی اچھی نہیں لگتے تھے۔ زوار حیدر نظر سے چر رہا تھا اور ارونا مستقل نگاہوں سے اسے دیکھ رہی تھی۔ اگر اب وہ اپنی مجبوری بتاتی دیتا کہ عینا سے شادی اس کی خواہش نہیں مجبوری تھی تو پتا نہیں ارونا کو یقین آتا یا نہیں۔

باہر ویسے کی تیاریاں عروج پر تھیں شام کو عینا نے لیون بن کر زوار حیدر کے ساتھ بیٹھنا تھا یہ منظر ارونا کے لیے کتنا دردناک ہوگا زوار حیدر کبھی سکتا تھا اچھی یہ جاننے کتنی آزمائشیں آتی تھیں نازک دلوں پر کتنے وار ہونے باقی تھے یہ کسے معلوم تھا۔

☆.....☆

سر سبز لان کے قد آور دوستوں پر گیندے کی لڑیاں لگ رہی تھیں۔ درخت رنگین لائٹس سے جگمگا رہے تھے۔ سارا گھر برقی قہقروں سے جگمگا رہا تھا۔ رانوکا تیار کردہ خوب صورت جوڑا عینا کے جسم پر چھا ہوا تھا اس کی بڑی عمر میک اپ نے چھپا تو لی مگر ختم تو نہیں کی تھی۔ رابعہ بیگم کی کئی ملنے والیاں جن میں بہت سی سوشل ورکر بھی تھیں اور ان جی اوز کی چیئر پرسن بھی عینا کی بڑی عمر کو لے کر چھ میکیو بیوں میں مصروف تھیں۔ سبز چٹائی گھاس نے زوار حیدر کی مجبوریوں پر کڑھنا تھا۔ آج پر بنے بلونز سے ڈیکوریٹ ہونے والے راج ہنسل کے جوڑے نے اس پر ہنسا تھا وہ کیا کرتا وہ کدھر جاتا۔ وہ اتنا جانتا تھا کہ اگر عینا کے ساتھ وہ کی گھاس پر قدم رکھ کے چلے گا تو پاؤں تلے معصوم تتلیاں مسل جائیں گی۔ سسک جائیں گی اور ہو سکتا تھا بلکہ ہوتا ہی تھا کہ زوار حیدر کی مجبوریوں کے ایک ایک قدم پر محبت کی دھنک رنگ پروں والی تتلیاں مر جاتیں۔

☆.....☆

ارونا گھر گھرستی کی ماہر تھی وہ کمال کی ذائقے دار ڈشز بناتی تھی اسے ہزاروں گھریلو ٹوکے زبانی یاد تھے۔ اس سے جب گوشت جل جاتا تو وہ اس میں دودھ ملا لیا کرتی تھوڑا سا دودھ شامل کرنے سے جلے گوشت کی بوٹیک نہ آتی۔ وہ جب اپنے کپڑوں پر پارک میں بیٹھے کسی شرارتی سیچے سے چیونٹ چپکا لیتی تو ٹھنڈی برف کے بار بار گرڑنے سے چیونٹ اتر جاتی تھی لیکن اب اس کی فہم و فراست کچھ نہ کر رہی تھی وہ زوار حیدر سے کہہ رہی تھی۔

”زوار حیدر! جب عورت کے دل کی ہانڈی میں اعتبار کا گوشت جل جائے ناں تو مرد چاہے اپنے پیار کا کچھ

سے گاڑی سے اترے دروازے پر دستک دی۔ پندرہ منٹ بعد دروازہ کھل گیا تھا سانسے ہی خالدہ آ پائیں۔

”آئے بھائی صاحب۔“ خالدہ آپا نے جگہ چھوڑی اور دروازے سے پیچھے ہٹ گئیں۔

”آپ کو پتہ ہے مہمان گھر میں انتظار کر رہے ہیں کبھی دلہن کے گھر والوں کے بغیر بھی ویسہ ہوتا ہے کیا۔“ ناصر رضا چھوٹی سی دلیز سے اندر آتے اپنے سر کو جھکائے ذرا سا نیچے موڑ کے چھوٹی ڈیوڑھی میں آگئے تھے ان کا تنفس غصے سے تیز تیز چل رہا تھا۔ بھائی صاحب بس آپ کے بہنوئی نے دیر کر دی نہار ہے ہیں آپ ذرا آرام کریں ہم بس ابھی تیار ہو جاتے ہیں۔“

خالدہ آپا جھنجھوڑ کر کے اب ناصر رضا کے ساتھ تیزی سے اوپری منزل کی سڑھیاں چڑھ رہیں تھیں۔

”جدہ ہوئی ہے لاہر وادی کی بھی آپا اوپر سے فون بند کر کے ہیں آپ نے۔“

”مہمان کیا کہیں گئے؟“ ناصر رضا اوپری منزل کی چھت پر پڑی چار پائی پر بیٹھ گئے تھے۔

”اوہ ہونا صبر بھی نہیں کیا تاؤں میں بی بی سی ایل خراب ہے اور موبائل کی بیٹری شام سے بند پڑی ہے ایک تو یہ بجلی بھی نال بروا خور کرتی ہے۔ بھلا لائٹ آئے تو ہی چارج ہونا فون۔“ خالدہ آپا بجائے شرمندہ ہو کے معذرت کرنے کے اپنی ہی کے جا رہی ہیں۔

”آپ جلدی سے تیار ہوں میں ادھر آپ کا انتظار کر رہا ہوں۔“ ناصر رضا نے انہیں اس انداز اور اکتاہٹ سے کہا۔ وہ فوراً نیچے کی طرف بڑھیں۔ ناصر رضا کی اوپر سے ادھر دیکھتے ان کی نظر شمال کی دیوار پر پڑی وہاں فیروز کی روغن والی پرانی سی دیوار گیر الماری تھی اور اس کے مٹی سے لے شیشوں میں سے کئی ضخیم کتابیں تاک جھانک کر ہیں تھیں۔ ناصر رضا وقت گزاری کے لیے الماری کے قریب گئے مٹی کی چرچاہٹ ہوئی اور الماری کھل گئی مٹی کی کتابیں شاید ایک دوسرے کے اوپر پھینکنے کے انداز سے رکھی گئیں تھیں۔ خالدہ آپا نے تڑپ کر سناڑے میز پر باری باری سب الماری میں تھوٹا جا رہا تھا۔ انہی اخباروں کے تراشے میں خط ناپ لگائے ہوئے کانا تھا جانے کیوں ان کی نظر اپنی بہن کے لکھے اس خط پر ٹھہری جو انہوں نے گاؤں سے شہر میں کاروباری وجہ سے چھپنے والے بھائی کو لکھا تھا۔ میری بہن نے اس غریب گھر میں گزارا کرنے کے لیے نہ جانے کیا کچھ یاہوگا۔ بے چاری سائیل لوگ۔ ناصر رضا نے منہ ہی منہ میں بڑبڑاتے خط کھول لیا تھا۔ وہ شعروں کے چندریں سے بھرے خط لکھنے کی وجہ پر آچکے تھے۔ وہ جو غیر اخلاقی حرکت سمجھ کر خط کو لپیٹ کے رکھنے ہی لگے تھے کہ اگلی چند لمحوں میں ان کے چودہ طبق روشن کر دیے تھے۔ ان کی سوچ منجھ ہو گئی۔

ناصر رضا کا دماغ آندھیلوں کی زد میں تھا خط میں لکھی لائیں ان کے سائیں لوگ غریب بہن اتنا بڑا دھوکہ انہیں دے گی وہ یہ سوچ بھی نہیں سکتے تھے۔

☆.....☆

سنہری پتیوں والی سفید کبھی سرخ پھولوں کی پتیوں پر دھیرے دھیرے چل رہی تھی۔ تاحد نگاہ سفید روشنی پر دے نظر آ رہے تھے پتہ ہی نہ چلا کہ سفید لے بے بالوں والے گھوڑوں کی ٹپ ٹپ رک گئی پھولوں بھر راستہ طے ہو گیا تھا۔ سنہری سفید پوشوں سے ڈھکن کر سنیوں پر بیٹھے لوگوں نے جیسے طلسماتی سمجھ کر کبھی کی طرف نظریں گاڑ رکھیں تھیں۔ سرخ پردہ ہاتھ لگھی والے نے مودب ہو کے گزارش کی تھی۔

”صاحب جی سیاف وائٹ کمر والی شرت پر ریڈ بوادر پاؤں میں برٹش اسٹائل جوتا پہنے بلیک پیٹ کورٹ میں ملبوں

وہ اس وقت انگلستان کا شہزادہ نظر آرہا تھا اس کی لائٹ براؤن آنکھوں میں تجسس کے دیے نے روشنی کر رکھی تھی اور اس کا چھٹ سے نکلتا قد تفتی ہی لڑکیوں پر بجلیاں گرا رہا تھا۔ اس شہزادے جیسے حسین لڑکے نے جس پریوش کا ہاتھ تھام رکھا تھا وہ ملنے چلنے کے گاؤں میں ملبوں کی جاس کے پاؤں کے نیچے تک آرہا تھا اس گاؤں کے بازوؤں اور فرٹ حصے سے کمر تک سلوار اور ڈراک آؤٹ لائسنے بتوں کی شکل ک لپٹک اس انداز سے لگا یا گیا تھا۔ ایک دوسرے کے ہاتھوں میں ہاتھ دیے وہ طلسماتی جوڑا ابھی سے نیچے اتر کے چاندنی پر پھرے سرخ پتیوں بھرے اس راستے سے گزر رہا تھا جس کے دونوں اطراف دور و دور لاتعداد گٹے سے سجاتے گئے تھے۔

ایک دوسرے کا ہاتھ تھامے وہ سرخ کارپٹ والے سفید فرنیچر سے آرامت اسٹیل پر آگئے۔ جو جہاں تھا وہیں کھڑا تھا یہاں تک کہ رابعہ بیگم بھی اپنی جگہ سے ہٹ نہیں سکیں۔ کچی سنوری عینا سفید صوفے پر بیٹھی دنگ رہ گئی تھی لوگ منہ میں انگلیاں دبائے ششدر بیٹھے تھے کسی میں بولنے کی جرات نہیں تھی۔

لائٹ چلنے کے گاؤں میں بروچ سے سیٹ کیا اسٹائلس سا جواب لیے وہ اردو نا تھی جو ہر طرح سے اپنے سرتاج کا ساتھ دے رہی تھی۔

”یہ کیا تماشہ ہے زوار حیدر! رابعہ بیگم شاک سے باہر نکلتے ہی زور سے اس کے عقب میں جا کے چلائیں۔“ یہ تماشہ نہیں ہے مائی ڈیر صاحب آپ کے بیٹے کے ویسے کا فنکشن ہے۔“ دوستوں کے ساتھ ہی مذاق کرتے اس نے رابعہ بیگم کی تضحیک کی۔

”بھائی میں جائے یہ ویسہ میں چھینا ہوا دھند نہیں بخشوں گی زوار حیدر تم بس اتنا یاد رکھنا۔“ اپنے آپ کو بے بس پا کر انچ سچ اس کے سامنے کھڑی رابعہ بیگم نے وہاں سے ہٹ گئی۔

”یہ ہے عزت والدین کی بیٹا پرانے ملک سے بیاہ کر دی گئی ہے۔ پہلی بیوی سے کبھی نظر تک نہیں ملائی۔“ رابعہ بیگم بہانوں کی پرواہ کے بغیر اپنے سینے پر زور زور سے پھیڑ مارتے ہوئے کہیں۔ اردو نا اور زوار نے فوری انہیں سنبھالا تھا۔

”بس کر دور رابعہ بیگم امت دو طے زوار حیدر کو عزت تو ہماری کسی اس بھانجی نے اتاری ہے۔“ اچانک ہی کہیں سے خالدہ آپا اور ان کے شوہر کے ساتھ ناصر رضا غصے سے بے قابو ہوئے مٹی کی طرف لپٹ گئے تھوکر کر رہے تھے۔ عینا ہم لڑاٹھ کھڑی ہوئی۔

”کیا ہوا ہے ماموں؟“ عینا کی زبان پر لڑکھاہٹ تھی۔

”میرے محترم مہمان گرامی میں آپ سب سے انتہائی معذرت خواہ ہوں کہ میرے انتہائی ذکاوتی معاملے نے مجھے یہ بنے پر مجبور کر دیا ہے کہ پلیز میری مجبوری کو سمجھتے یہاں سے تشریف لے جائیے۔ میں آپ کا انتہائی مشکور ہوں گا۔“ عینا کی بات کا جواب دیے بغیر ناصر رضا نے مہمانوں سے کہا تھا۔ سب لوگ اپنی انسلٹ محسوس کرتے میز بالوں کو کون سے دیتے رہ گئے تھے۔

”بھائی صاحب میری بات تو سنیں پلیز۔“ خالدہ آپا نے ناصر رضا کے شانے کو دباتے منت کی۔

”بہت سن لیں آپ کی باتیں بہت رحم کھایا آپ پر میں نے لیکن آپ کے کسی ڈرامے میں نہیں آؤں گا اب۔“ سفاکی ناصر رضا نے خالدہ آپا کا ہاتھ جھکا اور پھر عینا کی چوٹی سے اسے پکڑ کے صوفے پر لا پٹا۔ تمام افراد چپٹی چپٹی آنکھوں سے دیکھ رہے تھے۔

”کیوں کھیلا ہے تم نے ہمارے ساتھ ڈرامہ عینا! اب مجھے پتہ چلا ہے کہ لوگ تمہارا رشتہ کیوں نہیں مانگتے آتے۔“ عینا

Poora Pakistan Raha Hai Bol Hashmi Ispaghool

Hashmi
Ispaghool

روزانہ ہاشمی اسپغول
فائبر کا استعمال رکھے
معدے کو صاف
بلڈ شوگر کا لیول برقرار
کولیسٹرول کو کم اور دل کو صحت مند
قبض سے دور اور نظام ہضم کو درست

www.hashmisurma.com Hashmi Since 1974

Benchmark.pk

”آپ نے بھی تو اسے صفائی کا موقع نہیں دیا کتنا روٹی تھی بے چاری۔“ گوہر کو اپنی اگلوٹی بیٹی بری طرح یاد آ رہی تھی۔

”صفائی کا موقع تو دیتے اسے۔“

کمال افغن خاموشی سے سبب کھاتے رہے۔

”میری بیٹی نے ہمارے لیے اپنی خواہشات کا گلا گھونٹ دیا ورنہ کتنا شوق تھا ناں اسے آستانہ میں جا کر کورین زبان سیکھنے کا۔ شاعری کرنے کا، کتاب لکھنے کا۔“ گوہر کمال افغن سے کچھ فاصلے پر نیگے پاؤں بجری پر چلے گئیں آرائش کا یہ انوکھا آئینہ بارونا کا تھا۔

”تو ہم نے کون سا اس کا گلا گھونٹ دیا؟ عزت کے ساتھ بیاہ کر ہی تو بھیجا ہے اپنے ہاتھوں سے اسے اور کیا کرتے۔“ کمال افغن نے چھری سے سبب کی ایک اور قاش کافی تھی۔ ایک منہ میں ڈالے چبا رہے تھے۔

”گلا ہی تو گھونٹ دیا ہے ہم نے اس کا، چٹائیں وہ وہاں کس حال میں ہوگی اب کون ماں بن کر اس کا چہرہ چومتا ہوگا۔“ گوہر اپنے گھیر دار میض کے دامن کو سنبھالتیں بجری کے فرش پر ہی بیٹھ گئی تھیں۔

آنسو ان کی آنکھوں سے نکل کر بجری پر گر رہے تھے۔

”ایک تو تم کوڑیاں ہی تھیں ذرا سی بات پر نسوے بہانے بیٹھ جاتی ہو۔“ گوہر کے موٹے موٹے آنسو دیکھ کر کمال افغن چڑ گئے تھے وہ ہر لمحہ کڑی ہوئیں۔

”کہاں جا رہی ہو؟“ کمال افغن نے چھری میز پر رکھتے بلند آواز سے کہا۔

”کہیں نہیں۔“ گوہر مڑے اور رکھے ہوئے میز اور اندر کی جانب بڑھ گئیں۔

لوگ روم کا ہیڈ ولیم دن کے تین بجارہا تھا، ہر طرف ہالی فائی سسٹم پر لگی نصرت فتح علی خان کی غزلیں کانوں میں بج رہی تھیں مگر زوار حسین بنا وقت کی پرواہ کیے غزلوں پر ہنس ہنسنے میں مصروف نظر آ رہا تھا ارونا پاس ہی آرام چیئر پر بیٹھی اسے عجیب نظروں سے کھور نے میں مشغول تھی گلاب کی لڑکی نہیں ہو رہا تھا۔

”تھک جاؤ گے ارونا بیٹا، جاؤ اور لیٹ جاؤ اپنے کمرے میں۔“ ناصر رضا ان سے نکل کر آئے تھے اس کے سر پر پیار سے ہاتھ پھیرتے انگریزی میں بولے۔

”ایسے ابرام سے ارونا کی ساری کہانی سننے اور خاص طور پر عینا کا پول کھلنے کے بعد ان کے رویے میں زمین آسمان کا فرق آ گیا تھا۔

”اچھا سنو زوار حیدر۔“ غزلوں کی آواز میڈیم ریج میں کرتے انہوں نے صوفے پر بیٹھے مست زوار حیدر مخاطب کیا۔

”جی بابا! وہ یوں چونکا جیسے اس پر کسی نے ٹھنڈے پانی کی بالٹی گرا دی ہو اور نا اس کی طرف دیکھتی ہوئے سے مسکرا دی تھی۔

”ایسے ابرام کی کال آئی تھی۔“ ناصر رضا، ارونا کے قریب پڑی آرام چیئر پر بیٹھ گئے۔

”اچھا کیا بات ہوئی؟“ زوار حیدر سنجیدہ ہوا۔

”سب خیریت تو ہے، ارونا کے والدین تو ٹھیک ہیں ناں؟“ زوار حیدر بے تاب ہوا۔

”ہاں، ٹھیک ہے سب کچھ۔“ ناصر رضا نے سگار لیوں کے درمیان رکھ کے دھواں چھوڑتے کہا۔

”آپ نے بھی تو اسے صفائی کا موقع نہیں دیا کتنا روٹی تھی بے چاری۔“ گوہر کو اپنی اکلوتی بیٹی بری طرح یاد آ رہی تھی۔

”صفائی کا موقع تو دیتے آئے۔“

کمال اکلن خاموشی سے سب کھاتے رہے۔

”میری بیٹی نے ہمارے لیے اپنی خواہشات کا گھاگھونٹ دیا ورنہ کتنا شوق تھا ناں اسے آستانہ میں جا کر کورین زبان سیکھنے کا۔ شاعری کرنے کا، کتاب لکھنے کا۔“ گوہر کمال اکلن سے کچھ فاصلے پر ننگے پاؤں بگری پر چلنے لگیں آرائش کا یہ انوکھا آئیڈیالوگ تھا۔

”تو ہم نے کون سا اس کا گھاگھونٹ دیا؟ عزت کے ساتھ بیاہ کر ہی تو بھیجا ہے اپنے ہاتھوں سے اسے اور کیا کرتے۔“ کمال اکلن نے چھری سے سب کی ایک اور قاش کاٹی تھی۔ ایک منہ میں ڈالے چبارے تھے۔

”گلا ہی تو گھونٹ دیا ہے ہم نے اس کا، پتا نہیں وہ وہاں کس حال میں ہوگی اب کون ماں بن کر اس کا چہرہ چومتا ہوگا۔“ گوہر اپنے گھیر دار قمیض کے دامن کو سنبالتیں بگری کے فرش پر ہی بیٹھ گئی تھیں۔

آنسو ان کا کھانا کھانے سے نکل کر بگری پر گر رہے تھے۔

”ایک تو تم عورتیں ہی ماں ڈرا سی بات پر ٹسوے بہانے بیٹھ جاتی ہو۔“ گوہر کے موٹے موٹے آنسو دیکھ کر کمال اکلن چڑ گئے تھے وہ دروازہ کھڑی ہوئیں۔

”کہاں جا رہی ہو؟“ کمال اکلن نے چھری میز پر رکھتے بلند آواز سے کہا۔

”کہیں نہیں۔“ گوہر مڑے اور رکھنے والے اور اندر کی جانب بڑھ گئیں۔

☆.....☆

لوگ روم کا چنڈولیم دن کے تین بجارہا تھا، ہر طرف ہائی فائیو سسٹم پر لگی نصرت فتح علی خان کی غزلیں کاٹوں میں بج رہی تھیں مگر زوار حسین بناوٹ کی پرواہ کیے بغیر کھڑے کھڑے ہنسنے میں مصروف نظر آ رہا تھا ارونا پاس ہی آرام چیئر پر بیٹھی اسے عجیب نظروں سے گھورتی تھی۔ ”نصرت کی لڑکی نہیں ہو رہا تھا۔“

”تھک جاؤ گے ارونا بیٹا، جاؤ اور لیٹ جاؤ اپنے کمرے میں۔“ ناصر رضا ان سے نکل کر آئے تھے اس کے سر پر بیار سے ہاتھ پھیرتے انگریزی میں بولے۔

”ایسے ابرام سے ارونا کی ساری کہانی سننے اور خاص طور پر عینا کا پول کھلنے کے بعد ان کے رویے میں زمین آسمان کا فرق آ گیا تھا۔“

”اچھا سنو زوار حیدر۔“ غزلوں کی آواز میڈیم ریٹج میں کرتے انہوں نے صوفے پر بیٹھے مست زوار حیدر کو مخاطب کیا۔

”جی ہاں!۔“ وہ یوں چونکا جیسے اس پر کسی نے ٹھنڈے پانی کی بالٹی گرا دی ہو اور نا اس کی طرف دیکھتی ہو لے سے مسکرا دی تھی۔

”ایسے ابرام کی کال آئی تھی۔“ ناصر رضا، ارونا کے قریب پڑی آرام چیئر پر بیٹھ گئے۔

”اچھا کیا بات ہوئی؟“ زوار حیدر رنجیدہ ہوا۔

”سب خیر تو ہے، ارونا کے والدین تو ٹھیک ہیں ناں؟“ زوار حیدر بے تاب ہوا۔

”ہاں، ٹھیک ہے سب کچھ۔“ ناصر رضا نے سگار لبوں کے درمیان رکھ کے دھواں چھوڑتے کہا۔

اوارش کروانے اسے لے کے امی کے گھر کی بجائے کہیں دور جا رہی ہوں۔ شاید کوئی حل نکل آئے، دیے ابھی زیادہ دیر نہیں ہوئی ناصر بھائی کی منت کروں گی اگر زوار عینا سے نکاح کر لے تو یہ غلطی بدنامی کے بغیر بڑی آسانی سے چھپ کر ہے۔ تم تو جانتے ہو ناں اگر انہیں میں نے رو دھو کے پاؤں پکڑ کر کہا تو وہ میری بات ضرور مان جائیں گے۔ اب تو سیدھا جاؤ آگے ہی گاؤں میں ہماری بدنامی ہو چکی ہے اور کوئی رشہ کرنے کا سوچ بھی نہیں سکتا۔ عینا بہت مشکل میں ہے خدا کے لیے اس کی غلطی چھپانے کے لیے کچھ بھی کر گزرو۔ میں تمہارے جواب کا شدت سے انتظار کر رہی ہوں۔

والسلام

تمہاری خالہ

رابعہ بیگم کے ہاتھ سے خط نیچے جا گرا ان کی چیتنی نندا اپنی بیٹی کی غلطی کو چھپانے کے لیے انہیں یوں استعمال کرے گی وہ جانتی بھی نہیں تھیں۔

”رک جائے خالہ آیا! بس مجھے اتنا بتا دیجیے کہ میری غلطی کیا تھی، میرے معصوم بیٹے کا کیا قصور تھا جس کے لیے آپ اپنی بدکردار بیٹی ڈال گئیں۔“

خالہ وہ آیا! سچ سے گزر کر لان پر قدم رکھ چکی تھیں ایک پل کو ٹھہریں۔

”میں نے تو ہی آپ کو نند نہیں سمجھا، ہمیشہ بری بہن کا درجہ دیا۔“

”لیکن پھر بھی آپ نے میرے ساتھ اچھا نہیں کیا۔“ رابعہ بیگم پھوٹ پھوٹ کر رونے لگیں۔

”غلط کرتے ہیں وہ لوگ جو اپنی غلطیاں چھپانے کے لیے دوسروں پر بوجھ بنتے ہیں۔ میں آپ کی بیٹی کا جرم کبھی معاف نہیں کروں گا بہت جلد ملائی کے کاغذات آپ تک پہنچ جائیں گے۔“ ناصر رضا کے فیصلے نے انہیں لب کھولنے کے قابل نہیں چھوڑا تھا۔

اپنے ماں باپ کے ساتھ ذلیل و خوار ہو کر اس سے نکلتی عینا نے سوچا تھا۔

جھوٹ کتنے ہی پردوں میں چھپا کر بھی کیوں نہ رہا جائے جھوٹ ظاہر ہو ہی جاتا ہے۔

زوار حیدر رب کا شکر ادا کر رہا تھا کہ اس رب نے اسے بولنے کی صفت سے خود بخود دے نکالا جیسے کھن سے بال نکلتا ہے۔

☆.....☆

سورج کی کرنوں نے بڑے بڑے دوختوں پر اپنی کرنوں کی سنہری روشنی پھیلا رکھی تھی۔ روک نما لکڑی فرش بے پناہ صاف نظر آ رہا تھا اس سرک جتنے لمبے اور چوڑائی کی مانند نظر آئے تھیں کے ایک کونے میں کمال اور گوہر سفید لکڑی کے بڑے بڑے پتھوں کی مدد سے بنائی گئی کرسیوں پر بیٹھے باتیں کرتے ہیں مصروف تھے۔

”پورے تین ماہ ہو گئے ہیں کمال! میری ارونا کو قازقستان سے گئے ہوئے۔“ گوہر نے کرسی سے اٹھ کر دائیں جانب پڑے گملوں میں آگے بے شمار پودوں میں سے ایک پودے کے پتے پر ہاتھ پھیرتے رہے۔

آواز میں کہا تھا۔

”ادھر تھی تو کیسے ان پودوں کو بلا ناغہ پانی دیتی تھی۔“ گوہر نے پانی نہ دینے کی وجہ سے جلے سڑے پودوں ایک نظر دوڑائی جو سوکھ کر تڑپڑا چکے تھے۔

”اس نے بھی تو صحیح نہیں کیا نا ہمارے ساتھ، ہماری روایت توڑی۔“ اجنبی غیر مرد کا ہاتھ تھا عشق رہی۔“ کمال اکلن نے میز پر پڑا سرخ سب اٹھالیا ابھی تک ان کا دل ارونا سے صاف نہیں ہوا تھا۔

لگائے ادھر ادھر شہر، ارونارو ریاست اور ایانہ کو مبارک باد اور دعائیں دینے کا پیغام یاد دہانی سے دینے کے لیے
ابن ابرام کو تلقین کر رہی تھی۔
”اچھا گوہر ماں کز دور تو نہیں ہو گئیں بیمار تو نہیں لگ رہیں تھیں اور بابا کمال وہ کیسے ہیں؟“ ایزبی چیئر پر
بہولتی ارونو مضطرب سی سوالات پر سوالات کرنے لگی۔ ابرام نے اسے تفصیل سے ان کا حال چال بتانا۔

☆.....☆

رابعہ بیگم بڑے سے باؤل میں کریم اور چینی الیکٹرک بیئر سے پھینٹ رہی تھیں۔ سفید پنے ارونو نے باؤل
لہریے تھے وہ اب چکن کو ابا ل کر ایک باؤل میں ان کے ریشے ریشے الگ کر رہی تھی۔ اب ریشین سیلڈ تیار
ہونے میں صرف تھوڑا سی وقت رہ گیا تھا۔

”ارونا بیٹا! تم نے تین چار انگلش میگزینز میں تحریریں بھیجیں تھیں کیا بنا؟“ رابعہ بیگم نے کریم والے باؤل
میں اچھی طرح الیکٹرک بیئر پھیرتے بہت ملاعت سے پوچھا تھا۔
”نہیں آئی ماں! ارونو کے لیوں پر بڑی زخمی مسکراہٹ تھی۔
”لیکن میں ہاروں لی نہیں۔“ وہ برعزم تھی۔

”انسان جب ہار کو ہارنے کا پل لے تو اسے جیتنے سے کوئی چیز نہیں روک سکتی ماں۔“
امید کی کوئیل نے اس کے دل میں بکیرا کر رکھا تھا وہ کیسے ہارنی وہ کیسے ٹوٹی وہ کیسے ٹھرتی جب کہ اسے پتا
نہیں کہ اس کے ساتھ ہے۔

”تم تو بہت سمجھ دار ہو ارونو۔“ تحریری نظروں سے ارونو کو دیکھتے رابعہ بیگم نے کریم والا باؤل چکن کاؤنٹر پر
بٹتے دل سے کہا۔

”یالہ تیرا شکر ہے۔ تم نے مجھے ارونو جیسی، یہودی، اٹال کا دل، روسی رب کے آگے سر بسجود تھا۔“

☆.....☆

”مجھے طلاق چاہیے ابھی اور اسی وقت۔“ عینا کی چنگھاڑتی ہوئی آواز ناصر رضا کے کانوں میں گونج رہی
تھی۔

”تمہارے نام کی جو زنجیر میرے ساتھ بندھی ہوئی ہے اسے توڑ دو اب، کیونکہ میں اپنا ایشیا مارش فوٹ بہت پہلے
لروا چکی ہوں، اب صرف مجھے تم سے طلاق لے کے اسی سے نکاح کرنا ہے جس نے مجھے یہاں ڈیل
کروایا۔“ عینا زوار حیدر کی بجائے ناصر رضا سے زوار حیدر سمجھ کر بولتی جا رہی تھی لیکن اسے یہ پتا نہیں تھا کہ فون
ناصر رضا نے اٹھایا ہے۔

”تم مجھے ہر حال میں طلاق دو گے زوار حیدر، ورنہ میں خلع لے لوں گی۔“

عینا کی آواز سن کر زوار حیدر وہیں ناصر رضا کے پاس ٹھہر گیا جو ابھی چھوٹے قیل وہاں آیا تھا۔
ارونا غالباً نہار ہی تھی۔ اندر سے شاور کے پانی کی آواز آرہی تھی۔ عینا مسلسل بولتی جا رہی تھی۔ زوار حیدر نے
تقریباً دھاڑتے ہوئے مین لائنیں بولی تھیں اور پھر سارا کھیل ختم ہو گیا تھا۔

☆.....☆

ہوا چلتی تھی تو گوہر کو ارونو کے آنے کا گمان ہوتا تھا مگر پتا نہیں اس نے کب آنا تھا۔ حالانکہ دو ماہ قبل کمال
انگن نے ایسے ابرام کے ذریعے پیغام بھیجا دیا تھا کہ ارونو کو انہوں نے معاف کر دیا ہے وہ چاہے تو بات بھی

”میرا اندازہ ہے وہ ارونو سے ریاست اور ایانہ کی بات کروانا چاہتا ہے۔ ریاست کی شادی ہے دو دن بعد۔“
”تمہیں کیا لگتا ہے ارونو کی بات کروانی مناسب ہے کہ نہیں؟“ وہ ہلکا سا سنسن لیتے ہوئے۔
”کمال انگن کا رویہ اس سے ذرا برابر بھی ٹھیک نہیں ہے جہاں تک ایسے ابرام نے مجھے بتایا ہے وہ ابھی تک
اسے معاف نہیں کر پائے۔“

زوار حیدر ایک نظر ارونو کی طرف دیکھتے بولا جوان دونوں کی گفتگو سمجھنے سے قاصر تھی لیکن ناموں سے اسے
اندازہ ہو رہا تھا کہ اس وقت موضوع گفتگو اس کی ذات ہے۔

”تو کیا اسے ایسے ابرام کے گھر والوں سے بات کر کے اپنے گھر والوں کی یاد پھر سے نہ آجائے گی؟ کہیں
ٹینشن نہ لینے لگ جائے۔“

”زوار حیدر نے ساری بات ان کے گوش گزار کر دی۔ تو وہ ایش ٹرے پر سگار کا جلتا ٹکڑا مسل کر بچھا
ہوئے کہنے لگے۔

”دیکھو! تمہاری بات بھی کسی حد تک درست ہے لیکن میرے خیال سے اگر ارونو کی بات کروادی جائے
پھر یہ سلسلہ جاری رہے تو ارونو کا دھیان بٹ سکتا ہے۔ ایسا کی بور ہوئی رہتی ہے بے چاری تم تو سارا دن آفس میں
ہوتے ہو، اچھا ہے اس کا دھیان بٹ جائے گا۔“ ناصر رضا کی بات زوار حیدر کے دل پر لگی تھی۔
”تو پھر کروادیں بات؟“ زوار حیدر نے اپنے کوٹ کی جیب سے پیل فون نکالتے کہا تھا۔

”ہاں..... ہاں ملاؤ نمبر زوار حیدر نے ارونو کو موبائل دے کر اندر جانے کا اشارہ کیا تھا خود وہ باپ
باتوں میں مصروف ہو گئے۔

ارونا فون کان سے لگائے اپنے کمرے کی طرف بڑھ گئی تھی۔ تین چار رنگز کے بعد کال انڈین کر لی تھی
ایسے ابرام کی آواز سنتے ہی ارونو کو اپنا گھر اپنے لوگ اپنا کمرے کی طرف یاد آ گیا تھا۔
”میں ارونو بات کر رہی ہوں۔ ایسے کیا حال ہے تمہارا؟“ ارونو کی گرجوٹی سے بولی۔

”ٹھیک ہوں میں بھی تم ساؤ وہاں سب ٹھیک ہیں ناں زوار حیدر نے کہا۔“ ایسے ابرام اس کے بارے میں
کافی فکر مند تھا اور یہی فکر مندی اس کی آواز سے بھی جھلک رہی تھی۔

”وہ بھی ٹھیک ہے۔“ ارونو نے کچھ دیر رکنے کے بعد کہا۔
”ایسے..... ہاں ٹھیک ہے ناں؟“ اس کی آواز میں کمی تھی۔

”ہاں ہاں بھئی ٹھیک ہیں۔ تمہارا پوچھ رہی تھیں کہہ رہی تھیں بڑا یاد کرتی ہوں میں ارونو کو اس کے کتے کا
دھیان رکھتی ہوں اور اس کے بعد اس کے لگائے ہوئے پودوں کا بھی۔“ ایسے ابرام کی زبان سے نہ جانے
پھسل گیا۔

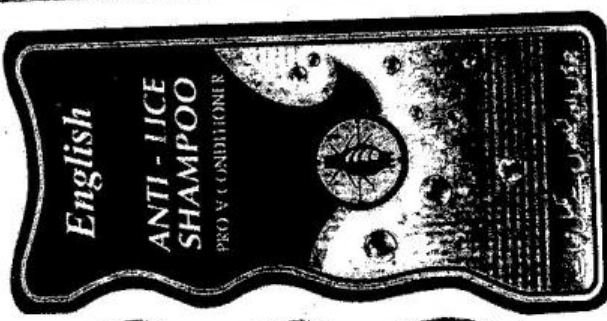
”تم کب گئے تھے ان کی طرف؟ یا فون پر بات ہوئی؟“ ارونو نے ہمہ تن گوش ہونے کے سننے ایسے ابرام
بڑی بے تابی سے پوچھا تھا۔

”ریاست کی منگنی کی تقریب میں شرکت کا دعوت نامہ لے کر گئے تھے ہم لوگ مگر وہ نہیں آئے۔ تب ہی کمال
انگل کی عدم موجودگی میں یہ باتیں گوہر خالہ نے مجھ سے کہیں۔“

”اچھا! ریاست کی منگنی ہوئی۔“ ارونو نے اچنبھے سے پوچھا۔
”ہوئی ہے منگنی بلکہ دو دن بعد شادی ہے ایانہ کی بھی منگنی کر دی ہے۔“ ایسے ابرام نے تفصیل بتائی فون کا

سر نہ کھجائیں.. Healthy ہو جائیں!

English



کر سکتی ہے اور اگر چاہے تو ان سے ملنے بھی آسکتی ہے۔ انہیں ایسے ابرام سے اس کی سچائی کا یقین ہو گیا تھا مگر اردو ناکی طرف سے یہ پیغام سن کر انہیں فی الحال کوئی جواب نہیں آیا۔ گو ہر دن رات اس کا نام لیتی تھیں اسے کرتیں، ادھر اردو ناکی ساری تیاری کر کے بیٹھی تھی، گھر والوں کے لیے سندھی رلیاں، ملتان کی کھسے، بلوچی کڑھائی والے کرتے۔ اور نہ جانے کیا کیا اس نے اکٹھا کر رکھا تھا۔ اس کا تو دل چاہ رہا تھا کہ یہاں گوہر کے لیے پنڈی ناشتالا ہو کر نہاری اور حلیم ملتان کا سونہرے حلوہ سندھ کی پلہ پھلی پشاور کے چپلی کباب سب کچھ ہی پیک کروا کے لے جائے اور ایک ایک چیز ان کے منہ میں خود ڈالے۔

گلابی پردے اس کے بیڈ کے چاروں اطراف گہرے ہوئے تھے اس کے آس پاس اس کی من پسند کتے بکھری بڑی تھیں۔ فائل سامنے تھی صفحے سیاہ ہوتے جا رہے تھے۔ انگلش میں شاعری کی یہ اس کی پہلی کتاب کا مسودہ تھا اس کا قلم تیزی سے چل رہا تھا۔ صفحات سیاہ پر سیاہ رہے تھے۔ ماضی کا ایک ایک سین کسی فلم کی مانند اس کی فائل پر اسکرین بنا چل رہا تھا۔ ایک وہ بھی وقت تھا جسے وہ اپنے باپ کی مددگار بن کے ہر دن لہاتے کے گرین بازار میں سبزیاں بیچا کرتی تھی پھر اسے محض ہاتھ میں ہاتھ ڈالنے کی وجہ سے زوار حیدر کے ساتھ اجنبی دیس میں بیچ دیا گیا پھر یہاں عینا سوتن کے روپ میں اس کے سامنے آئی اس کی سچائی میں سے حالہ تحریریں ناقابل اشاعت ٹھہریں۔ اس وقت اسے لگتا تھا جیسے جینے کا کوئی فائدہ نہیں لیکن اب وہ بقیہ بھی چھ مرنائی تھے تو زوار روز مرنے کا کیا فائدہ کیوں نہ زندگی کو اچھی طرح گزارا جائے۔

اب اسے سمجھ آئی تھی اگر وہ سبزیاں نہ بیچتی تو اسے تین زبانوں پر عبور نہ ہوتا وہ انگلش میں شاعری نہ کر سکتی زوار حیدر کے گھر والوں سے بات چیت نہ کر سکتی اور اپنا ہاتھ چھڑا سکتی تو اسے زوار حیدر جیسا ام سفر بھی نہ اگر عینا سوتن بن کے اس کے سامنے نہ آتی تو اسے زوار حیدر کی مجبوری کا اندازہ کیسے ہوتا اگر اس کی چالیہ تحریریں چھپ جاتیں تو وہ ان پر ہی اکتفا کر لیتی وہ اپنے علم کو بیچ کر پانی اپنی خامیوں کو نکال نہ پانی خود کامیابی کے لیے تیار نہ کر پاتی۔

رب کے ہر کام میں ہوتی ہے یہ راز اس پر آج کھلا تھا اردو ناکی گلابی پردوں کو ہوا سے لہراتے دیکھا۔ بیڈ کنارے اس کا خوب صورت شوہر کروٹ بدل کے لیٹا ہوا تھا۔

”میں اپنے بابا سے ملنے آرہی ہوں پرسوں شام کی فلائٹ سے۔ اپنی گوہر ماں کو دیکھنے میں قاز قستان

سرزمین پر بہت جلد قدم رکھ رہی ہوں۔“

اے ہوا اپنے وجود کو لہاتے میں تعمیر ہوئے اردو ناکی گھر لے جا۔ آپ کی اردو نا جلد آپ سے ملنے آرہی ہے

اے ہوا..... لکھی باہل موڑے۔“

اردو نا نے فائل ایک طرف کر دی کمرے میں گلابی ریشمی پردے اور دو دھیا روشنی عجیب فزوں خیز منظر د

رہی تھی۔

”اگر آپ کو لگتا ہے آپ کے دروازے پر مصیبتوں پریشانیوں کی دستک ہو رہی ہے تو گھبراہٹ مت۔

تیار ہو کے دروازہ کھولیں خوش حالی اور کامیابی بہت جلد آپ کے دروازے کی باندی بن کر آنے والی ہے۔

اردو نا نے اتنا کہا تھا اور پھر گلابی ناکی میں ملبوس اس کا گلابی وجود بہت جلد گلابی پردوں کی چار دیواری

گلاب کا پھول بن گیا تھا۔ اس گلاب کے پھول پر امید، ہمت، توکل کے سفید چمکدار قطرے چمک رہے تھے



”رابعہ ادھر آؤ“۔ امی کی آواز پر اس نے
تلا کر دروازے کی طرف دیکھا تھا، پھر منہ بنا کر
بلیک لاگ آؤٹ کر کے باہر آ گئی۔

☆☆☆☆

اکرم صاحب ایک متوسط گھرانے سے تعلق
رکھتے تھے اپنا جہز اسٹور تھا مین بازار میں ہونے کی
وجہ سے خوب چل رہا تھا، اللہ تعالیٰ نے ہر چیز سے
نوازہ تھا ساجدہ بیگم بھی نیک، صالح اور شوہر کی
فرمانبرداری تھیں ان کے آگن میں رابعہ اور سائرہ کے
روپ میں دو پھول میک رہے تھے رابعہ شروع ہی
سے شرارتی اور لاپرواہ تھی جبکہ سائرہ اپنے کام سے
گام رکھنے والی سادگی طبیعت کی مالک تھی رابعہ اپنی
شرارتوں کے باعث باپ کے زیادہ قریب تھی اگر کوئی
خواہش کرتی تو اکرم صاحب ہر حال میں اس کی
خواہش کو پورا کرنے کی کوشش کرتے جبکہ سائرہ بہت
کم کسی چیز کی فرمائش کرتی تھی اپنی سلیقہ مندی کے
باعث سائرہ ماں کے زیادہ قریب تھی پیار تو دونوں کو
اپنی بیٹیوں سے ایک جیسا تھا لیکن عادتوں میں تضاد
کی باعث ساجدہ بیگم رابعہ سے کچھ خائف تھیں اس
کی لاپرواہی کے باعث اکثر اسے ڈانٹ بھی دیتیں
اور وہ منہ بنا کر سیدھی اکرم صاحب کے پاس چلی
جاتی وقت گزرتا گیا رابعہ تھرڈ ایئر میں تھی اور سائرہ
سیکنڈ ایئر میں سائرہ بڑھنے میں بھی بہت لائق تھی اور
رابعہ بڑھائی میں اچھی تھی لیکن کالج میں اس کی
کارکردگی اتنی اعلیٰ نہیں تھی۔

☆☆☆☆

”سائرہ تم سے چھوٹی ہے مگر اس میں سمجھ تم سے

”کیا ہے امی! ذرا چین سے بیٹھنے نہیں دیتیں
میں کیا کام ہے؟“ بدبینی سے بولتی فائزہ بیگم
”زبان دیکھو کیسے بچی کی طرح چلتی ہے تمہاری
ان ذرا سا کام کہہ دو تو جیسے موت پڑ جاتی ہے بچی
تمہارے باپ سے تجھے میں جو موبائل کے
بائے کوڑے دان میں پھینک دے پہلے تو مجھے
”اے اے کام کروانی لیتی تھی اب تو جیسے موبائل کی
الٹا پٹا اٹھنا بیٹھنا سونا جا گنا ہو گیا ہے“۔

”میرا موبائل کیا کہتا ہے آپ کو اس سے اتنا
پڑنی ہیں آپ؟“ وہ جان گئی تھی کہ آج امی کا
ساتویں آسمان کو چھو رہا ہے اس لئے فوراً ہی پکچن
اف بڑھ گئی۔

”اولاد تھوڑی سی بڑی ہو جائے تو ماں باپ کو نا
نہ لگتی ہے لیکن ہم نے بھی ایک عمر گزاری ہوئی
نیکی اور سچ سے واقف ہوتے ہیں ہم بھی اس
بہانے لگ جاتے ہیں مگر آج کی اولاد کان
نہ ہر بات کو ان کی کر دیتی ہے“۔

”اچھا امی! چپ کر جائیں آپ کیوں اتنا غصہ
نہیں جانتے دیں آپ“۔ رابعہ سے چھوٹی
نے یاس آ کر فائزہ بیگم کو چپ کروانے کی
بی تھی سائرہ چھوٹی تھی لیکن رابعہ سے زیادہ
”اسی“ رابعہ لاپرواہ تھی لیکن سائرہ معاملہ فہم کم

”سائرہ تم سے چھوٹی ہے مگر اس میں سمجھ تم سے

”سائرہ تم سے چھوٹی ہے مگر اس میں سمجھ تم سے

”سائرہ تم سے چھوٹی ہے مگر اس میں سمجھ تم سے

”سائرہ تم سے چھوٹی ہے مگر اس میں سمجھ تم سے



زیادہ ہے پڑھائی میں بھی تم سے اچھی ہے اور گھر میں بھی میرے ساتھ کام میں ہاتھ بٹالیتی ہے اور تم ہو کہ۔

”وہ اچھی ہے ناں تو اسے اچھی رہنے دیں اور اس کے گلے میں اچھی ہونے کا تمغہ لٹکا دیں میں اس جیسی نہیں بن سکتی بس۔“ سارہ سارہ سنتے اسے سارہ سے چڑ ہی ہو گئی تھی اس بار کالج میں تھرڈ ایئر کے ایگز امز ہوئے تو وہ پاس ہو گئی تھی خوشی سے بے حال وہ پورے گھر میں بھاگتی پھر رہی تھی اس کے پاس ہونے سے امی بھی بہت خوش تھیں اس لئے رات کے کھانے میں امی نے اچھا خاصا اہتمام کر ڈالا تھا۔

”ابو! میرے پاس ہونے کی خوشی میں اگر میں آپ سے کچھ مانگوں تو آپ کس گے ناں؟“

”ہاں کیوں نہیں چاہئے؟“

”کسی بات سے انکار کیا ہے کیا؟“

”ابو مجھے موبائل ملیں دیں۔“ ابو نے اسے پھر رکھ کے وہ لاڈ سے بولی تھی۔ اکرم صاحب ایک مل کے لئے خاموش ہوئے تھے لیکن سادہ بیگم چپ نہیں رہ سکیں۔

”اتنے بھی کوئی تیر تیر مار لئے تم نے کہ یوں اتنی بڑی بڑی فرمائشیں کرنے لگ جاؤ کوئی ضرورت نہیں موبائل لینے کی۔“

”امی! یہ کیا بات ہوئی میری ساری فریڈز کے پاس موبائل ہیں صرف میرے پاس نہیں ہے اگر آپ کا موبائل پکڑ لو تو آپ فوراً ابو لگے لگے جاتی ہیں جیسے چوہیں گھٹنے جھجھ رہی نظر میں لگے بیٹھی ہوتی ہیں آپ مجھے نہیں پتہ مجھے اپنا الگ موبائل چاہئے اگر مجھے موبائل نہ لے کے دیا تو میں پڑھائی چھوڑ دوں گی۔“ غصے میں دھمکی دیتی وہ کھانا چھوڑ کر اندر کمرے میں چلی گئی تھی۔

”سادہ! کیا کرتی ہو تم بھی بچی ہے وہ اور اس عمر میں بچوں کے ایسے ہی شوق ہوتے ہیں وہ باپ پر نکلنے ہے کالج جاتی ہے دوسری لڑکیوں کے ساتھ اشتیاق مٹتی ہے انہیں دیکھ کے ایسی خواہش خود بخود بچوں کے دل میں آ جاتی ہے۔“ اکرم صاحب نرمی سے بولے تھے۔

”تو کیا سارہ کالج نہیں جاتی، یہ نہیں پڑھتی؟“

”نہ تو کبھی ایسی خواہش کا اظہار نہیں کیا۔“

”اس میں تو کوئی بوڑھی روح گھسی ہوئی آپ چاہتی ہیں میں بھی ایسی ہو جاؤں؟“ اندر وہ چلا گئے بولی تھی۔

”بچوں کے رویے اور شوق میں فرق ہوتا ہے اور ہماری یہ بیٹی بھی انٹر کر لے تو ہم اسے بھی موبائل لے دیں گے۔“ مسکرا کر انہوں نے پاس بیٹھی سارہ کے سر پر ہاتھ رکھ کر کہا تھا جو اس ساری گفتگو میں ایک خاموش بیٹھی تھی۔

”نہیں ابو مجھے نہیں چاہئے موبائل آپ آئی لے دیں۔“ نظریں جھکا کے وہ آہستہ سے بولی تھی۔

”رابعہ! کہاں ہو بھئی۔“ اکرم صاحب میں داخل ہوتے ہی اسے آواز دینے لگے تھے۔

”جی ابو! وہ ناراضی کرے ہے نکل آئی ہے۔“

”کے کے ساتھ بول چال بند کر دی جی۔“

”یہ کھو میں اپنی بیٹی کے لئے کیا لایا ہوں انہوں نے سنا کرتے ہوئے ایک شاپر اس کی طرح بڑھایا تھا۔ رابعہ نے سنا کھولا تو اس میں نیو ماڈل موبائل کا ڈبہ تھا وہ خوشی سے چل ہی پڑی۔

”تھینک یو ابو! تھینک یو سارہ۔“ وہ خوشی سے اکرم صاحب کے گلے لگ گئی پھر شاپر لے کر کمرے میں بھاگ گئی وہ جوکل سے بھوکے ہوئے موبائل ملنے پر اچانک بھوک کا احساس بھی ہوا۔

پھر اگلے ہی لمحے وہ کچن میں امی کے پاس کھڑی منار ہی تھی ماں کی ناراضی بھی پھلا کوئی ناراضی ہے وہ پل میں موم کی طرح پھل گئی تھیں وہ پہلے کی پورے گھر میں چپکتی پھر رہی تھی۔

انہی دنوں اسے فیس بک جوآن کرنے پر چڑھا اپنی ایک دوست سے فیس بک اکاؤنٹ

وہ گھنٹوں اسی پرگی رہتی کام کے معاملے میں تو وہ پہلے بھی چورھی اب بھی کام سے ہاتھ کھینچ لیتی ویسے بھی اس کے خیال میں امی کا ہاتھ بٹانے کے لئے سارہ ہے تو سہی، لیکن جب امی کا موڈ زیادہ آف ہوتا تو پھر اس کے ساتھ ساتھ اس کے موبائل کی بھی سختی آ جاتی اب پڑھائی سے بھی اس کی توجہ ہٹتی جاری تھی ایک دن فیس بک پر اس کی بات ریحان صدیقی سے ہوئی اور یہ بات کب کب نزدیکیوں میں بدل گئی اسے بھی نہیں پتہ چلا جب بھی اس سے بات نہ ہوتی تو بے چینی محسوس کرتی اور کچھ ایسا ہی حال دوسری طرف بھی تھا وہ دونوں ایک دوسرے سے چھوٹی چھوٹی باتیں شیئر کرتی ریحان صدیقی بھی قدرے سنجیدہ دئے انداز میں گفتگو کرتا اس سے بات کرتے

دئے وقت کا احساس بھی نہ ہوتا اگر ساری رات نذر جاتی اور صبح کالج میں اس کی آنکھیں بند تھیں۔

پہلے راتیں سارہ کا سینکڑا ایئر کا رزلٹ آ گیا اس نے پورے کالج میں ناپ کیا تھا امی تو اس کے وارڈ میں سے جاری تھیں ابو نے بھی اسے ڈھیروں

یار کیا تھا رابعہ کا رزلٹ آنے پر بھی ایسے ہی خوشی کا اظہار کیا گیا تھا حالانکہ اس کے بصر کچھ خاص نہیں تھے

ابو بھی اسے ملن ہو رہی تھی۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ریحان صدیقی بہن بھائیوں میں سب سے پڑھنا تھا باقی سب شادی شدہ تھے ایک دن ریحان نے اس سے محبت کا اظہار کر دیا اس کا دل تو زور زور سے دھڑکنے لگا اور پھر دھڑکنے دل کے ساتھ اس نے بھی محبت کا اقرار کر دیا ان دونوں وہ بہت خوش تھیں امی کا ڈانٹا بھی برا نہ لگتا چاروں طرف زندگی

کی مسکراتی نظر آتی اور خود بھی وہ بنا بات کے لڑا دیتی۔ سارہ بی کام کر رہی تھی اور رابعہ کے پیپر

کی قریب آ رہے تھے اب اس نے بھی پڑھائی کی

ان توجہ دینی شروع کر دی تھی ریحان اس سے کم

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

بات کرنے پر گلہ کرتا اور وہ پیار سے اسے منالیتی اسے لگتا موبائل سے پہلے کی زندگی جیسے بے رنگ تھی اگر موبائل نہ ہوتا تو اس کی زندگی بے کار اور بے مزہ ہی گزر جاتی پیپرز کے دنوں میں اس نے خوب دل لگا کر پڑھا تھا ان دنوں امی بھی اس سے قدرے مطمئن تھیں، کیونکہ زیادہ تر وہ کتاب پکڑے ہی نظر آتی لیکن دن میں ایک بار ریحان سے بھی بات کر ہی

لیتی ورنہ اس کا خود کا دل بھی سے چین ہی رہتا پیپرز ختم ہوئے تو اس نے سکون کا سانس لیا اب وہ دوبارہ دن و رات ریحان کو ٹائم دے رہی تھی امی کی نصیحتیں

پھر سے شروع ہو گئی تھیں اور جب یہ نصیحتیں غصے میں بدلتیں تو وہ کچھ دیر کے لئے اٹھ جاتی اور موبائل کو بھی سانس لینے کا موقع مل جاتا۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

ایک دن ریحان صدیقی نے اس سے تصویر

مانگی وہ حیران ہونے کے ساتھ ساتھ پریشان ہو گئی دو سال ہو گئے تھے اسے ریحان سے بات کرتے ہوئے

کے آج تک اس نے ایسا کوئی مطالبہ نہیں کیا تھا۔

”نہیں ریحان! میں اپنی تصویر نہیں دے سکتی۔“

”میں تم سے پیار کرتا ہوں رابعہ! کیا میرا اتنا

بھی حق نہیں کہ میں اس سے پیار کرتا ہوں اسے دیکھ لوں دو سال ہو گئے ہیں انہیں بات کرتے ہوئے مگر

مجھے لگتا ہے تم ابھی بھی مجھ پر بھروسہ نہیں کرتیں اور جب بھروسہ نہیں کرتی تو محبت کہاں کرتی ہوگی، کیونکہ محبت کا دوسرا نام ہی بھروسہ ہے۔“ ریحان نے اسے اچھا خاصا ایسوشل کر دیا تھا۔ وہ عجیب سی نکلتش میں پتلا ہو گئی تھی ہاں ناں کی جنگ میں آخر ہاں جیت گئی تھی ریحان نے تصویر دیکھ کے بہت تعریف کی تھی اور ایک مرتبہ پھر اپنی محبت کا خوب اظہار کیا تھا۔

☆ ☆ ☆ ☆ ☆



”حیدر! ایک منٹ ذرا میری بات سن لیں لگا تھا جب اس کی شریک حیات نے آواز دی اس نے پلیر۔ وہ جو آفس کے لئے بالکل تیار تھا اور نکلنے ہی نہ تو اس کی طرف دیکھا اس کے انداز سے



فاخرہ نے اپنی بات ملتوی کرنے کا سوچا لیکن اگلے ہی پل اسے اپنی اولاد کی پیار بھری فرمائش یاد آگئی۔

”جلدی بولو! تمہیں کتنی بار بولا کہ جب میں کہیں جا رہا ہوتا ہوں تو اپنی یہ باتوں کی پیاری مت کھولا کرو، لیکن تمہیں جانے کیوں سمجھ میں نہیں آتی یا شاید سمجھنا ہی نہیں چاہتیں۔“ ایک ایک لفظ زہر میں ڈوبا ہوا تھا جسے اس نے نظر انداز کر کے ایک قدم مزید اس کی طرف بڑھایا۔

”وہ بچے کہہ رہے تھے کہ کل وہ اپنے چند دوستوں کو گھر بلا لیں تھوڑی اہتمام کا کہہ رہے ہیں۔“

ڈرتے ڈرتے ایک ایک لفظ ادا کیا۔

”تو میں کیا کروں؟“ حیدر اس کو کاٹ کھانے کو دوڑا۔

”وہ اگر آپ تھوڑے پیسے دے دے تو آدھا جملہ کہہ کر نہ موش ہو گئی۔“

”بس ہو گیا پیسوں کا مطالبہ تمہارا تو اور کوئی کام ہی نہیں جب دیکھو تب پیسے مانگنے کھڑی ہوتی ہو ایک تو میں تمہارے ان مطالبوں سے تنگ ہوں۔“ شوہر نے بات پر وہ حیرت کے مارے لنگ کھڑی اپنی پیدھی سادی کسی بھی فرمائش اور مطالبے سے عاری زندگی کو جانچنے لگی، کوئی ایک لمحہ بھی اس کو ایسا یاد نہ آیا۔ اب اس نے صرف اپنی ذات کے لئے کوئی فرمائش یا مطالبہ کیا ہو آج بھی اگر بچے ضد نہ کرتے تو وہ بھی یوں سوالی بن کر کھڑی نہ ہوتی۔

”ایسا کیا ہے جس کی خوشی میں بچے دوستوں کو بلا رہے ہیں۔“ اس نے والٹ نکال کے چند نوٹ نکال کے احسان جتاتے سوالی بنی بیوی کی نیکی پر رکھے۔

”میری سالگرہ۔“ وہ مجرم بنی کھڑی تھی۔

”تو بوڑھی ماں کی سالگرہ منانے کا شوق چڑھا ہے تمہاری اولاد کو واہ بھی واہ۔“ وہ طنزیہ کہتا باہر نکل گیا تو فاخرہ آنکھوں کی نمی چھپائے بچن میں

چلی آئی۔

☆☆☆☆

حیدر آفس کا کام نمٹا کے گھر کے لئے نکلنے ہی والا تھا جب بڑی بیٹی سارہ کو فون آ گیا وہ اس کی فرمائش سن کر پہلے تو حیران ہوا لیکن اگلے ہی پل بہانے کرنے لگا لیکن بیٹی کے آگے باپ کی ایک نہ چلی مجبوراً اسے بائیک کا رخ مار کر اس کی طرف موڑنا پڑا تھوڑی دیر کی مغز ماری کے بعد وہ کپڑوں کا پیکٹ تھامے گھر کی جانب روانہ ہو گیا گھر آتے ہی اس نے سب سے نظر بچا کے وہ شاپر اپنے کپڑوں والی الماری کے نچلے حصے میں گھسا دیا۔

”بابا! ماما کے لئے گفٹ لائے؟“ بیٹی کے استفسار پر وہ پہلے تو بوکھلا گیا، لیکن جلد ہی منہ چھل بھی گیا۔

”جی بابا کی جان میں نے آپ کی ماما کو پیسے دے دیئے تاکہ وہ اپنی مرضی سے اپنے لئے شاپنگ کر لیں۔“ شوہر نے بیٹی کے جہاں وہ حیران نظروں سے اسے دیکھنے لگی وہیں سارہ نے سلیٹین ہو کر باپ کے گال پر پوسہ دیا، فاخرہ کام نمٹا کے کمرے میں آئی ہی تھی جب وہ الماری کھولے کچھ کرنے میں مصروف تھا اسے دیکھ کے بوکھلا گیا۔

”جہ آپ نے بچوں کے سامنے بھجوت کیوں بولا۔“ جھگڑتے ہوئے پوچھا تھا۔

”تمہیں گفٹ چاہئے تو لا دوں گا گفٹ اتنی جلدی کیوں ہے سالگرہ کل ہے ناں۔“ اس کے لہجے میں طنز کی چھین محسوس کر کے وہ بناوٹ کچھ اور پوچھے جا کے لپٹ گئی جبکہ حیدر وہ چوکور اسٹالس سائیکل اپنے آفس والے بریف کیس میں رکھ کے اداس لپٹی فاخرہ کے پاس جا کے لیٹ گیا۔

☆☆☆☆

☆☆

عشق کی دواستہ ہمدردی

گزشتہ اقساط کا خلاصہ: آسنور غریب گھرانے سے تعلق رکھتی ہے۔ چار بہنوں میں اس کا نمبر دوسرا تھا۔ وہ سب میں حسین تھی۔ خود سے پہلے اپنے والدین اور بہنوں کی خوشی کا سوچتی تھی۔ کم عمری میں ہی اس نے گھر کی تنگدستی دور کرنے کے لیے

محنت کرنا شروع کر دی تھی۔ اپنے لیے خریدی چیزیں بہنوں کے پسند آ جانے پر انہیں دے دیتی تھی۔ وہ اپنی روٹی بیکتی زندگی سے عاجز تھی اس نے ٹھان لیا تھا کہ وہ کسی امیر کبیر بندے سے شادی کر کے اپنے گھر والوں کی زندگی سنوارے گی۔ دونوں چھوٹی بہنیں اس پر جان چھڑکتی تھیں۔ اس سے بڑی درخشاں کی آسنور سے کتنی رہتی تھی۔ وہ طنز کا کوئی موقع ہاتھ سے جانے نہیں دیتی تھی۔ قد و س صاحب جو آسنور کے والد ہیں اولاد زینہ نہ ہونے پر اپنی بیوی باجرہ کو ساری زندگی باتیں سناتے رہے۔ انہیں آسنور کا کالج جانا پسند نہیں تھا۔ باجرہ، آسنور کے بارلر (جو اس نے گھر میں ہی کھولا ہوا تھا اور محلے کی عورتیں بڑے بارلر میں پیسے بیلانے کی خاطر اس کے پاس آتی تھیں) کو وہ کم پیسوں میں بہترین کام کرتی تھی (اور کو چنگ سے ملنے والی آمدنی تھی)۔ عثمان ولی جدی پیشتی رئیس ہے۔ Perfection اس کی تھی۔ آسنور بھی ان کی جلی کٹی کی زد میں رہتی تھی۔ عثمان ولی جدی پیشتی رئیس ہے۔ Perfection اس کی پہچان ہے۔ ذرا بھی نقص اسے برداشت نہیں خواہ وہ چیز اسے کتنی ہی عزیز کیوں نہ ہو۔ وہ اپنے کمرے سے حق

فصل نمبر 18



کال ڈسکلیک کرنے پر مجبور کر دیا۔ اس جیسے بزدل لوغروں کو جب زور کی پڑتی ہے تو وہ اسی طرح سے میدان چھوڑ کر بھاگ جاتے ہیں۔

آنسو آنکھیں پھاڑے بے یقینی سے اسے دیکھ رہی تھی۔ عرشان ولی کا حرف بہ حرف اس نے بغور سنا تھا۔ یقیناً دوسری طرف سے لائن کاٹ دی گئی تھی۔

”تم عرشان ولی کی بیوی ہو تمہارے نام پر اتنا کچھ ہے کہ اب تم میری بھی محتاج نہیں ہو۔ تمہیں مجھ سے بھی ڈرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ ان جیسے لوغروں سے ڈر کس بات کا؟ آئندہ تمہیں اس طرح ڈرا سہانہ دیکھوں کہ ایک اور فری کال کی آواز سے کانپنے لگو۔“

اس کی کلائی تھام کر سیل فون اس کی پھیلی ہتھیلی پر رکھتے مضبوط لہجے میں کہتے ٹریڈنگ بیگ کو کھلا چھوڑ کر کمرے سے باہر چلا گیا تھا۔ آنسو اس کے پیچھے ہٹنے والے پردے کو دیکھتی رہ گئی۔

بھلے ایسے میں وہ اس سے خفا تھا، ناراض تھا مگر دنیاوی گدھوں کے سامنے اب بھی اس کی ڈھال بنا ہوا تھا۔ بزدلی چھوڑ کر بہادری کا درس دے رہا تھا۔ بڑی خوب صورتی سے جتا گیا تھا کہ آنسو کو اس سے بھی وب کے رہنے کی ضرورت نہیں۔ حقیقتاً وہ بہت منفرد مرد تھا۔ اوروں سے جدا..... اس کے کردار پر کچھ اچھا لے بنا، دنیا کے سامنے اس کا تمنا شاکر نے کئی بجائے اپنے نام کا حوالہ دے کر دشمنوں کے سامنے بھی اسے معتبر کر گیا تھا۔ آنسو کے آنسو بہنے لگے تھے۔ جہاں اس کے ساتھ کا مان تھا، وہیں اس کے دل کو نہیں پہنچانے کا احساس اسے رونے پر مجبور کر رہا تھا۔

☆.....☆

”کیسا ڈوب مرنے کا مقام ہے ہمارے لیے کہ ایک بدکردار لڑکی ہماری بہو بنی بیٹھی ہے۔ میں تو پہلے ہی خلاف تھی ان تنگ گلیوں میں عشق لڑانے والی لڑکیوں سے۔ پورا کی تو جھوٹی بیوی میں ہیں مگر خواب محلوں کے دیکھتی ہیں وہ تو واضحہ نے مجھے بتایا کہ کاشان سے.....“

”اسٹاپ! ام!“
عرشان ولی کی غضب ناک آواز کے ساتھ گلاس زمین بوس ہوئے اور پھر چٹان کے سسے ٹوٹنے کی آواز پر سب ایک لمحے کے لیے سہم سے گئے۔

سب ڈانٹنگ میز پر بیٹھے تھے۔ فرہاد صاحب کو لوٹے کچھ ہی دیر ہوئی تھی۔ ایسے میں ماہ پارہ کو آنسو کی بدکرداری ثابت کرنے کا یہ اچھا موقع لگا تھا۔ وہ شروع ہو گئی تھیں لیکن سچ میں ہی عرشان ولی کا جارحانہ رنگ دیکھنے کو ملا تھا۔ سب کی نظریں آنسو پر اٹھی تھیں۔ اس سے پہلے کہ سب ماہ پارہ کی مبہم باتیں سمجھتے، عرشان ولی کے جارحانہ انداز نے ایک لمحے کے لیے سب کو ششدر کر دیا۔ آنسو شرم سے پانی پانی ہوئی۔

”عرشان کام ڈاؤن! جو بھی بات ہے آرام سے کہو۔“ فرہاد صاحب یہاں حتمی کے باعث آئے تھے لیکن یہاں تو معاملہ ہی دوسرا اٹھ کھڑا ہوا تھا۔

”اس طرح چیچ چلا کر تم اس لڑکی کی بدکرداری کی پردہ پوشی نہیں کر سکتے عرشان!“
ماہ پارہ کو لگا تھا سچ جان کر وہ آنسو کو دیکھنا بھی پسند نہیں کرے گا مگر اس کا ریاکشن خلاف توقع دیکھ کر وہ غصے کا اظہار کرنے سے باز نہ آئیں۔

”ایک شوہر سے بڑھ کر کوئی نہیں جانتا کہ اس کی بیوی کتنی باکرہ ہے اور میری بیوی میرا غرور رہی ہے۔“

کمرے کی زینت بنا دیتا تھا مگر خود سے جدا کرنا گوارا نہیں تھا۔ عرشان ولی وجاہت کا اعلیٰ نمونہ تھا۔ وہ بے حد ہمدرد دل رکھتا تھا۔ ماہ پارہ بے حد تنگ چڑھی اور ماڈرن خاتون ہیں۔ عرشان ولی کی والدہ محترمہ، فرہاد صاحب، ماہ پارہ کے مزاج کے بالکل برخلاف بہت اچھے انسان ہیں۔ ماہ پارہ اور فرہاد صاحب کی تین اولادیں ہیں۔ اسارا بڑی بیٹی ہے جو اپنے شوہر راجیل اور تین بچوں کے ساتھ شارجہ میں رہتی ہے۔ راجیل لالچی انسان ہے۔ اسارا، ماہ پارہ کی طرح تنگ مزاج ہے۔ اسارا سے چھوٹا شاہ میر ہے۔ حتمی، شاہ میر کی بیوی ہے جسے کم صورتی کے باعث اکثر ماہ پارہ جلی جلی سناٹی تھیں۔ حتمی کی شادی کو پانچ سال ہو گئے تھے وہ ابھی تک بے اولاد کی کاشکار تھی۔ حتمی سبھی مزاج کی لڑکی ہے۔ ماہ پارہ کی میسٹ فرینڈ واصفہ کی دو اولاد ہے۔ کاشان اور زویا۔ کاشان پھنسا ہوا صفت انسان ہے۔ فلرٹ اس کا مین پسند مشغلہ ہے۔ زویا تنگ چڑھی لڑکی ہے۔ وہ عرشان ولی کو پسند کرتی ہے۔ اس کی نظر کرم حاصل کرنے کے جن جن کرتی رہتی ہے۔ تینوں بچپن سے دوست ہیں۔ آنسو نے زویا سے بڑے عقبن کر کے دوستی کی تھی۔ کاشان کی صورت میں محروم زندگی سے جھٹکا حاصل کرنا جانتی تھی۔ زویا نے کاشان کو پیچھا کیا تھا کہ وہ آنسو سے فلرٹ کر کے دکھائے تو وہ استاد مان لے گئی۔ کاشان نے پیچھے قبول کر لیا تھا جلد ہی اس نے آنسو سے دوستی کر لی۔ اسے سوٹ اور سیل فون گفٹ کیا۔ جدید اسٹارٹ فون استعمال کرنا آنسو کو مشکل لگ رہا تھا۔ عرشان ولی، کاشان کو اس کی حرکتوں پر بے انتہا کی سناٹا رہتا تھا۔ اسے ان لڑکیوں پر غصہ آتا تھا جو کاشان کا شکار بنی تھیں۔ وہ اپنی محبت اور جذبے اس کے لیے سب کچھ کر رہا تھا جو صرف اس کی ہوئی۔ ولید عرشان ولی کا بیسٹ فرینڈ ہے۔ (اب آپ آگے پڑھیں)

☆.....☆

عرشان ولی کی نظریں آنسو کا طواف کر رہی تھیں، تو سماعت آنے والی آواز یہ گئی ہوئی تھیں۔ کاشان کی آواز جھلے ہوئے سیسے کی طرح اس کی سماعت کو جسم کو گھسیٹتی تھی۔ انداز مخاطب پر پہرہ سرخ ہونے لگا تھا۔ حتمی بند ہاتھ کی رگیں سختی سے ابھرنے لگی تھیں۔ عرشان ولی کے کان سے سیل فون لگا دیکر آنسو کی رہی بہت بھی دم توڑنے لگی۔

”تم بول کیوں نہیں رہی سوئی۔“ کاشان کی آواز سماعت میں زہر پھیلنے لگی تھی۔
”مسٹر کاشان! آپ نے زندگی بھر لڑکیوں سے فلرٹ کیا، یوز کیا اور اسی سے زندہ سلامت ہیں تو شکر ادا کریں۔ مزید کچھ سال دنیا میں گزارنا چاہتے ہیں تو اس نمبر اور نمبر والی کو بھول کر دوبارہ تنگ کرنے کا سوچے گا بھی نہیں آپ فلرٹ کی دنیا کے بے تاج بادشاہ ہیں لیکن افسوس اب کی بار آپ نے غلط لڑکی کا انتخاب کر لیا، عرشان ولی کی بیوی کو تنگ کرنے والے کو اپنا انجام یاد رکھنا چاہیے۔“

کاشان جو بڑی فرصت سے آنسو کو تنگ کرنے کے پلان کو عملی جامہ پہنا کر خوش ہو رہا تھا۔ اس کی آوازیں کر وہ جس قدر ڈر گئی تھی۔ یہ بھی اس جیسے گھاک شکاری سے حتمی ندرہ سکا۔ کال ڈسکلیک کرنے کے بعد اس نے حتمی ہی کا لڑکیاں لیکن ریسیو نہ ہونے پر مسکراتا وہ ساتھ ہی میسر کر رہا تھا تا کہ اسے ڈرا دھک کر مطلوبہ ہدف پورا کر سکے۔ اسے بلیک میل کر سکے، اس کے ڈرنے واضح کر دیا تھا کہ وہ آسان ہدف ثابت ہوگی اور وہ عرشان کا نام لے کر اسے بلیک میل کرتا رہے گا۔ بہت لڑائی کے بعد کال ریسیو ہو گئی تھی۔ وہ خوش ہو کر بکواس کر گیا تھا۔ مگر جواب میں جو آواز سنائی دی وہ اسے بالکل Expect نہیں کر رہا تھا۔

یہ تو انسانی الٹا رنگ گیا تھا۔ کہاں وہ اسے ڈرا دھک کا مطلب پورا کرنا چاہ رہا تھا۔ الٹا عرشان ولی نے اسے کھلا وار تنگ دے دی تھی۔ اس سے پہلے کہ وہ یہ سوچتا کہ آنسو نے خود عرشان ولی کو آگے کیا ہے۔ چھوٹے سپینے

فرہاد صاحب کے تیز لہجے میں کیے گئے سوال پر شاہ میر اور حمی نے ایک نظر ایک دوسرے کو دیکھا تھا۔ ماہ پارہ بھی چونک گئیں۔ ساتھ ہی عجیب نظروں سے حمی کو دیکھنے لگیں کہ کہیں اس نے بھانڈا اچھوڑ تو نہیں دیا۔ فرہاد صاحب حتیٰ سے استفسار کر رہے تھے اور وہ کمزور لہجے میں واضحہ سے ملی معلومات دے رہی تھیں۔

”نگلی بارا گمیری بیوی کی کردار کشی ہوئی تو وہ ہمارا اس گھر میں آخری دن ہوگا۔“ عثمان ولی اٹل لہجے میں کہتے اٹھ کھڑا ہوا تھا اور دیوار سے لگ کر سب سستی آنسو مزید دیوار سے چپک گئی۔

☆.....☆

کاشان جیسے گیدڑ جب اپنی موت کے لیے شہر کی طرف بھاگتے ہیں اور وہاں بھی انہیں منہ بھر کھانے کی پڑتی ہے تو وہ بے طرح تھلا تے ہیں۔ وہ بھی تھلا رہا تھا۔ اسے لگا تھا اور ہارہ جانے والا مفاد و سمیت وصول کرنے کا موقع مل گیا لیکن وہ بھول گیا تھا کہ جس لڑکی کو کمزور سمجھ کر کل دونوں بہن بھائی اس کو ذلیل کر چکے تھے آج وہ معتبر حوالہ لے لے اس کے سامنے اٹھ رہی ہوئی تھی۔ مسلسل کالی ہمسجز کر کے وہ اسے ڈرا رہا تھا۔ دھمکا کر مطلب پورا کرنا چاہتا تھا مگر خلاف توقع عثمان ولی کی آواز اور اسے مخاطب کر کے اس نے جس طرح اوپن وارنگ دی تھی اس پر وہ بنا کچھ کہے ڈرے کالی کاٹ چکا تھا اور پھر دوبارہ آنسو کے نمبر کو ڈال کرنے کی اس میں ہمت نہیں ہوئی تھی اور اب کافی دیر سے تھلا کر حقیقت وہ اپنی بزدلی کا بھرم رکھ رہا تھا۔

”کیا ہوا بڑے غصے میں لگ رہے ہو۔“

اوپنی چیز پر ناپ پسینے کلائی میں پرس لگائے زویا میل کی ٹک ٹک کرتے اپنے کمرے سے برآمد ہوئی تھی۔ وہ باہر جا رہی تھی۔ کاشان کو لاؤنچ میں ٹائپس میسر پر پھیلا کے بیٹھے دیکھ کر ایک ٹائپے کو روک گئی۔ اسے بھی کسی جذباتی سہارے کی ضرورت تھی۔ اس نے عثمان ولی کی کال والا واقعہ گوش گزار کر دیا۔ زویا کا منہ بھی کھلا کھلا رہ گیا۔

”کالا جادو کروایا ہوا ہے ناگن نے، کہاں داغ دار چیزوں کو زندگی سے نکال پھینکنے والا عثمان ولی بیوی کی بد سرداری ثابت ہونے پر اس کا دفاع کر رہا ہے ویری اسٹین!“ زویا ناگواری سے لفظ چبچا کر بولی۔

”جس طرح اس نے مجھے دھمکی دی ہے، دیکھنا میں کیسے دن میں اسے تارے دکھاتا ہوں، تم کہہ رہی تھیں نا کہ بیوی اس کی کمزوری ہے، اب سے ہم اسے اسی کے ہاتھوں ذلیل کریں گے۔ ہر جگہ آنسو کو بدنام کروں گا۔ بیو تصویریں، ویڈیو ہوسٹل میڈیا پر اپلوڈ کروں گا، پھر دیکھنا کیسے تڑپے گا عثمان ولی، ساری شہرت، ٹیک نامی مٹی میں ملا کر بڑا سلقوں میں اس کا دیوالیہ نہ نکال دیا تو میرا نام بھی کاشان نہیں۔ خود اذیتی میں ڈال کر اتنا عاجز مردوں گا کہ بیوی سے نفرت کرنے لگے گا۔ طلاق دے دے گا۔“ کاشان اپنے مکروہ عزائم، مکروہ دماغ میں پائپ کر کے عالم تصور میں عثمان ولی کا ممکن رد عمل دیکھ رہا تھا۔

”بالکل کرو، میں تمہارے ساتھ ہوں۔“ زویا نے مکمل تعاون کی یقین دہانی کروائی تب ہی کاشان کا سیل فون بجنے لگا۔

”مسٹر کاشان! میں آپ کے ایریے کا ایس پی شہیر بول رہا ہوں، مسٹر عثمان نے آپ کے خلاف کمپلین راج کرائی ہے کہ آپ ان کی اہلیہ کو کاؤنٹینر کر کے ڈرا دھکا رہے ہیں۔ عثمان ولی کی کمپلین پر ہم نے آپ کا نمبر ن پنا ایل سی میں ڈال دیا ہے۔ آپ کے نمبر کی مانیٹرنگ ہو رہی ہے۔ مسٹر عثمان کو کسی بھی قسم کا کوئی نقصان پہنچا تو عثمان ولی نے اس کا ذمہ دار آپ کو نامزد کیا ہے۔ آپ کل تک اگر اپنے اوپر لگے الزامات کے جوابات دے

عثمان ولی کے مضبوط لفظ جہاں سب کو نا سمجھی سے سمجھنے پر مجبور کر رہے تھے، وہیں آنسو کی آنکھیں چھلکنے لگی تھیں۔ خود کو متاثر کرنے اپنی نا سمجھی میں ہی توجہ دینا تھا اور وہ ہر ایک سے اس کا دفاع کر رہا تھا۔

”بات کیا ہے؟ ماہ پارہ تم دومنٹ چپ رہو گی۔“ فرہاد صاحب کو ماہ پارہ کی کٹر کٹر چلتی زبان کا اچھے سے احساس تھا۔ تب ہی عثمان ولی سے استفسار کرتے ماہ پارہ کو چپ رہنے کا ٹکہ گئے۔ شاہ میر اور حمی خاموشی سے سب سمجھنے کی کوشش کر رہے تھے۔ ڈانٹنگ ایریا سے فاصلے پر موجود ملازموں کو عثمان ولی نے اشارے سے آگے پیچھے ہونے کو کہا تو وہ سب ڈانٹنگ ایریا سے باہر نکل گئے۔

”تم اپنے کمرے میں جاؤ، روم میں کھانا بھجواتا ہوں۔“

اس کی روٹی شکل کو دیکھتے وہ دھیرے سے اس کی طرف رخ کرتے بولی گیا۔ آنسو اپنی پوزیشن بہت آگے رکھ کر رہی تھی۔ ایسے میں جب عثمان ولی نے کمرے میں جانے کو کہا تو لگاؤ نفس سے رہائی ہی ہو۔ اس نے اٹھنے میں ذرا بھی تعامل نہ کیا اور تیز قدموں سے ڈانٹنگ ہال سے نکلنے لگی۔ ماہ پارہ نے اس پر ایک سلیکٹی نگال ڈالی تھی۔

”میری بیوی کی سچ کھرانے سے نہیں ہے مام کہ آپ ملازموں کا احساس کیے بنا اسے ذلیل کرنے اٹھ کھڑی ہوں، میں بھول گیا تھا زویا اور کاشان جیسے ناسوروں کو جنم دینے والی واصلہ آئی آپ کے دماغ سے کھیل گئی ہوں گی۔ غیروں سے کسی شادی بات پر یقین کرنے سے پہلے آپ کو مجھ سے کنفرم کرنا چاہیے تھا نا کہ علی الاعلان میری بیوی کو ذلیل کرنا آپ کو زیب دیتا ہے؟

جانتا ہوں، بھولا ہرگز نہیں وہ میری شہ پر اس گھر کا حصہ بنی ہے۔ آپ نے آج تک اسے قبول نہیں کیا لیکن اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ میں اپنی بیوی کو امتحان میں ڈالوں، اسے بہت محبت اور عزت سے اپنایا ہے اور اس کی عزت مجھ سے جڑے ہر فرد پر فرض ہے۔ اپنی بیوی کی بے عزتی کا حق میں کسی کو نہیں دوں گا۔ اگلی بار آنسو کے لیے ایک بھی گرا ہوا لفظ بولنے سے پہلے سوچ بیٹھے گا کہ آپ اسے نہیں سمجھ گالی دے رہی ہیں۔“ عثمان ولی کے دھوکے اور بے لگ و بنگ انداز پر ماہ پارہ سلگ گئیں۔

”مجھے کھل کے بتاؤ عثمان، بات کیا ہے؟“ فرہاد صاحب کے چہرے پر سنجیدگی آ گئی۔

”ڈیڈ! کاشان کی ریپوسے ہر بندہ واقف ہے۔ آنسو، زویا کی کان فیلورہ چکی ہے۔ جب سے ان سب کو خبر ہوئی ہے آنسو میری بیوی ہے واصلہ آئی اور ان کے بچے شکر رائے جانے کے کم میں پائیں میری بیوی کی کردار کشی کر رہے ہیں، ان سے تو میں نمٹ لوں گا لیکن مام کو مجھ پر اپنی بہو نہیں، ان مدار یوں پر بھروسہ ہے جو متاثر کرنے میں اپنا ثانی نہیں رکھتے، جس زویا کو بہو بنانے کے آپ خواب دیکھتی رہیں جا کر اس کی تصویریں میگزینز میں دیکھئے۔ آپ کو با کردار اور بد کردار کا مفہوم سمجھ میں آجائے گا۔ جوڑ کی دن رات دوسرے میں ڈوبی رہتی ہے، انکسشن کے کیف میں مسرور رہتی ہے، اسے رینجکٹ کر کے آنسو سے میری شادی کو آپ آج تک قبول نہ کر سکیں تو مجھے بتا دیں مام! میں اپنی بیوی کو لے کر آپ کے گھر سے دور چلا جاتا ہوں۔ پھر آپ بھلے شوق سے زویا کو اس گھر میں لے آئیے گا۔“

فرہاد صاحب کو جواب دے کر وہ آخر میں ماہ پارہ کی طرف متوجہ ہوا تو اس کی بات کے اختتام پر فرہاد صاحب کی نظریں جھکی ہوئیں۔

”میں بہوؤں سے کیا مسئلہ ہے ماہ پارہ کہ ہر بیٹا اپنی بیوی کی خوشی اور عزت کے لیے اس گھر کو چھوڑنے کو تیار ہے۔“

گرد کو نہیں چھو سکتا۔ اب تو مجھے تھانے جا کر معافی مانگ کر اپنی جان بخشی کروانی ہے۔ دیکھو کب تک انڈر آئز روئیں رہتا ہوں۔ یہ تو گلے میں بڑی بن کر بھنس گئی ہے۔“
 کاشان حیدر جلا بیٹھا تھا۔ زویا ناگواری سے منہ بنا کر رہ گئی۔
 ”عرشان ولی کو راستے سے ہٹا دیتے ہیں، نارہے گا بائیں نہ بچے گی بانسری۔“ زویا معنی خیزی سے اس کی طرف دیکھ رہی تھی۔ کاشان اچھل پڑا۔
 ”ایک دو ٹکے لڑکی کے لیے ہم قاتل بن کر جیل چلے جائیں؟“
 ”تو ہم کون سا کام خود کریں گے۔ مجھے بس انتقام لینا ہے، بھلے وہ عرشان ولی کی موت سے ہی کیوں نہ پورا ہو۔“ زویا کا لہجہ اٹھ گیا تھا۔

☆.....☆

”مجھے تو کچھ سمجھ نہیں آ رہا، معاملہ کیا ہے، سچ کیا ہے؟“
 شاہ میر گزشتہ واقعے کو لے کر کچھ پریشان تھا۔ گھر کے ماحول میں ایک تناؤ کی کیفیت در آئی تھی۔ ماہ پارہ اور فرہاد صاحب کی خاموشی تو میں میں ہوتی تھی۔ آنسو کرکرائیں ہو گئی تھی تو عرشان ولی بھی کچھ ڈسٹرب محسوس ہو رہا تھا۔
 ”جھوٹے لوگ ہیں۔ اب ہاتھ مڑتی رہی ہے، عرشان سے شادی کے لیے۔ اب کلاس فیلو عرشان کی مسز کے روپ میں دیکھ کر حسد میں کر رہی ہو گی۔ کاشان تو..... اللہ معاف کرے، وہ تو مجھے خود آئنیوں کے ساتھ کئی بار مختلف ہوٹل میں نظر آیا ہے۔ عیاش انسان ہے۔“
 ”عرشان پاگل تھوڑی ہے جو اپنی بیوی کی سائنس لے رہا، آنسو رچی ہے، تب ہی تو عرشان اس کے لیے لڑ رہا ہے۔ گھر چھوڑنے تک کی بات کر گیا اور ایک تم ہو گئے۔ کاشان نے کہا اور تم الٹا مجھ سے لڑتے رہے۔“ آنسو اور عرشان کا دفاع کرتے ہوئے اس نے اپنے مسئلے پر آکر تنہا ہو گئی۔
 ”عرشان کا مسئلہ تو واضح ہے۔ ماما کو آنسو سے براہم ہے۔ وہ زویا کو لانا چاہتی تھیں۔ تم جب تک مجھے اپنا مسئلہ نہیں بتاؤ گی میں کیسے کوئی اسٹیپ لوں گا۔“ شاہ میر نے سمجھانا چاہا۔
 ”میں سمجھ رہا تھا جو نہیں کہ اگر میں کوئی ڈیمانڈ کر رہی ہوں تو اس کے پیچھے ضرور کوئی وجوہات ہوں گی۔“
 ”تجسسے چوتھوں سے گھورتے لگی۔“
 ”تمہیں بتانے میں کیا حرج ہے؟“ شاہ میر نے جرح کی۔
 ”اعتبار دلاؤ کہ سچ سننے کے بعد میرا یقین کرو گے مجھے جھٹلاؤ گے نہیں۔“
 حمی نے پرکھنا چاہا۔ شاہ میر کے چہرے پر تردد کی لکیریں واضح ہونے لگیں۔ حمی کو جیسے اپنے سوال کا جواب مل گیا۔
 ”رہنے دیں، مسٹر شاہ میر! یہ روگ آپ کے بس کا نہیں۔“ حمی تنہی سے کہہ کر کمرے سے نکل گئی تھی۔ یہ بھی ایسا وقتی فرار تھا۔ درختوں پھر دونوں کی لڑائی شروع ہو جاتی تھی۔

☆.....☆

مزاج یار جو برہم ذرا سا لگتا ہے
 تو سارا شہر ہی مجھ کو خفا سا لگتا ہے

جائیں، بالفرض ہماری پولیس پارٹی کو آپ کے گھر سے آپ کو اٹھانا پڑے گا۔“
 کال ریسیو کرنے پر جو کچھ اس نے سماعت فرمایا اس کے رہے ہے اوسان بھی خطا کر گیا۔ اس نے اسپیکر آن کر دیا تھا اور ایس بی شہیر کی گفتگو سنتی زویا بھی دنگ رہ گئی۔
 ”یہ بے بنیاد الزام ہے۔ میں نے کسی کو کال، میسجز نہیں کیے۔“ وہ جھٹلا گیا۔
 ”سچ، جھوٹ کا پتا لگانے کے لیے ہم آپ کی خدمت میں بیٹھے ہیں نا، آپ زحمت نہ کریں، سچ جاننے کے لیے ہم مسز عرشان کا کال ریکارڈ بھی نکھولیں گے، تب دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی ہو جائے گا کہ آپ کتنے سچ ہیں، آپ بس آکر اپنے درشن کرنا چاہیے اگر غلطی کی ہے تو معافی مانگ کر آئندہ کے لیے توبہ کر لیجیے اس حرکت سے جس میں آپ کا نمبر دن رات لگا ہوا ہے۔“ مختلف لڑکیوں، آئنیوں سے میری مایہ عرشان ولی کی زندگی سے دور رہیے ورنہ کسی کو تنگ کرنا تو دور آپ فلرٹ کے لائق بھی نہیں رہیں گے۔ آپ کا سارا کچا چھاپڑا ہے میرے آگے۔“

ایس بی شہیر کے استہزاء ایہ انداز میں چھپی دھمکی سے کاشان کے چہرے پر پینڈ آ گیا۔ وہ اتنے مربوط انداز میں سارا کچھ یاد کر دیا تھا کہ اس کے پاس اپنی صفائی میں کہنے کے لیے کچھ نہیں بچا تھا۔ کاشان ایس بی شہیر کو بہت اچھی طرح جانتا تھا۔ سخت گیر، اصولوں کا پکا ایس بی شہیر، عرشان ولی کا بہت اچھا دوست تھا۔ یقیناً عرشان ولی نے اس کے خلاف سارے نمائندے کر اس کا سارا کچا چھاپڑا دیا تھا۔ آنسو کا کال ریکارڈ نکھو کر مزید اس کی گردن پر گرفت تنگ کر سکتا تھا۔ مسز شہیر ہی آئز روئیں میں ڈال چکا تھا۔
 ”جی میں حاضر ہوتا ہوں، میں ہوا تو آج ہی.....“ کاشان نے سوکھا گلہ کرتے ہوئے کل کی بجائے آج کی ہی حامی بھری تاکہ یہ پھندہ تو گلے سے نہ پڑے۔
 ”دیش لائک آگڈ ہوائے، اچھی بات سے لڑا۔“ کاشان کی بات سمجھ آ گئی۔ انتظار رہے گا پھر آپ کا۔“
 ایس بی شہیر اس کی گھبراہٹ سے رنج کے کھیل رہا تھا۔ کاشان نے مردہ ہاتھوں سے کال کاٹ دی۔ وہ ڈر گیا تھا۔ وہ برا بھلا تھا۔ اپنے جاننے والوں سے بھی جوڑو ٹوٹنے کے لیے کال کرتا تو سارے مہرے اسی کے پٹے ہوتے تھے اور وہ چاروں خانے چت ہو چکا تھا۔

”کتنا شاطر ہے۔ یہ عرشان ولی اسے ہمارے ارادوں کی پہلے ہی بجٹ کر چکی تھی جسے جو حفظ ما تقدم کے طور پر پہلے ہی کمپلین کر دی۔ جو بھی کرنا سوچ سمجھ کے کرنا یہ نہ ہو کل کو پچی ایف آئی آر درج کروا دے۔“ زویا چلبلیا گئی۔
 ”کچھ کرنے سے پہلے ہی اس نے مجھے نو میٹ کر دیا ہے اب خاک کچھ کر سکتے ہیں لیکن کی عزیز بیوی کے خلاف، اب تو دعا کرو کہ اس کی بیوی کو کبھی کچھ نہ ہو، ورنہ مجھے ہی پھانسی پر لٹکانے کا۔“
 کاشان کے غبارے سے ہوا نکل گئی تھی۔ درحقیقت اسے عرشان ولی سے اتنی تیز رفتاری کی امید نہ تھی۔ آنا نانا اس کے ہاتھ پاؤں جکڑ کر عرشان ولی نے اس پر پھرے بٹھا دیے تھے کہ وہ جو کچھ دیر کل آنسو کے لیے برا کرے گی سوچ رہا تھا اب اس کی سلامتی کے لیے دعا کرنے پر مجبور کر دیا گیا تھا۔

اس کا بدنام ریکارڈ ان کے ہتھے لگا ہوا تھا، جہاں اس نے جانے کتنوں کو تنگ کر کے بلیک میل کر کے لڑکیوں کو مجبوری سے فائدہ اٹھا کر اپنا وقت رنگین کیا تھا اور اب اس کی پکڑ ہو گئی تھی۔ آنسو پر بری نیت رکھنے کی اسے کڑی سزا مل گئی تھی۔

”اب.....؟“ زویا جانتا جاہتی تھی کہ اب کیا کرنا ہے۔
 ”اب باقی کیا بچا ہے؟ آنسو کا برا کرنے کا خیال دل سے نکال دو۔ عرشان ولی جب تک زندہ ہے کوئی اس

اداسی ذہن پہ چھائی ہے ایسی اس کے بعد
کے محفلوں کا مزا کر کر سا لگتا ہے
وہ بے وفا ہے مگر پھر بھی جانے کیوں
کوئی جھگڑ کرے اس کا برا سا لگتا ہے
کچھ اس لیے بھی میں یاد اس پہ مرتا ہوں
وہ سارے شہر سے مجھ کو جدا سا لگتا ہے

”تم تیار نہیں ہوئیں؟“

ماہ بارہ سے ہوئی مذہبیٹر کے بعد وہ گھر سے باہر چلا گیا تھا۔ کافی دیر بعد لوٹا تو وہ اچھی طرح ردھو کر فارغ ہو چکی تھی لیکن سر منہ نہوڑائے بیڈ سے ٹیک لگائے بیٹھی تھی۔ روم میں داخل ہو کر عرشان ولی کی سب سے پہلی نظر اس کے آجائو جلیے پر پڑی تھی۔ اس کی آہٹ یا کردہ سیدی ہو گئی تھی۔ استفسار پر غائب و غایبی سے اس کی اور دیکھنے لگی۔ جیسے مفہوم سمجھنے کی کوشش کر رہی ہو اور کوشش کے باوجود اسے کچھ یاد نہیں آ رہا ہو۔
”ولید کے گھر پارلی ہے ہمیں وہاں جانا تھا۔“ وہ جان گیا کہ اس کے ذہن سے سب محو ہو چکا ہے۔ تب ہی رسائی سے دہرا گیا۔ وہ بھی چونک کے سیدی ہو گئی۔ دو روز پہلے اس نے بتایا تھا لیکن اتنا سب کچھ اچانک وقوع پذیر ہو چکا تھا کہ سوچ عام ذکر سے ہٹ کر اٹ گیا ہو گا کہ خوفناک سوال پر انگ ٹھکی تھی۔
”اگر مشکل ہے تو رہنے دو۔ میں کال کر کے ولید سے ایسکویو ذکر لیتا ہوں۔“
اس کی ذہنی حالت اور موڈ کے پیش نظر ہاتھ آتے ہوئے اس نے سر ہلاتی الجھے بال دونوں ہاتھوں سے سینے لگی۔
”نہیں میں چلوں گی۔“ یہ فیصلہ بھی اس نے آٹا ٹاٹا کر لیا تھا کہ اس کے لیے ہند، ایک ہی جگہ پر سوچ سوچ کر لگ گیا۔
تھا اس کا دماغ پھٹ جائے گا۔ اسی اثر کو زائل کرنے کے لیے وہ جانے کے لیے تیار ہو گئی۔
”اوکے۔“

عرشان ولی آگے بڑھ کر وارڈروب کھول کر اپنے کپڑوں کی سلیکشن کرنے لگا اور پہلا سوٹ ہاتھ آتے ہی کھینچ نکالا۔ شاید ایسا آج پہلی بار ہوا تھا۔ کپڑوں کی سلیکشن میں وہ ٹائم لیتا تھا۔ آنسو رے پوچھتا تھا وہ کیا ہو رہی ہے بلکہ اکثر تو اس کے کپڑے خود ہی منتخب کر کے اپنے لیے میچنگ ٹائی یا شرٹ کا انتخاب کر جاتا تھا لیکن آج.....!! اجنبیوں کی طرح بے دلی سے کپڑے نکال کر وہ جس طرح رنجیکٹ روم میں بند ہو چکا تھا آنسو کا دل بھی بند ہونے لگا۔ وہ بظاہر ناراض نہیں تھا۔ اس سے غافل نہیں تھا۔ اس کے خلاف ایک بھی بات برداشت نہیں کر رہا تھا۔ ہر محاذ پر اس کا دفاع کر رہا تھا لیکن ایک کلیشیر دونوں کے بیچ جا رہی تھی۔ عرشان ولی کی بے ساختگی، دیوانگی، محبت لٹاتی نظریں جیسے کہیں کھو گئیں تھیں۔ وہ اس پر نظر تو ڈال رہا تھا لیکن اس نظر میں وہ وارنٹی مفقود تھی جن کی وہ عادی ہو چکی تھی۔
وہ جنوں کہیں منہ سر لپیٹ پڑا تھا جس کے تیز دھاروں میں وہ شرابور رہتی تھی۔ ایک ٹھہراؤ تھا۔ ساکت جھیل کی طرح اور آنسو کا دل اس ٹھہراؤ سے گھٹنے لگا تھا جس، ٹھن کی فضا سے سانس لینا مشکل لگ رہا تھا۔ اس سے تو کہیں بہتر تھا وہ بک جھپ کر دل کی بھڑاس نکال لیتا تاکہ وہ بھی پرسکون ہو جاتی، یوں خاموشی سے دیمک لگی دیوار بن کر کھوٹکی نہ ہوتی جاتی۔
وہ ناراض تھا، تنہا تھا وہ اسے منالینے کا عزم لیے اٹھی تھی۔ سوچ اسی بیچ تھی تب ہی اس نے بے حد حسین ریٹز ساڈھی نکالی تھی۔ لائٹ سا میک اپ کر کے ریٹلپ اسٹک سے ہونٹوں کو رنگ کر، ہنر کڑ بالوں کو سلیقے سے سنوا

کر بائیں شولڈر پر سیٹ کر کے اپنا تنقیدی جائزہ لیتے رنجیکٹ روم کے بند دروازے کو بے بسی سے دیکھا تھا۔
رنجیکٹ روم میں بند وہ تیار ہونے میں دانت دیر لگا رہا تھا تاکہ وہ تیار ہو جائے اور اسے انتظار کی کوفت کا سامنا نہ کرنا پڑے۔ ایسا پہلے تو نہیں ہوا تھا۔ وہ خود آگے بڑھ کر ایئر رنگ کانوں میں ڈال کر اسٹاپر لگا دیا کرتا تھا۔ چوڑیاں کلائی میں اٹکنے لگتیں تو کلائی تھام کر نرمی سے چوڑیاں پہنانے لگتا تھا۔ ریٹنگوں سے مزین کڑے کلائی میں ڈالتے اس کا دل کریدنے لگتا تھا۔ مسکارا سے بچی قاتل آنکھیں پانی سے بھرنے لگی تھیں۔ اسی لمحے کھٹ کی آواز کے ساتھ دروازہ وا ہوا تھا۔ بلیک سوئنگ میں عرشان ولی دروازے پر کھڑا غالباً اس کی تیاری کے مراحل کا جائزہ لے رہا تھا۔

بائیں کان میں ایئر رنگ ڈالتی، بائیں طرف کو قدرے جھکی آنسو کی نظریں بے ساختہ اس کی طرف اٹھی تھیں۔ عرشان ولی کی نظریں اس پر جمی ہوئی تھیں۔
سولہ گھار کے قاتل آنکھوں میں تیرتا پانی اسے تھیر سے دیکھ رہا تھا۔ وہ مبہوت رہ گیا تھا۔ کوئی اور وقت ہوتا تو اتنا حسین لگنے پر وہ قہقہے جملے بول کر دانتو ضرور دیتا، لمحوں کی قید سے دامن چھڑاتے نظریں پھیر کر ہنا کچھ کہے وہ وارڈروب کی طرف بڑھا تھا اس لائق کے عظیم مظاہرے پر آنسو نے ڈبڈبائی آنکھوں سے اس کی پشت کو بغور دیکھا تھا۔

بلیک سوئنگ میں وہ بلا کا پینٹنگ لگا رہا تھا۔ گوکہ چہرے پر ایک سوز کی کیفیت تھی۔ سچائی کا دھچکا بہت پر زور تھا۔ یاسیت کے رنگ کے باوجود اس کی ساحرہ شخصیت میں کوئی تبدیلی نہیں آئی تھی۔ اس پر ہر روپ بجاتا تھا۔ لب دانتوں تلے دبا کر شرارت سے مسکارا ہونے کی آواز اس کے خوب صورت قہقہے کو دہراتے لگی تھی۔
آنسو اس کی پشت پر نظریں جمائے کھڑی اسٹاپر لگا رہی تھی اور وہ ذہنی خلفشار کے باعث رومال اور ٹائی کی سلیکشن نہیں کر رہا تھا۔ تب ہی جھنجھلاہٹ کا مظاہرہ کرنا ایک کے بعد دوسرے کے بعد تیسرا پٹ کھولے جا رہا تھا مگر غیر مطمئن تھا۔

اس کی آنکھوں کو محسوس کرتے جانے وہ کس جذبے کے زیر اثر آئے ہوئی تھی اور یہ ٹائی نکال کر پٹ بند کرتی اس کے شانے پر دباؤ ڈال کر اس کا رخ اپنی طرف کرنے پر مجبور کر گئی۔
وہ شاید اس غیر متوقع انداز کے لیے تیار نہیں تھا۔ تب ہی شانے پر پڑتے دباؤ کے باعث پورائیں کی سمت گھوم گیا۔ کمال جرات سے اس کے کار کے گرد ٹائی کا پھیرا ڈال کر وہ ناٹ بنانے لگی۔ دونوں کے چہرے چند فٹ کے فاصلے پر تھے۔ وہ خاموشی سے اپنا کام کر رہی تھی۔ تو وہ مہربان لب اس کے نفوش پر نظریں جمائے کھڑا تھا۔ انگلیوں میں کرڈش کے باعث ناٹ نہیں بن رہی تھی۔ یا وہ دانستہ دیر کر رہی تھی۔ عرشان ولی نے کوئی مزاحمت نہیں کی تھی جھپک کر اس کے ہاتھ ہٹائے۔

وہ منتظر ہی رہی کہ جانا پچاناس اس کے وجود کے گرد گھیرا تنگ کر جائے مگر خوش گمانی، خواہش غبی چلی گئی۔
عرشان ولی لب جھینے اس کے استحقاق سے بھرے عمل کو انجام دیتے دیکھتا رہا۔
ناٹ باندھ کر نظر اس پر جمائی تو وہ اس کے سامنے سے ہٹ کر ڈرینک مر کے آگے جا کھڑا ہوا۔ اس کی لائق اور اجنبیت بھرے انداز کے سنائے کو آنسو نے دگرگتی سے محسوس کیا۔ کمرے میں دونوں تھے لیکن لب دونوں کے سنے ہوئے تھے۔ کسی کی زبان دکھ اور ٹوٹے مان نے جھین لی تھی تو کسی کی احساس ندامت نے دونوں ہی اپنی اپنی جگہ ضبط کر رہے تھے۔ وقت کی کڑواہٹ کو گھونٹ گھونٹ حلق سے اترتا محسوس کر رہے تھے مگر آہ و فغاں

”میں حاضر ہوں! بولو کیا ہوا؟ کیا بات ہے؟ شاباش۔“ اپنائیت کے احساس کے ساتھ اس کا حوصلہ بڑھانے لگا۔

”کیا ہوا؟ سب ٹھیک ہے نا گھر میں اماں ابا؟“

آنسوؤں کو فکر لاحق ہو گئی۔ عثمان ولی نے رسانیٹ سے اٹیشرنگ سے ہاتھ اٹھا کر اسے چپ رہنے کا اشارہ کیا تھا۔ اس کی ساری توجہ آنے والی کال پر تھی۔ آنسو نے اپنے سیل فون کو دیکھا کہ شاید پہلے کال اس کے پاس آ کر مرس ہوئی ہو۔ مگر ناں..... اس کے نمبر پر کوئی کال نہیں آئی تھی۔ پھر ایسی کیا بات تھی کہ سونی نے اسے کال کرنے کی بجائے عثمان کو متنبہ کر دیا تھا۔

”عثمان بھائی کئی دنوں سے ایک لڑکا تنگ کر رہا ہے۔ ہمارے اپارٹمنٹ کا ہے۔ آتے جاتے نمبر مانگتا، تنگ کرتا تھا۔ مجھے سے سیل نمبر مانگتا رہا اور آج اس نے زبردستی میرے بیگ میں سیل فون رکھ دیا ہے۔ میں سیل فون بھین دیتی لیکن اس سے اسے لگے گا کہ میں نے رکھ لیا ہے۔ وہ بہت تنگ کرنے لگا ہے۔ اماں، ابا کو مارے ڈر کے نہیں بتایا کہ ٹینشن لیں گے اور میرا باہر جا کر بڑھنا بند کر وادیں گے۔ پلیز عثمان بھائی آپ اس سے میری جان چھڑوا دیں۔ سونی چپکتے ہوئے اپنا مسئلہ گویا گوارا کرتی جا رہی تھی اور عثمان ولی کی پیشانی کی لکیریں حتیٰ سے ابھرنے لگی تھیں۔ آنسو نے نظر سے اسے دیکھنے لگی۔ اسے بے چینی لگ گئی تھی۔

”ڈر نے کی بالکل ضرورت نہیں ہے تمہیں، اس کا نام اور سوئیٹ نمبر پتا ہے؟“ وہ بہت احتیاط سے لفظوں پر دھیان رکھ رہا تھا۔

”کس کا نام اور سوئیٹ نمبر؟“ ساری گفتگو سنی آنسو کے خاکے پہ نہ پڑا کچھ۔ وہ ہونق کی طرح اسے دیکھتی رہی۔ ایسی کیا بات ہوئی تھی کہ سنی بہن نے اسے نہیں بتایا تھا۔ عثمان ولی نے جیسے اس کا سوال سنا ہی نہیں۔ ”جی ہے اس نے جو سیل فون دیا ہے اس میں اس کی مٹی مٹی ہے۔“ سونی نے معلومات میں اضافہ کیا۔

”مجھے ساری چیزیں ابھی وائس اب کر دو، میں دیکھ لیتا ہوں۔“ وہ کچھ سوچنے لگا تھا۔

”بہتر! میں ابھی سینڈ کرتی ہوں عثمان بھائی پلیز اماں ابا کو خبر نہ دے۔“ سونی کو تنگ کرنے آیا۔

”تم کسی بات کی ٹینشن نہ لو۔ مجھے کہہ دیا اب بالکل ریلیکس ہو جاؤ میں ہینڈل کر لوں گا۔“

اس کے مان بھرے انداز پر سونی کا تردد دم ہوا تھا۔ وہ کال بند کر کے اسے معلومات اور دفعہ جی سینڈ کرنے لگی۔

”کیا بات ہے؟ بتا کیوں نہیں رہے؟ سونی نے آپ کو کال کر کے کیا کہا؟“

عثمان ولی وائس اب پر آنے والی معلومات دیکھ رہا تھا آنسو کو بے چینی لاحق ہوئی تو وہ بھی اسکرین پر جھانکنے لگی لیکن کچھ سمجھ نہ آیا۔

”سونی چل رہو ہو بیٹا! سمجھو تم نے اپنی پریشانی اپنے بھائی کو دے دی اب میں جانو اور میرا کام۔“

اس کے سوال کو نظر انداز کر کے عثمان ولی وائس اب سٹیج کرنے لگا تو آنسو نے بے چینی سے پہلو ہلنے لگی۔

”آپ کچھ بتائیں گے بھی یا میں گاڑی سے باہر چھلانگ لگا دوں؟“ اسے خاموشی سے یوٹرن لیتے دیکھ کر

دروازے پر ہاتھ رکھے وہ دھمکی دے گئی تو سیل فون ڈیش بورڈ پر رکھتے عثمان ولی نے تیز نظر اس پر ڈالی۔

”صبر کا مادہ نہیں ہے؟“

”کیا مسئلہ ہے سونی کے ساتھ؟“ سرزنش نظر انداز کر کے وہ سوال دہرا گئی۔

”کوئی لڑکا تنگ کر رہا ہے اس کی سپلین کر رہی تھی۔“ اس نے گفتگو کا لب لباب بتا دیا۔

”کون ہے، بات زیادہ تو نہیں بگڑی؟ ابا نے سنا تو جان سے مار دیں گے۔“ آنسو کو فکر لاحق ہو گئی۔

سے قاصر لب تھے۔

عرشان ولی کو مر کے آگے کف نکس لگا کر بیک رویکس کلائی میں باندھتے دیکھ کر وہ ریڈ سینڈل نکال کر پیروں کی زینت بنا کر فارغ ہوئی تو عرشان ولی پر فوم اسپرے کرتا نظر آیا۔ گلے میں ٹائی کی غیر موجودگی دیکھ کر آنسو کی نظروں نے بے چینی سے کمرے کا طواف کیا تھا۔ محبت و استحقاق سے بندھی ٹائی اسے بیڈ پر کھلی پڑی نظر آئی تھی۔ گلہ آمیز، دھکی نظریں بے ساختہ اس کی پشت پر اٹھ گئی تھیں۔ ریڈ آپٹیکل کوبائیں بازو پر سنبھالے۔ ہتی ٹکڑے بالوں کو بائیں شانے پر ریلیٹ سے جمائے آئینے میں اس کا عکس کسی سنگ مرمر سے تراشا ہوا حسین بت محسوس ہو رہا تھا۔ بس بت کی آنکھوں میں ہلکورے لیتا پانی اسے زندہ محسوس کرنے پر مجبور کر رہا تھا۔

”میں اب سے کبھی ٹائی نہیں باندھوں گا۔“ مر میں اس کے عکس کو نظر میں رکھتے عرشان ولی نے دھیرے لیکن سرد لہجے میں کہا تھا۔

”گاڑی میں وہ ڈٹ کر رہا ہوں۔“

کمرے سے نشتہ قریب سے اس کا جملہ نکرا تھا۔ تیز تیز قدموں سے اپنی خوشبو بکھیرتا اس کے قریب سے گزر گیا تھا۔ اور آنسو جو بڑی ہمت تنہا کر کے تیار ہوئی تھی ایک بار پھر بکھر گئی۔

☆.....☆

سونی از حد پریشان تھی۔ اس نظر روٹی سے اپنا مسئلہ نکس کیا تھا اور اسے بھی فکر لاحق ہو گئی تھی۔ دونوں کو اس مسئلے کا بظاہر کوئی حل نظر نہیں آ رہا تھا۔ سوائے اس کے کہ عرشان ولی سے رابطہ کیا جائے۔ سونی کا ارادہ پہلے آنسو سے مسئلہ زیر بحث لانے کا تھا مگر وہ خود نہ پریشان ہو جاوے۔ سوچ کر اس نے عرشان ولی سے براہ راست بات کرنے کی ٹھان لی۔

”عرشان بھائی سے بات کرو، وہ بہتر حل نکالیں گے۔ بھائیوں سے بڑھ کر ہیں وہ ہمارے لیے۔“ روٹی نے ہمت باندھی تو سونی اتفاق کرتی بے ساختہ عرشان ولی کا نمبر ملا گئی۔

وہ آن داوے تھا۔ آنسو فرنٹ سیٹ پر براجمان تھی۔ یہ سفر خاموشی سے ولید کی پارٹی کی طرف گاڑن تھا۔ عرشان ولی ڈرائیونگ سیٹ پر منتظر تھا۔ وہ آکر بیٹھ گئی تو اس نے خاموشی سے گاڑی کو اس سے پر ڈال دیا۔ دونوں ہی اپنی اپنی جگہ خاموش تھے۔ تب ہی عرشان ولی آنے والی کال کے لیے کان سے لگا بیٹو تھو آن کو لیا۔

”السلام علیکم! کیسے ہیں عرشان بھائی؟“ کال ریسیو ہوتے ہی سونی نے ٹھہرے ہوئے لہجے میں خیریت دریافت کی۔

”الحمد للہ! فائن گزیا! تم بتاؤ سب ٹھیک ہے گھر میں۔“ ڈرائیو کرتے وہ اپنائیت بھرے لہجے میں استفسار کر رہا تھا۔ ساتھ ہی ہٹھی آنسو راند انداز مخاطب پر چوکی گئی۔

”شکر ہے سب ٹھیک ہے عرشان بھائی! وہ.....!“ سونی جھجک کے چپ ہو گئی۔

”کیا بات ہے سونی! بولو بیٹا! رہا ہوں۔“ اس کے تردد کو دیکھ کر عرشان ولی نے لگاؤٹ ومان سے کہا تو سونی ہمت اکٹھی کرنے لگی۔ عجیب سی شرم، جھجک تھی۔

کیا کہے، کیسے کہے۔

آنسو کو پہلے ہی شک تھا کہ دوسری طرف اس کی بہن ہے، نام سن کر وہ فکر مند ہو گئی۔

”عرشان بھائی! I need your help!“ سونی رکے رکے لہجے میں کہہ رہی تھی۔

”اپنی باری میں بھی تھوڑا سا ڈرول میں رکھ لیتیں۔“ اس پر ایک خاموش نگاہ ڈال کر وہ بے ساختہ کہہ گیا۔
آنسو کو اس کا طنز چابک کی طرح لگا۔ وہ کئی ٹائپے تک کچھ بول نہ سکی۔ احساس ندامت کے رنگ چہرے پر
بکھر گئے۔ آنکھوں میں آنسو آنے لگے تو اس نے چہرہ کھڑکی کی طرف پھیر کر اپنے بے جان ہاتھوں کی انگلیوں کو
ایک دوسرے میں پیوست کر لیا۔ عرشان ولی نے مر سیٹ کرتے گردن گھما کر اسے دیکھا تھا۔
باہر نظر جمائے لاقعلقی سے بٹھی جانے وہ منظر دیکھ رہی تھی یا آنسو ضبط کر رہی تھی۔ وہ جان نہ سکا۔

☆.....☆

میں چاہنے والوں کو مخاطب نہیں کرتا
اور ترک تعلق کی وضاحت نہیں کرتا
میں اپنی جفاؤں پہ کبھی نادم نہیں ہوتا
اور اپنی وفاؤں کی تجارت نہیں کرتا
خوشبو کسی تشہیر کی محتاج نہیں ہوتی
سچا ہوں مگر اپنی وکالت نہیں کرتا
احساس کی سولی پہ لٹک جاتا ہوں اکثر
میں ہر مسلسل غم کی شکایت نہیں کرتا

☆.....☆

دونوں نکلے تو لید کی پارٹی میں جانے کے لیے پہلے سوئی کی کال نے ان کی گاڑی کا رخ تبدیل کر دیا تھا۔
گاڑی کا رخ میسکے کی طرف ہوتا دیکھ کر آنسو چہرے پر لپکتا تھا۔ وہ گھر کی بجائے اوپر کے فلور کا مین پریس کر گیا
تو وہ حیران ہوتی پھر بھی خاموش رہی۔ لفٹ سے نکل کر وہ مطلوبہ فلیٹ کے سامنے رک گیا تو آنسو کو بھی اس کی تقلید
کرنی پڑی۔

”باسط صاحب سے ملنا ہے۔“

کچھ معلومات سوئی سے لیں باقی کی وہ نیچے اکوآئری روم سے لیتا آیا تھا۔ پہلے چائے پر کم عمر بچہ دروازہ
کھولے آیا تو اس نے مدعا بیان کیا۔ بچہ سر ہلا کر جانے ہی لگا تھا جب اندر سے چالیس سالہ عورت برآمد ہوا۔
”جی میں ہی باسط ہوں، فرمائیے۔“ نووارد نے اپنا نام سن لیا تھا۔ تعارف کروا کر حیرت سے دونوں کو دیکھنے
لگا۔ ان کے ملبوسات چہرے، مہرے ظاہر کر رہے تھے کہ وہ کس کلاس سے تھے۔ اجنبی کی نظر دیکھتے آنسو عرشان
ولی کی اوٹ میں ہو گئی تھی۔

”سمیر کے سلسلے میں بات کرنا ہے آپ ان کے؟“ عرشان ولی نے استغماہ میری نظر جمادی۔

”سمیر کا والد ہوں، بات کیا ہے؟“ باسط نامی شخص کچھ متشکر نظر آنے لگا تھا۔

”وہ موجود ہے اس وقت گھر پر؟“ عرشان ولی نے مزید معلومات لینا چاہی۔

”جی گھر پر موجود ہے۔ بتائیں بات کیا ہے کیا کیا ہے اس نے.....“ باسط صاحب خاصے شریف انفسر
انسان لگ رہے تھے۔ جب ہی فکر مندی کا مظاہرہ کر گئے تھے۔ سمیر کی موجودگی کی بابت جان کر اسے تسلی ہوئی۔

”میں عرشان ولی ہوں اور یہ میری مسز ہیں۔ کیا مناسب ہے کہ اندر آ کر کرسی سے بات کر سوں؟“

یوں دہلیز پر کھڑے کھڑے بات تو ہونے سے رہی تھی۔ عرشان ولی نے سچاؤ سے تعارف کروایا تا کہ باسط

صاحب کا تردد کچھ تو کم ہوا اور وہی ہوا اس کے سلیقے سے کہے جملوں پر باسط صاحب ان دونوں کو اندر آنے کی
دعوت دے گئے۔ آنسو ڈی کی طرح اس کے سنگ چلتی اس کی حرکات و سکنات دیکھ رہی تھی۔

”تشریف رکھیں۔“ باسط صاحب نے عزت سے صوفے پر بٹھایا تو عرشان ولی نے سچاؤ سے گفتگو کا آغاز
کیا۔ وہ بولے جارہا تھا اور باسط صاحب کے چہرے کا رنگ بدلتا جا رہا تھا۔

”کسی بھی قسم کی آفیشل ایکشن سے پہلے میں نے ضروری سمجھا کہ بات آپ کے علم میں لائی جائے۔ میری
بہن بہت چھوٹی ہے، یقیناً آپ کا بیٹا بھی تاجھ ہوگا۔ لڑکے اس عمر میں اس طرح کی حرکتیں کرتے ہیں اور کر کے
بھول بھی جاتے ہیں لیکن داغ تو کیوں پر لگ جاتا ہے ساری زندگی کے لیے وہ معصوب ٹھہرائی جاتی ہیں لیکن میں
اپنی بہن کے لیے ایسا کچھ برداشت نہیں کروں گا۔“

عرشان ولی کے لبوں سے نکلا جملہ آنسو کو حسب حال لگا۔ ایک بل کو تو لگا وہ اسے ہی بطور خاص سناتے کو بول
گیا ہے لیکن جب اس نے پوری سچائی سے سوئی کے لیے آواز بلند کرتے سنا تو یہی لگنے لگا سوئی اس کی نہیں
عرشان ولی کی بہن ہے اور وہ اپنی بہن کو تنگ کرنے والوں کی گرفت کرنے کے ارادے سے آیا ہو۔

اجنبی ماحول، اجنبی لوگ جانے بچ جان کر کیساری ایکٹ کریں، آنسو کو عجیب سی گھبراہٹ نے آیا تھا۔ وہ
دوسرے کے گھر میں تھے جانے وہ کیسا سلوک کرتے اسے گھر کے فرد پر انگلی اٹھانے کو تنہا سیر لیتے۔ لیکن عرشان
ولی مطمئن تھا۔ اس کی کمزوری کی صورت آنسو اس کے ساتھ تھی لیکن وہ ہر ممکنہ بری صورت حال کے لیے تیار تھا۔ ابھی
تو اس نے عزت سے شکایت گوش گزار کی تھی۔ اگر وہ بد معاشی کرتے تو بد معاشی کا منہ تو جواب دینا اسے بھی آتا تھا
لیکن باسط صاحب حقیتاً شریف انسان تھے۔ میری کی حرکات کا احوال سن کر ان کا منہ سرخ ہونے لگا۔

”سچ فرما رہے ہو۔ آج کے بچے اگے نہیں ہیں۔ شفیق فرمانے لگتے ہیں۔ میں نے دیکھا ہے بچی کو، خاصی
شریف ہے اگر میرے بیٹے نے ایسی کوئی حرکت کی ہے تو میں اس کی خدمت کر کے اسے آپ کے سامنے بلاتا
ہوں۔“ باسط صاحب اگلے بل بیٹے کو آواز دے لگے تو ایک آنکھیں میں مسلا لڑکا ان کے سامنے آ کھڑا ہوا۔ سمیر
نے پہلے تو انہیں سرسری نظروں سے دیکھا لیکن جب باسط صاحب نے لفظوں میں سارا ماجرا سنا کر استفسار
کرنے لگے تو ایک بل کو اس کے کم عمر چہرے پر سرخی دوڑ گئی۔

”جی..... میں نے یہ حرکت کی ہے۔“ وہ جی داری سے قبول کر گیا تو صوفے سے ٹپک لگائے عرشان ولی
خاموشی سے اسے جانچنے لگا۔

”کیوں کی ایسی حرکت؟“ باسط صاحب غالباً ان دونوں کا لحاظ کر رہے تھے جو بیٹے سے دبے لیکن سخت لہجے
میں باز پرس کر رہے تھے۔

”مجھے اچھی لگتی ہے اگر ہاں کر دیتی تو میں آپ اور ماما سے بات کرنے والا تھا کہ اس کے گھر جا کر رشتہ مانگ
لیں لیکن یہ لوگ خود آگئے ہیں تو اور بھی اچھی بات ہے۔“ سمیر کی بے خوفی دیکھنے سے تعلق رکھتی تھی۔ باسط صاحب
کا منہ کھلا کھلا رہ گیا۔

آنسو بھی آنکھیں پھاڑے سب دیکھ رہی تھی۔ عرشان ولی گہرائی سے اسے پرکھ رہا تھا۔ سمیر کا رخ اب عرشان
کی طرف ہو گیا تھا۔

”سر! میرا مقصد آپ کی بہن کو تنگ کرنا نہیں تھا۔ وہ مجھے اچھی لگتی ہے۔ محبت کرنے لگا ہوں اور شادی کا
خواہش مند ہوں لیکن وہ مجھے سنجیدہ لینے کو تیار نہیں ہے۔“

”عمر دیکھی ہے اپنی؟“ اسے سچ میں ہی ٹوک کے باسط صاحب چلائے۔

”اس سال بیس کا ہو جاؤں گا پیا۔ رشتہ طے کرنے میں حرج ہی کیا ہے؟ کم عمری میں بھی شادی ہوتی ہے، حکم بھی ہے اور افضل بھی لیکن میں ابھی شادی کرنے کو نہیں کہہ رہا۔ ابھی صرف رشتہ طے کر دیں، بجائے اس کے کہ دس جگہ منہ ماروں کیا والدین مناسب عمر میں بچوں کو ایک جگہ نکس کر کے ان کے دھیان کو نہیں باندھ سکتے۔ شادی چند سال بعد کروں گا لیکن مفتگی یا نکاح ابھی تا کہ سونی کو کوئی اور نہ لے جائے۔“ وہ اتنی سچائی سے سب کہہ رہا تھا کہ سب متفق نظر آ رہے تھے وہیں باسط صاحب کے چہرے پر شش و پنج کی کیفیت تھی۔

”پیا! ابھی آپ ڈانٹیں گے، ماریں گے لیکن میں باز نہیں آؤں گا ممکن ہے باغی ہو کر کچھ التماسیہا کر لوں، سر آپ ہی سمجھائیں نا، میں کوئی غلط ڈیمانڈ نہیں کر رہا۔ میری حرکتیں غلط لگیں تب ہی آپ کی بہن نے آپ کو بھیجا نا، میرا مقصد اس وقت سچ ہو گا جب میری فیملی میرا ساتھ دے گی ورنہ سونی اور آپ لوگ مجھے لوفر ہی سمجھتے رہیں گے۔“ سمیر، باسط صاحب سے کہتے کہتے ثالث کے طور پر عریشان ولی کو گھسیٹ گیا تو اس کے لبوں پر بے ساختہ مسکراہٹ پھیل گئی۔

”کتنا سچ کہا تھا اس نے، والدین کی ابھی بچہ ہے کی رٹ بچے کو چھپ چھپاتے بڑی حرکتیں کرنے پر مجبور کر دیتی ہیں۔ اگر والدین مناسب عمر میں بچوں کو کی کھونٹے سے باندھ دیں تو وہ کم از کم ڈال ڈال منڈلانے سے تو بچ ہی سکتے ہیں۔ ان کا رونا، ہنسانا ایک سے بڑھ کر رہ جاتا ہے۔

”سرا یہاں آیا تو میں میری شکایت لے کر گیا لیکن بچہ برا نہیں، ہاں ہم اور آپ نے اس کے دل کی سنہنی تو ممکن ہے ایک اور بچہ کل کو برا کہلانے لگے۔“

عریشان ولی جیسے کسی نتیجے پر پہنچ گیا تھا۔ اسے سمیر کا وہ سب سے خوف انداز میں وہ سب کا وہ سب کہہ گیا تھا کوئی بے وقوف ہی نہ سمجھتا۔ باسط صاحب کو ملو کی کیفیت میں تھے۔ سمیر کے تشکر بھری نظر سے دیکھ رہا تھا۔

”مجھے سوچنے کا وقت دیں۔ میں سمیر کی والدہ سے بات کر کے مشورہ کرنا چاہوں، پھر آپ کو گاہ کر دوں گا۔“

باسط صاحب کو کچھ جیسے بات سمجھ آئی تھی تب ہی وہ نیم رضا مند لگ رہے تھے۔ عریشان ولی انہیں تفصیل گوش گزار کرنے لگا تھا۔ آنسو بھی مطمئن ہو گئی تھی۔ سونی کے لحاظ سے اسے سمیر بہت بھائی تھا اور اس کے بڑھ کر اس کی سچائی۔ سونی کی نسبت سے وہ بہت دلچسپی سے سمیر کو دیکھ رہی تھی۔

☆.....☆

”بولو بیٹا! تم کیوں گھر چھوڑ کر جانے کو تیار ہو۔“ فرہاد صاحب کے اسٹڈی میں جمنی اور شاہ میر موجود تھے۔ ادھر ادھر کی باتوں، عریشان اور آنسو سے متعلق واقعے کے بعد فرہاد صاحب جمنی سے استفسار کرنے لگے تو کئی ٹاپیے کو وہ چہرہ لگی۔ شاہ میر بھی منتظر تھا۔ اس کے لاکھ اصرار پر اس نے کچھ بھی نہیں بتایا تھا۔ دونوں کی نظریں جمنی پر تھیں۔ بالآخر اس نے کہنے کی ٹھان لی چپ رہتی تو جھوٹی کہلاتی۔

”نام کے لاکھ انور اور ناپسندیدگی کے باوجود میں اس گھر میں رہتی رہی وجہ آپ سب کی محبت اور مان ہے لیکن مجھے اندازہ نہیں تھا کہ ماں مجھ سے نفرت میں انتہا پر چلی جائیں گی کہ.....“ جمنی کی آواز ڈوب گئی تھی۔

”ہم سب کو تمہاری اعلیٰ ظرفی کی قدر ہے بیٹا، گو شایاں۔“ فرہاد صاحب نے بچوں کی طرح بہلایا تو آنسوؤں کے سچ وہ سب کہہ گئی۔ کسی طرح نوری اور اس سے چھٹی ملازمہ کو اس پر ظلم کے لیے مسلط کیا گیا تھا۔

”میں کچن میں بھی جاتی ہی نہیں تھی، وہ تو آنسو کے آنے کے بعد سے سب کھلا۔ اسی نے مجھے بتایا تو مجھے بھی

کڑی ملنے لگی۔ ہم دونوں ڈاکٹر کے پاس گئے اور انہوں نے کنفرم کیا کہ نسل کشی کی دوا ہے۔ میں نے نوری سے اگلا ناچا ہاتو ماں نے خود ہم دونوں کے سامنے ٹیکسٹ کر لیا کہ انہیں مجھ سے اپنی نسل کے لیے کالے پیلے بچے نہیں چاہیے۔

جمنی کا ضبط جواب دے گیا تھا۔ فرہاد صاحب اور شاہ میر کی ٹاپیے بے یقینی سے ایک دوسرے کو اور کبھی جمنی کے لائے میڈیسن پاکس کو دیکھ رہے تھے۔ بے یقینی ہی تھی۔ وہ سالوں سے جمنی کو جانتے تھے۔ وہ جھوٹی نہیں تھی نہ ہی کسی پر الزام لگاتی تھی۔

”اف یہ عورت!“ فرہاد صاحب نے ساختہ سردنوں ہاتھوں میں تھام گئے۔

”میں نے زندگی میں ایک ہی غلطی کی جو اس عورت کو زندگی میں شامل کر لیا۔“ فرہاد صاحب کے لہجے میں بیچتا دا بول رہا تھا۔

”ڈیڈ! ام ایسا کیسے کر سکتی ہیں؟“ شاہ میر ابھی تک غیر یقینی صورت حال سے دوچار تھا۔ فرہاد صاحب کو یقین کرتے دیکھ کر سوال کر رہی تھی۔

”کر سکتی ہے بیٹا! امی، ماما میں باگل عورت سب کچھ کر سکتی ہے۔“ ان کا لہجہ افسوس لیے ہوئے تھا۔ پانی سر سے اوپر گزر رہا تھا۔ انہیں اس بچے سے بچنا ہی تھا۔ ایک کم عقل اپنے ہی بچوں سے جنگ کرنے والی عورت کو مات دینی ہی تھی۔ ورنہ وہ ڈائن بنی سب کی خوشیوں کو کھاجاتی۔

”تم پریشان نہ ہو بیٹا! وہی ہو گا جو تم جانتے ہو میں مجھے تھوڑا سا وقت دو۔ مجھے تمہاری ہر بات پر یقین ہے۔ اس کے لیے مجھے تمہارے حق میں آنسو کی گواہی کی بھی ضرورت نہیں۔“

فرہاد صاحب نے مان سے کہا تو جمنی کو اطمینان ہوا کہ انہوں نے اسے جھٹلایا نہیں تھا۔ وہ حقیقت شناس انسان ہے۔ انہیں بوی کے رنگ ڈھنگ ازر تھے۔

”میں نے کتنا بوجھا لیکن تم نے مجھے نہیں بتایا۔“ اپنے ساتھ کلاہٹ کر فرہاد صاحب نے وقتی طور پر خاموش رہنے کا کہہ کر انہیں جانے کی اجازت دی تھی۔

کمرے میں آ کر شاہ میر کا لہجہ گلد آئیز ہو گیا۔

”کیسے کہتی تم تو ابھی تک غیر یقینی صورت حال میں ہو۔ تمہیں تو ابھی بھی لگ رہا ہے کہ میں جھوٹ بول رہی ہوں۔“ جمنی نے التماسی لہجے میں کہا تو شاہ میر چپ رہ گیا۔ ماں کا یہ روپ اسے ہضم نہیں ہو رہا تھا۔

☆.....☆

ولیدی پاوٹی میں جانے والا معاملہ تو کھٹائی میں جاتا لگ رہا تھا۔ باسط صاحب نے سوچنے کا وقت لیا تھا جب کہ سمیر پر عزم تھا کہ وہ اپنے والدین کو بھیجے گا۔ وہ لفظوں میں اس نے عریشان ولی سے ساتھ دینے کی بھی گزارش کی تھی۔ عریشان ولی کو یہ سچا کہ ان کا بہت پسند آیا تھا۔ وہ آیا تو بہت برا بیچ لے کر تھا مگر سمیر سے مل کر اس کے خیالات بدل گئے تھے۔ وہ اسے لوفر کی اینٹگل سے نہیں لگا تھا۔ وہ جس بے وفائی سے عریشان ولی اور اپنے والد کے سامنے اعتراف محبت کر گیا تھا وہ نظر انداز کرنے کے قابل نہیں تھا۔

وہاں سے فکل کر دونوں گھر چلے آئے تھے۔ دروازہ سونی نے ہی کھولا تھا اور کسی قدر چہرے پر ہوا یاں اڑی ہوئی تھیں۔ عریشان ولی اور آنسو کو سامنے دیکھ کر وہ بری طرح چونکی تھی۔ ابھی کچھ دیر قبل ہی تو بات ہوئی تھی۔ اسے ارشان ولی کی نیچر کا اندازہ تھا۔ وہ یقیناً اس معاملے کو جلد سے جلد سلجھانا چاہتا تھا۔ تب ہی آمد ہوئی تھی۔ روٹی بھی

چیزوں کی طرف متوجہ ہوئی۔ تم نے مجھے اور میری بیٹی کو آس میں رکھا کہ عرشان کو منا لوگی لیکن ایک دو کوڑی کی لڑکی کو بھونا کر لے آئیں اور اب بھی تم ہمیں قصور وار ٹھہرا رہی ہو۔“ واصفہ چراغ پا ہو گئیں۔

”میں کب پیچھے ہٹ رہی ہوں اپنی بات سے، میری تو آج بھی خواہش ہے عرشان زویا سے شادی کر لے لیکن اب چھوٹا بچہ تو ہے نہیں کہ باندھ کے نکاح کرواؤں۔“ ماہ پارہ نے بھی جل کے کہا۔

”ٹھیک ہے میں سب سمجھ گئی ہوں تم کچھ نہیں کر سکتیں۔ بس بہو کی آرتی اتارو۔ میری بیٹی پر انگلی مت اٹھانا دوبارہ۔“ واصفہ غصے سے کہہ کر کال ڈسکریٹ کر گئیں۔

☆.....☆

میرا غم تو ہے غم بتلا
میں جیا گھر میں جانا نہیں
تجھے عمر بھر کی سزا ملی
تیرا جرم جرم فرما دیتا
تیرا بھی دل بے قرار تھا
ذرا یاد کر
ذرا یاد کر میرے ہم نفس
میرا دل جو تم پہ تار تھا

عرشان ولی ٹرپونلنگ بیگ نکالے مزید پچھڑیں ان میں رکھ رہا تھا۔ آنسو سازھی کو تہہ کر کے بیٹگر میں ڈالتی اس کی مصروفیت کو دیکھ رہی تھی۔ وہ جلدی لوٹ آئے۔ رات سے میں اس نے شکریہ ادا کیا تھا کہ وہ جس طرح ایک فون کال پر اس کی بہن کے لیے اٹھ کھڑا ہوا تھا۔ وہ قابلِ توجہ تھا اور ایسے وقت میں جب کہ دونوں کے درمیان ایک تناؤ کی کیفیت طاری تھی۔

شکریہ کے جواب میں سونی میری بہن ہے کہہ کر اس نے بات ہی ختم کر دی تھی اور گھر آ کر لا اعلقی سے بیٹنگ میں لگ گیا تھا۔

”آپ کہیں جارہے ہیں؟“ اس کی خاموشی محسوس کر کے لامحالہ اسے پوچھنا ہی پڑا۔

”اسلام آباد۔“ اختصار سے کام لیا گیا تھا۔ یہ تھا کہ وہ سوالوں کے جواب دے دیتا تھا۔ مجھے خود سے بات چیت بند کر کر رکھی تھی۔

”کب آئیں گے؟“ اس نے پھر ہمت کی۔

”علم نہیں۔“

ٹرپونلنگ بیگ کی زپ بند کر کے اس نے بیگ نیچے رکھا تھا اور کوٹ چھینج کرنے کے خیال سے وارڈروب کی لرف بڑھ گیا۔

”میں ساتھ چلوں؟“

عام حالات ہوتے تو یقیناً وہ خود اسے ساتھ لے جاتا لیکن شاید وہ خود فرار چاہ رہا تھا۔ تب ہی اس نے خواہش ظاہر کی۔

”نہیں۔“ وہ لب بھینچ کر وارڈروب بند کر گیا تھا۔ کئی ٹائیپ آنسو خاموشی سے اسے دیکھتی رہی اور وہ اپنے

نکل آئی تھی اور دونوں کو دیکھ کر خوشی کا اظہار کرنے لگی تھی۔

یہ جان کر کہ باجرہ اور قدوس صاحب پرانے محلے میں ایک واقعہ کاری میت پر گئے ہوئے ہیں۔ سب کو بھی اطمینان ہوا کہ بات سہولت سے ہو سکتی۔

سونی کو سامنے بٹھا کر جب عرشان ولی نے مزید تفصیل پوچھی تو سونی نے اسے ٹو زید سب گوش گزار کر دیا۔

عرشان ولی کو اطمینان ہوا کہ اس پوری کہانی میں میرے نہیں بھی غیر اخلاقی حرکت نہیں کی تھی۔

سونی چونکہ گھنے ہوئے ماحول کی ڈری سہی لڑکی تھی اس لیے ملوث نہ ہونے کے باوجود ڈری ہوئی تھی اور یہ جان کر کہ دونوں پیر کے گھر سے ہو کر آ رہے ہیں تو ان کی تیز رفتاری پر وہ دنگ رہ گئی۔ یہ سن کر کہ سیر اپنی فیملی کو بھیجتا چاہتا ہے۔ سونی بے حد خوفزدہ ہو گئی تھی۔

”ابا مجھے جان سے مار دیں گے عرشان بھائی۔“ سونی کی حالت سیر کی جی داری سن کر خراب ہو رہی تھی۔ مبادا سب یہ نہ سمجھیں کہ وہ بھی برابر کی ملوث ہے۔

”کچھ نہیں ہوگا۔ ابھی تو ان لوگوں نے سوچنے کا وقت لیا ہے۔ سیر ہاں کروا کے ہی دم لے گا اتنا میں اسے جان گیا ہوں۔ بالفرض رشتہ آٹما سے تو اب اسے میں خود بات کر لوں گا۔ تم کسی قسم کا ٹینشن نہ پالو، اس نے سے دماغ میں۔“ وہ مسکراتے ہوئے اس کا روڈ دور کر رہا تھا۔ روبی دپٹی سے سن رہی تھی۔ آنسو خاموش بیٹھی تھی۔

”تم نے جو ایجنٹ بنایا اس سے تو میں اس کی کوٹ لگانے کی نیت سے گیا تھا لیکن بندے کی سچائی نے قائل کر لیا۔“ عرشان ولی چھیڑتے ہوئے کہہ رہا تھا۔ سونی شرما کر سر جھکا گئی۔

”خاموش کیوں ہو آئی! اتنی پیاری لگ رہی ہو اب لوگ کہیں جارہے تھے؟“ روبی نے آنسو کی خاموشی محسوس کر کے دریافت کرنا چاہا۔

”ہاں! ہم ولید بھائی کی پارٹی میں جارہے تھے۔“ سب ادا نہیں دونوں کی سرد جنگ کے متعلق شک ہو آنسو نے جلدی سے خاموشی توڑ کر جواب دیا۔

”میں نے آپ لوگوں کو ڈسٹرب کر دیا کال کر کے۔“ سونی کو ان کا پروگرام خراب ہونے کا افسوس ہوا کہ اس کی کال سن کر وہ سیدھا اس مسئلے کے حل کے لیے ہی سیر کی طرف گئے تھے۔

”ڈسٹربس کوئی نہیں، بہن ہو کے اجنبیت دکھا رہی ہو۔ ویسے تمہاری طرح سیر کی زبان ہی پڑ پڑ چلتی ہے۔“ عرشان ولی چھیڑ گیا تو سونی شرما کر رخ پھیر گئی۔

”تو بے ہے، عرشان بھائی۔“ اس کے انداز پر سب کے لبوں پر مسکراہٹ پھیل گئی تھی۔

☆.....☆

”زویا ڈریک، ڈرگس اور انجکشن کی عادی ہو گئی ہے، واصفہ اور تم نے مجھے بتانا تک گوارا نہ کیا۔ جانتی ہو سہو کے سامنے مجھے کتنی شرمندگی کا سامنا کرنا پڑا۔ جب عرشان نے یہ بات کھولی۔“

ماہ پارہ عرشان ولی کے منہ سے یہ سب سن کر دنگ رہ گئی تھیں۔ اسے سوشل حلقوں سے انہیں پہلے ہی زویا کے متعلق اس قسم کی کافی باتیں پتا چلتی رہی تھیں مگر انہوں نے توجہ نہ دی لیکن عرشان بھی کسی کے کردار پر غلط نہیں اٹھاتا تھا۔ وہ اس بات سے بخوبی باخبر تھیں۔

”سب جھوٹ ہے۔ میری بیٹی کو بدنام کرنے کی سازش ہے عرشان کی۔“ واصفہ سنتے ہی جھٹلا گئیں۔

”اور اگر بالفرض ایسا کبھی ہوا تو اس کی ذمہ دار بھی تم اور عرشان ہو جس کی وجہ سے میری بچی کو صدمہ لگا اور وہ

new
Freedom
ultra thin sanitary napkins

اب مخصوص دن بھی گزاریں

Ultra Thin
Extra Long

Freedom

ULTRA THIN

7

EXTRA LONG

Ultra Thin
Long

Freedom

ULTRA THIN

8

LONG

Health and Hygiene products

معمولات انجام دیتا رہا۔
”معاف نہیں کر سکتے مجھے پلینز عریشان۔“ اس کی لائق سر دمہری اسے کھوکھلا کر رہی تھی۔ کچھ کہہ کر بھڑاس لیتا تو اسے بھی سکون مل جاتا لیکن وہ خاموشی کی بار بار ہاتھ جو خاصا اعصاب شکن تھا۔ اسی اثناء میں عریشان ولی کی کال آنے لگی تھی۔ ہاتھ مصروف تھے جس کی وجہ سے اس نے کال انسیکر پر ڈال دیا تھا اس سے پہلے اس نے ہاتھ لگا کر کان میں بلیو ٹوٹھ کی غیر موجودگی چیک کی تھی۔
”عریشان! میں ایس بی شہیرہ تمہارا مجرم کا نشان میرے سامنے بیٹھا صفائی دینے کے ساتھ معافی مانگ رہا۔ اس بیان کے ساتھ کہ آئندہ تمہاری سرکونجک نہیں کرے گا۔ بولو کیا حکم ہے مسٹر کا نشان کے لیے مار دیا جائے یا چھ دیا جائے۔“

انسپیکٹر سے آتی آواز پر آنسو ایک دم ساکت ہو گئی تھی۔ عریشان ولی نے بھی شاید بے دھیانی میں انسپیکٹر آن کر تھا۔ یہ دیکھ کر ہانک کر کال کی کال ہے۔ اس کی نظر بے ساختہ آنسو پر پڑی تھی جو عجیب سی ہو گئی تھی۔
”فی الحال وارنٹک دے کر چھوڑ دو کہ آئندہ اس قسم کی حرکت ہوئی تو گھر میں جس کے ڈائریکٹ شوٹ کروں گا۔“ عریشان ولی نے سختی سے کہا تھا۔
”انسپیکٹر آن ہے۔ کہنے کی ضرورت نہیں ہے، محفوظ ہو رہے ہیں محترم۔“ ایس بی شہیرہ کی ہنسی اڑاتی آواز آئی تھی۔ یقیناً کا نشان کی حالت پتلی ہو چکی تھی۔ شہیرہ نے تعاون کی یقین دہانی کر کے کال بند کر دی تھی۔
”شاید مجھے کچھ زیادہ دن لگ جائیں مگر جلد تو تم کچھ دن اماں کی طرف رک سکتی ہو یا یہاں جیسی مرضی تمہاری۔“

اس کا سوال نظر انداز کر کے وہ بالوں میں برش پھیر رہا تھا۔ کال کے بعد انداز میں مزید سر دمہری آگئی تھی۔ عام حالات میں اسے ایک پل بھی خود سے دور نہ کرنے والا اماں کے گھر رکھنے کا مشورہ دے رہا تھا۔ آنسو ریز آنکھیں ڈبڈبا گئی تھیں۔

”آپ کے ملنے سے پہلے کی ایک بے وقوفی، نادانی تھی وہ پلینز نظر انداز کر دیں۔ میں ہمارے رشتے کو لے بہت مخلص ہوں کبھی اس رشتے پر آج آنے نہیں دوں گی۔“ اعتبار دلاری تھی۔

”جس رشتے میں بے ایمانی ثابت ہو جائے اسے قائم رکھنے کی ساری دعائیں بے اثر ہو جاتی ہیں۔“ وہ ذرا کی ذرا اس کی سمت مڑا تھا۔ آنسو ریز دق رہ گئی۔ وہ اس کی محبت و چاہت کی بلا شرکت غیرے مالک اور وہ بھی اپنے جذبوں کی جمع پونجی اس پر وارنے میں کبھی کبھو کا مظاہرہ نہیں کرتا تھا لیکن اب وہ جس طرح اپنے خزانے کا منہ بند کر بیٹھا تھا اس کا وجود جیسے اپنی بے قدری پر نوحہ پڑھنے لگا تھا۔
”چلتا ہوں۔“

ذرا کی ذرا اس پر نظر ڈال کر ٹریولنگ بیگ کھینچتا وہ اس کے سامنے سے گزر گیا تھا۔ نہ کوئی محبت بھرا جملہ۔ جذبے لٹانی نظر میں۔ نا فکر و خیال بھرے انداز نہ ماتھے پر کوئی سسکتا لمس۔ وہ تو اجنبی کی طرح گزر گیا تھا۔
”جب کسی بھی رشتے میں بے ایمانی ثابت ہو جائے تو اسے قائم رکھنے کی ساری دعائیں بے اثر ہو جاتی ہیں۔“ کیا کہہ گیا تھا وہ؟ کیا مطلب تھا اس کی بات کا؟ کیا وہ کوئی فیصلہ کرنے والا تھا؟
بندر دوازے کے پیچھے اس کی پشت کو گم ہوتے دیکھ کر وہ سکتے کی کیفیت میں گھر گئی تھی۔

(جاری ہے)

اور دوسری کتب کا سیر

یہ بے رنگ بنیاں کب تک اے حسنِ ندین
ادھر آ تجھے عشق میں پور کر دوں
داورِ جلیس نے حسبِ روایت زلیخا عزیز کو دیکھتے
ہی جذبات کو شعر میں ڈھال کر چھڑ دیا تھا، ایک تو اس
کی نگاہ زلیخا کو کہیں نہ کہیں سے ڈھونڈ ہی نکالتی تھی
اور پھر اس کی زبان جو حرکت میں برکت پر ضرورت
سے زیادہ یقین رکھتی تھی اور دماغ تو ویسے بھی
فضولیات سوچنے کی بریک ٹیل ہوئی مشین تھا۔ زلیخا
کو ہمیشہ سے حیرت رہتی تھی کہ چھ فٹ کا بندہ، ٹنگرا ہٹا
کھٹا مختصر داڑھی اور طویل برقعہ والا آخر عقل سے
پیدل کیوں تھا۔ نہ تو اسے زلیخا سے شکاک بھوں
چڑھائے رویے سے کوئی فرق پڑتا تھا اور نہ ہی اس
بات سے اس کی عزت نفس پر حرف آتا تھا کہ زلیخا
ہمیشہ ہی اسے دیکھ کر لاحول پڑھ دیا کرتی تھی بلکہ وہ
اسے بھی اپنے اشعار کی داد کے بطور وصول کرتا تھا۔

☆.....☆

داور اور زلیخا رشتے دار نہیں تھے تو اجنبی بھی نہیں
تھے محلے دار نہیں تھی تو شریکے بھی نہیں تھے، بس
قصہ اتنا تھا کہ زلیخا کے ابا نے بناء تحقیق کے گھر کے
صحن میں دیوار اٹھا کر دوسرا حصہ کرائے پر چڑھا دیا
تھا، جہاں داور جلیس اپنی دو بہنوں، اماں، دادی اور
ابا کے ساتھ آیا تو بطور کرائے دار ہی تھا مگر آٹھ ماہ
گزر گئے تھے کرائے کے طور پر کوئی کاغذ تک ادا نہ کیا
تھا گویا قبضہ دار تھا اور قبضہ بھی ایسا کہ جب دل
چاہے دیوار پھلانگ مالک مکان کے صحن میں اتر آتا
اور اوپر سے کپے پکائے سالن میں سے شور بے کے

گھونٹ ایسے شروک شروک کے لپٹا جیسے اس
کھانے کی مفت ہی تو مانی گئی تھی۔
زلیخا کے علاوہ گھر کے تمام افراد جن میں
بھائی اس کے دو شریر بچے اور اماں کے ساتھ
میں آتی بڑی اماں شامل تھے۔ سبھی کو داور نے
سوائے کرایہ ادا نہ کرنے کے کوئی شکایت نہ تھی
انہیں تو اس بات سے بھی فرق نہ پڑتا تھا کہ داور
جائے بنانے کے لیے اکثر دپشتر دودھ کا گلاس
چپتی تک اٹھا کے لے جاتا تھا۔ حد تو یہ تھی کہ
روٹی کم پڑ جائے تو اضافی روٹی بھی زلیخا کے
خوان سے اچک لے لیے جاتی جاتی تھی۔ ایسا
نہیں تھا کہ داور کوئی کن پوائنٹ پر تخریب کاری
تھا اور ایسا تو ہر گز نہیں تھا کہ وہ اس گھر کا جوا
(داماد) تھا مگر پھر بھی گھر والوں کی اس کے سامنے
کوئی زلیخا کو ایک آنکھ نہ بھاتی تھی۔ اماں
اپنے بے شمار سونے کی وجہ تو اس کی پان کی دکا
تھی جہاں سے ان کی مفت فراہمی اماں کے
اور دل دونوں کو کھال دیتی تھی۔ بڑی اماں
صدتے واری جانے کی دھیمان کا اکلوتا دانت
جی ہاں ان کے تمام دانت اپنی مددگار کے
علاقہ غیر رخصت ہو گئے تھے مگر ایک باغی اپنی
ٹس سے مس نہ ہوا تو داور نے از خود ٹس
ہوئے اسے پلاس کے ذریعے نقل مکانی پر مجبور کر
تھا اور تب سے وہ داور کے دادا کی چھوڑی
وراثت ان کی بیٹی اپنے منہ میں دبائے چنے
اور دعائیں دیتی پانی جاتی تھیں۔

دوسری طرف بھائی کو آفس جانے کے لیے اپنی کھٹارا بانیک پر ڈراپ کیا کر دیتا تھا بھائی تو ہر دم پچیس روپے بس کے کرائے کے بچ جانے پر ممنون حسین دکھائی دیتے تھے گویا دن کے پچیس روپے بچا کر کل ہی کھڑا کر دیں گے اور ان کے دو قیامت کے ٹریلر بچے تو ایک ٹائی اور غبارہ لیز (Lays) کی مار تھے بس۔

رہ گئی زلیخا تو اسے بھی فیملی کے نقش قدم پر چلانے اور اپنا فین بنانے کے لیے داور جلس کے کوئی کم پائرنہ بناتے تھے۔

☆.....☆
سوئی ہوئی زلیخا کو دن چڑھے باٹ دار آواز میں ”گڈ مارننگ“ کہنا لگا اس نے خود پر لازم کر ہی رکھا تھا۔ اپنی جائے زلیخا کے تھری میں سے بھرے جانا تو وہ گار خیر کی طرح اچھا لگتا تھا اوپر سے بانیک کا سالنکس ہٹا کر کھر کھر کر رہا وہ بھی عین اس وقت جب زلیخا دنیا و مافیہا سے بے گانی ناول پڑھنے میں مشغول ہوتی ایسا کر کے تو وہ کوئی روحانی سکون حاصل کرتا تھا، جب کہ حقیقت میں زلیخا کے کونوں سے اعمال نامے میں اضافہ کرتا تھا۔

زلیخا کپڑے دھونے کے لیے مشین چلاتی تو جانے کس کونے سے برآمد ہو کر اپنے میلے کپڑے واشنگ مشین میں ڈال دیتا، زلیخا جتنا اس بات سے چڑتی تھی اتنا تو اس کا اپنے چہرے پر آ یا پسینہ زلیخا کے ڈوپٹے سے پونچھ لینا بھی اسے ناگوار نہ گزرتا تھا مگر داور جلس کو نہ تو اس کی انواع و اقسام کی گالیوں سے فرق پڑتا تھا نہ ہاتھ اٹھا اٹھا کر بددعا میں دینا ہی اس کے ڈھیت پن پر اثر انداز ہوتا تھا بلکہ مستقل مزاجی کا تو یہ عالم تھا کہ جب وہ بددعا دینے کے لیے ہاتھ اٹھاتی تب تب وہ اس کے ہاتھوں کو چھو کر آنکھوں سے لگانے کی گستاخی

ضرور کرتا تھا۔

زلیخا چاہنے کے باوجود اپنے ہاتھ اس چہرے پر چسپاں نہیں کر پاتی تھی اس کی زبان جتنی ہمت تھی ہاتھوں میں اتنی ہی لرزش رہتی خصوصاً اس وقت تو وہ ہاتھ پاؤں مکمل چھوڑ دیتی تھی جب وہ اس کے بھیکے ہاتھوں کو زبردستی تھام انہیں اپنی گرم پھونکوں سے خشک کیا کرتا تھا نانا تھا دونوں میں بیان کرنے کو کچھ نہ تھا مگر محسوس کرنے میں حد سے سوا تھا۔

☆.....☆

”واللہ اگر کچھ وقت کے لیے قتل جائز ہو جائے تمہیں اگلا سال نہ لینے دوں۔“
زلیخا نے بلائے ناگہانی کی طرح ستون کے پیچھے سے برآمد ہوتے داور جلس کو زبانی دھمکی تو دے ہی تھی، اس مرتبہ پلیٹ سے سوسہ اٹھا راس کے چہرے پر دے مارا تھا جسے اس نے منہ کی میٹ میں بطور فٹ بال قبول کر کے محبوب کی ٹیم کو گول کر کے حیرت زدہ کر دی تھی۔

داور نے ڈھٹائی کی سانپ روایت قائم رکھے ہوئے مدھوش لہجے میں ارشاد فرمایا تھا۔ زلیخا کی سہیلیاں جن کی آج آمد انتہائی پر جوش اور چنگا زلف تھی کچھ دیر قبل محفل میں یادوں، آہوں اور تپہوں کی بہار تھی مگر دادی نے جس کے بارے میں زلیخا کو مصدقہ اطلاع تھی کہ وہ دن کے لیے شہر سے باہر اچانک انٹری مار کر گویا شہڈی چلم کو چنگاری دکھائی تھی۔

”جانے کتنے ڈھیت مرے ہوں گے تب نازل ہوئے ہوں گے۔“ زلیخا کو یقین تھا کہ داور نے جہنم نہیں لیا تھا یقیناً آسمان سے بھی ٹھڈے مارے زمین پر گر دیا گیا ہوگا۔“

”اگر نازل ہوتا تو تیرے صحیفہ دل پر اترتا مگر بے ”جہیا“ ہوں اور وہ بھی بالکل اسی طرح جیسے ”جہیا“ جتا گیا۔“

زلیخا دل میں سوچتی اور وہ جھٹ سے خواب سے دیتا ایسا نہیں تھا کہ دل کے حال جاننے والا ہی تھا ہاں مگر چہرہ شناس ضرور تھا زلیخا کے چہرے اس کی آمد اور حرکات سے آئے تاثرات وہ بنا لیے جان لیا کرتا تھا۔

”اگر مجھے اختیار ہوتا تو تجھے فریزر میں جمادیتی لائی بنادیتی وہ کی اس روپے والی کی حقیر حیثیت۔“
زلیخا نے دس روپے پر پرتا زور دیا کہ پانچ روپے کو بھی دس روپے پر پرتا ہے لگا پرتا نہ ہوا تو وہ داور جلس کی شیطانی مسکراہٹ تھی۔
”اٹھ اداے یہ تو کمال ہو گیا تو مجھے کی سیالی اور نرمی کی شدت سے جب تو قلعی کو اپنے منہ سے داور پٹری سے اتر آئی نہیں پھسل گیا تھا زلیخا جو اس کی حرکتوں سے پہلے ہی تالاں تھی ایسی بے باکی تو ہر اسال ہو جاتی تھی کچھ کہنا تو دور کی بات اسے مہانگے کے لیے رستہ بھی دکھائی نہ دیتا تھا بس لال کال ہوئی جاتی تھی جو غصے کی لالی تھی اسے بھی داور کی خوش فہمی شرم کی سرخی سے تعبیر کرتی تھی۔

☆.....☆

کمرے میں موجود دس سے زائد افراد حیرت کی تصویر بنے بیٹھے تھے مردوں کو تو عادت ہی سننے کی تھی مگر وہاں موجود خواتین نے بھی گویا اپیلی ٹگل کی تھی۔ سانس تو آ جا رہی تھی مگر آواز جانے کہاں تھی۔

عجیب شرط رکھی گئی تھی وہ بھی ایک روایتی منہ سمائی شو میں کہ جہاں مانگنے والے مانگے چلے جاتے ہیں اور جگر کا ٹکڑا دینے والے بس دیئے ہی پلے جاتے ہیں۔

داور جلس مٹی خوب ہموار کر کے اس پر اپنی

خوشیوں کا باغ بسانے آیا تھا، زلیخا کے بھائی اور ماں نے شگن کے چار جوڑوں اور نقد کی کچھ رقم پر ہی پارٹی بدل لی تھی جیسا کہ داور کو پوری امید تھی مگر خیر ہو عین اس جگہ سے حملہ اچانک ہوا تھا جو اس کے نزدیک سب سے کمزور قلعہ تھا۔

زلیخا نے رشتے کے لیے آئے داور جلس اور اس کے گھر والوں کے سامنے رشتے کی قبولیت کے لیے شرط آن رکھی تھی اور شرط بھی وہ جو آج تک کسی نے نہ رکھی تھی۔

”مجھے منہ دکھائی میں سفید اونٹ چاہیے جس کی عید الاضحیٰ پر قربانی میں اپنے ہاتھ سے کر دوں گی۔“
زلیخا نے آج تک مرئی ذبح ہوتے نہ دیکھی تھی اونٹ کی قربانی خود کرنے چلی تھی اسے تو یہ تک خبر نہ تھی کہ اونٹ کے زخروں پر تیر چلاتے ہیں کہ چھری۔

مگر جھلا ہوا اس کی عقل دان سہیلی عذرا کا جس نے داور جلس سے بچنے کی اسے خوب ترکیب بتائی تھی کہ عید الاضحیٰ کی قربانی اور سفید اونٹ نامیاب اور انتہائی مہنگا یاں مکان چلانے والے اور دن بھر آوارہ گردی کرے داور جلس کے پاس تو بچنے کے لیے بھی کچھ نہ تھا کہ چھری عید اونٹ خرید سکے۔ سو شرط اور نیت صاف ظاہر تھی کہ قبولیت رشتہ کی کوئی صورت ہی نہ تھی۔

داور جلس نے مایوسی سے اٹھتے ہوئے دامن جھاڑ کر شگنی سے کہا
”تیرے فریاد انکار ہی سمجھاں۔“

☆.....☆

زلیخا نے اب تک کی داور جلس کی تمام تخریبانہ سرگرمیوں کا ایک ہی وار میں قلع قمع کر دیا تھا۔ اندرونی راہداری کی تنگ گلیوں میں گائے کی قربانی بھی صرف کارنر کے مکان والے سات حصوں کو ملا کر کرتے تھے وہاں اونٹ لے آنا کوئی گڈے گڑیا

شور میں عین ان کے گھر کے سامنے بندھی کھڑی تھی۔
”سفید اونٹ۔“

جسے دیکھنے اور چھونے کے لیے اپنا حملہ کہاں آس پاس کے محلے والے بھی قطار در قطار تشریف لا رہے تھے۔ سب کے نزدیک قربانی وہ بھی اونٹ کی دیکھنا ایک دلچسپ اور سنسنی خیز خبر بہ تھا۔ عید الاضحیٰ سے دو دن قبل داور جلیس نے زلیخا کی خواہش کے عین مطابق سفید اونٹ لا کر اسے دروازے پر کھڑا کر دیا تھا۔ یہ محض اونٹ نہ تھا اور نہ ہی صرف قربانی ہونے والی تھی یہ تو خون تھا زلیخا کی آزادی کا، اس کے ارمانون کا اور بچ نکلنے کے حیلوں کا، یعنی کہ اس کا نازک سراپا اور کالج جیسے جذبات داور جلیس کی بے لگام محبت اور بے روایت انداز محبت کے غلام بننے والے تھے۔

زلیخا نے گرنایا ہے یہ داور جلیس جانتا تھا تبھی تو وہ دونوں دھڑکے ہوئے پیگمانے ہونے سے قبل ہی داور کی بانہوں میں لپکتی ہوئی تھی بے ہوش ہونے سے قبل اس کی سوچ صرف یہ تھی کہ ”قربانی سے پہلے قربانی ہوئی تھی۔“

زلیخا، داور جلیس سے عاجز تھی۔ اس کی چاہت سے اکتاتی تھی مگر زبان کی پکی تھی اس نے شادی کے لیے شرط رکھی تھی اور داور جلیس کے شرط پورا کرنے پر اس نے اپنا وعدہ نبھایا تھا اور عید کی شام داور جلیس کی بن کر اس کے بلکہ اپنے ہی قبضہ شدہ گھر میں دلہن بن کر آگئی تھی۔

داور جلیس نے سارے انتظامات کر رکھے تھے ایک کھانے اور ایک مہندی کی رسم کے ساتھ اس نے دونوں گھروں کو اخراجات سے بچا کر اپنی چاہت کو اپنا لیا تھا۔ زلیخا کو حیرت تھی کہ وہ جو داور جلیس کے سامنے سے بھی کتراتے تھے۔ اب اس کی

تھا اس مرد عاشق کے دل میں۔
تم پہ مرتے ہیں تو کیا
ماری ڈالو گے ہمیں
☆.....☆

آج کی دنوں بعد زلیخا کو پھر سے بے ہنگم شور اور کان بھڑائی آواز نے نیند سے بیدار کیا تھا۔ داور جلیس کی تین ہفتوں سے خاموشی سے اسے لگا تھا کہ عشق کا جن واپس بول میں لوٹ گیا مگر آج پھر سابقہ روایت کے تحت وہ اسے نیند سے جگانے کے لیے مستعد تھا۔ زلیخا نے اٹھا تھا کہ پہلے اس کی پاٹ دار آواز اور سالگرہ کے پتے کی چنگل اسے تپا رہی تھی تو آج آوازوں میں ایسا ہی معلوم ہونی لگی جس کی نوعیت وہ سمجھ نہ سکی۔

زلیخا شدید جلال میں اپنی چادر اور کمر باندھ کر اچھاتی بستر سے نکلی تھی لگتا تھا آج یا تو نکلیں یا نہیں، والا معاملہ کرنے کا ارادہ تھا۔
سکڑے سے نکلتی تو تمام ہی محلہ محن میں بیجا تھا مگر سے کسی کی برواہ نہ تھی سامنے کھڑے فخر سے مسکراتے اور جلیس کو دیکھ کر اسے سیلنڈر سے لگنے والی آگ جیسی فیلنگز آتی تھیں وہ اسے تپانے اور دل دکھانے کے لیے با آواز بلند بولی تھی۔

مرد ہو عشق سے جہاد کرو
اب مجھے بھول کر نہ یاد کرو
اپنی دانست میں زلیخا نے مردانگی کا طعنہ دے کر داور جلیس کو دھول چٹائی تھی مگر داور جلیس کی شیطانی مسکراہٹ، بے حیا آنکھوں اور اپنی جگہ لٹ سے مس نہ ہونے کی حالت کو دیکھ کر وہ متعجب ہوئی تھی یہ تو وہی سابقہ ترن تھا تھا کہسے لوٹ آیا تھا۔

”پچھو اونٹ تو بالکل چٹا ہے۔“
شریعہ پیچوں کے اعلان پر وہ ایک لمحہ کے لیے ہلکوک ہوئی کہ کہیں پسنا تو نہیں دیکھ رہی مگر حقیقت اتنی من وزنی جگالی کرتی چھن چھن پازیب کے

”سوالا کھ۔“

اونٹ کی قیمت جانتے ہی داور جلیس کی شش گم گئی تھی سب سے کمزور اور مسکین اونٹ اس نے سوچ کر چٹا تھا کہ شاید ایک گائے کی قیمت کے برابر تولی ہی جائے گا مگر گائے تو اونٹ کے آگے گھاس کھاتی رہ گئی۔

اب سوالا کھ کوئی سوالا کھ تھکریاں تو تھیں نہیں کہ پہاڑ کھود کے لے آتا بوجھل دل لیے وہ گھر لوٹا دروازے پر ہی وہ دشمن جاں و مال بالٹی بھر پانی کی باٹی لیتی دکھائی دی۔

”پانی کی باٹی ختم ہو جائے تو میرے ارمانون کی سبیل لگا لینا اور فی سبیل اللہ محلے میں بانٹ دینا۔“
داور جلیس نے ویسے ہی جل کر کہا جیسے اس کے بے سرو پا حرکات پر زلیخا جل کے کیاب ہوتی زلیخا کے اندر جیسے اسی چل پڑا تھا اتنی ٹھنڈ۔

”تمہارے فضول ارمانون کو تو مفت میں بھی کو نہ خریدے گا میں کا بے کو کا کھ کھاڑا تھا پیروں کی زلیخا ایک ہی نو لادی وار میں دو گنا زیادہ وزنی گئی تھی داور جلیس کی شمار گیریاں پل کی پل سے مول ہو گئی تھیں۔

”ہائے زلیخا! ہیرے ویرے میرے ارمانون تیرے در پہ کنکریوں کی طرح رل گئے۔“
داور جلیس بہت ہی دلبرداشتہ دکھائی دیتا تھا اور ہی آہیں تھیں جو اس نے نہ بھری تھیں مگر حرام تھا کہ زلیخا کے دل پر چٹا مناساجی اثر ہوتا۔

”چل جا اپنی حسرتوں پہ آنسو بہا کے سو جا۔“
زلیخا نے کمال ادا سے مترنم مشورہ عنایت کیا داور جلیس کے کچھ دل سے ہو کر اٹھی تھی۔ ان کی لپوں سے ادا ہوئی بددعائیں بھی اسے کلیاں تھیں۔ تو کیا اب وہ ان ریسی بددعاؤں سے ہونے والا تھا کیا خیال آیا تھا داور جلیس کے کھلبلی چمک گئی تھی۔ ایک نیا جوش ایک نیا ولولہ

کا کھیل نہیں تھا۔ یہ شرط تو ایسی ہی تھی جیسے لڑکے والے سبزی والے کی بیٹی کے جہیز میں مسر سید دینے کی فرمائش کر دیں۔ داور جلیس نے اپنی چاہت کو چاہت کے زیور سے آراستہ کرنے کے خواب دیکھے تھے وہ جی دار تھا محنتی اور خود سر تھا اس نے اپنے حالات کے اندر رہ کر بھی شامانہ مزاج پایا تھا جو جاہا تھا اسے حاصل کیے بنا کبھی رہا نہیں تھا۔ زلیخا اس کی پہلی اور آخری چاہت تھی جس کو پانے کا خیال روز اول سے اس کے دل میں ایسا کھتا تھا کہ اسے کبھی خیال نہ گزر رہا تھا کہ وہ اس کے علاوہ کسی اور کی ہو سکتی ہے۔

زلیخا کی اس سے بیزاری بھی اس کے لیے ڈھکی چھپی نہ تھی مگر اس کے نزدیک زلیخا کو اس کی ذات سے نہیں عادات و حرکات سے مسئلہ تھا اور داور جلیس کسی طور بھی اپنی حرکتیں زلیخا کی خاطر بدلنے کو تیار نہ تھا بلکہ اسے یقین محکم تھا کہ اس کی حرکتوں سے چھلکتی چاہت اور دیوانگی اس کے پیار کی انفرادیت ایک دن زلیخا کو اس کا محبوب بننے پر مجبور کر دے گی۔

وہ اپنی دانست میں شادی کی تاریخ فکس کر کے جانے والا تھا کہ سنگدل محبوب نے پتھر کیا اینٹ اٹھا کر دے ماری تھی۔

گاڑی بنگلے کی فرمائش کرتی تو وہ قسطوں پر لے کر پا کر اے کا لے کر ہی پورا کر دیتا مگر اب یہ اونٹ وہ بھی سفید کہاں سے برآمد کر اے؟ اونٹوں کی تو اسے گناہ بھی نہیں ہوتی تھی کوئی نکما دوست دینی میں بھی نہیں تھا کہ اس سے مستعار ہی اونٹ منگوا لیتا۔ عجیب شرط محبت سامنے آکھڑی تھی۔

ایک طرف زلیخا تھی تو دوسری طرف سفید اونٹ۔
داور جلیس کو سمجھ نہ آرہی تھی کہ اس کی خواہش کا اونٹ کس کروٹ پیٹھے۔

☆.....☆



- ★ FREE REGISTRATION ★
- ★ FREE MEMBERSHIP CARD ★
- ★ FREE INVITATION OF VARIOUS PROGRAMS ★
- ★ SCHOLARSHIP ★
- ★ DISCOUNT VOUCHERS ★
- ★ STUDENT OF THE MONTH ★
- ★ TEACHER OF THE MONTH ★
- ★ GIFT & CERTIFICATE ★
- ★ COMPETITIONS ★
- ★ BIRTHDAY WISHES ★
- ★ LEARNING & DEVELOPMENT ★

Discount Available



For more discount login to our website

www.uhukids.pk

FABER CASTELL

UHU

پھول کیسے بن جاتی تھی داور سے جواب ملنا تو محال تھا وہ تو وقت نے اس کی انجمن کا سرا تھا دیا جب کچھ ہی دنوں میں داور جلیس کے پورشن میں لوگوں کی چہل پہل ہونے لگی اس نے داور سے پوچھا معلوم ہوا کہ داور کے پورشن میں نئے لوگ رے کے لیے آگئے ہیں۔

”داور یہ میرے ابا کا گھر تھا تمہیں کرائے پر تھا تم نے کسی اور کو کرائے پر کیسے دے دیا۔“ زلیخا نے حسب عادت آنکھیں دکھائی تھیں جنہیں داور نے حسب روایت خاطر میں نہ لایا تھا۔

”پورشن جس کا بھی تھا میں نے سچ دیا۔“ انتہائی لاپرواہی سے زلیخا کی زلفوں آنکھیاں کرتے داور نے جواب دیا تھا۔

”اس وہ کیوں؟“ زلیخا حیرت کی انتہا پر تھی اب تو گھر ان کا داور سے قبضہ دار داور تھا اور اب اس نے اس کی بجائے کوئی اور داور جلیس نے غنڈا گردی کی تھی۔

زلیخا چیخ مچی تھی داور مسلسل اس کے سے چکا جو بیٹھا تھا۔

”لو اگر بیچتا نہیں تو تمہاری شرط کے مطابق سے شادی کرنے کے لیے اونٹ کیسے خریدتا؟“

داور جلیس نے اسے ہانپوں میں سمجھ لیا تھا

اطلاع وہ دی تھی کہ زلیخا نہ زندوں میں رہی تھی

مردوں میں۔

اللہ تیری شان کی ساجی دار، وفا دار محبوب ملا تھا

اسے بانے کے لیے اسی کے قبضہ شدہ گھر کو کوڑھ

کے مول سچ دیا تھا اور اسی کے گھر میں اسی کے

جان کا مالک بنا اس کے ساتھ مصروف وفا تھا۔

زلیخا سمجھ نہیں پا رہی تھی کہ اسے اس وفا کا

کیسے ادا کرنا تھا؟

جہاں خیز ہانپوں میں کتنی پرسکون ہو کر سا جاتی تھی وہ اونٹنی بوگی حرکات سے چاہت لٹاتا تھا اور وہ آنکھیں دکھائی منہ بناتی ان حرکتوں پر خوب اتراتی تھی۔

عید کے تیسرے دن اونٹ کی قربانی اس نے اپنے ہاتھ سے کیا ہی کرتی تھی دیکھ کر ہی ہاتھ پاؤں چھوڑ بیٹھی تھی۔ اونٹ کے زخروے سے خون کے فوارے چھوٹنا اس کی توتے بھی رکنے کا نام نہ لے رہی تھی۔ زلیخا کو اونٹ اور اس کی قربانی سے دلچسپی ہی کب تھی وہ تو دلیس داور جلیس سے بچنے کا ایک حیلہ تھا جو کہ قطعاً کامیاب رہا تھا مگر اسے حیرت ضرور تھی کہ آخر پانچپن والے داور جلیس نے اونٹ خرید کیسے لیا۔

☆.....☆
ایک ہفتے کے بعد داور نے اس کا سامان لٹا دیا اور بھائی کے پورشن میں اس کے سابقہ کمرے میں آکر شفت ہو گیا تھا پونہی اس کے گھر والے بھی اس کے میکے میں ہی ڈیرا ڈالے بیٹھے تھے وہ سخت متعجب تھی کہ آخر کو اس کے دیئے گھر سے وہ کیوں نقل مکانی کر آئے تھے۔

”داور یہ اس دیوار سے اس دیوار کے پار آنے کی کیا تکتھی۔“

زلیخا نے بھیڑوں کی طرح دو کمروں کے پورشن

میں نقل مکانی پر سخت ناک بھوں چڑھایا تھا داور

جلیس کی کوئی کل سیدھی نہ تھی یہ تو اسے اپنے قربانی

کے اونٹ کو دیکھ کر ہی اندازہ ہو گیا تھا کہ یقیناً داور

جلیس اور سفید اونٹ ایک ہی برادری سے تھے۔

”ارے یہاں تمہاری خوشبو زیادہ مہکتی ہے ناں

اس لیے وہاں جا کر تو تم کاغذی گلاب گلنے لگی

تھیں۔“

داور جلیس نے بے سکتے بن سے جواب دیا تھا۔

وہ حیران رہ گئی تھی کہ ایک ہی گھر کے دو حصوں میں

سے ایک میں وہ مہکتا گلاب تو دوسرے میں کاغذی

نرمی سیری خورشید کا ہر



”امثال! تم بھی ساتھ چلتی تو بھائی صاحب خوش ہوتے۔“

”ای! آپ ہی چلی جائیں مجھے نہیں شوق ان کی بیگم کے طنز سننے کا اور ویسے بھی باسط انکل کے علاوہ ہے کون اس گھر میں جو ہمارے جانے سے خوش ہوا ہو گا۔“

اس کے صاحب انکار کرنے پر ثروت بیگم نے تاسف سے اس کی طرف دیکھا۔

”بیٹا! ہمیں ان کے علاوہ کسی سے کوئی غرض بھی نہیں ہے وہ تو خود آئے کا کہہ رہے تھے کہ ان کی طبیعت کچھ ناساز ہے تو انہوں نے مجھے کال کے بلوایا ہے اگر تم چلتی تو انہیں اچھا لگتا لیکن خیر میں جارہی ہوں اور تم اٹھ کر دروازہ ٹھیک سے کھول کر لو۔“ وہ اسے ہدایت دیتی کمرے سے نکلی تھیں۔

”دیکھو ثروت! میں نے تمہیں ہمیشہ بچاؤ نہیں اپنی سگی بہن سمجھا ہے یہ بات تم بھی جانتی ہو اور زینب بھی کہ میں نے تم دونوں میں بھی کوئی فرق نہیں رکھا۔ میں نہیں چاہتا کہ میری طرف سے کوئی بھی کوتاہی ہو۔ میری تو ہمیشہ سے یہی کوشش رہی ہے کہ میں تمہارے کام آؤں۔ اب دیکھو میں نے امثال کو کتنی بار کہا ہے کہ اپنی وہ جاب چھوڑ کر ان کے آفس میں آجائے، میں نہیں چاہتا کہ گھر کی بچی یوں در بدر پھرے۔ جب اپنا آفس ہے تو پھر کیوں یہاں وہاں پھرنا۔“ باسط صاحب نے ہمیشہ کی طرح اپنا گلہ دہرایا تھا۔

”بھائی صاحب! آپ کو امثال کا پتا تو ہے کہ کتنی ضدی ہے ایک بار جو تھان لے تو کسی کی بھی نہیں سنتی ہے۔“ ثروت بیگم نے اس کی طرف داری کرنی چاہی تھی۔

ورنہ یہ بات تو صرف وہی جانتی تھیں کہ امثال اس گھر سے اس گھر کے لوگوں سے کتنی نفرت کرتی ہے۔

”امثال کو سمجھاؤ یوں ذرا ذرا سی بات کو ان کا مسئلہ نہیں بنایا کرتے۔ اتنا عرصہ پہلے ہوئی بات کہ وہ اب تک نہیں بھولی ہے۔ میں چاہتا ہوں کہ وہ سب باتیں بھول کر میرے گھر آئے۔“ باسط صاحب کی باتیں انہیں شرمندہ کر رہی تھیں۔ انہوں نے دل میں پکا ارادہ کر لیا تھا کہ آج تو گھر جا کر امثال کی خوب خبر لیں گی۔

بھائی صاحب بالکل ٹھیک کہہ رہے ہیں ثروت۔ امثال کو اب اپنی جاب چھوڑ دینی چاہیے۔“ چائے کی ٹرے لائی زینب نے بھی گفتگو میں حصہ لیا تھا۔

بھائی صاحب کی طبیعت کی ناگہانی کی وجہ سے وہ بھی اپنے سرسال سے آئی ہوئی تھی۔

”آجاؤ زینب! تمہاری موجودگی میں ہی میں ثروت سے ایک وعدہ لے لوں۔ زندگی کب کسی کی وفادار رہی ہے۔“ ان کی بات پر دونوں نے ہی سوالیہ نظروں سے ان کی طرف دیکھا تھا۔

”امثال کو میں نے ہمیشہ اپنی بیٹی سمجھا ہے اب میں چاہتا ہوں کہ اسے اپنے بیٹے کے لیے سے مانگ لوں۔“ انہوں نے چائے کا کر

اٹھاتے ہوئے کہا۔

ثروت بیگم نے بے یقینی سے انہیں دیکھا۔
زینب کو بھی خوشگوار حیرت ہوئی تھی۔

”حاسب! اپنی پڑھائی مکمل کر کے جلد پاکستان آجائے گا اور اس کا بزنس میں ہاتھ بٹائے گا میں چاہتا ہوں کہ اس کے آتے ہی ہم ان دونوں کی منگنی کر دیں اور۔۔۔“

”لیکن بھائی صاحب! یوں بھابی کی غیر موجودگی میں۔۔۔“ ثروت بیگم نے درمیان میں ہی ان کی بات کاٹی تھی۔

”ارے اس عورت کے فیصلے اس گھر کی بنیادیں ہلانے کے لیے ہوتے ہیں اور اس کے لیے جو فیصلہ اس نے کیا تھا میرا بیٹا خاموشی سے بھگت رہا ہے لیکن حاسب کے لیے میرا ہی فیصلہ مانا جائے گا۔ حاسب میرا بیٹا ہے وہ میری بات سمجھ کر نہیں کرے گا۔ تم بس اب یہ بات اپنے ذہن میں بٹھا لو کہ امثال اب میرے حاسب کی جگہ پر ہیں۔“ انہوں نے اہل گھر سے کہا تھا۔ ثروت بیگم کے چہرے پر پریشانی چھائی تھی۔ امثال کو تو وہ اچھی طرح جانتی تھیں اور صوبی بھابی کا رویہ بھی ان کے ساتھ اتنا ہی بے لگ تھا۔

☆.....☆

گر بیجویشن کے بعد اب وہ حاسب کے لیے ماری ماری پھر رہی تھی۔ آج بھی دو جگہ انٹرویو دیا تھا۔ امید تو یہی تھی کہ کسی ایک جگہ اسے اپائنٹ کر لیا جائے گا۔ تھک پار کر وہ گھر آئی تو امی کھانے پر اس کا انتظار کر رہی تھیں وہ فوراً ہاتھ دھو کر ان کے پاس چلی آئی تھی۔

”کیوں خود کو خوار کر رہی ہو بیٹا! میری بات مان لو، اچھی بھلی تمہیں بھائی صاحب نے حاسب کی ایک تم ہو کر انا کا جھنڈا بلند رکھے ہوئے ہو۔ یہ سوچ کہ ان کے کتنے احسانات ہیں تم پر۔ وہ کل

تمہارا اتنا بوجھ ہے تھے لیکن تمہیں کیا فکر کسی کی۔“ امی آپ جلی جاتی ہیں کافی ہے اور ویسے بھی مجھے کوئی شوق نہیں ہے ان کی امارات کی شان دیکھنے کا۔“ اس نے سالن نکالتے ہوئے کہا۔
”ذرا سی بات تھی وہ امثال! تم بھول کیوں نہیں جانتیں اس کو، بھائی صاحب کتنی بار تو خود معذرت کر چکے ہیں۔“

”امی! مجھے ان سے کوئی شکایت نہیں ہے نا ہی میں ان سے کسی بات پر رخصتا ہوں لیکن میں ان کے گھر نہیں جانا چاہتی۔ کبھی بھی۔۔۔ جتنی عزت افزائی ان کی بیگم صاحبہ نے میری کرنی تھی وہ کچل چکی ہیں۔ اب میں مزید انہیں زحمت نہیں دینا چاہتی اب پلیز مجھے کھانا کھانے دیں۔“ وہ کہہ کر کھانے میں مصروف ہو گئی تھی جب کہ ثروت بیگم اسے دیکھ کر رہ گئیں۔

☆.....☆

باسط انکل کے ہلانے پر وہ پہلی بار ان کے گھر آئی تھی ورنہ وہ خود ہی آجایا کرتے تھے۔ باسط انکل امی کے چچا زاد بھائی تھے، ابا کے سرنے کے بعد سب تک انہوں نے ہی ان کی مالی مدد کی تھی۔ ورنہ ہر شے نے ہی ان سے منہ موڑ لیا تھا۔ وہ چھوٹے چھوٹے قدم اٹھاتی اندر آئی لان کی سجاوٹ کے لیے اسے اندلزدہ ہو گیا تھا کہ گھر میں کوئی تقریب ہے۔ وہ ملازم سے باسط انکل کا پوچھتی اندر آئی تھی لیکن بھلا وہاں بری قسمت کا کہ پاس رکھے ٹیبل سے اس کا پاؤں ٹکرایا تھا اور اس پر رکھا بیش قیمت گلدان زمین بوس ہو گیا تھا۔ اس نے گھبرا کر اپنے ارد گرد دیکھا تھا۔ سارے ملازم الارٹ ہو گئے تھے۔ تب ہی ایک چنگھاڑی ہوئی آواز اسے اپنے قریب سنائی دی تھی۔ وہ نظریں زمین پر گاڑے کھڑی تھی۔ پاس کھڑی عورت اسے نہ جانے کن کن القابات سے نوازا رہی تھی۔ بقول اس عورت کے اس کا بیش قیمت گلدان جو کہ اس

نے خاص اٹلی سے منگوا ہوا تھا وہ جاہل اجدگنوار لڑکی اپنی کم عقلی کی وجہ سے توڑ چکی تھی۔ اس نے دکھ سے اس برے وقت کو کوسا تھا جب اس نے امی کے کہنے پر یہاں آنے کی ہامی بھری تھی۔
پورے گھر کے ملازم اس کی بے عزتی بڑے آرام و سکون سے دیکھنے میں مصروف تھے۔ گھر کے باقی ماندہ افراد بھی وہاں آگئے تھے۔ اس نے نظراٹھا کر کچھ فاصلے پر کھڑے باسط انکل کو دیکھا اور قدم واپس کے لیے بڑھا دیئے تھے۔ کبھی یہاں واپس نہ آنے کے لیے۔

خدا خدا کر کے اسے حاسب مل ہی گئی تھی۔ امی کو بتایا تو وہ زیادہ خوش نہیں ہوئی تھیں۔ وہ اب بھی یہی چاہتی تھیں کہ امثال بھائی صاحب کی بات مان لے لیکن وہ یہ بھی اچھی طرح جانتی تھیں کہ وہ

امثال ہی کیا جو اپنے کے عہد توڑ دے۔ اس کی حاسب دو تین پہلے شروع ہو چکی تھی۔ ثروت بیگم نے بھی خاموشی اختیار کر لی تھی، جیسے حاسب چل رہا تھا وہ ویسا ہی چلنے دینا چاہتی تھیں لیکن سب وہی نہیں ہوتا جو ہم سوچتے ہیں۔ زندگی کبھی بھی صرف چین ہی نہیں دیتی دکھ درد اس زندگی کا حصہ ہوتے ہیں اور یہی ہوتا تھا ایک رات خاموشی سے بھائی صاحب نے زندگی سے منہ موڑ لیا تھا۔ ان کے سر پر سے جیسے کوئی مضبوط سایہ اٹھا گیا تھا۔ زینب اور ان کی حالت ایک سی تھی، دونوں ہی کا بھائی انہیں چھوڑ کر چاچا تھا۔ وہ اب کسے بھائی صاحب کہہ کر بلاتیں کس سے اپنی پریشانی بیان کرتیں۔ وہ ہی تو تھے جو ان کی ہر تکلیف کو سمجھتے تھے۔ امثال کے ہر بدلے رویے کو نظر انداز کر کے انہوں نے اسے اپنے گھر کی عزت بنانے کا وعدہ کیا تھا۔ لیکن لوگ چلے جاتے ہیں بس یادیں اور باتیں رہ جاتی ہیں۔

☆.....☆

بھائی صاحب کے جانے کے بعد اب ان کا وہاں جانے کا کوئی جواز نہیں رہتا تھا لیکن ان کی یاد انہیں وہاں لے جاتی، شروع میں تو صوبی بھابی نے کچھ نہیں کہا۔ لیکن اب ثروت بیگم انہیں اپنے گھر کی پرائیویسی میں بری لگنے لگی تھیں۔ ان سے جو برا بننا وہ ان کے ساتھ کرتی تھیں۔ حاسب بھی پاکستان شفٹ ہو چکا تھا اور وہ نہیں چاہتی تھیں کہ حاسب پر ان کے نرم رویے کا اثر ہو یا وہ بھی اپنے باپ کی طرح انہی کی خدمت میں مامور ہو جائے۔ اس کو تو ویسے ہی اپنے کاموں سے فرصت نہیں تھی وہ کیا توجہ دیتا کسی ریگن حاسب کی فطرت سے وہ اچھی طرح واقف تھیں اسی لیے انہوں نے پہلی فرصت میں ان کا داخلہ اپنے گھر میں بند کر لیا تھا۔

☆.....☆

اسے کہنی کی طرف سے دوسرے آفس میں ٹرانسفر کر دیا گیا تھا۔ بہت سے ایپلاؤز بھی اس کے ساتھ آئے تھے۔ نئی جگہ نیا آفس پھر سے اپنی اچھی ریجنیشن بنانا اسے مشکل لگ رہا تھا۔
وہ آفس کے آقا کو گھر میں مہمان کی بری طرح سے چلا رہی تھیں۔ پہلے پہل تو اسے لگا کہ کوئی ملازم ہوگا لیکن اسے نین زماں وہ کسی ملازم پر تو نہیں لگا سکتی تھیں وہ اپنے روم میں جانے کے بجائے سیدھالاؤنچ میں آیا تھا۔

”ارے دنیا جہاں کی آوارہ بیٹی ہے تمہاری، ایسا تو سوچنا بھی مت کہ میں تمہاری بیٹی کو اپنی بہو بناؤں گی۔ باسط کے خاموشی سے چلے جانے کا تم یوں فائدہ اٹھاؤ گی یہ تو میں نے سوچا نہیں تھا۔“ وہ بری طرح چلا رہی تھیں۔ اس نے آگے بڑھ کر ان کے شانوں پر اپنے ہاتھ کا باؤ ڈالا تھا۔

”کول ڈاؤن ماما۔۔۔“
”تم اپنے کمرے میں جاؤ حاسب! میں دیکھ لوں ذرا اس عورت کو پہلے تمہارے باپ کو بھڑکانا

رہی اب میرے بچوں پر نظر رکھی ہوئی ہے۔“
اس الزام پر ثروت بیگم نے تڑپ کر انہیں دیکھا۔ حاسب نے بھی ان کی طرف دیکھا اور اپنی ماں کو لیے وہاں سے پلٹا ہاتھ کے اشارے سے اس نے ملازم کو انہیں بھیجے کا کہا۔
”یہ لیس پانی پیئیں اور ریلیکس ہو جائیں۔“
حاسب نے انہیں بیڈ پر بٹھا کر پانی کا گلاس تھمایا تھا۔ انہوں نے دو گھونٹ پی کر گلاس اسے واپس پکڑ لیا تھا اور گہرے گہرے سانس لینے لگی تھیں۔
حاسب نے تاسف سے ان کی طرف دیکھا تھا۔ یہ اس کی ماں تھی وہ اپنے مطلب کے لیے کسی پر کیسا بھی الزام لگائے سے گریز نہیں کر سکتی تھیں۔ وہ اسے حقیقت سے انجان سمجھ رہی تھیں لیکن وہ انجان نہیں تھا اور ان کی اس غلط فہمی کو اس نے دور کرنے کی کوشش بھی نہیں کی تھی۔
”امی! آپ کو ضرورت کیا تھی وہاں جانے کی اور چلیں اگر چلی بھی گئی تھیں تو ضرورت کیا تھی آپ کو صبحی آنٹی سے بات کرنے کی۔ آپ اپنی طرح سمجھتی ہیں کہ وہ ہمیں کتنا پسند کرتی ہیں۔“ ثروت بیگم نے اسے ساری تفصیل سے آگاہ کیا اور پھوٹ پھوٹ کر رو دی تھیں۔
”امثال! یہ بھائی صاحب کی خواہش تھی اور میں نے سرسری سا ذکر کیا تھا۔ مجھے کیا معلوم تھا کہ وہ مجھے یوں بے عزت کریں گی۔“ امثال نے اپنا سر پکڑ لیا تھا۔
”امی! باسٹھ انگل اس دنیا میں اب نہیں رہے ہیں۔ ان کی زندگی میں صبحی آنٹی نے ان کی ہر بات کو رد کیا تھا۔ اب بھلا وہ کیوں ان کی بات مانتیں گی۔ اب آپ آئندہ وہاں نہیں جائیں گی۔ نہ ہی مجھے کوئی شوق ہے ان سے کوئی رشتہ جوڑنے کا۔“ اس نے دونوں ہاتھوں سے سر دباتے ہوئے کہا۔

آج سارا دن آفس میں اتنا مصروف گزارا تھا اس نے سوچا تھا کہ گھر جا کر آرام کروں گی لیکن ثروت بیگم کو یوں روتا دیکھ کر وہ پریشان ہو گئی تھی۔ وہ سارا وقت ان کے پاس بیٹھی باتوں سے ان کا دل بہلاتی رہی تھی لیکن انہوں نے اس بات کو اتنا ذہن پر سوار کر لیا تھا کہ رات تک وہ بخار میں مبتلا ہو گئی تھیں۔
”مس امثال! لیو پر ہیں۔“ اس نے امثال کی کیمین خالی دیکھ کر آمنہ سے پوچھا تھا جو اس کے ساتھ ہی ہوتی تھی ہمیشہ۔
”نوسر! انہوں نے انفارم نہیں کیا اور کال بھی نہیں ریسیو کر رہی ہیں۔“
”اوکے! آپ کا اگر ان سے رابطہ ہو تو انہیں آفس کے روز یاد کرا دینا کیونکہ میں کوتاہی برداشت نہیں کرتا۔“ وہ کہہ کر اپنے روم کی طرف بڑھ گیا تھا۔
آمنہ نے اس کے جانے کے بعد ایک بار پھر امثال کا نمبر ٹرائی کیا تھا لیکن اس بار بھی جواب موصول نہیں ہوا تھا۔
”وہ اس وقت کسی شدید ذہنی دباؤ کا شکار ہیں۔ ابھی ہم نے انہیں نیچر کا انکیشن لگا دیا ہے کچھ دیر بعد یہ انہیں گی توریٹیکس میں لگائیں گی۔“ نرس نے اسے تفصیل سے آگاہ کیا اور کمرے سے نکل گئی تھی۔ وہ ان کے بیڈ کے پاس رچی چیر پر بیٹھ گئی تھی رات سے ان کی حالت اتنی بگڑ گئی تھی کہ ثروت بیگم کو اسپتال شفٹ کرنا پڑا تھا۔ اس نے آنکھیں بند کرتے ہوئے کرسی کی پشت سے ٹیک لگائی تھی۔ تب ہی اسے اچانک اپنے موبائل کا خیال آیا تھا۔ اس نے فوراً اٹھ کر اپنے بیگ سے فون نکال کر چیک کیا تھا جہاں آمنہ کی لاتعداد کالز تھیں۔ ثروت بیگم کی طبیعت کی وجہ سے وہ سب کچھ ہی بھول گئی تھی۔ اس نے فوراً آمنہ کا نمبر ڈائل کیا تھا۔

”کہاں ہو امثال تم، میں کتنی پریشان ہو گئی تھی۔ تمہاری وجہ سے اور تم کال کیوں نہیں ریسیو کر رہی تھیں۔“ اس نے کال پک کرتے ہی سوال شروع کر دیئے تھے تو امثال نے اسے پوری بات تفصیل سے بتائی تھی۔
”اب کیسی طبیعت ہے آنٹی کی۔“ وہ بھی پریشان ہوئی تھی۔
”اب کافی بہتر ہیں پہلے سے۔“ اس نے سوئی ہوئی ثروت بیگم کی طرف دیکھتے ہوئے کہا۔
”امثال، تم تمہارے بارے میں پوچھ رہے تھے۔ تم جانتی ہو آفس کے کام میں وہ ذرا بھی لا پرواہی برداشت نہیں کرتے ہیں۔“
”ہاں میں جانتی ہوں لیکن مجھے امی کی اتنی ٹینشن تھی کہ میں سب کچھ بول گئی۔ میں کل آفس آ کر سر سے معذرت کر لوں گی۔“
”اوکے اپنا خیال رکھنا، میں آنٹی سے ملنے آؤں گی۔“ آمنہ نے الوداعی کلمات کہہ کر کال کاٹی تھی۔ اس نے فون بیگ میں رکھا اور ایک نظر بے خبر سوئی ثروت بیگم کی طرف دیکھا سر میں اتنا شدید درد تھا اس نے کیمین جاکر چائے پینے کا سوچا اور نرس کو کچھ دیر ان کے پاس رکنے کا کہہ کر وہ باہر آ گئی تھی۔
”امثال! آپ یہاں!“ وہ اسپتال کا بل پے کر رہی تھی۔ تب ہی اسے اپنے قریب سے آواز آئی تھی۔ اس نے گردن موڑ کر اپنے دائیں جانب دیکھا تھا۔
”سر! آپ.....!“ وہ چونکی تھی۔
”خیریت آپ یہاں کیا کر رہی ہیں؟“
اس نے پھر اپنا سوال دہرایا تھا۔
”جی میری امی باسٹھلا تڑھیں، اس وجہ سے۔“
اس نے کاؤنٹر سے فائل اٹھاتے کہا۔
”اوہ..... کہاں ہیں وہ۔“ اس نے امثال کے

آس پاس دیکھا، جہاں اسے کوئی دکھائی نہیں دیا تھا۔
”امی باہر ٹیکسی میں ہیں میں بل پے کر کے جانے لگی تھی۔ آپ یہاں کیسے۔“
”خیریت سے تو یہاں کوئی نہیں آتا، میں اپنے دوست کے والد کی عیادت کے لیے آیا تھا۔ اگر آپ کہیں تو میں ڈراپ کر دیتا ہوں۔“ اس نے آفری کی تھی جسے امثال نے مسکرا کر رد کر دیا تھا۔
”نوسر! باہر ٹیکسی موجود ہے ہم چلے جائیں گے۔“
”اوکے جیسی آپ کی مرضی۔“ اس نے کہہ کر قدم اپنی منزل کی جانب موڑے تھے۔ امثال بھی گہرا سانس بھرتی دروازے کی محبت بڑھ گئی تھی۔
امثال کو پہلی بار دیکھتے ہی وہ پہچان گیا تھا کہ یہ وہ امثال مصطفیٰ ہے جسے اس کے بابا نے اس کے لیے چنا تھا لیکن شاید وہ نہیں جان پائی تھی ایک بار وہ حاسب نے اسے بتانے کا سوچا تھا لیکن پھر اس کے عمل کا سوچ کر خاموش ہو گیا کیونکہ وہ اپنی طرح سے جانتا تھا کہ امثال ان سب کے بارے میں کیا رائے رکھتی ہے زینب پھوپھو سے اکثر اس کی بات ہوتی تھی اور وہ اسے امثال سے ملنے کے مشورے دیتی تھیں۔ وہ ہنس کر ناٹ دیتا لیکن اس دن صبحی بیگم کو یوں سب ملازموں کے سامنے ثروت بیگم کو بے عزت کرتے دیکھ کر اسے اپنی ماں کی سوچ پر حقیقتاً افسوس ہوا تھا۔ اب وہ جلد از جلد زینب پھوپھو کے ساتھ مل کر بابا کی خواہش کو عملی جامہ پہنانے کا سوچ رہا تھا۔
☆.....☆
”کل آپ آفس کہیں نہیں آئی تھیں مس امثال۔“ وہ جیسے ہی آفس پہنچی تھی حاسب نے اسے اپنے روم میں آنے کو کہا تھا۔
”سر! کل میں نے آپ کو بتایا تھا کہ میری امی

کی طبیعت خراب تھی اس وجہ سے انہیں ہوسپتلائز کرنا پڑا تھا۔“ اس نے اسے کل ہونے والی ملاقات کے بارے میں یاد کرایا۔

”کب؟“ وہ انجان بنا۔

”سرا کل شام کو ہاسپتال میں۔“ اس کا انداز اب بیزاریت والا تھا۔

”اوہ..... اچھا مس امثال! آفس کے کچھ روز ہیں۔ آپ کو انفارم کرنا چاہیے تھا۔ اس طرح تو سارے ایمپلائز اپنی من مانی ہی کریں گے۔“ اس نے امثال کے جھکے ہوئے سر کو دیکھتے ہوئے کہا۔

”سوری! آئندہ احتیاط کروں گی۔“ اس نے شرمندہ لہجے میں کہا۔ حاسب نے ایک بھر پور نظر اس کے سراپے پر ڈال دیا۔

”دیکھیے مس امثال! میں بالکل بھی ایسے لوگوں کو پسند نہیں کرتا جو میرے ہم کی ٹیبل ٹی کریں۔“ اس نے لبوں پر آتی مسکراہٹ کو دوبارے ہونے کہا۔

اب وہ اس کی حالت سے حفا اٹھا رہا تھا۔

”سرا! میں نے معذرت کی تو ہے اور میں نے شوق سے چھٹی نہیں کی تھی۔ میری مجبوری تھی۔ اسے اب غصہ آنے لگا تھا سر کی ان باتوں پر۔“

”آپ شوق سے بھی آف کر سکتی ہیں لیکن انفارم کر کے۔ خیر ابھی آپ جائیں اور اپنا کام کریں۔“ حاسب نے اس کے سرخ چہرے کو بڑھتے ہوئے کہا اور لب ناپ کی طرف متوجہ ہو گیا۔ امثال نے اپنے غصے پر ضبط کرتے ہوئے اس کو دیکھا اور باہر نکل گئی۔ حاسب کے لبوں پر مسکراہٹ ابھری تھی۔

”محترمہ کافی دلچسپ معلوم ہوتی ہیں۔“ اس نے دروازے کی طرف دیکھتے ہوئے خود کلامی کی۔

”ذہب حاسب مجھ سے ملنے آیا تھا میں تو اس کو دیکھ کر اتنی حیران ہوئی، پہلے میں سمجھتی تھی کہ وہ بھی صوبی بھائی کی طرح خود غرض یا اس کی طرح لاپرواہ ہو گا لیکن وہ تو بالکل بھائی صاحب جیسا ہے۔ اس دن مجھے لگا واقعی بھائی صاحب جو اس کے بارے میں کہتے تھے۔ وہ سب غلط نہیں تھا اس دن جب مجھ سے ہاسپتال ملنے آیا تو اپنی ماں کے رویے پر مجھ سے معذرت کر رہا تھا وہ بھائی صاحب کے کہنے کا مان رکھنا چاہتا ہے۔ بس تم جلد از جلد آنے کی کوشش کرو اور امثال کو بھی سمجھانا اتنا نیک لڑکا بھلا اسے کہاں ملے گا۔“ انہوں نے امثال کے آفس جاتے ہی ذہب کو کال کر کے ساری تفصیل سے آگاہ کیا تھا۔

”جی آپا! حاسب بہت اچھا ہے میری اس سے بات ہوتی رہتی ہے اسی سے آپ کی طبیعت کی خرابی کی وجہ معلوم ہوئی اور آپ بالکل بھی ٹینشن مت لیں۔ امثال جیسی ٹیڑھی کھیر کو حاسب خود ہی سیدھا کر لے گا اور اب آپ اپنا خیال رکھیں میں جلد آنے کی کوشش کروں گی۔“ ذہب کی باتوں نے انہیں ہلکا ہلکا کر دیا تھا ورنہ اس دن حاسب کا بھانجرا، ذہب دیکھ کر مایوس ہو گئی تھیں لیکن وہ ان کی سوچ کے عکس نکلا تھا۔

☆.....☆

”مس امثال! سچ نام ہو رہا ہے آپ گئی نہیں ایسا کریں آج آپ میرے ساتھ لہج کر لیں۔ یقین کریں آپ میری چٹنی میں بالکل بور نہیں ہوں گی۔“ حاسب نے اس کے مبین پر جھک کر کہا جہاں وہ کمپیوٹر پر کام کرنے میں مصروف تھی۔

”سوری سر! میں آپ کی کمپنی جوائن ہی نہیں کرنا چاہتی۔“ امثال نے ایک نظر اسکرین سے ہٹا کر اس کی طرف دیکھ کر کہا اور دوبارہ نظریں اسکرین پر جمادی۔ حاسب نے ارد گرد دیکھا تھا کچھ کا وقت تھا اور تقریباً سب کی سیٹ خالی تھیں۔

”ویسے ایک اور آفر بھی ہے میرے پاس آپ کے لیے۔“ اس نے جھک کر رازدارانہ انداز میں

کہا تھا۔ امثال کی انگلیاں ایک پل کو رک گئیں اور سر اٹھا کر سوالیہ نظروں سے اس کی جانب دیکھا۔

”وہ آفر سچ پر بتاؤں گا، چلیں۔“ امثال کو اس کی دماغی حالت پر شک ہوئے لگا تھا۔ دھوپ چھاؤں جیسا رویہ رکھنے والا یہ شخص اسے عجیب سا لگا۔

”مجھے آپ کی کسی آفر کی ضرورت نہیں ہے پلیز۔ مجھے میرا کام کرنے دیں۔“ اس نے بنا دیکھے کہا۔

”دیکھ لیں آپ پھر مجھے دوغلا ہونے کا طعنہ مت دیجیے گا۔“ امثال نے سخت تیور لیے اس کی جانب دیکھا۔

”سر! میں یہاں کام کر کے جاتی ہوں اگر اس کام کے متعلق آپ کو مجھ سے کوئی بات کوئی ہے تو بے شک کریں۔ ان اوٹ پناٹنگ باتوں سے اپنا اور میرا نام ضائع مت کریں۔“ اس کے سخت انداز پر حاسب نے جنوین سیکر کر اس کی جانب دیکھا تھا جہاں وہ اپنی پوری توجہ اسکرین پر مرکوز کر چکی تھی۔ وہ اسے مزید تنگ کرنے کا ارادہ ملتوی کرتا باہر کی جانب بڑھ گیا تھا۔ امثال نے ایک نظر اسے جاتے دیکھا اور سر جھٹک کر اپنے کام میں مصروف ہو گئی تھی۔

”اب کیسی طبیعت ہے آپ کی۔“ اس نے صوفے پر بیٹھتے ہوئے پوچھا۔

”اللہ کا شکر ہے بیٹا! اب کافی بہتر ہے۔“ وہ بھی اس کے پاس ہی بیٹھ گئیں۔

”آپ کا انداز کچھ اپنا اپنا سا ہے میرے ساتھ۔“ حاسب نے مسکرا کر اس کی طرف دیکھتے ہوئے کہا۔ امثال کو اپنی غلطی کا فوراً اندازہ ہوا تھا لیکن وہ اس کی اس بات پر کچھ بھی نہیں کہنا چاہتی تھی سو خاموش کھڑی رہی۔

”بیٹی، کھڑی کیوں ہیں آپ۔“ حاسب نے چیز کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا۔

”جی..... وہ دراصل امثال میرے ہی آفس میں جاب کرتی ہے۔ بس وہیں سے مجھے معلوم ہوا تھا لیکن آپ پلیز امثال کو ہماری ملاقات کے بارے میں مت بتائیے گا۔ وہ لاعلم ہے اس بات سے کہ میں ہی حاسب ہوں اور اسی وجہ سے میں اس کی غیر موجودگی میں آیا ہوں اور آپ اس راز میں میری مدد کریں گی۔“

ثروت بیگم نے حیرت اور خوشی کے ملے جلے تاثرات لیتے اثبات میں سر ہلایا تھا۔ وہ دو چار دن سے سرکارویہ نوٹ کر رہی تھی۔ جی اتنے مہربان ہو جاتے تو کبھی ایسے بن جاتے کہ جیسے جانتے ہی نہ ہوں اسے ابھن ہونے لگی تھی سر کے اس رویے سے۔ کل بھی سر نے اسے ایک آفیشل ڈنر پر اپنے ساتھ ملنے کو کہا جس کے لیے اس نے سنتے ہی انکار کر دیا وہ خفا ہو رہا تھا لیکن اسے کوئی فکر نہیں تھی۔

”بیٹی، وہ روز کے بعد وہ کہیں بھی جانا پسند نہیں کرتی تھی۔ وہ ابھی سر کے بارے میں ہی سوچ رہی تھی اس نے اس کی ٹینشن پر امثال کو اپنے روم میں آنے کو کہا۔ امثال کے چہرے کے تاثرات بگڑے تھے اسے غصہ آئے لگا تھا اس عجیب شخص کی حرکتوں پر جو اپنے کام سے ہٹ کر گفتگو کرنا پسند کرتا تھا اور اسی وجہ سے وہ اسے اب نہ ہر گننے لگا تھا۔ امثال دروازہ بنانا ک کیے اندر آئی تھی۔

”آپ کا انداز کچھ اپنا اپنا سا ہے میرے ساتھ۔“ حاسب نے مسکرا کر اس کی طرف دیکھتے ہوئے کہا۔ امثال کو اپنی غلطی کا فوراً اندازہ ہوا تھا لیکن وہ اس کی اس بات پر کچھ بھی نہیں کہنا چاہتی تھی سو خاموش کھڑی رہی۔

”بیٹی، کھڑی کیوں ہیں آپ۔“ حاسب نے چیز کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا۔

”بیٹی، کھڑی کیوں ہیں آپ۔“ حاسب نے چیز کی طرف اشارہ کرتے ہوئے کہا۔

”آپ کہیں میں سن رہی ہوں۔“ اس نے وہیں کھڑے رہ کر کہا۔ ”اتنی دور سے آپ کو میری بات سمجھ میں نہیں آئے گی پہلے ریلیکس ہو کر بیٹھ جائیں، پھر بتاتا ہوں۔“ حاسب کے دوبارہ کہنے پر اب وہ خاموشی سے اس کے سامنے رکھی چیئر پر بیٹھ گئی۔ حاسب نے اپنا گلا کھنکھار کر اس کی طرف دیکھا جو سوالیہ نظروں سے اسی کی طرف دیکھ رہی تھی۔

”میری بات کو غلط انداز میں مت لینا سادہ سا بندہ ہوں، سیدھی سی بات کروں گا۔ شادی کرس گی آپ مجھ سے۔“ اس کی آنکھیں حیرت سے پھیلی تھیں اور ایک پل لگا تھا اس کا چہرہ سرخ ہونے میں۔ حاسب بغور اس کے تاثرات نوٹ کر رہا تھا، وہ ایک جھکے ہوئے نظر سے دیکھ رہی تھی۔

”میں آپ سے اس کام میں کمر کرتی ہوں آپ کی ایپلائی ہوں آپ کی راز پر یہ غلام نہیں جس کے ساتھ آپ جیسا چاہیں گے ویسے کریں گے۔ لعنت بھیجتی ہوں میں آپ کی اس سادی پر اور آپ کی اس جاب پر بھی۔“ وہ کہہ کر رکی نہیں تھی۔ حاسب کے لبوں کو ایک دلفریب مسکان نے چھوا تھا۔ ”محترمہ تو کافی گرم مزاج لگتی ہیں۔“ اس نے سر دھڑکے ہوئے کہا۔ وہ غصے سے آفس سے نکلی تھی۔

”دل تو چاہ رہا تھا، اس شخص کا منہ بوج لوں سمجھتا کیا ہے خود کو جیسے دل چاہے گا ویسے ہی مجھے استعمال کرے گا۔“ وہ غصے میں بڑبڑاتی بنا آس پاس کی فکر کیے چلی جا رہی تھی۔ وہ گھر آیا تو زینب پھوپھو آئی ہوئی تھیں، وہ خوشی سے ان سے لپٹ گیا بابا کی وفات کے بعد وہ اب آئی تھیں۔ بابا کے بعد ایک وہی تھیں جو اسے ان کی طرح ہی سمجھتی تھیں جو اس سے فون پر بھی ڈھیر دن باتیں کرتی تھیں۔ ورنہ تو اس کی فکر بھی اس نے ملازم سے ماما

کے متعلق پوچھا تو پتا چلا کہ وہ ہمیشہ کی طرح باہری ہیں وہ پھوپھو کو فریض ہونے کا کہہ کر اپنے روم میں آ گیا تھا۔

☆.....☆

”میں نے جاب چھوڑ دی ہے۔“ اس نے کھانا کھاتے ہوئے بتایا۔

”یہ کوئی نئی بات نہیں ہے تم جہاں بھی جاب کرتی ہو وہاں کا ماحول تمہارے مطابق نہ ہو تو تم ایسا ہی کرتی ہو۔“ وہ جو ثروت بیگم کے سخت ری ایکشن کے بارے میں سوچے پٹھے تھی ان کے اسٹے بیٹھے طنز پر انہیں دیکھ کر رہ گئی۔

”میری نانو تو چھوڑو ان جاب وغیرہ کو اور شادی کر لو اور آج کل میں زینب بھی آجائے گی اپنے جانے والوں میں اس نے تمہارے رشتے کی بات چلائی ہے اور کہہ رہی تھی کہ ایک فیملی تو ملنا چاہتی ہے تم سے۔ میں نے تو کہہ دیا کہ مجھے تو کوئی اعتراض نہیں، ہمیشہ تم نے اپنی سن مانی کی ہے اب اس معاملے میں، میں تمہاری بات نہیں سنوں گی میں نماز پڑھنے لگی ہوں تم کھانا کھالینے کے بعد برتن دھو کر رکھ دینا۔“ وہ اپنی بات کہہ کر ساتھ ہی اسے ہدایت دیتی وہاں سے چلی گئیں۔ امثال کھانے سے ہاتھ روک کر انہیں دیکھ رہی تھی۔ وہ تو ان کے اس فیصلے کے سامنے احتجاج بھی نہیں کر سکتی تھی۔

”حاسب! تم مسز فریض کے تو ملے ہی ہو گے وہ ہمارے این جی او کی بہت سرگرم خاتون ہے۔“ اس نے ان کی بات پر سر ہلایا تھا وہ کیسے بھول سکتا تھا اس عورت کو جس نے اس کی ماں کو اس لائن میں اپنے ساتھ کھڑا کیا ہوا تھا صرف اپنی خواہشات اور اپنے مقصد کو پورا کرنے کی خاطر۔

”بیٹا! وہ اپنی بیٹی کی شادی تم سے کرنا چاہتی ہے۔ میں نے تو کہہ دیا کہ مجھے کوئی اعتراض نہیں ہے۔

اور تمہیں بھی کوئی اعتراض نہیں ہوگا اور آج شام تم جلدی آ جانا۔“ انہوں نے اپنے گھر ایک چھوٹی سی تقریب رکھی ہے وہیں ہم اناؤلس بھی کر دیں گے۔“ اس کے چہرے کی طرف دیکھے بنا اپنا فیصلہ اسے سن رہی تھیں۔ حاسب نے کل سے ان کی طرف دیکھا تھا۔ نائٹ سوٹ میں ملبوس وہ اتنی صبح صرف اسے اپنا فیصلہ سناتے اٹھی تھیں۔ ارادہ شاید پھر دوبارہ سونے کا تھا، ورنہ اس نے کب دیکھا تھا انہیں اتنی صبح جاگتے ہوئے۔ وہ اپنی تیاری ترک کر تان کے عین سامنے آ کھڑا ہوا تھا۔

”میرا رشتہ تم سے چکا ہے آج سے چھ ماہ قبل بابا کی موجودگی میں اور مجھے ابھی طرح پتا ہے کہ مجھے کیا کرنا ہے۔“ اس نے کیوں سے اپنی بات کہی تھی۔ صبوحی بیگم کی آنکھوں میں غصے کی لہر ابھری تھی۔

”تم اس دو ٹوٹے کی لڑکی کے لیے میرے سامنے کھڑے ہو جاؤ گے۔“

”مما! وہ دو ٹوٹے کی لڑکی نہیں ہے وہ بہت اہمیت رکھتی ہے میری زندگی میں اور سب سے بڑھ کر وہ بابا کی خواہش ہے اور میرے لیے ان کی خواہش کا احترام لازم ہے۔ آپ نے تو پوری کوشش کی تھی مجھے ان سے دور رکھنے کی لیکن آپ ناکام رہیں بہتر ہوگا کہ آپ اپنی ضد اور انا ختم کر کے میرے ساتھ ان کے گھر چلیں میرا رشتہ لے کر۔“ وہ اپنی بات کہہ کر ان کے سامنے سے ہٹ کر دروازے کی طرف بڑھا۔

”میرا گھر ہے اور یہاں وہی ہوگا جو میں چاہوں گی تم میرے فیصلے سے ہٹ نہیں سکتے۔“ انہوں نے غصے سے کہا۔

”مما! آپ کا فیصلہ اس بھائی نے رد نہیں کیا تھا اور ان کا انجام سب دیکھ رہے ہیں۔ ان کی لائف ڈسٹرپ ہو کر رہ گئی ہے۔ شادی کے بعد اور میں خود

اپنے ہاتھوں سے اپنی زندگی برباد نہیں کر سکتا ان کی طرح۔“ اس نے انہیں بنا دیکھے کہا۔ صبوحی بیگم نے غصے سے اس جانب دیکھا جو ان کی جانب پشت کیے کھڑا تھا۔ وہ تو اسے بہت سیدھا اور ان ماں بیٹی سے انجان سمجھ رہی تھیں لیکن وہ بھی اپنے باپ کی طرح زیرک نگاہ رکھنے والا تھا۔

☆.....☆

اس کے اندازے کے عین مطابق وہ آج آفس نہیں آئی تھی۔ وہ سیدھا اپنے روم میں آیا تھا۔ صبوحی بیگم سے صبح ہونے والی بحث نے اسے ان سے اور بدگن کر دیا تھا بچپن سے لے کر آج تک بابا نے ہی اس کی فکر کی تھی۔ اس کی ماں کو تو کبھی اس کا خیال بھی نہیں آیا تھا اور اب وہ چاہتی تھیں کہ وہ انہی جیسی کسی لڑکی سے شادی کر لے، اس کے لیے بھی انہوں نے اپنے سرکل کی لڑکی کو چنا تھا۔ نتیجہ کیا ہوا تھا کہ وہ سب سے ہی دور ہو گیا تھا، اس اپنی بیوی کی آئے دن کی حرکتوں سے وہ بھی اب اکتا گیا تھا لیکن وہ اپنی زندگی میں وہ سب نہیں چاہتا تھا۔ بابا سے جب سے بھی اس کی بات ہوتی تھی تو ان کی گفتگو میں امثال کا ہی ذکر ہوا کرتا تھا۔ اپنے ذہن میں اپنی لائف پارٹ کا جو عکس اس نے سوچا تھا، امثال اس پر پورا اترتی تھی، اس نے کچھ سوچتے ہوئے زینب پھوپھو کو کال کر کے شام کو تیار رہنے کا کہا۔ اب وہ بالکل دیر نہیں کرنا چاہتا تھا۔ زینب آنٹی کے فون آنے کی دیر تھی اور امی کی انرجی قابل دید تھی، وہ حیرت سے ان کی تیاری دیکھ رہی تھی وہ اسے بھی ساتھ ساتھ کسی نہ کسی کام کی ہدایت دے رہی تھیں۔ وہ ان کی کسی بھی ہدایت کو نوٹس کیے بنا خاموشی سے لاؤنج میں بیٹھی نیوز پیپر ز کا جائزہ لے رہی تھی۔

”تم اب تک یہاں بیٹھی ہو، میں نے تمہیں کہا تھا کہ لاؤنج کی صفائی کر کے تھوڑی سیٹنگ چنچ

کردو۔“ اس نے سر اٹھا کر لاؤنج کا جائزہ لیا تھا وہاں اسے کوئی کمی محسوس نہیں ہوئی تھی جسے وہ ٹھیک کرتی۔

”امی! کیا ہو گیا ہے آپ کو ایسے خاص لوگ آ رہے ہیں جس کے لیے آپ یہ سب کر رہی ہیں۔“ اس نے نیوز پیپر زلیٹے ہوئے پوچھا۔

”نہیں آ رہی ہے۔“
”تو اس میں کوئی نئی بات تو نہیں۔ وہ آتی رہتی ہیں اور ہاں اتنا کچھ خاص انتظام کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ ویسے بھی میں اس وقت جاب لیس ہوں۔ جب تک مجھے کوئی جاب نہیں مل جاتی ہمیں اپنا بجٹ کنٹرول کرنا ہوگا۔“ ثروت بیگم نے کڑھے تیوروں سے اپنے پرے گھبرا۔

”تمہیں زہب کے آگے اعتراض ہے یا پھر میرے انتظام کرنے پر۔“
”ایک ہی بات ہے۔“ اس نے کڑھے اچکائے تھے۔

”تم یہ سب چھوڑ دو اور جو کام میں نے کہا ہے وہ کرو اور کوئی ڈھنگ کا سوٹ پہن لینا، زہب اسے نہیں آ رہی ہے۔“ وہ کہہ کر وہاں سے چلی گئی تھیں۔ اس نے دونوں ہاتھوں میں سر گرا لیا۔
”یہ امی بھی ناکسی کی بھی باتوں میں آ جاتی ہیں۔“

زہب آنی آ چکی تھیں لیکن وہ ابھی تک کچن میں ہی موجود تھیں۔ تھوڑی ہی دیر پہلے امی اسے چائے لانے کا بھی کہہ چکی تھیں۔ اس نے ایک نظر اپنے چلیے پر ڈالی۔

”امی نے خواہنا وہ اتنی تیاری کرادی میری۔“
اس نے کوفت سے سوچا۔

لاؤنج سے باتوں کی آوازیں آ رہی تھیں۔ وہ ٹرائی ٹیٹی چہرے پر بیزاریت کا تاثر جمائے وہ وہاں آئی تھی۔ اس نے با آواز سب کو سلام کیا تھا

اسے دیکھ کر باتوں کا سلسلہ رکا تھا۔ اپنے سامنے بیٹھے شخص کو دیکھ کر اسے حیرت کا شدید جھٹکا لگا تھا۔ اس نے بے یقینی سے زہب آنی کی طرف دیکھا، جو اس کے سلام کا جواب دے کر اب امی کے ساتھ باتوں میں مصروف ہو گئی تھیں۔ اس کی گرفت ٹرائی پر کمزور پڑی تھی۔ سامنے بیٹھا شخص اپنی فتح پر مسکرا رہا تھا۔ اس کی یہ دِل جلانے والی مسکراہٹ امثال کو شدید تاؤ دلارہی تھی۔ وہ ان سب کا گیم پلان کچھ چکی تھی۔ وہ ٹرائی وہیں چھوڑے کچن میں آئی تھی۔ دونوں خاتون نے حاسب کی طرف دیکھا جو انہیں تسلی دیتا اس کے پیچھے آیا تھا۔

فرنیچ سے ٹیک لگائے وہ اپنے آنسو صاف کر رہی تھی۔ کتنی آسانی سے سب نے مل کر اسے بے وقوف بنایا تھا۔ کاش کے وہ ایک بار اس کے نام پر بھی غور کر لیتی تو اتنی آسانی سے اس کے ہاتھوں بے وقوف نہ بنتی، جتنا وہ خود کو غفلند سمجھتی تھی، سب غلط فہم وہ اس سے کہیں زیادہ غفلند لگا تھا۔ امی

اور زہب آنی کو اس نے اپنی باتوں میں کب ملایا اسے اس بات کی بھنک بھی نہیں پڑنے دی تھی۔ اسے سچ سوچ کر اور رونا آنے لگا تھا۔ حاسب نے کچن کے دروازے پر کھڑے ہو کر اس کی طرف دیکھا اور گہرا سانس لے کر اس کے سامنے آکھڑا ہوا تھا۔ امثال نے آج بھر سر اٹھا کر دیکھا اور دروازے کی جانب بڑھی لیکن اس کی یہ کوشش حاسب نے اس کا ہاتھ پکڑ کر ناکام بنادی تھی۔ اس نے اپنا ہاتھ چمڑانے کی کوشش کی لیکن مقابل کی گرفت مضبوط تھی۔

”ہاتھ چھوڑیں میرا۔“ اس نے غصے سے کہا تھا۔

”آتم سوری امثال! میرا مقصد ہرگز تمہیں ہرٹ کرنا نہیں تھا۔“ امثال سختی سے لب بھیجے اس کی طرف دیکھ رہی تھی۔

”تمہارا دل اپنی طرف سے صاف کرنے کے لیے میں نے یہ سب کیا، میں جانتا ہوں کہ تم مجھے ممانعت کی طرح کا سمجھتی ہوگی۔ پھو لوار بابا سے تمہاری خبر مجھ تک پہنچتی رہتی تھی۔ میں تمہیں پہلی نظر میں پہچان گیا تھا کیونکہ بابا تمہاری کوئی نہ کوئی تصویر بھیجتے رہتے تھے اور تب ہی میں نے تمہارے چہرے کو حفظ کر لیا تھا۔ میں تم سے محبت کا کوئی بہت بڑا دعویٰ نہیں کر سکتا، نہ ہی چاند تارے تو ڈر کر لانے جیسا فضول کام میرے بس میں ہے۔ میں ایک عام سا بندہ ہوں اور تمہیں پا کر اپنی عام سی زندگی کو خاص بنانا چاہتا ہوں۔“ امثال نے خاموشی سے اس کی بات سننے کے لیے اس کا ہاتھ جھکا تھا۔

”ہو گیا نا آپ کا شوق اب آپ جاسکتے ہیں۔“ اس نے حاسب کی طرف سے رخ موڑ کر کہا۔

”ابھی کہاں شوق پورا ہوا ہے، ابھی تو شوق کا ابتدا ہے آگے آگے دیکھئے ہوتا ہے کیا۔“ حاسب نے اسے شاہوں سے پکڑ کر اس کا رخ اپنی جانب کرتے ہوئے کہا۔ وہ فوراً اس کے ہاتھ اپنے شانوں سے ہٹائی پیچھے ہٹی تھی۔ حاسب نے مسکراہٹ دباتے اس کی طرف دیکھا تھا۔

پہلے تو یوں تھا کہ محبت کی ضرورت نہ تھی مجھے اب یوں ہے کہ محبت نے فرصت نہ دی مجھے اس نے امثال کی طرف جھک کر سرگوشی کی تھی اس کا چہرہ سرخ پڑا تھا۔

”اتنا کیوں ایٹی ٹیڈ دکھا رہی ہو، اگر کسی اور لڑکی کی میں اتنی محبت کرتا تو اس نے فوراً مان جانا تھا۔“

”تو کر لیں کسی اور لڑکی کی محبت میں نے کب روکا ہے۔“

”تم ہی نے تو روکا ہے۔“ اس نے امثال کے چہرے پر آئی لٹ کو کان کے پیچھے کرتے ہوئے

کہا۔ امثال نے اس کی اس حرکت پر اسے گھورنا چاہا لیکن اس کی آنکھوں کی چمک نے اسے نظریں جھکانے پر مجبور کر دیا تھا۔

”کیوں باہر موجود خواتین کو تم شک میں مبتلا کر رہی ہو، اب مان بھی جاؤ۔“ اس نے بے بسی سے کہا تھا۔

”میں آپ کو پسند نہیں کرتی کجا کہ آپ کے گھر میں آپ کے ساتھ رہنا تو دور کی بات ہے۔“ اس نے ایک ایک لفظ چاکر کہا تھا۔

”چلو دور کی بات کو فریب لے آتے ہیں تمہیں میرے گھر جانے پر اعتراض ہے کیا خیال ہے میں رخصت ہو کر یہاں آ جاؤں۔ پھر سب ہنسی خوشی رہیں گے۔“ اس نے شرارت سے کہا۔ نہ چاہتے ہوئے بھی اس کی اس عجیب بات پر وہ مسکرا دی تھی اور حاسب کو حوصلہ ملا تھا۔

”چلو تم بھی اس بات سے ایگری ہو میرا اتنا نام و بسٹ کیا، اب جلدی سے کھانا لگاؤ بھوک کے برا حال ہے۔ مستقبل میں نہ جانے کیا کرو گے تم نے یہ سب کیا۔“ اس کی کوئی بھی بات سنے بنا وہ کچن سے نکلا اور امثال نے کچھ کہنے کے لیے لب کھولے تھے اور تب ہی وہ کھاتے ہوئے مڑا تھا اور وکٹری کا نشان اسے دیکھنے کے نظروں سے اوجھل ہوا تھا۔ وہ اس کے پیچھے پر مسکرا دی تھی۔

باسط انکل دینا سے جاتے ہوئے بھی اس پر ساری زندگی کے لیے ایک احسان کر گئے تھے جس کا قرض وہ کبھی بھی نہیں اتار سکتی تھی۔ باہر سے آتی آوازوں نے اس کا دل سکون سے بھر دیا تھا۔

نفرت سے بھرا دل محبت کی راہ پر گامزن ہوا تھا، جتنا وہ اس کی طرف سے بدظن تھی، اس کی باتوں نے اسے اتنا ہی اپنائیت سے ہمکنار کیا تھا، زندگی میں خوشی کا مطلب اسے آج معلوم ہوا تھا۔

☆.....

زندگی بھول کر سہیت شہر

”ضیاء کی کوئی پسند نہیں ہے میں نے اس سے درشہوار کا ذکر کیا وہ کچھ بولا نہیں، ہاں یا نہ میں کچھ نہیں کہا تھا میں نے اس لیے اچانک کہہ دیا۔“



”آپ اپنے رشتے داروں میں بھی تو بھائی کی کر سکتی تھیں درشہوار کا ہی انتخاب کیوں کیا۔“ وہ پھر سوال اٹھانے لگی۔

”میں نے درشہوار کو دیکھا وہ بہت کچھ دار اور سلجھی ہوئی بڑھی لکھی لڑکی ہے۔ مجھے ضیاء کے لیے اچانک سے اچھی لگی، رشتے داری میں تو میرے ایک ہی بھائی ہیں ان کے بھی چار بیٹے ہیں، سب کینیڈا میں رہتے ہیں اور کوئی ایسا رشتہ دار نہیں جن کی لڑکی سے کی جانی، رہی کنول وہ ضیاء سے بڑی ہے۔“ انہوں نے سب کچھ اسے وضاحت اور تفصیل سے بتایا۔

”آگیا ضیاء۔“ نکلیل احمد اسے لے آئے تھے جو شاید ابھی آفس سے نکلا تھا، تھکا تھکا بھی لگ رہا تھا۔ دونوں ہی چونک گئیں۔

قسط نمبر 24



”کیا ہوا ہے یہاں تم رو دھو کیوں رہی ہو۔“ ضیاء کو بھی دیکھ کے پریشانی ہوئی اور نیل فر کے پاس آ کے بیٹھا۔
”اس لیے رو رہی ہے تمہیں شاید در شہوار پسند نہیں اور میں اچانک سے فیصلہ سنانے تم پر زبردستی در شہوار کو مسلط کر رہی ہوں۔“ ثریا ہنسنے لگی تھیں۔

”وہ جس قسم کی لڑکی ہے اسے میرا جیسا بندہ ہی ہینڈل کر سکتا ہے بہت شوق ہے جاب کرنے کا ایڈونچر کا سب نکال دوں گا میں۔“ وہ شوخ سے لہجے میں کہتے ہوئے اسے بہلانا لگا تھا۔
”ضیاء سے ہم دونوں نے پہلے پوچھا تھا پھر ہی تمہاری امی نے کہا اور پھر اس وقت جو پتویشن بھی مجھے اچانک سے کہنا پڑ گیا ورنہ میں نے سوچا تھا زبیدہ سے پہلے ذکر کروں گی پھر ہی بات آگے بڑھاؤں گی۔“
”ویسے امی آپ نے میری بہت کلاس لگائی ہے آپ کی ہونے والی بہو تو میرے سر چڑھ جائے گی۔“ وہ بھی مسخرے پن سے گویا ہوا۔

وہ چاروں ہی ہنسنے لگے تھے۔
”انتارونا دھونا تمہارے کار کیا مجھ سے آگے پوچھ لیتیں۔“ اس نے نیل فر کے سر پر چپٹ لگائی۔
”وہ در شہوار تو مع کیے جا رہی ہے۔“

”گلتا ہے اس کی کلاس بھلے لگاں پڑے گی۔“ وہ معنی خیزی سے مسکرانے لگا اسے صاف گو پر اعتماد در شہوار نے آفس میں چند دن جاب کر کے اسے متاثر کیا تھا اسے در شہوار میں اور لڑکیوں کی طرح اٹھلانا اور اتارنا نہیں تھا۔

”اچھا بس تم پھر فضول اس سے بولو گے۔“ ثریا نے اسے سرزنش کر دیا۔
”دیکھنا نیو کیسے امی کو اپنی بہو کی فکر ہوئی۔“ اس نے اس کے کہا، اکثر وہ اسے نیو بھی کہنے لگا تھا۔
”آج تمہاری ماں اتنی اونچائی پر آگئی ہے میں اسے سلام کرتا ہوں۔“ عقیل احمد تو دوسرے سے آنکھوں میں محبت لیے ان سے مخاطب تھے۔

”کیا ہو گیا ہے آپ کو بلکہ آپ کا شکریہ مجھے اتنی اچھی بیٹی دے دی۔“ انہوں نے ہینپ کے نیل فر کو گلے سے لگالیا۔
”ہیلو ایوری باڈی، پچھو آئی ہیں اپنی فیملی کے ساتھ سوائے فہر بھائی کے۔“ حمزہ نے ان کے دروازہ انداز میں اطلاع دی۔

”زہرہ آئی ہے چلو آج زہرہ سے بھی مجھے بات کرنی ہے۔“ انہوں نے عقیل احمد سے اشارے سے پوچھا۔
انہوں نے سر ہلایا۔

”اوہو کنول بھی آئی ہے بہت خوشی ہوئی۔“ ثریا باری باری دونوں سے گلے ملی تھیں۔
کنول نے لپک کے نیل فر کو گلے سے لگایا جو بلیو کپڑوں میں خاموش خاموش سی تھی۔
”ہم نے سوچا تمہیں مبارک باد دے آئیں ضیاء کے رشتے کی۔“ زہرہ نے خوش ہو کے کہا۔
”ہاں بھی خیر مبارک۔“ ثریا نے مسکرا کے کہا۔

”یامی ہم بھی آج آپ سے کچھ مانگنے آئے ہیں۔“ کنول کی معنی خیز مسکراتی نگاہیں نیل فر کے صبح چہرے کو دیکھ رہی تھیں۔

عقیل احمد اور رحمن علی بھی ان کی جانب متوجہ ہو گئے تھے۔

ضیاء چنچ کرنے چلا گیا تھا اور حمزہ زبیدہ اور در شہوار کو بلانے گیا ہوا تھا۔
”خیر بیت تو ہے کیا مانگنا ہے۔“ ثریا کی حیات بیدار ہو گئیں۔ انہیں کچھ کچھ جیسے سمجھا آ گیا تھا۔
”بہت قیمتی چیز مانگنے آئے ہیں ماموں جان ہمیں کیا ملے گی۔“ کنول تو تہمید باندھنا شروع ہو گئیں۔ نیل فر کے دل کی دھڑکنیں تیز ہونے لگی تھیں۔ رونے سے پہلے ہی آنکھیں سوجھ رہی تھیں جو اس نے جھکائے ہی رکھی تھیں۔

”ارے تم کہاں چلیں بیٹھو۔“ کنول نے اسے پکڑ کے بٹھالیا۔

”میں خود بھائی جان اور بھائی سے کہے دیتی ہوں۔“ زہرہ بولیں۔

”میرے خیال میں آپ کو اتنی ذمہ داری نہیں چاہیے بول بھی دیں۔“ رحمن علی نے بھی مداخلت کی۔ ثریا کنول کے اشاروں کو سمجھ گئی تھیں۔

”نیل فر کو فہر کے لیے مانگنا چاہتے ہیں۔“ زہرہ نے کہا۔

نیل فر کے تو گھبراہٹ سے سینے آگئے۔ وہ تو گولی کی طرح وہاں سے نکلی تھی۔

”زہرہ تم نے میرے دل کی تپتی ہے میرا بھی یہی دل تھا ہماری نیل فر تمہارے گھر بیٹا ہی جائے۔“ ثریا تو خوش ہو گئیں۔

”کیا واقعی! زہرہ کو جیسے یقین ہی نہیں آ رہا تھا۔

”ہاں یہ مجھ سے کئی دفعہ کہہ چکی ہیں کہ انہیں نیل فر کے لیے اچھا لگتا ہے ہماری بیٹی انہوں میں جائے تو اچھا ہے کم از کم ہم اس سے ملنے تو آ جایا کریں گے بلکہ عقیل احمد نے بھی تائید کی۔“
”فہر کی مرضی بھی ہے یا نہیں۔“

”ماں! فہر کی مرضی کے بغیر تو ہم یہاں آ بھی نہیں سکتے تھے۔“ کنول کو یہ خوشی ہوئی تھی ماموں مامی نے ذرا بھی پس و پیش سے کام نہیں لیا تھا بلکہ اپنا عندیہ بھی ظاہر کر دیا تھا۔

زبیدہ بھی آگئی تھیں ان سے بھی سلام و دعا ہوئی انہیں بھی خوشی ہوئی نیل فر کے رشتے کا سن کے۔

”میں مٹھائی تو منگواؤں منہ بیٹھا ہونا ضروری ہے۔“ ثریا اٹھنے لگیں۔

”ثریا ایک منٹ۔“ زہرہ اٹھ کے ان کے پاس آئیں۔

”میں نیل فر سے پوچھ لوں۔“

”ارے زہرہ، نیل فر کو کیوں اعتراض ہوگا۔“ ثریا نے کہا۔

”پھر بھی میں چاہتی ہوں۔“

”زہرہ ٹھیک کہہ رہی ہے۔“ عقیل احمد کو بھی یہ معقول لگا تو وہ بھی تائید کرنے لگے تھے۔

”ابھی بیٹھ تو جاؤ۔“ ثریا کو خوشی بھی بہت ہو رہی تھی۔ خوشگوار ماحول میں منہ بھی بیٹھا کر دیا گیا ایک دوسرے کا، ضیاء نے فہر کو بھی بلایا تھا۔

نیل فر اور در شہوار تو اپنے اپنے روم میں بند ہو گئی تھیں۔ نیل فر کو تو یقین نہیں ہو رہا تھا اس کا پر پوزل اتنی جلدی آ جائے گا، دل کی دھڑکن تیز ہو گئی تھی۔ جانے فہر سے وہ نفرت چڑھا کر کہاں چلی گئی تھی۔

اسے یقین تھا ابو اور امی بھی اس رشتے سے انکار نہیں کریں گے کیونکہ انکار کی کوئی معقول وجہ بھی ہونا ضروری ہوتی ہے اور فہر برسر روزگار ایک معقول تنخواہ پر جاب کر رہا تھا اور اس کی ذہانت کے بل پر اسے لمبے

پروجیکٹ ملتے تھے۔ وہ بھی کیوں انکار کرے، کیا برائی ہے؟ اندر سے آواز آئی، نیل فرگھرا کے اٹھ گئی۔
 ”اگر تم صرف اس کی دیوانگی کو ایڈوینس کے انکار کر دیتی تو سب کو بچھڑا دیتی اور فہر نے اپنے رویے سے اور
 نہ ہی اس نے اپنے رویے سے یہ ظاہر کیا، وہ دونوں بھی ملتے رہتے تھے۔ وہ ایسا کچھ کرنا بھی نہیں جانتی تھی جو
 اسے اتنے عرصے بعد خوشیاں ملی ہیں وہ روٹھ جائیں۔ اب کتنا خوش ہیں اور امی وہ تو قعات سے بڑھ کر نکلیں وہ ان
 کامان تو بھی توڑ ہی نہیں سکتی۔ فہر اس سے محبت ہی تو کرتا ہے اس وقت اس لیے ڈری اب کو خبر ہوگی تو خاندان میں
 اس کی وجہ سے دو ریاں نہ آجائیں۔
 ”اب تو اس کا پاپوزل سب کی رضامندی سے آیا ہے سب کتنا خوش بھی ہیں، نہیں وہ انکار بغیر جواز کے تو
 منع کر ہی نہیں سکتی۔ آسے سوچیں ہی آئے جارہی تھیں۔ اسے بلایا بھی جا رہا تھا۔ کنول بلانے آئی تھیں مگر اسے
 شرم اور جھجھکتی آ رہی تھی وہ نہیں آئی کیونکہ اس نے سن لیا تھا فہر بھی آیا ہے اور اس لیے فہر کا سامنا، اس کے پسینے
 چھوٹ کتے تھے، اسے سوچ سوچ کے پسینے آ رہے تھے۔

☆.....☆

اس دن جنین کی مائی اپنے بیٹل سیت آگئی تھیں۔ آریکہ نے رات کے کھانے پر کافی اہتمام کیا تھا سب ہی
 سراہ رہے تھے اسے جنین میں لگے ہوئے سیت بھی بہت ہوئی تھی، کافی رات تک وہ سب گئے تھے وہ جن سیت
 میں لگ گئی۔

”آریکہ! یہ سیت چھوڑ دینا مائی آئے گی دھو لے گی۔“ انیسہ نے اسے زبردستی بچن سے نکالا۔
 ”امی! مائی کا آپ کو پتا ہے بہت گندے دھو لے گی، اسے بچن کا کام کروانا تو مائی سے پسندی نہیں تھا۔
 ”میں خود اس کے سر پر کھڑے ہو کے دھو لوں گی تم جاؤ ایک بج رہا ہے خواہ مخواہ جنین پھر تم پر اور مجھ پر غصہ
 کرے گا، جب مائی لگاتی ہے تو تم لوگ کیوں کرتی ہو۔“
 ”انہیں کیا پتا بچن کے کاموں کا۔“ وہ کاؤنٹر صاف کر رہی تھی۔ اسی دوران جنین بوجھل آنکھوں سیت آگیا۔
 ”آپ دونوں بچن میں ہیں آخر آپ دونوں کو بچن سے اتنا عشق کیوں ہے؟“ جنین بھلا ہوا بولا تھا۔
 آریکہ تو بڑبڑا رہی تھی۔ اور بیج ایمبر اینڈ کی شرٹ اور فان کلر کی ایمبر اینڈ شلوار پر مگر فل سادو پیشہ شانوں پر
 ڈالے جنین کو اپیل ہی کر رہی تھی سوچا تھا روم میں آئے گی تو اس کی تعریف میں کچھ بولے گا مگر یہاں تو منظر
 ہی دوسرا تھا۔

”ہر وقت بس بچن بچن کوئی دوسرا منظر ہی نہیں آتا، دنیا کے اور بھی کام ہیں وہ کیوں نظر نہیں آتے۔“ وہ تو
 بھڑک ہی اٹھا تھا۔

انیسہ اور آریکہ کے تباہ پاؤں پھول گئے تھے وہ غصہ ہی اتنا ہو رہا تھا۔
 آریکہ اس کے اشارے پر بھی سمجھ رہی تھی کاؤنٹر پر اس نے کپڑا رکھا۔
 ”آپ کی طبیعت ٹھیک نہیں رہتی ہے مگر کاموں میں لگی رہیں گی اور یہ آپ کی بہوانہوں نے یہ سوچ لیا ہے
 یہ اس گھر میں صرف کاموں کے لیے آئی ہیں۔“

”اچھا، اچھا اتنا غصہ نہیں کرو۔“ انیسہ نے اس کی پشت پر ہاتھ رکھا۔
 ”امی! حد ہوتی ہے ہر بات کی، یہ ماسیاں کس لیے لگاتی ہیں کام کروائیں ان سے۔“
 آریکہ نے اس کو بوجھلہ نظروں سے دیکھا اس کا غصہ ہی ایسا تھا۔

”آریکہ تم جاؤ۔“ انیسہ نے اسے اشارہ کیا۔
 ”بچن میں، میں نے آپ دونوں کو دیکھا تو یاد رکھیے گا اچھا نہیں ہوگا۔“
 ”کھانا کون بنائے گا۔“ آریکہ کو اس کی پابندی پر غصہ آیا۔

”بازار سے آئے گا۔“ وہ بولا۔
 ”میں تو بازار کا کھاتی ہی نہیں ہوں۔“

”تم تو صرف بحث کرتی ہو۔“ وہ ہی خود پیر پختا ہوا چلا گیا۔
 ”بہت غصہ آ رہا ہے۔ میں نے کہا بھی تھا چلی جاؤ۔“ انیسہ کو جنین کے موڈ کی بھی فکر ہوئی۔

”میں تو سوچنے لگی جلدی جلدی کر لوں گی۔“
 ”تم دیکھ نہیں رہی ہیں ان لوگوں کے سامنے بھی تمہیں یہی کہہ رہا تھا برتن ماسی سے دھلوانا۔“

”آپ نے کھانا ماما چھیڑے جارہی تھیں بیگم کا اتنا خیال۔“ وہ مائی کے فقرے اور نصیحت بھی نہیں بھولی
 تھی۔

”بھائی تو ایسے ہی مذاق کوکتی ہیں۔“ انہوں نے کہا۔
 ”تم جاؤ کہیں پھر چیتا ہولنا جائے گا۔“

آریکہ کو اندر جاتے ہوئے ڈھلک رہا تھا کہ کوئٹہ غصہ ناگواری سب کچھ تھا وہ اندر آئی تو وہ روم میں ٹہل رہا تھا
 دونوں کی نگاہوں کا تقصاد ہوا آریکہ تو بڑبڑا رہی تھی۔

”سارے جہاں کی فکر کرنا، میاں تو تمہیں لے کر تو نظر آتا ہے، اسے چولہے میں ڈالو۔“ وہ طنز میں پھر
 چیخا۔

”سو سو۔“ وہ منمنائی۔
 ”تمہیں صرف سو سو کہنا آتا ہے مگر اس کے تقاضے سمجھ نہیں آتے۔“ بیکٹ ٹراؤزر پر سلیو بلیس وائٹ شرٹ

میں اس کا کسرتی جسم نمایاں ہو رہا تھا۔
 ”میں چھوڑ کے تو آگئی ہوں سب کام پھر کیوں اتنا ہاتھ پور ہے ہیں۔“ ڈرتے ہوئے بیکٹ کشتائی کی۔

”ہاں احسان کیا آپ نے کام چھوڑ کے کیونکہ اس سے پہلے تو ہوتے نہیں تھے آپ ہی کرنے آتی تھیں۔“
 ”ارے آپ تو مجھ پر چیخے ہی جارہے ہیں۔“ وہ بھی بھنا ہی گئی۔

”میرا موڈ خراب کر رہی ہو۔“ وہ اس کے اطمینان پر کس کے ہی رہ گیا۔
 ”میں موڈ خراب کرتی ہوں، پر کام سارے آپ کی مرضی کے ہوتورہے ہیں اب کیا پریشانی ہے۔“

”پریشانی یہ ہے کہ میں تمہیں نظری نہیں آتا۔“
 دونوں ہاتھ پشت پر جمائے وہ اس پر اتنا برہم ہو رہا تھا کہ آریکہ کے آنسو نکلنے والے تھے مگر ضبط سے کام

لیا۔
 ”تم کیا سمجھتی ہو میرے کاموں کی ذمہ داری نبھاتے اپنے فرائض پورے کر رہی ہو۔ میاں بیوی کے بھی

کچھ تقاضے ہوتے ہیں سوائے کام کے علاوہ ہمارے درمیان کوئی بات ہی نہیں ہوتی۔“
 ”مثلاً کیسی بات۔“ وہ جان کے بھی انجان بن گئی، جنین کے تو تن بدن میں آگ ہی بھر گئی۔

”میرا سر تم پر میں کتنی محنت کر لوں، کتنا سبھا لوں تم ویسی ہی رہو گی۔“ وہ تملکا کے بیڈ پر دھڑ سے لیٹا۔

آریکھ نے اسے حسرت بھری نگاہوں سے دیکھا۔ وہ جنین کی معنی خیزیاں اور منہم کوئی سب سمجھ رہی تھی مگر اپنی حیاء کے حصار میں ایسی جکڑی ہوئی تھی وہ کوئی بھی ایسی بات نہیں کر رہی تھی جو اسے مطمئن کر دے۔

”تم ایسے ہی وقت گنوا رہنا۔“ پھر طنز میں ڈوبا تیر پھینکا۔

”مطلب کیا ہے؟“ وہ پھر باز پرس پر اتر آئی۔

”سنوتم لائٹ بند کرو اور سو جاؤ کیونکہ ہمیں پھر صبح بچن کی رونمائی کرنی ہوگی۔“

”وہ تو کرنی ہوگی ناشتہ کوئی جن بنانے آئیں گے۔“ وہ بھی جھٹ بولی۔

”مجھے تو ناشتہ کرنا نہیں ہے۔“ وہ جتنا غصہ ہو سکتا تھا اسے دکھا رہا تھا۔

”ٹھیک ہے نہیں کیجئے گا۔“ وہ بیڈ سے اٹھی، عشاء کی نماز بھی پڑھنی تھی ورنہ تو کافی ہو گئی تھی۔

”آپ نے نماز پڑھ لی۔“

”ہاں مسجد میں جا کے پڑھ کے آیا ہوں یقین نہیں تو آس پاس کے لوگوں کو گواہی کے لیے لے آؤں۔“ بھنا

کے طنز ہی کر رہا تھا۔

”گواہی کی کیا ضرورت ہے آپ نے نماز اللہ کے لیے پڑھنی ہے اسے یقین کی ضرورت نہیں۔“ وہ وضو

کرنے واش روم میں جانے لگی ڈرنگ ٹیبل پر پھولوں کے ٹنکن اور گجرے رکھے تھے جھیننی جھیننی خوشبو نے اسے

اپنی سمت مبذول کر لیا، اٹھا کے اس کی خوشبو بھی اور مسکراتی نگاہ غصہ میں بھنا نے حین پر ڈالی۔

”میں آپ کے تقاضے سب سمجھتی ہوں۔“ وہ سو کر نے چلی گئی۔ جتنی دیر اس نے نماز پڑھی وہ کروٹیں ہی بدلتا

رہا، لائٹ آن ہونے کی وجہ سے نیند نہیں آ رہی تھی۔

شہیر نے پورا دن اسپتال میں مصروف گزارا تھا۔ شام سات بجے اسے فراغت ملی تھی اس نے سوچا واپسی

میں نوید احمد کا چیک اپ بھی کرتا چلے بعد میں آتا مشکل لگ رہا تھا۔ شہیر نے سوچا کہ

گاڑی کا رخ شہر بل کے خوب صورت فرنیچر بنگلے کی سمت کر دیا تھا۔ شہیر کا جب ہے رمضان سے رشتہ لگا تھا

دونوں میں ابھی تک بھی گفتگو نہیں ہوئی تھی۔ اسپتال کی جانب بھی اس کی شہر بل نے چھوڑا وہی اسی لیے بھی

دونوں کا آنا سامنا نہیں ہو رہا تھا۔

گاڑی گیٹ کے آگے رکھی تھی۔ گیٹ پر بیٹھے چوکیدار نے گیٹ کھول دیا تھا وہ اتر کے اندر آیا۔

جانے کیوں اسے گھر میں خاموشی لگ رہی تھی۔ وہ روش سے گزرتا اندر آیا تیل بجائی کافی لمحوں بعد گیٹ کھلا،

سامنے نیوی بلیو پرنٹڈ ڈکڑوں میں ملبوس رمضان سے تصادم ہو گیا۔ شہیر کے معنی خیز لب مسکرائے رمضان حیران بھی

ہوئی، شہیر آج خلاف معمول وقت سے پہلے ہی آ گیا تھا۔

”میں اسپتال سے جلدی فارغ ہو گیا تو سوچا انگل کا چیک اپ کرتا چلوں۔“ شہیر نے وضاحت دی۔

”ابو گھر میں ہی ہیں۔“ اس نے سر پر اچھل جایا ہوا تھا۔ مشرقی تصویر بنی رہتی تھی شہیر کو اس کی یہی سادگی تو

متاثر کرتی تھی۔

”السلام علیکم!“ نوید احمد کے روم میں داخل ہوتے اس نے سلام کیا۔

”علیکم السلام۔“ وہ سیدھے ہو کے بیٹھ گئے۔

رمضان اس کے لیے چائے وغیرہ لینے چلی گئی تھی۔

”گھر میں بڑی خاموشی ہے، باقی لوگ کہاں ہیں۔“ شہیر کو تشویش بھی ہوئی۔

”باقی لوگ آپ کے گھر گئے ہیں آپ کی امی کئی دفعہ کال کر چکی تھیں تو شہر بل کے ساتھ سب ہی چلے

گئے۔“ انہوں نے بتایا۔

”اوہ اچھا۔“ شہیر مسکرا دیا کیونکہ سمجھ گیا تھا ضروری کو شادی کی تاریخ و سکس کرنی ہوگی۔ وہ نوید احمد کا

چیک اپ کرتا رہا۔

اس دوران رمضان شرمائی شرمائی اس کے لیے چائے اور کچھ لوازمات بجائے ٹرے لے آئی اور بیڈ کی سائیڈ

ٹیبل پر رکھ دی۔

”چائے کی تو مجھے طلب ہو رہی تھی۔“ اس نے معنی خیزی سے کہا۔

وہ نگاہ جھکائے جھکائے روم سے چلی گئی۔

”آپ کی آنٹی کو نبیب احمد سے بھی ماہا اور شہر بل کی رخصتی کی تاریخ و سکس کرنی تھی میں نے کہا جو کام ہے

جلدی کر لو تو اچھا ہے نکاح تو ہو ہی گیا ہے خستی کیوں اٹکا رکھو۔“ وہ گویا ہوئے۔

”جی درست فرمایا آپ نے۔“ شہیر چائے کے سب لینے لگا۔

کافی دیر تک وہ ان سے کچھ بھلی گفتگو کرتا رہا، نوید احمد صحت مندی کی جانب گامزن ہو گئے تھے۔ وہ چل

پھر بھی سکتے تھے سیدھے ہاتھ میں خود مسئلہ تھا وہ حرکت ڈراما کرتا تھا۔

”فریوٹر اپس رات کو نو بجے چھانے کا۔“ اس نے ساتھ ہی اجازت بھی چاہی۔

”بیٹا آپ کا بہت شکریہ جو وقت نکال دیا۔“ انہوں نے اس کے ہاتھ تھامے۔

”وقت نکال کے نہیں آپ کے لیے تو میرے پاس وقت ہی وقت ہے۔“ اس نے خوش دلی سے مسکرا کے

کہا۔

”مجھے خیر ہے جو تم جیسا لائق فائق میرا داماد بنے جا رہا ہے۔“ وہ اس کی خوبیوں کے دل سے قائل تھے۔

شہیر تو جھینپ کے ہنسنے لگا۔

”اچھا میں چلتا ہوں گھر میں ان سب سے بھی ملاقات کر لوں گا۔“ وہ اچھا سا مذاں سامان اٹھائے بلیک پینٹ

اور آف وائٹ شرٹ میں ملبوس گر بس فل لگ رہا تھا۔ ان سے سلام کر کے وہ نکل آیا تھا۔

رمضان کو دیکھا، وہ لاؤنچ میں ٹی وی بیٹھی ہوئی دیکھ رہی تھی وہ ایک لمحے کو راکر، رمضان کے لڑبڑا کے ٹی وی

آف کر دیا۔

”رمضان آپ میرے اور اپنے رشتے سے خوش تو ہیں؟“ اس نے آخر پوچھ ہی لیا۔

وہ تو گھبرائی اور کھڑی ہو گئی، اس کے سامنے تو جانے کیوں اسے شرم و حیا محسوس ہو رہی تھی۔

”آپ خوش ہیں؟“ اس نے نگاہ جھکائے جھکائے الٹا سوال کیا۔

”اتنا خوش ہوں کہ دل کرتا ہے تم جلدی میری ہو جاؤ۔“

رمضان کے غازے دیکھنے لگے کیونکہ وہ اتنا بے باک بھی ہوا جو نہیں تھا۔

”خیر تو تمہاری خواہش ہے شہر بل کی رخصتی سے پہلے تم شادی نہیں چاہتی ہو، میں تمہاری خواہش کا

احترام کرتا ہوں۔“ وہ بڑی دلچسپی سے اس کی گھبرائی گھبرائی صورت دیکھ رہا تھا۔

”میں نے بھی اپنی اوقات سے زیادہ خواہش کی ہی نہیں۔“

”آئی آپ کیا سارے کام بھالی سے کرواتی ہیں۔“ نمرہ نے برجستہ ہی بشری سے کہا۔
”ارے کام سے مراد میرا مطلب ہے وہ فائل تیار کرنی ہے پیکچر کی۔“ اس نے کالج جوائن کر لیا تھا اس لیے
پیکچر کی تیاری کرنی تھی۔

”ارے بیٹا آپ نے یہ کالج میں جاب کیوں کر لی۔“ نگہت نے کہا۔

”میرا شوق ہے۔“ وہ بس اتنا ہی بولی۔

”بعد میں چھوڑ دے گی۔“ دادی جان نے جھٹ کہا۔ کیونکہ وہ خود لڑکیوں کے جاب کے خلاف تھیں۔

ماہا تو سلگ کے ہی رہ گئی۔ وہ نگہت کے سامنے کسی بھی بدتمیزی کا مظاہرہ نہیں کرنا چاہتی تھی اس لیے وہ
معذرت کر کے اٹھ گئی۔

اتنے میں شبیر آگیا تو شہزیل اس کے پاس چلا گیا دونوں گفتگو میں لگ گئے۔

احمد نواد اور شیراز کے ساتھ باہر نکلا ہوا تھا وہ دونوں بال کرے میں بیٹھے تھے۔

”تم لوگ ادھر آرہے تھے تو مجھے کال کر دیتے میں انکل کا چیک اپ کرنے گیا تھا۔“ اس نے بتایا۔

”بس یاد آئی لوگ کئی مجھے لے کے چلو رخصتی کی تاریخ پوچھوں گی اور پھر رخصتہ آئی بھی کئی بار کال کر چکی
تھیں امی اس لیے ہی آئی ہیں۔“ اس نے ذرا وضاحت سے سمجھایا۔

”پھر تمہارا معاملہ کہاں تک پہنچا۔“ وہ پوچھنے لگا۔

”پاروہ تو سیدھے منہ بات ہی نہیں کر رہی ہیں۔“ شہزیل نے بتایا۔

”تم دو تین ہفتہ اس کی گدی پر بیٹھ کر دیکھو ہو جائے گی۔“ شبیر نے مسخرے پن سے کہا۔

”اتنا آسان ہوتا تو کر لیتا۔“ وہ بول رہی تھی۔ ”وہ بول رہی تھی۔“ وہ بول رہی تھی۔

”تمہارے شروع سے مسئلے ہی پیدا کیے ہیں، اب اسے پریشانی کیا ہے۔“ شبیر کو ماہا کے غصے کی سمجھ نہیں
آ رہی تھی۔ پہلے وہ شہزیل کے لیے مرنے پر تھی آج اس کا کالج ہو گیا ہے تو بھی اسے پریشانی ہے۔

”یہ تو مجھے پتا نہیں۔“ اس نے انجان بن کے لاعلمی ظاہر کی جسے کمال نے تو ماہا کو ساگ دیا تھا کسی دوسری
لڑکی کا ذکر کر کے کہ وہ اس سے اس حد تک بدگمان تھی کہ کال پر آواز تک نہیں سننے لگی تھی۔

”یا تو اپنا معاملہ خود نمٹا مجھے تو ابھی پتا نہیں کیونکہ یہ سر پھری لڑکی ہے۔“ وہ بھی ماہا کی حرکتوں سے عاجز آ گیا
تھا۔

”ظاہر ہے میرا معاملہ ہے میں بی بی منشاؤں کا مجھے نہیں پتا تھا بہنوئی کے درجے پر جاتے ہی تمہاری بیویوں ہی
بدن جائے گی۔“ شہزیل نے مصنوعی غصے سے کہا۔

شبیر کا بے ساختہ قبضہ پڑا تھا۔

”تم بھی تو میرے بہنوئی ہو۔“

”ہاں یہ تو ہے۔“ اس نے سر ہلایا۔

”اچھا یہ تو بتاؤ تمہاری ڈیٹ فکس ہوئی۔“

”بشری آئی تو کہہ رہی ہیں جسے جو مناسب لگے رکھ لیتے ہیں۔“ اس نے بتایا۔

”چلو تو مبارک ہو۔“ اس نے شہزیل کو ہاتھ ملا کے مبارک باد دی وہ جھینپ گیا۔

”میں سب جانتا ہوں تم جیسی سادہ سوچ سمجھ رکھنے والی لڑکیاں بہت محتاط ہوا کرتی ہیں، مجھے تم میں یہی اچھا
لگا کبھی زیادہ کی تم نے خواہش کی ہی نہیں۔“ وہ اس کی خوبی کا دل سے قائل تھا۔

”آپ دل سے راضی ہوئی ہیں نا کوئی زبردستی تو نہیں۔“ وہ پوچھ رہا تھا اپنے دل کی تسلی کر رہا تھا۔

”آپ نے آپ کی امی نے یہ دل سے رشتہ جوڑا ہے اور میں قدر کرتی ہوں بلکہ مجھے خوشی ہے میں بھی کسی
کے لیے اتنی اہمیت رکھتی ہوں۔“ وہ اعتراف کر رہی تھی۔

”یہ سب آپ کی صابروشا کر طبیعت کی وجہ سے اور والے نے آپ کو نوازہ ہے کیونکہ آپ اسی قابل تھیں
آپ نے بھی اپنے متعلق سوچا ہی نہیں۔ بلکہ اللہ تعالیٰ نے آپ کے متعلق بہت اچھا سوچا ہوا تھا جو سارے سلسلے

بناتا گیا۔“ وہ بول رہا تھا۔

اور مرضہ اس کی باتوں کے سحر میں کھونے لگی۔

”میں نے آپ سے دل سے رشتہ جوڑا ہے اور انشاء اللہ میری جانب سے آپ کو کوئی شکایت نہیں ہوگی آپ
نے جتنے دن پریشانیوں میں گزارے اب آپ خوشیوں میں گزاریں گی۔“ وہ اسے یقین دل رہا تھا اور مرضہ اسے

بے یقینی سے دیکھتی تھی اس نے کتنی بار اپنی محبت کا اظہار کیا مگر اس نے شبیر کی کبھی حوصلہ افزائی نہیں کی صرف اس
لیے کہ وہ اوقات نہیں دیتی اور اس پر اپنے گھر والوں کی ذمہ داری بھی بھائی کو ڈھونڈنا تھا مگر اسے کیا خبر تھی اس کا

بھائی بھی شبیر کے گھر سے ملے گا، اور والدہ ہی جانتا ہے کیا کرنا ہے اور کیسے کرنا ہے سلسلے اسباب اس نے
بنائے اور سب کچھ اسے مل گیا۔ جتنا اللہ کا شکر کرتی کم تھا۔

”بولیے میری ہمراہی میں خوش رہیں گی۔“ وہ جذب سے پوچھ رہا تھا۔

مرضہ نے سر ہلایا۔

”شکر میرے مرضہ۔“ وہ فوراً مسرت سے مسکرایا۔

”اوکے، چلتا ہوں انشاء اللہ جلد ملیں گے۔“ وہ اس کے ہاتھ پر اپنے پیار کا لمس دے کے اس کو آنے والے
خوب صورت سننے سوچ گیا اور وہ خواب کی سی کیفیت میں مبتلا ہوئی۔ کتنا صاف گو انسان ہے جسے سب کی پرواہ

ہے وہ اس کی خواہش کا بھی احترام کرتا ہے۔ مرضہ مسکراتے لگی۔

☆.....☆

وہ سب کے درمیان خاموش بیٹھی تھی۔ شہزیل کی نگاہیں اس پر تھیں جو اورنج کپڑوں میں بیوں نگہت اور نمرہ
کے پاس ہی بیٹھی تھی۔

شہزیل اس کے غصے کی شدتوں سے واقف تھا جسے اس اجانک نکاح سے بھی اعتراض تھا، اس سے تو وہ کال
تک بر بات نہیں کر رہی تھی، نگہت رخصتی کی ڈیٹ فکس کرنے آئی تھیں اور شاپنگ کے لیے بھی بات کر رہی تھیں۔

”ایسا کریں گے ماہا اور مرضہ کو ساتھ لے چلیں گے۔ دونوں اپنی اپنی شاپنگ کر لیں گی کیونکہ فوری بعد
شبیر اور مرضہ کی بھی شادی ہے۔“ رخصتہ قدرے توقف کے بعد گویا ہوئیں۔

”جیسے آپ سب مناسب سمجھیں۔“ نگہت متفق ہو گئی تھیں۔ ماہان لوگوں کے درمیان سے اٹھنے ہی لگی تھی۔

”آپ تو بھاگے لگتی ہیں، بات ہی نہیں کرتی ہیں۔“ نمرہ نے اسے زبردستی بٹھالیا۔

”وہ مجھے کچھ کام ہے۔“ ماہا کو اصل میں شہزیل کی موجودگی پر غصہ آ رہا تھا جو اطمینان سے بیٹھا مزے ہی لے
رہا تھا۔

تھی اور بھر منیب احمد بھی نہیں جانتے تھے جو ماہا چاہ رہی ہے وہ ہو کیونکہ جو غلط فہمی اس نے پال رکھی تھی اسے شہزاد نے خود ہی دور بھی کرتی تھی۔

”ہاں جیسے میں نے اس لڑکی کو بغیر نکاح کے رکھا ہوا ہے اپنے پاس، لا حول ولاقوہ آپ ذرا بھی سوچتی سمجھتی نہیں ہیں کیا کہہ رہی ہیں۔“ وہ برامان کے گویا ہوا۔

”اگر اتنا برا لگ رہا ہے تو میرا بیچھا چھوڑ کیوں نہیں دیتے۔“ وہ تنگ گئی۔

”آپ نکاح کو مذاق سمجھ رہی ہیں میں تو فردوں نکاح، سوچا ہے آپ کے امی اور بابا پر کیا گزرے گی بیٹی کا اگر نکاح ٹوٹ جائے۔“ وہ اسے جذباتی طور پر گھیر رہا تھا تا کہ کسی طرح تو وہ کہیں رکے۔

”تمہاری امی نے کیوں نکاح کی شرط رکھی۔“ وہ چپ ہو گئی تھی۔

”میں کیا کرتا بھری مٹھل میں انہوں نے نکاح کا کہہ دیا۔ میرے لیے یہ شاک سے کم نہیں تھا کیونکہ مجھے خبر تھی آپ بھی راضی نہیں ہوں گی اگر میں انکار کرتا تو میری ماں کو افسوس ہوتا کہ میں نے ان کی حکم عدولی کی اگر میں نے فرما کر داد کی کا ثبوت دیا تو کیا غلط کر دیا۔“ اس نے ایسے کہانی بنائی سنجیدہ لہجے میں ماہا نے چونک کے اسے دیکھا جس نے پہلے ہی سنجیدگی طاری کی ہوئی تھی۔

”میرے پاپا تو جانتے تھے انہوں نے منع نہیں کیا۔“ وہ پھر خط اٹھانے لگی۔

”وہ خود حواس باختہ ہوئے کیونکہ داد کی جان نے کہا نیک کام میں دیر کیسی۔“

”تم جھوٹ بول رہے ہو۔“ اسے جیسے نہیں آ رہا تھا۔

”ٹھیک ہے آپ ہی یہ رشتہ توڑیں میں تمہارا نظریہ ایسا نہیں کروں گا بقول آپ کے مجھ پر اس گھرانے کے بہت احسان ہیں مجھے بڑھایا لکھایا جوان کیا میں کیوں ٹوکا دوں۔“ اس نے طنز ہی کیا۔

ماہا اب سچے سچے کہہ گئی۔ وہ احسان جتنا کہے تو بہت بھولتی ہوئی۔

”تم کسی دوسری لڑکی کو پسند کرتے ہو اپنی امی کو کیوں نہیں بھائیساں۔“ اس نے کہا۔

”ماہا جلیز! آپ سے میں نے راز رکھنے کو کہا انسانیت کے ناطے امتحان میرا ساتھ دے سکتی ہیں، وقت آنے پر میں آپ کو خود اس رشتے سے آزاد کر دوں گا۔“ اس نے کن انکھیں سے اسے دیکھا۔

”واٹ مجھے آزاد کر دو گے ابھی کچھ دیر پہلے تو میرے ماں و باپ کی عزت کا بڑا خیال کر رہا تھا۔“ وہ وغرانے لگی۔

”آپ کی ہی خواہش ہے جب کہ اس گھر کے کسی بھی فرد کی یہ خواہش نہیں کہ میرا اور آپ کا رشتہ ختم ہو۔“ وہ بولا۔

”تم اس لڑکی کا کیا کرو گے جو تمہاری محبت میں مری جا رہی ہوگی۔“ اسے اندیکھی لڑکی سے جلن اور حسد اور رقابت محسوس ہو رہی تھی۔

”میں نے ابھی اسے سمجھا تو لیا ہے گردہ آپ سے ملنا چاہتی ہے۔“

”مجھ سے کیوں ملنا چاہتی ہے۔“ اسے حیرانگی ہوئی۔

”کہتی ہے میں دیکھنا چاہتی ہوں کون ہے وہ لڑکی جس نے میری جگہ لی ہے جب کہ میں نے اسے سمجھایا ہے انہوں نے کوئی جگہ نہیں لی، مجھے ان سے کوئی محبت نہیں ہے وہ ہی کرتی ہیں مجھ سے مگر میں تم سے کرتا ہوں اتنی کہ تمہیں میں ہر وقت اپنی آنکھوں اور دل میں محسوس کرتا ہوں۔“

”ارے ماہا کو منائے بغیر کیسے یہ سب۔“ وہ خود گھبرایا ہوا تھا۔

”ارے شہزاد تم یہاں آ کے بیٹھ گئے، نگہت آئی ہیں سلام و دعا تو کر لیتے۔“ رخشندہ نے برامان کے اسے سرزنش ہی کی وہ شرمندہ ہو گیا کیونکہ شہزاد کو دیکھ کے ہال کمرے میں آ گیا تھا جھٹ انہیں سلام کرنے ڈرانگ روم میں چلا گیا۔

اور شہزاد تو موقع کی تلاش میں تھا کسی طرح تو ماہا سے مل لے۔

”آئی مجھے روم سے کچھ سامان لینا ہے۔“

”ارے بیٹا تمہارا اپنا گھر ہے کہاں ہر وقت اجازت لیتے ہو جاؤ جیسے پہلے جاتے تھے۔“ رخشندہ نے اس کی جھجک اور ہچکچاہٹ پر کہا۔

وہ مسکرا کے سر نہ جانے لگا۔ بلیو جینز پر اس کا ٹی بلیو شرٹ میں ملبوس وہ ڈشنگ لگ رہا تھا۔ وہ زینہ عبور کر گیا اس کے بعد ماہا کا روم تھا۔ اس نے پیچھے بھی جھانکا کوئی اوپر تو نہیں دیکھ رہا۔ دروازے کا لاک گھمایا اور اندر تھا۔

وہ راننگ ٹیبل پر بیٹھی کچھ لکھ رہی تھی ضرور پچھری تیاری کر رہی تھی۔

”تم بہتر ادھر بیٹھ گئے۔“ وہ تو شدت غم و غصے سے منہ بیاں چیتتی ہوئی چیخ سے اٹھ گئی۔

”کول، کول۔“ اس نے ہاتھ اٹھا کے اسے ریلیکس کرنا چاہا۔

”دفع ہو جاؤ یہاں سے آؤ گئے تم نے میرے ساتھ وہ کیا جو کوئی دشمن بھی نہیں کرتا۔“

”ارے ایسا کیا کر دیا۔“ وہ انجان بولا۔

”زیادہ بوموت۔“ ماہا کی آنکھوں میں تو جیسے غصہ اترا ہوا تھا بس نہیں چل رہا تھا شہزاد کو جان سے مار دے جس نے نکاح کر کے اس کے سارے ہی راسے سے دور کر دیئے تھے۔

”یہ نکاح کی کیا بکواس کی، مجھے بتایا بھی نہیں اتنا برا دھوکا دینے والے ماں و باپ کے ساتھ بھی دھوکا۔ ارے یہ میری شرافت ہے جو میں نے امی اور بابا کو بتایا نہیں انہیں لگتا شاک لگ گئے ہاں پس کے جوان کیا، بڑھایا لکھایا اور اس نے ان کے ساتھ یہ کیا ارے تم تو میری محبت کے قابل ہی نہیں تھے اور میری بددعا ہے وہ لڑکی تمہیں ساری زندگی نہ ملے۔“ غصے میں تو اشتعال میں آ گئی جو کچھ ہاتھ میں آ رہا تھا وہ سب ہی پر اٹھا لے جا رہی تھی اور وہ اپنا بیچاؤ کیے جا رہا تھا۔

”دھوکے باز انسان چلے کیوں نہیں جاتے ہو میری زندگی سے۔“ وہ دھاڑی اور پھر جھجک کے وہ دوبارہ اپنی چیخ پر سر پکڑ کے بیٹھ گئی رونے بھی جا رہی تھی۔

شہزاد اچانک افتادہ پر تو بوکھلا ہی گیا۔ اس نے اپنی چیزیں بھی اٹھا اٹھا کے ماری جو شہزاد کے چوٹ پہنچا گئی تھیں پورا کمر اس کا جنگ کا سماں پیش کر رہا تھا۔

”مجھے کیا پتا ہے کہ یہ نکاح ہو رہا ہے میری امی تو بھند ہو گئی تھیں نکاح کے لیے۔“ وہ معصومیت سے اسے بتانے لگا۔

”تمہارے منہ میں زبان نہیں تھی کسی دوسری لڑکی کے ساتھ منہ کالا کر چکے ہو۔“ وہ تو جو منہ میں آ رہا تھا کہہ جا رہی تھی۔

شہزاد کو اس کے چڑینے، کھسینے پر مزاح بھی آ رہا تھا جو کس رہی تھی اور افسوس بھی ہو رہا تھا کیوں جھوٹ بولا مگر چیویشن اس وقت جو بھی اسے اچانک سے یاد آیا کہ دوسری لڑکی کا ذکر نہ کر دے جو رشتہ توڑنے پر تیار ہو گئی۔

ماہانے دانت پیسے۔
 ”شرم تو نہیں آ رہی تھیں، یہ بے ہودہ بکواس کرتے ہوئے وہ بھی میرے سامنے۔“
 ”ارے اس میں بکواس کی کیا بات ہے آپ سے میرا کوئی راز چھپا تو ہے نہیں آپ کو ہی بتاؤں گا۔“ وہ مصو
 سی صورت بنا کے بولا۔

”بتائیے اس سے ملنے چلیں گی۔“
 ”مائی فٹ، جاتی ہے میری جوتی۔“ اس نے صاف انکار کیا۔
 ”پھر ٹھیک ہے جیسی مرضی آپ کی مگر پلینز رخصتی تک سب برداشت کر لیں۔“
 ”تمہارا داماغ تو درست ہے رخصتی تک.....! بھی نہیں۔“ اس نے صاف انکار کیا۔
 ”پھر بتائیے کیا چاہتی ہیں آپ۔“

”تم بتاؤ تم کیا چاہتے ہو؟“ وہ قہقہے کے اس کے سامنے آگئی اس لمحے وہ اسے اتنی دلکش لگ رہی تھی کہ اندر
 کے جذبات سر اٹھانے لگے شہزاد نے اس کے ہاتھ پر ہاتھ رکھ کر اسے سمجھانے لگا کہ اس کا احساس یقین
 دے دے۔

مگر اس نے احساس اور یقین دیا تو اس نے یقین ہی نہیں کیا۔
 ”میں چاہتا ہوں پلینز میری ماں کا خیال کر لیں اور چپ کر کے رخصتی کروالیں۔“ اس نے مسمی سی صورت
 بنائی۔

”کچھ کام دوسروں کو خوش کرنے کو بھی تو کیے جاتے ہیں۔“
 ”کبھی نہیں چلے جاؤ تم یہاں سے خود غرض انسان۔“ شہزاد نے محرومی سے اس کی آنکھوں میں آنسو آتے
 چلے جا رہے تھے۔

”آپ کو جو کرنا ہے کریں رخصتی تو ہوگی۔“ وہ بھی مڑ گیا۔
 ”تمہارا جینا دو بھر کر دوں گی۔“ پیچھے سے ہانک لگائی۔
 ”جینا دو بھر تو ابھی بھی کیا ہوا ہے۔“ یعنی خیزی سے مسکراہٹ دبا کے بولا تھا۔
 ”اوکے چلتا ہوں معاملات طے ہو رہے ہیں۔“
 ”ہنگامہ کر دوں گی۔“ اس نے پھر دھمکی دی۔

”ہنگامہ اس وقت کیجیے گا جب اس لڑکی سے مل لیں کیونکہ اس نے آپ کی خاطر اپنی محبت چھوڑ دی ہے۔“
 اس نے جاتے جاتے پھر دھماکا کیا۔

”کیا بکواس اٹھی سیدھی بکے جا رہے ہو۔“ اسے تو اب شہزاد کی دماغی حالت پر شبہ ہی ہونے لگا۔
 ”آپ کو یہی بتانے آیا تھا وہ مجھے چھوڑ کے وہ نہیں دے کے جا رہی ہے میں آپ کے ساتھ خوش رہوں پلینز
 جاتے جاتے اس کی خواہش پوری کر دیں ایک بار مل جائیں۔“
 ”اس وقت تو تم پر پتہ اور کبہ رہے تھے مجھے آزاد کر دو گے اب اچانک سے یہ کیا؟“ وہ اس کی صورت دیکھ
 جا رہی تھی۔

”وہ تو میں نے آپ کی ضد پر کیا تھا ورنہ کون کا فریہ چاہتا ہے۔“ اسے کاجامہ اس نے زیر لب بولا۔
 ”کیا کبہ رہے ہو۔“ اسے سنائی نہیں دیا تو پھر پوچھنے ہی آگئے آگئے۔

”میں یہی کہہ رہا ہوں اس سے مل لیں پھر ہی کوئی فیصلہ کیجیے گا۔ آپ کے پاپا سے بھی بات کر لوں گا
 جیسا آپ کہیں گی۔“ اس نے اس کی نیم رضامندی پر جھٹ کہا۔
 ”ٹھیک ہے چلوں گی۔“ منہ دوسری طرف دل پر جبر کر کے چلنے کو کہہ ہی دیا۔
 شہزاد نے مسکراتے لگا اس طرح ہی وہ اپنی محبت کا اسے یقین دے گا۔ نئی زندگی کی ابتداء وہ رودھو کے تو نہیں
 چاہتا وہ ماہا کو محبت کا احساس دے کے سہینا چاہتا تھا جو اسے بچپن سے چاہ رہی تھی اور وہ نگاہ ہی چراتا تھا اس نے
 محبت بھی تو اس سے دھونس درعب سے کی تھی۔

”اوکے پھر جلد ملیں گے۔“ وہ سر پر سلوٹ کے سے انداز میں سلام کر کے چلا گیا۔
 ماہا کا دل رور رہا تھا جسے وہ چاہتی تھی وہ کسی اور کو چاہتا تھا اس نے سوچ لیا تھا اتنی بھی سفاک نہیں بنے
 گی وہ شہزاد کو اس کی محبت دے کے رہے گی اس نے جو کچھ بے وقوفی اور جذباتیت میں وقت گزارا اس کا
 تو اسے ازالہ کرنا ہی ہے۔ کچھ لوگ محبت دے کے بھی تو امر ہو جاتے ہیں۔ وہ بھی اپنی محبت کو اس کی محبت
 دے کے امر ہو جائے گی، ساری رقابت حسد و جلن کو اس نے پس پشت ڈالا تھا اپنا دل اس نے وسیع کر لیا
 تھا۔

”شہزاد! کیا ہوا جو تم مجھے مل سکے اس لڑکی کو تو مل جاؤ گے جسے تم چاہتے ہو۔“ اس نے آنکھوں سے آنسو
 ٹشو میں جذب کیے۔

وہ بہولت سے کسی وقت میں یہ رشتہ ختم کر دے گی۔ ساری ذمہ داری الزام خود پر لے لے گی مگر شہزاد کو
 کسی کے سامنے برا نہیں بنے دے گی۔

”شہزاد! یہ میرا وعدہ ہے تمہیں تمہاری محبت ضرور ملے گی جسے خود دار شخص بہت کم اس دنیا میں ملتے ہیں،
 مجھے بھی تمہاری خود داری، کم کوئی نے متاثر کیا تھا جو تمہاری طرف سے کبھی جلی جاتی اور ایک وقت میں تمہارے
 لیے خود کو ختم کرنے چلی تھی تمہاری اس وقت بھی اعلیٰ طرفی تھی تم نے کوئی دیکھ نہیں دکھایا بلکہ پاپا کے کہنے
 پر مجھ سے رشتہ جوڑنے پر راضی ہو گئے قربانیاں تو تم دیتے گئے ہو۔“

مگر اب باری میری ہے قربانی میں دوں گی۔“ اپنے چہرے کو فریش کر لیں اس نے آنکھوں میں مثبت اور
 عقلمندانہ فیصلہ کر لیا تھا۔

☆.....☆

اس دن ضیاء آفس سے خاصا تھکا ہوا آیا تھا، آتے ہی ڈاننگ ٹیمبل پر بیٹھ گیا۔ دوپہر میں لچک چکی نہیں کیا
 تھا۔ میٹنگ میں اتنا ٹائم لگ گیا تھا ٹکلیل احمد نے کسی کو بھی میٹنگ سے جانے ہی نہیں دیا اس کا سر بہت درد کر رہا
 تھا اپنا کوٹ اتار کے اس نے چیئر کی پشت پر ڈالا اور امی کی تلاش میں نگاہیں دوڑائیں اسے کچھ خاموشی سی
 محسوس ہو رہی تھی البتہ کچن سے آواز آرہی تھی ضرور ملازمہ ہوگی اس نے سوچا چائے کا کبہ دے اور کچھ کھانے کا
 بھی، شاید سر کا درد بھوک سے بھی ہو رہا ہو۔

”اوہ تم ہو۔“ گلابی کپڑوں میں ملبوس درشہوار کو دیکھ کر ضیاء کی رگ فلرافت پھڑکی اور آنکھوں میں شوخیان
 لیے اندر آ گیا۔

درشہوار تو اسے دیکھ کر گڑبڑ اسی گئی وہ حمزہ کے لیے چائے بنا رہی تھی اور ساتھ ساتھ آج رات کا سالن بھی
 وہی بنا رہی تھی۔ حالانکہ ٹریانے کتنا ہی منع کیا مگر وہ مانی ہی نہیں۔

”کیا بنا رہی ہو۔“ ضیاء نے برز پر سانس چین اور دوسرے پر پتلی سے نکلتی خوشبو محسوس کیا۔

”چائے بنا رہی ہوں اور رات کے لیے آلو قیہ۔“ اس نے جھٹ بتایا تاکہ وہ یہاں سے چلا جائے۔
اس کے چہرے کے رنگ دیکھ رہا تھا جو بدل رہے تھے۔
”گند نہیں کھانا بنا بھی آتا ہے۔“ وہ خوش دلی سے گویا ہوا۔

”جی بناتی ہوں۔“ اس نے اتنا ہی کہا۔

”چلو تو پھر مستقبل قریب میں تم ایچھے اچھے کھانے بنا کے مجھے کھلا سکتی ہو۔ ملازمہ کے ہاتھ کے کھانے قطعی پسند نہیں ہیں۔“ وہ اپنی پسند بتانے لگا۔

شہوار جھینپ گئی جو اپنی پراعتاد اور نرنبی تھی۔ ضیاء کے سامنے تو وہ پانی کی طرح بہنے ہی لگی تھی۔ شاید اس لیے اس کی ایسی تحریر انگیز شخصیت تھی جس کا پتا نہیں چلتا تھا کب خوش ہوتا ہے اور کب ناراض، اس نے پندرہ دن اس کے ساتھ آفس میں کام کر کے اندازہ کر لیا تھا اسی بناء پر اس نے جاب سے چھٹی کر لی تھی جو ضیاء کو تو خوشی ہی دے گئی تھی وہ اس کے جاب کرنے سے خوش ہی کب تھا۔

”ویسے تو بہت ترنر تھی تھیں اب کیا زبان بند ہو گئی ہے، یا الفاظ گم ہو گئے ہیں۔“ اس نے مسکرا کے طنز کیا۔

”آپ کے سامنے تو دونوں ہی چیزیں کم ہیں۔“ وہ نہ چاہتے ہوئے بھی ناگواری سے بولی۔

ضیاء نے اس کے لہجے کی ناگواری کا احساس کر لیا تھا وہ اس سے کافی حد تک خائف تھی۔

”چلو اچھا ہے میرا بھلا ہو جائے گا۔“ مختصر خیزی سے کہتے ہوئے در شہوار کے اتنے قریب آ گیا وہ تو گہرا گئی۔

”چائے میرے لیے بھی بنا دو اور پلیز روم میں لے کے آنا۔“ ساتھ ہی فرمائش بھی کر دی۔

”میں آپ کے روم میں قطعی نہیں آؤں گی۔“ جھپٹ کر کہہ کر وہ اٹھ اٹھی۔

”کیون میں بد معاش ہوں یا لنگا ہوں۔“ وہ برامان کے بولا۔

”نہیں ایسا کچھ نہیں ہے۔“ وہ جڑبڑ ہو گئی۔

”پھر روم میں دے کے جاتا میں جب تک فریش ہو رہا ہوں۔“ وہ اس کے چہرے پر غریبی نگاہ ڈال کے گیا۔

”اف تو عجیب بندہ ہے کیسے ہر بات بول دیتا ہے۔“ چائے وہ بنا رہی تھی سب کے لیے ہی حذرہ کو چنگ سے آیا تھا اس نے چائے کی فرمائش کی وہ رات کا کھانا بنا رہی تھی اب اسے ضیاء کو بھی فیس کرنا تھا۔ ٹریا نیل فر کے روم میں تھیں اس سے شادی کے سلسلے میں رضامندی لے رہی تھیں وہ اٹھ کر خود ہی باہر آ گئی تھی۔

”کیا ہوا مستقبل کی بھالی صاحب ابھی تک چائے نہیں بنی ہے۔“ حذرہ کچن میں سلپ مارتا ہوا آ گیا۔

در شہوار اس کے بھابی کہنے پر جھینپ ہی جاتی تھی۔

”پلیز یہ تو نہیں بولا کرو۔“

”کیوں چند دنوں کے بعد تو بولنا ہی ہے ابھی سے پریکٹس ہونے دیں۔“ وہ ہنسنے لگا۔

در شہوار نے اسے گھورا۔

چائے اس نے ریڈی کر دی تھی اور ڈائنگ ٹیبل پر لوازمات بھی رکھے تھے مسئلہ ضیاء کو چائے تو دینی تھی مگر اس کے لیے لیکٹ اور سینڈوچ چائے کے ساتھ رکھے اور اس کے روم کے دروازے پر ناک کرنے لگی۔

”آ جاؤ اندر۔“ ضیاء ایزی سے فافن کمر کے قمیض شلوار میں ملبوس اسے اندر آنے کا اشارہ کر رہا تھا اور وہ تو حواس باختہ ہی ہونے لگی۔

”آپ یہ ترے پکڑ لیں۔“

”سنو سائے ٹیبل ہے اس پر جا کے رکھو میں اپنے بال تولیے سے رگڑتا ہوا نظر نہیں آ رہا۔“ اس نے ذرا تیز لہجے میں رعب سے کہا وہ کھپا ہی گئی۔

”ٹرے رکھ کے بھاگ جانا چاہتی تھی۔ پہلی دفعہ اس نے ضیاء کا فرزند بیدروم دیکھا تھا۔

”رکرو کو کہاں بھاگ رہی ہو۔“ وہ راہ میں حائل ہو گیا۔

شہوار وحشت زدہ سی ہو گئی تھوک اس نے نگا، نگاہ چھٹی ہوئی تھی۔

”پلیز جانے دیں۔“ لہجہ سخت تھا۔

”میری سننے کو چاہیں سکتی ہو۔“ ایک دم ہی وہ ترنگ زدہ لہجے میں آ گیا اور در شہوار کے نرم دناؤ کا ہاتھ اپنے ہاتھوں میں تھام لے کر تھوک کرٹ کھا کے رہ گئی۔

”جی! اس پر بے نیکی کی طاری ہو گئی۔

”تم کیا سمجھ رہی ہو میں تم سے ترک کھا کے رشتہ جوڑ رہا ہوں یا میری امی کو تم پر رحم آ رہا ہے۔“ وہ بول رہا تھا۔

اور در شہوار ہونٹوں کی طرح اسے نکلنے لگی۔

”اگر ترس کھانا تو دنیا کی ساری ترس کھائے جانے والے لڑکیوں سے رشتہ جوڑ لیتا۔“ در شہوار کے ہاتھ ابھی بھی اس کے مضبوط ہاتھوں میں تھے۔

”اور پھر تم پر کیوں ترس کھاؤں تم معذور ہو یا کم عقل ہو۔“

”جی ایسا تو کچھ نہیں میں تو صرف اس لیے کہہ رہی تھی آپ کی امی کوئی پسند ہوگی۔ آپ کی امی نے شاید زبردستی اچانک سے رشتہ کر دیا۔“

”جی نہیں ایسی کوئی کہانی نہیں ہے امی نے پہلے مجھ سے پوچھا تھا، کیونکہ وہ کافی عرصے سے میری شادی کے چکر میں لگی ہوئی ہیں اور میں انہیں ٹالے ہی جا رہا ہوں پھر نیل فر کا کیس سامنے آ گیا، تو شادی وغیرہ امی سب بھول گئیں اور پھر میری نگاہ تم پر پڑی کیسے ہو تم، اسپتال میں پولیس سے معاملہ رفع دفع کروا رہی تھیں، یہ ہمارے گھر کا معاملہ ہے وہیں سے ہی میرے دل میں تم احساس جگا گئیں تم بہت نرم دل رکھنے والی ہو جو نیل فر نے اتنے قریب ہو۔“ وہ بول رہا تھا۔

اور در شہوار اس کے انکشاف سن رہی تھی وہ تو ضیاء کو اکھڑا کر بددماغ ہی سمجھتی آ رہی تھی، وہ تو اتنی گہرائی سے نسبت کو جانچ لیتا تھا وہ لنگ تھی۔

”پھر نیل فر سیٹ ہوئی۔ امی نیل فر کو لے آئیں اس کے بعد تم بھی یہاں آئیں امی کی سوچیں کچھ بدلتی رہی تھیں۔ انہوں نے بس اتنا پوچھا تھا۔ ضیاء تمہاری کوئی پسند ہو تو بتا دو ورنہ ہمیں میری پسند پر سر جھکانا ہوگا۔

اس نے امی سے بس اتنا کہا۔ امی کیا در شہوار آپ کی بہو بن سکتی ہے۔ آپ کے بیٹے کو کوئی لڑکی یوں اچانک سے پسند آ گئی ہے۔“ اس نے در شہوار کے رخساروں پر پھیلی شرم و حیا کی لالی دیکھی جو نگاہ جھکا کے ہوئے تھی وہ

اس اہمیت رکھتی تھی کسی شخص نے اسے پسند کر لیا تھا اس کی اوقات کہاں تھی۔

فرمانی



محبت ہی ختم کر دی ہے۔ صرف اپنی بھتیجی کے آنے سے ٹھک ہے ختم کریں یہ سب کھیل سنبھال کے رکھیں۔
بھتیجی کو لعلت بھیجتا ہوں میں اپنی محبت پر جس نے میری ماں کو دور کر دیا۔“ لہجے میں دکھ محرومی حسرت افسردگی
لیے وہ وہاں سے اٹھ گیا۔

زہرہ تو ہکا بکا سی رہ گئی فہر کیا کچھ کہہ گیا تھا مہاد نے ان کے شانے پر ہاتھ رکھا جو پریشان سی ہو گئی تھیں۔
”امی آپ نے بھائی کے ساتھ کچھ زیادہ ہی زیادتی کر دی ہے ایسا نہیں کریں کہ وہ دلبرداشتہ ہو جائیں
سے سارا معاملہ سیٹ ہوا ہے اگر عین موقع پر یہ بدگ گئے تو زیادہ شرمندگی ہوگی۔“ وہ انہیں سمجھانے لگا۔
زہرہ گہری سوچ میں پڑ گئیں۔

”آپ تھوڑا انہیں ریلیکس کریں ایسا کچھ بھی نہیں کریں کہ وہ ہم سب سے ہی دور ہو جائیں انہوں نے اس
وقت جو کچھ بھی کیا وہ ان کا فطری عمل تھا لیکن انہوں نے اپنی حد کبھی کراس نہیں کی۔“
رحمن علی وسط میں کھڑے تھے۔ دونوں ماں بیٹا کی گفتگو سن رہے تھے جو انہیں سمجھ نہیں آئی مگر یہ خبر ہو گئی ذکر لہر
کا ہی ہے۔

”کہا ہو گیا ہے جو اتنی کم سن ہو رہی ہے۔“ لہجہ ان کا درشت اور سنجیدہ تھا۔
وہ دونوں گڑ بڑاہی گئے اچانک سے ان کی آواز پر۔

”کک..... کچھ نہیں۔“ مہاد نے نگاہ چلائی۔
زہرہ بھی اٹھنے لگیں کیونکہ رحمان علی کے تیار جانے کا طے اور سنجیدہ تھے۔
”زہرہ مجھے بیٹھ کے بتاؤ ہوا کیا ہے کیونکہ فہر بھی غصے میں گیا ہے کوئی مسئلہ ہے نسل فر سے شادی پر۔“
”او ایسا کچھ نہیں ہے۔“ مہاد تو شیٹا ہی گیا۔

”دیکھو تم ماں بیٹا مجھے بتانے کی کوشش نہیں کرو۔ فہر نے ایسا کیا کیا ہے۔“
زہرہ تو حواس باختہ سی ہو رہی تھیں کیونکہ رحمان علی کو غصہ بھی آ رہا تھا۔
مہاد تو مل ہی گیا کیونکہ وہ انہیں کیا بتاتا زہرہ کو بتانا ہی پڑے گا۔
”وہ اصل میں.....“ وہ قدرے توقف کے لیے رکی تھیں۔

اور پھر انہوں نے ساری بات انہیں بتادی رحمان علی تو چکرا کے ہی رہ گئے۔
”کیا، اتنا کچھ ہوتا ہی نہیں چلا۔“ انہیں غصے کے ساتھ افسوس بھی ہوا۔
”میں نے فہر کو بہت لعن طعن کی ہے۔“ وہ جھٹ گویا ہوئیں۔
”آپ کو پتا ہے آپ کے بیٹے نے ہمارا سر شرمندگی سے جھکا دیا ہے وہ بچی کچھ نہیں بولی ہم سے کبھی۔“

”بہت صابر و شاکر بچی ہے میں اس سے خود بات کروں گی۔“
”شباباش ہے آپ کے بیٹے پر بہن کو بتاتا رہا اور ماں و باپ کی کوئی حیثیت نہیں۔“ وہ بہت برہم ہو رہے
تھے۔

”بلاؤ فہر کو۔“
”ابھی وہ بھی غصے میں ہے۔“ وہ تو بوکھلاہٹ کا شکار تھیں ادھر بیٹا مشتعل ہو گیا تھا ادھر شوہر اشتعال
آگے تھے۔

”اس کے غصے کی ایسی کی تھی۔“

(جاری ہے)

14 اگست کا یہ دن جو آج ہم اس قدر جوش و خروش سے منارہے ہیں تو یہ ہمیں یوں ہی حاصل نہیں ہو گیا۔ اس کے پیچھے ہمارے عظیم بزرگوں کی دن بامت کی انتھک محنت شامل ہے ان بہادر ماؤں کے جوان بیٹوں کا لہو اس مٹی میں رچا ہوا جو آج بھی سرخوں پر کھڑے ہمارے محافظوں کے قلب کو گرماتا ہے اور ان کی روحوں کو تڑپاتا ہے۔ ان بہنوں بیٹیوں کے آنسو اس زمین میں دم ہیں اور ان کی دعاؤں کی قابیں اس وطن پر تہی ہوئی ہیں جن کی عصمتیں اس ہجرت کے سفر میں تار تار ہوئیں لیکن ان کے دل سے ایمانی مہمت کے قیام کے جذبے کو ختم نہ کر سکیں۔ وہ لوگ جو ہمیں سانس لینے کو یہ آزاد فضا میں سونپ گئے ہیں غلابی کے طوق سے ہمیں بچانے کے لیے جنہوں نے خود کو قربان کر ڈالا ملت اسلامیہ کے قیام کے لیے ہر مشکل سے گزر رکھے تو ان کی یہ قربانیاں ہم پر اور قیامت تک آنے والی نسلیں پر قرض ہے۔ اور اس پاک زمین کی سلامتی و بقاء کے لیے ہر حد سے گزر جانا ہمارا فرض ہے بہتر ہے کہ ہم اسے اس "فرض عین" کو پہچانیں تاکہ روز قیامت سرخرو ہو سکیں۔ اور ہا سوال تا قیامت پاکستان کے قائم و دائم رہنے کے یقین کا تو جناب تاریخ گواہ ہے جو چیز اللہ اس کے رسول اور دین اسلام کے نام پر حاصل کی گئی ہے اس کی حفاظت کا بیڑہ اس مالک کل جہان نے خود اٹھایا ہے تو دشمنان اسلام وطن اس ملک کو صفی ہستی سے مٹانے کے ناپاک ارادوں میں کبھی کامیاب نہیں ہوں گے۔ انشاء اللہ اللہ ہم سب کا حامی و ناصر ہو۔ "پاکستان زندہ باد" کے نعرے کے ساتھ تفرختم کر کے وہ آئینج سے نیچے اتر آئی تھی اور پورا ہلال تابوں سے گونج اٹھا تھا۔

"قربانیاں کتنی دے کر آزادی آئے میں تو یہ چاہوں ساری دنیا ہی یہ جانے" زرنش رحمن تدریس و تعلیم کے شعبے سے منسلک

ہونے کے ساتھ ساتھ ایک محب وطن پاکستانی بھی تھی۔ اس کے دادا سیف اللہ ملک تقسیم ہند کے وقت اپنی زوجہ و بیٹوں ایک بٹی کے ساتھ پاکستان ہجرت کر گئے تھے۔ سفر میں مناسب طبعی سہولیات نہ ہونے کی وجہ سے ان کا چار سالہ بیٹا اور تین سالہ بیٹی راستے میں ہی دم توڑ گئے تھے اس صدمے نے سیف اللہ ملک اور ان کی زوجہ کا دل چیر ڈالا تھا مگر جیسے ہی ارض پاک پر انہوں نے پہلا قدم رکھا تھا ہر زخم پر گویا تھنڈی پچوار پڑی تھی۔ وہ بے اختیار ہی سجدے میں گر گئے تھے اور آنسوؤں نے ان کا چہرہ تر کر ڈالا تھا۔ "اے میرے مالک تیرا لاکھ شکر ہے تو نے یہ آزاد فضا نہیں ہمیں بخشیں بس اب تو ہمارے غموں پر صبر کے پھائے رکھ دے اور ہمیں ملت اسلامیہ کی خدمت کی توفیق عطا فرمائے۔" بیٹوں کا اچھا ہونا اور دلوں کا صاف ہونا آگے منزلوں کو آسان کر دیتا ہے سیف اللہ ملک کو لمبی رہائش کے لیے زیادہ خواہش نہ ہوئی بلکہ وہ ایک بہتر علاقے میں مناسب گھر لے گیا۔ تعلیم کے شعبے سے وابستہ ہو کر انہوں نے علم کی روشنی کو نو جوانوں میں خوب پھیلایا۔ کتابوں سے انہیں عشق تھا اور حب الوطنی کا جذبہ ان میں کوٹ کوٹ کر بھرا تھا یہی شوق اور جذبہ زرنش رحمن میں بھی منتقل ہوا تھا دادا کی چھوٹی سی لائبریری کی ساری کتابیں اس نے پڑھ ڈالی تھیں اور خود بھی اس ذخیرہ میں اضافہ کرتی رہتی تھی۔ باقی بہن بھائیوں کی نسبت وہ دادا سے زیادہ قریب رہی تھی تو اس کے انداز و اطوار میں سیف اللہ ملک کی طرح وقار و بردباری چھلکتی تھی اور دادا کے ہی نقش قدم پر چل کر اس نے تعلیم کا شعبہ چنا تھا۔

☆.....☆

کالج سے نکل کر اس کا رخ نازیہ کے گھر کی طرف تھا آج اس کی بی بی نکئی تھی وہی لینے وہ نازیہ کی طرف جاری تھی۔ سڑک پر بے حد رونق تھی ہر

طرف جھنڈیاں اور سبز ہلالی پرچم لہرا رہے تھے۔ بچے بچیاں سفید اور ہرے لباس پہنے ہنستے مسکراتے اسکولوں سے نکل رہے تھے بے اختیار ہی اس کے ہونٹ بھی مسکرا اٹھے تھے۔ نازیہ کے گھر سے نکل کر اسے یاد آیا تھا کہ ملازمہ رضیہ پچھلے تین دن سے غیر حاضری وہ بھی بنا ہاتے پچھٹی نہیں کرتی تھی اور اپنا کام پوری ایمانداری سے کرنے کی قائل تھی مگر اب نا جانے کیا مسئلہ اسے درپیش تھا۔ رضیہ کا گھر سڑک پار کے چھوٹی سی ہستی میں تھا جہاں رضیہ کے ہی ہم پیشہ افراد رہتے تھے۔ کچھ سوچ کر وہ اس کے گھر کی طرف بڑھی تھی چھوٹا سا محلہ بے حد گھٹے ہوئے چھوٹے چھوٹے گھر رضیہ کے گھر کا دروازہ کھلا ہوا تھا اور سامنے ٹاٹ کا پردہ لٹک رہا تھا ابھی دو چوکھٹ پر کھڑی دروازہ بجانے کا سوچ ہی رہی تھی کہ اندر سے آتی آواز نے قدم جکڑ لیے۔

"اماں کس فرشتے کے انتظار میں بیٹھی ہو تم غریبوں کے گھر صرف فاقے ہی آسکتے ہیں نہیں بچے والا تمہارا یہ من اب بہا لو جتنے آنسو بہانے میں یا نکال دو گیل سے خزانے ڈاکٹروں کا پیٹ بھرنے کے لیے دل تو کرتا ہے سارے شہر کو آگ لگا دوں ایک ایک امیر شخص کو قتل کر ڈالوں کیا خوشیوں اور آسائشوں پر بنیادی سہولتوں پر صرف ان کا حق ہے ایک غریب کے نصیب میں صرف ایڑیاں رٹ کر گھرنا لکھا ہے۔ کیسی نا انصافی ہے یہ۔" ابھی اندر بیٹھا شخص کچھ اور پی اگتا کہ زرنش اندر داخل ہو گئی اسے دیکھ کر وہ لڑکا کا اندر چلا گیا اور وہ تخت پر بیٹھی رضیہ کے پاس آگئی جو گود میں ایک چھوٹے سے بچے کو لیے آنسو بہا رہی تھی۔ بچے کا رنگ قدرے زرد ہو رہا تھا اور وہ بے حد کمزور تھا۔ "رضیہ! زرنش نے اس کے کندھے پر ہاتھ رکھا تو وہ قدرے چونک کر اسے دیکھنے لگی۔

"السلام علیکم باجی!" رضیہ نے کھڑا ہونا چاہا تو زرنش نے روک دیا اور خود سامنے بیٹھ گئی۔

"کیا بات ہے رضیہ کیا ہوا ہے۔" رضیہ کے آنسو ہمدردی پاتے ہی ایک بار پھر پوری شدت سے بہنے لگے تھے۔ "میتا نہیں باجی حکیم ٹھیک بتاتا دی نہیں اے دوا دتی ہی پر کوئی فرق نہیں پایا۔" اس کا لہجہ بے حد آرزوہ تھا۔ زرنش کچھ دیر سوچ کر ایک دم ہی رضیہ کو لے کر کھڑی ہو گئی تھی۔ جیل کو بھی اندر سے بلا لیا تھا۔ قریب ہی اسپتال میں اس کے پایا کے دوست نوید انکل ہوتے تھے۔ اسپتال پہنچ کر انہیں صورت حال بتائی اور رضیہ اور نئے کو اندر ڈاکٹر کے پاس بھیج دیا اور خود جیل کے ساتھ بیچ پر بیٹھ گئی۔

"پڑھتے ہو۔" اس نے سوال کا آغاز کیا تھا۔ "نہیں۔" سرد تاثرات کے ساتھ سامنے لگی تصویر کو گھورتے وہ بولا تھا۔

"شوق ہے پڑھنے کا۔" اگلا سوال اب کے ایک تلخ تبسم جیل کے ہونٹوں پر پھیل گیا تھا اور زرنش کی طرف دیکھ کر قدرے طنزیہ لہجے میں بولا تھا۔

"باجی جی غریبوں کے شوق نہیں ہوا کرتے۔ دو وقت کی روٹی بھی نصیب ہو جائے تاں تو بڑی بات ہے شوق پالنے اور خواجہ دیکھنے کا حق آپ جیسے لوگوں کو ہے جو پیٹ بھر رکھاتے ہیں اور چین کی نیند سوتے ہیں، ہمارے تو سارے خواب مشقت کی کڑی دھوپ میں چومرا جاتے ہیں، میرا باپ جب تک زندہ تھا تو دیکھ لے گی اسکول کی شکل بھی ابا کے جاتے ہی سارے خواب سارے شوق اس کے ساتھ قبر میں جا سوتے ہیں، سامنے بس تلخ حقیقتیں ہیں۔" بولتے بولتے اس کے لہجے میں کڑواہٹ کھل گئی تھی۔ زرنش حیران نظروں سے سامنے بیٹھے سولہ سترہ سال کے جوان کی دہلیز پر قدم رکھتے لڑکے کو دیکھ رہی تھی جس عمر میں آنکھوں میں مرتیں معصومیت پچھ پانے کی لگن ہوتی ہے جیل کی آنکھوں سے مایوسی و فک رہی تھی۔

"یہ نو جوان تو ہمارے ملک کے معمار ہیں ہمارا



آئیں۔ کائنات یکدم اس سے پہلے کرارا جواب دیتیں اور پھر اترتی رعنا ان کے پاس آ کر بولی تو وہ اسے اس کی چیزیں دینے لگی انہیں مصروف پا کر وہ جلدی سے ناول اٹھا کر اپنے کمرے میں چلی آئی۔

”آپ! میں نے سناں بنالیا ہے آپ آ کر روٹی بنادو جلدی کرو ابو آنے والے ہیں۔“ رعنا اپنے دوپٹے سے ہاتھ صاف کرتی اندر آ کر بولی تو ردائے نہایت ناگواری اور بیزار سے اسے دیکھا تھا پھر اس کے ہاتھ پکڑ کر بولی۔

”آپ! پلیز! آج آپ روٹی بنادیں سچ میں“ رعنا نے بڑھ رہی ہوں پلیز پلیز۔ وہ منت کرتے ہوئے رہی تو رعنا ایک نظر اسے دیکھ کر رہ گئی بھی کائنات نے بولیں۔

”رعنا! خدارا! یہ تم نے اس کا کہا مانا ارے سارا کام صبح سے صبح میں کرنا ہو اور اس میڈم کو سوائے رسالوں ناوولوں اور کچھ دوسرے کام کوئی کام ہی نہیں ہے میں یہ نہیں کہتی کہ رسالے پڑھنا بری بات ہے لیکن ردا بنیٹا رسالوں کے علاوہ بھی ایک دنیا ہے جہاں پر تم رہتی ہو کھاتی ہو پیتی ہو اب اس دنیا میں رہنے کے لئے کام تو کرنے ہی پڑتے ہیں آخر ایک دن تمہیں اگلے گھر بھی تو جانا ہے وہاں پر کام کیسے کرو گی۔“ وہ آخر میں سمجھاتے ہوئے بولیں تو ردائے کھاتی سے بولی۔

وہ آئینے کے سامنے کھڑی اپنے لمبے کٹھے کالے سیاہ بالوں میں کنگھا کر رہی تھی جب وہ کمرے میں داخل ہوا اپنی تمام تر خوبصورتی کے ساتھ وہ اس کے دل میں اترتی چلی گئی وہ نے اختیار آگئے بڑھا اور اس کے کندھوں پر ہاتھ رکھتے ہوئے محبت سے مدھوش لہجے میں بولا۔

”کیا مصیبت ہے یہ؟“ جھنجھلا کر اس نے اپنے ہاتھوں میں پکڑا ناوول چار پانچ پر پھینکا اور اٹھ کر سلپر پہن کر دروازے کی طرف آئی اس نے دروازہ کھول دیا جو کہ نجانے کب سے تن کو ہاتھ لگا کر کوئی دستک دینے والے سے پوچھتا کہ بھی کیا یہ وہ دنیا کوئی ٹھول ہے جسے تم نجانے کب سے بجا رہے ہو۔“ ائے ہے ہو تو بھی اب اندر تو آنے دو۔“ کائنات یکدم اسے اندر دھکیلتی ہوئی داخل ہوئیں تو وہ منہ ہٹاتی دوبارہ اسے جا کر چار پانی پر بیٹھ گئی۔

”غضب خدا کا گرمی سے تو برا حال ہو گیا میرا بازار جانے کے لئے بھی دل اور گردہ چاہئے ارے جب ہم گرمی کے دن ہی برداشت نہیں کر سکتے تو قیامت والے دن ہمارا کیا حال ہوگا، لیکن دنیا میں تو ہزاروں فکریں ہیں کرنے کے لئے اب اس فکر کے لئے کو وقت کس کے پاس ہے اور تو نجانے کس دنیا میں گم رہتی ہے کب سے تو میں دروازہ بجا رہی تھی آ کر کھول نہیں سکتی تھی۔“ شارپ زخمت پر کھتے ہوئے وہ بات کرتی کرتی اچانک اس سے ابھ پڑیں تو وہ برا منہ بنا کر بولی۔

”کیا ہے اماں! تم تو ہر وقت ہی مجھے ڈانٹتی رہتی ہو۔“

”ارے اماں! آگئی تم میری چیزیں لے

قدرے اطمینان تھا۔

”باجی آپ کا بے حد شکریہ اللہ آپ کو بہت خوش رکھے۔“ رضیہ کا لہجہ بھگ گیا تھا۔ زرنش نے اس کا ہاتھ تھام کر تسلی دی تھی اور پھر بی سی کے تیس ہزار پرس سے نکال کر رضیہ کے ہاتھ میں رکھ دیئے تھے وہ حیران نظروں سے زرنش کو دیکھنے لگی۔

”رکھ لو مجھے ضرورت ہے منے کے علاج میں کام آئیں گے اور شاید تمہاری کچھ اور ضرورتوں کو بھی پورا کر دیں۔“ زرنش نے نرمی سے اس سے کہا تھا۔

”باجی! تسی.....“ رضیہ نے کچھ کہنے کی کوشش کی تھی لیکن زرنش نے محبت سے ٹوک دیا۔

”مشش..... کچھ کہنے کی ضرورت نہیں۔“ اور جیل کو ایک بار پھر یاد دہانی کروانی تھی اور پھر انہیں گھر کی طرف روانہ کر کے خود بھی رکشے میں سوار ہو گئی تھی۔ ذہن کی اسکرین پر منظر گھومنے لگے تھے۔

بی سی کے پیسوں سے اس نے دوستوں کے ساتھ کئی مسکرات وغیرہ کا ٹرپ پلان کیا تھا مگر اپنی خواہش کو قربان کر کے دوسرے کی مشکل کو دور کر کے انہیں پریشانی کے غم سے باہر نکال لینے میں اور اس چہروں پر پچھلے وقت کے گم ہوئے ہی مسکراہٹ کا سبب بننے میں جو سکون دل کو ملتا ہے اس کی خوشی ان خواہشات کی تکمیل سے کہیں زیادہ ہے یہ احساس آج زرنش کو بڑی شدت سے ہوا تھا۔ کسی کا یقین آج اس نے ٹوٹنے سے بچا لیا تھا۔ اپنے جیسے کا ننھا سادیا جلانے کی اس نے کوشش کی تھی اور اس روشنی کو بڑھانے والی ذات رب کریم کی تھی اور اسی نے اس راستے پر پڑنے والے اس کے قدموں کو مستحکم کرنا تھا۔ ایک آسودہ سی مسکراہٹ اس کے لبوں پر پھیل گئی تھی۔ دور کہیں فضا میں آواز گونج رہی تھی۔

لب آتی ہے دعا بن کے تمنا میری زندگی مع کی صورت ہو خدا یا میری

☆.....

اثاثہ ہیں معاشرتی نا انصافی نے ان کے دلوں میں کتنی نفرت بھری ہے یہ اس قدر دلبرداشتہ ہیں کہ زندگی کو عذاب سمجھتے ہیں تو ملک کی سلامتی کے لیے کیا سوچ پا سکیں گے بلکہ غلط لوگوں کی پہنچ میں آ کر ملک کو نقصان بھی پہنچا سکتے ہیں۔ چوری، ڈکیتی، قتل و غارتگری جیسی وارداتوں میں ملوث ہو جانا ان کے نزدیک کوئی برا فعل نہیں ہوگا۔“ زرنش کا دل ایک دم ہی اداس ہو گیا تھا۔ جب جھڈا رکھ کر حق نہیں ملے گا تو وہ چھین کر لینے کو ہی راہ سمجھے گا۔ کچھ دیر خاموشی طاری رہی تھی۔ پھر وہ ایک دم ہی بولی تھی۔

”تم کسی ورک شاپ میں کام کرتے ہو جیل؟“

”ہاں۔“ اس نے سر ہلاتے ہوئے کہا تھا۔

”تمہارے لہجے کے انداز چڑھاؤ لفظوں کے چناؤ سے مجھے محسوس ہوا ہے کہ پڑھنے لکھنے کا شوق رکھتے تھے تم ہے ناں۔“ جیل نے ایک بار پھر اس بات میں سر ہلا دیا تھا۔

”اسکول کے تقریری مقابلوں میں حصہ لیتا تھا میں۔“ جیل کا لہجہ اداس تھا۔

”ٹھیک ہے ورک شاپ سے فارغ ہو کر تم میرے گھر آ جانا تمہاری تعلیم کے سلسلے کو ہم پھر سے جوڑیں گے۔ کیا کہتے ہو پھر دو گے میرا ساتھ؟“

زرنش ایک دم پر جوش ہوئی تھی۔ جیل نے حیران نظروں سے اس کی طرف دیکھا تھا۔ زرنش نے اثبات میں سر ہلا دیا تھا۔ جیل کی آنکھوں میں دھندلی چھانے لگی۔ سرخ آنکھوں سے وہ زرنش کی طرف دیکھ کر بولا تھا۔

”باجی جی اماں ہمیشہ کہتی ہے کہ اس دنیا میں فرشتہ صفت لوگ اب بھی ہیں مایوس نہ ہو کہ وہ رب کبھی اپنے بندے کو تنہا نہیں چھوڑتا اس کا شکر ادا کیا کر۔“ اور میں اماں کی بات کو کھنکھناتی اور جھوٹی تسلی سمجھتا تھا مگر آج مجھے یقین آ گیا ہے۔“ زرنش ابھی کچھ کہتی کہ رضیہ اندر سے نکل آئی تھی۔ چہرے پر اب

”ردا میری جان! میں تمہیں طعنے نہیں دیتی اور یہ بھی خوب بات کی تم نے کہ جب ذمہ داری پڑے گی تو کروں گی تم، ارے جب تمہیں کام کرنے کی عادت ہی نہیں ہوگی تو کام کیا خاک کرو گی دیکھو بیٹا۔“

”اماں پلیز! اچھا میں جارہی ہوں روٹی بنانے“

لیکن ایک بات میں کہہ دوں مجھ سے یہ گھر کے کام وام نہیں ہوتے۔ وہ کہتے ہوئے بچن میں چلی آئی جبکہ کائنات بیگم ایک آہ بھر کر رہ گئیں۔ کائنات بیگم



ہوتی بریانی تو اسے بنانی آتی تھی باقی چیزوں کی ترکیبیں اس نے فون کر کے رعنا سے پوچھیں اور جب دوپہر کو سب ٹیبل پر بیٹھے تب پہلا نوالہ بریانی کالے کر رہی شاکر زور سے سچ کر بولا۔

”کس جاہل نے بنایا ہے کھانا؟“

”تمہاری بیوی نے ماں کے گھر سے کچھ سیکھ کر رہی نہیں آئی بھلا یہ بریانی ہے۔“ اس کی ساس غصے سے اسے گھورتے ہوئے بولیں تو شاکر کا ہاتھ فضا میں بلند ہوا اور وہ اگلے ہی پل اس کے چہرے پر نشان چھوڑ گیا، پھر کیا تھا شاکر نے اس پر لاتوں اور گھونٹوں کی بارش کر دی اس کی تندیں اور ساس اسے مار کھاتا چپ چاپ دیمتھی رہیں یہ کیسی بے بسی تھی ردا فاروق جو اگلے کو لا جواب کرنے کی صلاحیت رکھتی تھی جسے کبھی کسی نے پھولوں کی چھڑی سے بھی نہیں چھوا تھا وہ آج مار کھا رہی تھی چپ چاپ شاکر جب اسے مار مار کر تھک گیا تو اس پر تھوکتا ہوا وہاں سے چلا گیا تب اس کی طرف سے اسے گھورتے ہوئے بولیں۔

”اسے طموہی جلدی سے دوبارہ کھانا بناؤ میرے تو بھوک سے بھٹکتا ہوں مرد ہو رہا ہے۔“ وہ اسے گالیاں دیتیں ہوئی اور اس کی طرف بڑھ گئیں جبکہ وہ اپنے دکتے جسم کے ساتھ بچن میں چلی آئی یہ آنسو آنکھوں سے نکلے اور اس کے رخساروں پر بے چلے گئے چولہا جلاتے ہوئے اس کے دل ہی دل میں عہد کیا وہ اپنی بیٹی کو ہر کام سکھائے گی تا کہ اس کے ساتھ وہ نا ہو جو ردا شاکر کے ساتھ ہوا۔ مائیں بھی بھی اپنی اولاد کو طعنہ نہیں دیتیں وہ جو بھی کرتی ہیں ان کے بھلے کے لئے ہی کرتی ہیں اور یہ اس کی زندگی کا سب سے بڑا سچ تھا وہ جانتی تھی کہ اگر ایک بار مرد کا ہاتھ عورت پر اٹھ جائے تو بھی نہیں رکتا اور وہ اپنی بیٹی کے ساتھ ایسا بھی نہیں جانتی تھی اس نے سوچ لیا تھا کہ وہ اس مدر ڈے پر اماں سے اپنی ہر غلطی کی ضرور معافی مانگے گی۔

☆.....☆.....☆

اور احمد کی تین بیٹیاں اور دو بیٹے تھے بڑی بیٹی عادیہ کی شادی ہو چکی تھی اس کے بعد ردا بھی پھر رعنا ردا بے حد کام چور تھی چائے بنانے اور کپڑے استری کرنے سے تو اس کی جان ہی جاتی تھی اسے رسالے اور ناول پڑھنے کا بے حد شوق تھا پورے گھر میں اس کے رسالے بکھرے پڑے رہتے تھے جنہیں رعنا اکٹھے کر کر کے جب تھک جاتی تو سب کو جمع کر کے کہیں پر چھپا دیتی پھر ردا جو ہنگامہ کھڑی کرتی وہ ایک الگ کہانی سے ردا کی ہمیشہ سے ہی خواہش رہی تھی کہ اس کی شادی کسی نابل کے ہیڈ سم ہیرو سے ہو اسے ماہا ملک کی کہانی جو مجھے ناولن سے گزار گئے کے ہیرو سید عالم شاہ سے محبت تھی اس کی سید خواہش تھی کہ اس کی شادی بھی کسی ایسے ہی شخص سے ہو جو اسے بے حد محبت کرنا ہو اور پھر بالآخر اس کے بعد اس کی فتنی شاکر سے کر دی گئی جو کہ بہت ہنڈ سم تھا وہ ایک بینک میں کام کرتا تھا اس کی چار بہنیں اور ایک بھائی اور تھا کائنات بیگم کو تو یہ رشتہ بے حد پسند آیا اور انہوں نے بھٹ منگنی اور پیٹ سے بیاہ کر دیا شادی کے شروع کے دن بے حد اچھے گزارے تھے شاکر بہت محبت اور خیال رکھنے والا انسان تھا ان کے گھر ایک نوکرانی کام کرتی تھی وہ صبح کو انھی اور ہلکی سی تیاری کر کے ٹیبل پر چلی آئی بھی زبیدہ بیگم (اس کی ساس) بولیں۔

”ردا بیٹا! آج سے ہم نے نوکرانی کی چھٹی کر دی ہے اب تم ہی گھر کو سنبھالو گی دوپہر کا کھانا ذرا جلدی تیار کر دینا اور ہاں بلی (نوکرانی) سے سب کی پسند پوچھ کر رہی بنانا۔“ ان کی بات پر وہ انہیں صرف دیکھ کر رہ گئی اور جب اسے بلی نے کھانے کا میڈیو بتایا تو وہ چکرا کر رہی رہ گئی بریانی، نہاری، حلیم، شامی کباب اور دو تین قسم کی ساتھ میں چینی وہ کیسے بنانی آج اسے کائنات بیگم کی کبھی ہر بات سچ لگ رہی تھی اسے کاش وہ ان کی بات مان لیتی تو آج اسے بالکل بھی مشکل نہ

روحانی ڈرامہ

سیدہ عروج فاطمہ کی ڈائری سے

عاطف سعید کا کلام

چلے بھی آؤ!

کہ میں تو خود کو تمہارے رنگوں میں رنگ چکا ہوں
تمہارے سانچوں میں دھل چکا ہوں
تمہارے کہنے کے دیکھو
میں خود کو کتنا بدل چکا ہوں

سعدیہ جواد کی ڈائری کی

محمد مختار علی کی غزل

چراغ رہگور اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
کسی کو کیا خبر اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
ذرا سا شور بھی دل کے لیے بار ساعت ہے
سکوت بام و در اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
کوئی رکتا نہیں، سنتا نہیں، روداد تنہائی
یہ مثل راہگور اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
بظاہر کٹ رہا ہے وقت ہشتے کھیلنے اپنا
عزیزان سفر اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
سجالیتے ہیں بزم دوستاں چلے بہانوں سے
حقیقت میں مگر اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
میسر ہیں چراغ و انجم و مہتاب و آئینہ
بھری محفل ہے پر اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں
جمال بار سے رونق سہی مختار منظر میں
پر اے جان جگر اندر سے ہم کتنے اکیلے ہیں

سعدیہ کی ڈائری سے

ایک خوب صورت نظم

جب تم لوٹ آؤ گے -
عید کے آنے میں ابھی چند دن باقی ہیں
کسی کو کسی کے آنے کی گن ہے
ہر کوئی عید کی تیاری میں مگن ہے
پر میرا حال ایسا ہے
جب سے تم سے پھڑکی ہوں
کیا کوئی بلال عید.....
کیا کوئی مبارک باد.....

گھر کو تیری یادوں سے اس طرح سجایا ہے
تیری شوخ باتوں کے رنگ برنگے پردے ہیں
تجربہ نگار بے تھکوں کی ہری بیلوں کو
آنکھوں کے پانی سے ہر ابھرا رکھ کر
ہر طرف نکال دیا ہے
خود تو تنہائی اور اداسی کی سیاہ چادر اوڑھی ہے
میری جاگتی آنکھوں میں خواب ایک مین سا ہے
میرے ٹوٹے دل میں ایک پتھر سا ہے

کہ آنے والی عیدوں میں
تم لوٹ آؤ گے
کل کے چاند دیکھیں گے
پھر دعا بھی مانگیں گے
پھر سب کی طرح میں بھی
گھر کو سجاؤں گی

جب تم لوٹ آؤ گے
”عید میں مناؤں گی“

ماہم نازکی ڈائری سے

ایک خوب صورت نظم

بدن کی قید سے نکلیں تو اس نگر جائیں
جہاں خدا سے کسی شب مکالمہ ہوگا
جہاں یہ روح کا بھی کوئی حق ادا ہوگا
ندل کو تنگ کرے گی حصول کی خواہش
نہ کوئی خدشہ لاحاصل ستائے گا
ہمیں قبول نہ ہوگی صدائے نوحہ گری
کہ پھر وصول نہ ہوگی شکست سادہ دلی
نہ مر جئے وہ مشقت کے پیش جاں ہوں گے
کہ جن کے خوف سے بے نشا بھول جاتے ہیں
نہ ایسی شب کی مسافت کا سامنا ہوگا
جہاں یہ کوئی چراغ وفا نہیں جلتا
لوں کی شاخ پر حرف دعا نہیں کھلتا
کہیں یہ کوئی مزاج آشنا نہیں ملتا
عذاب ترک و طلب سے بھی اب بکر جائیں
زمین کی قید سے نکلیں تو اس نگر جائیں
جہاں خدا سے کسی دن مکالمہ ہوگا
جہاں یہ روح کا بھی کوئی حق ادا ہوگا

نمرہ سلیم کی ڈائری سے

ایک نظم

ابھی کیا کہیں ابھی کیا سنیں
کہ سر فیصل سکوت جاں
کف روز و شب پہ شہر تھا
وہ جو حرف حرف چراغ تھا
اسے کس ہوانے بجھا دیا
کبھی لب ملیں گے تو پوچھنا
سر سحر و سلا

وہ جو لوگوں کا نجوم تھا
اسے دست موج فراق نے
تہہ خاک کب سے ملا دیا
کبھی گل کھلیں گے تو پوچھنا
ابھی کیا کہیں ابھی کیا سنیں
پونہ خواہشوں کے حصار میں
بھی بے سبب بھی بے خلل
کہاں کون کس سے پھڑکیا
بھی پھر ملیں گے تو پوچھنا

سکین نقوی کی ڈائری سے

ایک نظم

نہیں بدلے دیکھو ہم تو اب بھی کہتے ہیں
کہانا پیار ہے تم سے
تو پھر کیوں ضد تمہاری ہے؟
کہ جب بھی میں ملوں تم سے
یہی اظہار بول پے، مجھے تم سے محبت ہے
تمہیں معلوم ہے جاناں! محبت تو محبت ہے
یہ تو آنکھوں میں دھتی ہے
میں سے خواب کی صورت
اسے کہنا نہیں پڑتا
بہت چپ چاپ عاجز ہے
دبے پاؤں کی چھتا ہے
مگر جو نقش اس کے ہیں
بہت ہی گہرے ہوتے ہیں
انہیں کہنا نہیں پڑتا
مگر اظہار کی خوشبو سے
کبھی آنکھوں کی شوخی سے
تو پھر کیوں ضد تمہاری ہے
یہی اظہار بول پے
مجھے تم سے محبت ہے

الشعار

سباس گل ————— رحیم یار خان

محبت عید کا دن ہے
مرست عید کا دن ہے
ناداروں کو یاد رکھنا
سخاوت عید کا دن ہے

مریم ماہ منیر ————— لاہور
ہم کو نہیں ہے رہنا تیری یاد بن کر
جدائی نہیں ہے راس مجھے دل میں بسائیے
سعدیہ جواد ————— کھاریاں

مجھے عید پر عیدی چاہیے
اور عیدی میں صرف تم

عائشہ بشیر ————— ڈی جی خان
سب نے لیے ہیں نئے کپڑے نئے جوتے
لگتا ہے میرے شہر میں عید آئی ہے

رافیہ بشیر ————— کھاریاں
دیکھو چل پڑی ہیں یہ ٹھنڈی ہوائیں
لگتا ہے بہن لیا ہے حسن نے جوڑا عید کا

ڈاکٹر زہرہ بتول ————— کھاریاں
عید کا دن ہے آج تو گلے مل لو
رسم دنیا بھی ہے موقع بھی دستور بھی ہے

فرح دیبا ————— کھاریاں
ہو جائیں تبھی شکوے گلے دور دلوں سے
وہ کہہ دیں گلے مل کے اگر عید مبارک

غلام عابد ————— کھاریاں

مرستیں شہیں عید کی مبارک ہوں
تمہاری زیست میں نہ آئے کبھی غموں کا پھیرا
فرزانہ شوکت ————— کراچی

وہ لوگ حقیقت میں انسان نہیں ہوتے
جو عظمت انسان کی پہچان نہیں ہوتے
ہوتا ہے ذرا مشکل ہر کام زمانے میں
منزل کے کبھی راستے آسان نہیں ہوتے

سیدہ عروج فاطمہ ————— ملتان
جس دن نکلی تھی میرے نصیب سے محبت
زمین پیروں کے نیچے سے نکل گئی تھی

رافیہ ————— کھاریاں
وفا کا سندھیں لے کر اتارے تمہارے آنگن میں
گواہ رفاقتوں کا محبتوں کا لے کر ہلال عید

مہرین ————— کھاریاں
کتنی مشکل سے فلک پر یہ منظر آتا ہے
عید کے چاند نے بھی انداز تمہارے کیجھے

عائشہ ————— کھاریاں
ایک لمحے کو بھی میں نے تجھے دیکھا تھا
عمر بھر میری نظر میں نہ چچا عید کا چاند

فرح دیبہ ————— کھاریاں
جن کے ملنے کا آسرا ہی نہیں
عید ان کے خیال لائی ہے

سعدیہ جواد ————— کھاریاں
پلکوں پر حسرتوں کے ستارے سجائے
اس دج سے خواہشوں نے کیا اہتمام عید
فروا جنت ————— کھاریاں

کتنے ترسے ہوئے ہیں عیدوں کو
وہ جو عید کی بات کرتے ہیں
رانیہ عمر ————— بھکر

روز یاد آنے کی شکایت ہے آپ سے
کیا جانے کیسی چاہت ہے آپ سے
لوگ تو بہت ہیں کہنے کو لیکن
دل کو نہ جانے کیوں محبت ہے آپ سے

رامین ناز ————— حیدر آباد
آج بہت دکھ ہو رہا ہے حال زندگی پر جان
کاش! ہم نے حد میں رہ کر محبت کی ہوئی
بشری ————— ملتان

خواب میں بھی تم اب نہیں آتے
مطلب نفرتیں ان دنوں عروج پر ہیں
آفرین خلیل ————— فیصل آباد

تجھے بھولنا ہوتا تو کب کا بھلا دیتے
تم حسرت زندگی ہو کوئی مطلب زندگی تو نہیں
رابعہ منیر ————— سرگودھا

اس کو بھولنے کا بہت دکھ ہے مگر
ہم اسے پانے کے اسباب کہاں سے لاتے
دھنک ناز ————— کراچی

تیری یاد میں کی ہے میں نے سمندروں سے دوستی
نجانے کبھی کیوں تجھے تیرے نظموں کی پیاس دیتی ہے
ام ہانی ————— بھکر

رکا ہوا ہے عجب دھوپ چھاؤں کا موسم
گزر رہا ہے کوئی دل سے بادلوں کی طرح

نگہت جمیں ————— چنیوٹ
شام تنہائی ڈس رہی ہے مجھے
درد کے بادلوں نے گھیرا ہے
لو چراغوں کی تیز تر کردو
شیر دل میں بڑا اندھیرا ہے

ارم خان ————— پشاور
رکتا بھی نہیں ٹھیک سے چلتا بھی نہیں ہے
یہ دل کہ تیرے بعد سنبھلتا بھی نہیں ہے
اک عمر کے صحرا سے تیری یاد کا بادل
مٹتا بھی نہیں ہے اور برستا بھی نہیں ہے

عائشہ عمران ————— قصور
ٹوٹا نام کا دریا بے روانی نہیں رکھتا
بادل ہے وہ بے فیض جو پانی نہیں رکھتا
یہ آخری خط آخری تصویر بھی لے جا
میں بھولنے والوں کی نشانی نہیں رکھتا

سیدہ امبر ہاشمی ————— کراچی
روٹھ جاتے ہو تو کچھ اور حسیں لگتے ہو
ہم نے یہ سوچ کے ہی تم کو خفا رکھا ہے
سائس تک بھی نہیں لیتے تجھے سوچتے وقت
ہم نے اس کام کو بھی کل پر اٹھا رکھا ہے

شاپین سجاد ————— صوابی
یہ جوڑوئی ہیں میری آنکھیں اشکوں کے دریا میں
یہ مٹی کے پتلوں پر بھروسے کی سزا ہے
عائشہ ————— منڈی بہاؤ الدین

ساتھ چھوڑ کے بھی ہم سے جدامت ہوتا
وفا چاہیے آپ سے بے وفامت ہونا
روٹھ جائے ساری دنیا ہم سے
مگر آپ ہم سے کبھی بھی خفا مت ہونا

☆.....

اس ماہ میں

اس ماہ کے اقتباس

شعور زندگی

یہ زندگی کا وہ دور تھا جب مجھے قدرت نے اپنے انداز میں عزت اور انا کے فرق کو سمجھایا تھا۔ میری بیماری کے دوران انا میرے سے ملنے ایک مرتبہ آئی اس شام جب عزت نے فیصلہ کیا تھا کہ وہ میری جگہ پر بڑھیں سجالے گی۔ جب تک میں ٹھیک نہیں ہو جاتا لیکن اس مرتبہ میں نے انا کی لگائی بجھائی پر ذرا بھی کان نہیں دھری۔ اس نے دبے لفظوں میں عزت کے فیصلے کی مخالفت کی تھی لیکن اس مرتبہ میں نے اسے بری طرح سے جھڑک دیا اور صاف الفاظ میں اسے گھر سے نکل جانے کو کہا۔

مریم ماہ منیر ”میں حبیب ہوں“
انتخاب: عانیہ نیازی۔ ربوہ

خالص ہونے دے

یہاں کھڑے ہو کر تجھ سے انبیاء دعا مانگا کرتے تھے ان کی دعاؤں اور میری دعاؤں میں فرق ہے۔ میں نبی ہوتا تو نبیوں جیسی دعا کرتا۔ مگر میں تو عام بشر ہوں اور گناہ گار بشر۔ میری خواہشات میری آرزو میں سب عام ہیں۔ یہاں کھڑے ہو کر کبھی کوئی کسی عورت کے لیے نہیں

رویہ ہوگا۔ میری ذلت اور پستی اس سے زیادہ کیا ہوگی کہ میں حرم پاک میں ایک عورت کے لیے گزر گڑا رہا ہوں مگر مجھے نہ اپنے دل پر اختیار ہے نہ اپنے آنسوؤں پر یہ میں نہیں تھا یہ میں نہیں تھا جس نے اس عورت کو اپنے دل میں جگہ دی یہ تو نے کیا کیوں میرے دل میں ایک عورت کے لیے اتنی محبت ڈال دی کہ میں تیرے در پر کھڑا بھی اس کو یاد کر رہا ہوں کیوں مجھے اس قدر بے بس کر رہا ہے کہ مجھے اپنے وجود پر بھی کوئی اختیار نہیں رہا۔ وہ بشر ہوں جسے تو نے ان تمام کمزوریوں کے ساتھ بنایا ہے۔ وہ بشر ہوں جسے تیرے سوا کوئی رستہ دکھائے والا نہیں اور وہ عورت میری زندگی کے ہر رستے پر کڑی ہے۔ مجھے کہیں جانے کہیں پہنچنے نہیں دے رہی یا تو اس کی محبت کو اس طرح میرے دل سے نکال دے کہ مجھے کبھی اس کا خیال ہی نہ آئے۔ یا پھر اسے مجھے دے دے۔

وہ نہیں ملے گی تو میں ساری زندگی اس کے لیے روتا رہوں گا۔ وہ مل جائے گی تو تیرے سوا اور کسی کے لیے نہیں آنسو بہا سکوں گا۔ میرے آنسوؤں کو خالص ہونے دے۔ میری محبت کو خالص ہونے دے۔

عمیرہ احمد۔ ”پیر کامل“
انتخاب: نورین نور۔ کراچی

اس ماہ کے اقوال

☆ جو انسان کسی پر بھروسہ نہیں کرتا اس کی تنہائی کبھی بھی دور نہیں ہو سکتی۔

☆ امیدوں کو لمبا مت کرو اور قیامت کو دور نہ سمجھو کیونکہ جو مر گیا اس کی قیامت قائم ہوگئی۔

☆ ریا کار اور منافقت کی پہچان یہ ہے کہ وہ دین سے دنیا کماتا ہے۔

☆ اگر تمہارے پاس مخلص دوست نہیں تو تم سے زیادہ غریب کوئی نہیں۔

☆ ہر وقت کی جتنی بھی انسان کی محرومی کو یقینی بنادیتی ہے ایسے شخص کے سامنے ہر بھی آجائے تو اسے پتھر سمجھ کر دور پھینک دینا ہے۔

☆ شک کی دیمک صدیوں پرانے تعلقات کو بھی ہمیشہ کے لیے ٹھکڑا کر دیتی ہے۔

☆ صائمہ قریشی۔ حیدر آباد

اس ماہ کی ہری مرچیں

☆ تمام جانداروں میں صرف انسان پیسہ کماتا ہے عجیب بات یہ ہے کہ انسان کے علاوہ کوئی جاندار بھوکا نہیں مرتا اور انسان کا کبھی پیٹ نہیں بھرتا۔

☆ کسی کا دل توڑ کر اس سے معافی مانگنا آسان ہے لیکن اپنا دل ٹوٹ جائے تو کسی کو معاف کرنا بہت مشکل ہے۔

☆ جس مرد کی نظر میں محبت لباس اتارنے کا نام ہوتا ہے اس کی نظر میں اس کی محبوبہ اور طوائف میں کوئی فرق نہیں۔

☆ جسم سے میل صاف کر لیتے ہیں مگر دلوں سے میل نہیں۔

☆ یاد رکھیے جائز کمائی انسان کماتا ہے لیکن

☆ یاد رکھیے جائز کمائی انسان کماتا ہے لیکن

نا جائز کمائی انسان کو کماتا ہے۔

☆ اس دنیا میں بھی لوگ زندہ تو ہیں لیکن جی نہیں رہے جی وہی رہے ہیں جنہیں دوسروں کا احساس ہے۔

☆ کبھی کبھی چیز کی قدر اور احساس کے لیے ضروری ہے کہ کچھ وقت اس کے بغیر رہا جائے۔

☆ کبھی کبھی کام پڑ سکتا ہے آدھے رشتے لوگ اس وجہ سے بھارے ہیں۔

☆ ساتھ دینے والوں کا طریقہ واردات یہ ہوتا ہے وقت آنے پر وہ ناراض ہو جاتے ہیں۔

☆ ہر شخص کو اپنی مصیبت سب سے بڑی محسوس ہوتی ہے۔

☆ ماہ رخ۔ کراچی

☆ اس ماہ کی چھوٹی چھوٹی، بڑی باتیں!.....

☆ انسان اپنی زندگی میں ہر چیز کے پیچھے بھاگے گا مگر وہ چننے اس کا پیچھا کریں گی۔ ایک اس کا رزق دوسرا اس کی محبت۔

☆ زندگی کے لیے دل کی ضرورت ہوتی ہے دل کے لیے خوشیوں کی ضرورت ہوتی ہے۔

☆ خوشیوں کے حصول کے لیے ایک اچھے دوست کی ضرورت محسوس کی جاتی ہے اور اچھے دوست کے لیے مجھے آپ کی ضرورت ہے۔

☆ اس دنیا میں زندہ رہنے کی واحد تدبیر یہ ہے کہ آدمی کے پاس ایک وسیع قبرستان ہو جس میں وہ لوگوں کے قصور اور غلطیوں کو دفن کرتا رہے۔

☆ ایس امتیاز احمد۔ کراچی

☆

☆



”جب وہ خود کو دوسروں سے اچھا سمجھنے لگے۔“

غرور تکبر

ایک مفکر کا قول ہے۔
”برائی جب بھی شروع ہوتی ہے غرور سے شروع ہوتی ہے برائی کا جب بھی خاتمہ ہوتا ہے تو انکساری کے ذریعے ہوتا ہے۔“

لفظوں کے موتی

☆ نعمت کا ملنا آزمائش ہے کہ تم نے شکر ادا کیا یا ناشکری کی۔
☆ بدقسمتی محض بہتان ہے جو کابلوں کی طرف سے اللہ پر لگایا جاتا ہے۔

☆ خواب وہ نہیں جو آپ سوتے میں دیکھتے ہیں بلکہ وہ ہیں جو آپ کو سوتے میں دیتے۔
☆ پھولوں سے محبت کرنے والے کیا مرد کیا عورتیں عام طور پر معمولی شکل و صورت کے ہوتے ہیں وہ پھولوں کی خوشبو سے ان کی گھڑت سے پیار نہیں کرتے ان کے ہونے سے پیار کرتے ہیں۔

☆ کینہ پروری اچھی بات نہیں ہے لیکن بار بار دھوکا کھانا بھی بے وقوفی ہے۔

☆ تجربہ انسان کو غلط فیصلے سے بچاتا ہے مگر تجربہ غلط فیصلے سے ہی حاصل ہوتا ہے۔

انعم سعید۔ لاہور

حضور اکرم ﷺ نے فرمایا

حضرت ابو عبد اللہ طارق بن ائیم سے روایت ہے کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو فرماتے سنا۔
”جس شخص نے لا الہ الا اللہ کہا اور اللہ کے سوا دوسرے معبودوں کا انکار کیا تو اس کا مال اور خون محفوظ (حرام) ہو گیا اور اس کے (باطن) کا حساب اللہ کے ذمے ہے۔“

سیدہ نورین۔ کراچی

خود پرستی

حضرت سلمان فارسی سے روایت ہے کہ انہوں نے کہا نبی ﷺ نے فرمایا
”جو آدمی جمعہ کے دن غسل کرے اور یہاں تک صفائی کر سکتا ہے کرے اور اپنے لیے تیل میں سے تیل لگائے یا اپنے گھر والوں کی خوشبو میں سے لگائے پھر نماز کے لیے نیک مسجد میں آئے تو دو آدمیوں میں نہ گھسے۔ پھر جتنی نماز اس کے نصیب میں ہے پڑھے (یعنی سنت نفل) اور جب امام خطبہ پڑھتا ہو اس وقت خاموش رہے تو اس کے اس مجمعے سے لے کر دوسرے مجمعے تک گناہ اس کے بخش دیے جائیں گے۔ (صحیح بخاری)

عبد اللہ۔ کراچی

خود پرستی

حضرت علیؑ سے پوچھا گیا۔
”انسان برا کب بنتا ہے؟“ آپ نے فرمایا۔

زمانے کی بے حسی.....!

بہت عرصہ پہلے جب بھی لال آندھی چلتی تھی تو بزرگ کہتے تھے۔ ”آج کسی بے گناہ کا قتل ہوا ہے۔ اس لیے یہ لال آندھی آئی ہے۔“ تو دل ایک دم ٹھنکی میں آ جاتا تھا اور ہر کوئی افسوس کرتا کہ پتا نہیں کون بے گناہ قتل ہوا ہے۔ لیکن اب تو کوئی لال آندھی نہیں آتی۔ کیسے آئے اور کئی دفعہ آئے کیونکہ اب تو ہر وقت بے گناہ مارے جارہے ہیں جن کی تعداد بھی صحیح طرح سے معلوم نہیں ہوتی۔ اب ہم لوگوں کو اپنے سامنے مرتا ہوا دیکھتے ہیں لیکن اب ہمارا دل مٹھی میں نہیں آتا۔ ہم صرف یہ تسلی کر لیتے ہیں کہ ان مرنے والوں میں کوئی ہمارا اپنا تو نہیں ہے اور پھر بڑے سکون سے اپنے راستے چل پڑتے ہیں۔ جیسے یہ اتنی بڑی بات نہ ہو۔ ہمارے ضمیر مردہ ہو چکے ہیں ہم بے حسی ہو چکے ہیں۔ ہمیں دوسروں کی تکلیف کی پروا ہی نہیں رہی۔

☆ پہلے اگر ایک گھر میں کسی کا انتقال ہو جاتا تھا تو سارے محلے میں کسی کے گھر چولہا نہیں جلایا جاتا تھا۔ ہر کوئی اس کے دکھ میں برابر کا شریک ہوتا تھا۔ لیکن اب اگر ایک گھر سے جنازہ اٹھتا ہے تو ساتھ والے گھر میں شادی کے لیے لائٹنگ کی جارہی ہوتی ہے۔ ایک گھر میں کوئی باپ بھوک سے تنگ آ کر اپنے بچوں کو مار کر خودکشی کرتا ہے تو ساتھ والے گھر میں پارٹیاں ہو رہی ہوتی ہیں۔

☆ حکمران اپنی جیبیں بھر کر سارا بوجھ مہنگائی کی صورت میں غریب عوام پر ڈال کر وزارتیں آپس میں بانٹ رہے ہیں۔ خودشی حملہ آور کسی ایک کو مارنے کے لیے بے گناہوں کی جانیں لے لیتے

ہیں۔ کیا ان کا ضمیر انہیں ملامت نہیں کرتا۔ کیا ان کی روح کو سکون ملتا ہوگا؟

☆ کہتے ہیں کہ قیامت آئے گی۔ کیا وہ اس موجودہ قیامت سے بھی بھیا نک ہوگی جس میں لوگ کیڑے مکوڑوں کی طرح مر رہے ہیں۔ سب بے حس ہیں۔ سب زندہ لاشیں ہیں۔ اگر قیامت نے آنا ہے تو ابھی آ جائے تاکہ ایسے بچے پیدا ہی نہ ہوں جو اپنے ہی ماں باپ کے ہاتھوں مارے جائیں۔ نہ کوئی خودکشی عملے ہوں نہ کوئی نوجوان بے روزگاری سے تنگ آ کر اپنی زندگی کا خاتمہ کرے۔

ایس اتیار احمد۔ کراچی

زندگی کیا ہے؟

حضرت معروفؒ سے کسی نے سوال کیا۔

”حضرت! زندگی کیا ہے؟“

☆ آپ نے جواب دیا۔ ”ایک دریا“
☆ پچھنے والے نے دریافت کیا۔ ”اور آخرت؟“

☆ آپ نے جواب دیا۔ ”ساحل“
☆ اور پھر سوال کیا۔ ”تقویٰ؟“
☆ جواب ملا۔ ”کشتی“

ربانور رضوان۔ کراچی

اقوال زریں

☆ بڑھاپے کی شادی اور پنیک کی چوکیداری میں ذرا فرق نہیں سوتے میں بھی ایک آنکھ کھلی رکھنی چاہیے۔

☆ پاکستان کی افواہوں کی سب سے بڑی خرابی یہ ہے کہ سچ نکلتی ہے۔

☆ دشمنوں کے حسب عداوت 3 درجے

فردا پھر کتنا

غزل

تجھ سے دور رہ کے ہم بھلا نہ سکے
تیرے تھے پھر بھی تجھے ہم اپنا بنا نہ سکے
دل کے ارماں آنسوؤں میں بہہ گئے آخر
ہم تاریکیوں میں پھر کوئی چراغ جلا نہ سکے
تجھ سے گلہ کیا کریں ہم تیری بے وفائی کا
بگڑے ہوئے حالات سے ہم نبھانہ کر سکے
ملے تھے ہمیں بہت زخم تیری محبت میں
چیر کے شکستہ دل ہم یوں بھی تجھے دکھانہ سکے
تیری یادوں سے دامن چھڑاؤں پھر میں کیسے
اُسیر تھے تیری زلفوں سے ہم نظروں کو بچانہ سکے
اس دیوانے دل کو میں کیا کروں پھر جاوید
دوران محفل میں پھر کوئی پھول کھلا نہ سکے
تمہیں معلوم نہیں اسلم جاوید

تم کے کبھی یہ سوچا ہے

تیرے پیار میں اُس کی بوا

سر پر جگری چادر اور دھڑکے

دشت محبت میں تم کو ڈھونڈ رہا ہے

ازلی سے جانناں

شاید تمہیں معلوم نہیں

فیضان احمد فیضی

نظم

محبت میں انسان

مریم ماہ منیر

بیٹیاں

یہ انگوڑی نازک بیللیں
اپنے وجود کا بوجھ بھی جن سے
اُٹھ نہ پائے
کتنے ارماں دل میں سجائے
ایک مضبوط سپار ڈھونڈیں
کسے خبر ہے انہیں سہارا دینے والا
کوئی تناور پیڑ ہے یا کھیر ہے؟

فرزانہ شوکت

نظم

زیست بھر میں یونہی سفر میں رہی
لحہ لچہ یونہی خوابوں کے گھر میں رہی
مانا کہ اس سفر میں
بہت راہِ گال میری زیست گئی
مجھے راستوں سے اجنبیت تھی
میری زیست چار روڑ کی تھی
مگر میری طلب صرف رنگ ہی تھے
رنگ جن سے مجھے خواب سجانا تھے
وہ خواب جو میری نظروں کا حصہ تھے
وہ خوابوں کا گرجو میری نظریں تھا
لیکن مجھے رنگ پور سے نہ مل سکے
اور میری زیست سفر اُھورا رہ گیا

ہوتی ہیں۔

☆ لذیذ غذا سے مرض کا مقابلہ کرنے کا
حوصلہ اور طاقت پیدا ہوتی ہے۔

☆ نام میں کیا رکھا ہے دوست کو کسی بھی نام
سے پکاریں گلوں ہی کی خوشبو آئے گی۔

☆ جس بات کو کہنے والے اور سننے والے
دونوں ہی جھوٹ سمجھیں اس کا گناہ نہیں۔

☆ یورپین فرنیچر صرف بیٹھنے کے لیے ہوتا
ہے جب کہ ہم کسی ایسی چیز پر بیٹھے ہی نہیں جس پر
لیٹنا نہ جاسکے۔

☆ مطلق العنانیت کی جڑیں دراصل مطلق
الانانیت سے پیوست ہوتی ہیں۔

مشتاق احمد یوسفی

انتخاب: سعدیہ جواد کھاریاں

شرط

ایک نگرین اور ایک آئرش تھیٹر میں فلم دیکھ
رہے ہوئے ہیں فلم میں ایک سین آتا ہے کہ
ایک شخص ایک بڑے ہوتے ہوئے برسوار ہوتا
ہے اور گھوڑا بہت تیز دوڑ رہا ہوتا ہے۔ انگریز فوراً
چچ کر کہتا ہے یہ ضرور گر جائے گا۔ آئرش بھی چچ
کر کہتا ہے کہ نہیں گرے گا۔ دونوں میں شرط لگ
جاتی ہے۔ اور تھوڑی دیر بعد وہ آدی گھوڑے سے
گر جاتا ہے۔ انگریز چہکتے ہوئے بولتا ہے دیکھا
میں نے کہا تھا نہ یہ گر پڑے گا۔ آئرش منہ لٹکاتے
ہوئے کہتا ہے۔ ”دراصل میں نے کل رات بھی
یہ فلم دیکھی تھی اور یہ کل رات بھی گر پڑا تھا تو میرا
خیال تھا کہ اس بار یہ گھوڑا سنبھل کر چلائے گا۔“
صائمہ قریشی۔ حیدر آباد

☆.....☆.....

ہیں۔ دشمن، جانی دشمن اور رشتہ دار۔

☆ مسلمان کسی ایسے جانور کو محبت سے نہیں
پالتے، جسے ذبح کر کے کھانہ بنائیں۔

☆ آدمی ایک بار پروفیسر ہو جائے تو عمر بھر
پروفیسر ہی رہتا ہے خواہ بعد میں سمجھداری کی
باتیں ہی کیوں نہ کرنے لگے۔

☆ مصائب تو مرد بھی جیسے تیرے برداشت کر
لیتے ہیں مگر عورتیں اس لحاظ سے قابل ستائش ہیں
کہ انہیں مصائب کے علاوہ مردوں کو بھی
برداشت کرنا پڑتا ہے۔

☆ مرد کی آنکھ اور عورت کی زبان کا دم سب
سے آخر میں نکلتا ہے۔

☆ لفظوں کو جنگ میں فتح کسی بھی شجاعت کی
ہو شہید ہمیشہ سچائی ہوتی ہے۔

☆ امریکہ کی ترقی کا سبب یہ ہی ہے کہ اس کا
کوئی ماضی نہیں۔

☆ محبت اندھی ہوتی ہے عورت کا خوب
صورت ہونا ضروری نہیں بس مرد کا ناپینا ہونا کافی
ہے۔

☆ مرض کا نام معلوم ہو جائے تو تکلیف تو
دور نہیں ہوتی ابھن دور ہو جاتی ہے۔

☆ جس دن بچے کی جیب سے فضول
چیزوں کے بجائے پیسے برآمد ہوں تو سمجھ لینا
چاہیے کہ اب اسے بے فکری کی نیند بھی نصیب
نہیں ہوگی۔

☆ انسان واحد حیوان ہے جو اپنا زہر دل میں رکھتا ہے۔

☆ تماشے میں جان تماشا کی کی تالی سے
پڑتی ہے۔ جدائی کی ڈگڈگی سے نہیں۔

☆ پیاریوں کے لیے یونانی دوا میں تیر ہدف

گیتی آراء — کراچی

پیاری آپنی اور نورین السلام علیکم! امید ہے مزاج بخیر ہوں گے۔ سب سے پہلے تو آپ سب کو اور ردا کے تمام قارئین کو بقرعید کی ایڈوانس مبارک باد، اللہ آپ سب کو ہم سب کو ایسی ہزاروں خوشیاں دیکھنا نصیب کرے، آمین۔ اور اب بات ہو جائے ردا کی۔ 9 جولائی کو ماہ جولائی کا ردا ملا۔ دل خوشی سے جھوم اٹھا، سب سے پہلے تو سورش کی ماڈل عشا نور اپنی دلکش نمکراہٹ کے ساتھ دل میں اتر گئی پھر حسب معمول فہرست پر نظر ڈالی تو افسانوں کی فہرست میں اپنا نام نہ دیکھ کر دل پریشان اور دھمی بھی ہو گیا پھر یہ سوچ کر دل مطمئن ہوا کہ شاید آپنی نے ہمارا افسانہ ”ششم کا حصہ“ اگلے ماہ بقرعید نمبر میں لگانے کو رکھا ہو۔ بہر حال ہماری تحریر آپنی کے پاس پہنچ گئی تو جلد یا بدیر لگے گی ضروریہ تو پتا ہے۔ آگے بڑھے تو ”مکوشہ آگہی“ کی خوب صورت سحر انگیز باتوں سے لطف اندوز ہو کر آگے بڑھے تو ”ردائے جنت“ میں استغفار کی اہمیت جان کر دلی سکون ملا۔ توبہ کا دروازہ نزع کی حالت تک کھلا ہوا ہے اور اب باری بھی قمر و ش کے ناول ”بانہوں کے حصار میں“ کہانی خاصا دلچسپ موڑ اختیار کرتی جا رہی ہے اب آگے دیکھتے ہیں انشراح اور راسب کا کسا ہوتا

حیرت

نہیں معلوم کیوں اچانک
خاموش ہو گئی ہوں
موجود ہو کر بھی روپوش ہو گئی ہوں
کہاں ڈھونڈوں خود کو؟
نہ جانے کہاں کھو گئی ہوں
کیسے دوں وضاحت اسے ہونے کی
میں تو زندگی سے دور ہو گئی ہوں
مجھے حیرت ہوتی ہے اپنے حال پر
کیا تھی میں اور کیا ہو گئی ہوں

.....★.....

ریمانور رضوان

غزل

در محبت کا وا نہیں ہوتا
جب جنوں رہنا نہیں ہوتا
زخمِ دل کا ہرا نہیں ہوتا
رنجِ راحت فزا نہیں ہوتا
امتحانِ جبِ دلوا نہیں ہوتا
عشقِ عقدہ کشا نہیں ہوتا
جس قدر بھی ہوں خوبیاں ان میں
کوئی بندہ خدا نہیں ہوتا
پیش آتی نہیں کوئی مشکل
دل ہو زندہ تو کیا نہیں ہوتا
ان کو منزل کبھی نہیں ملتی
ساتھ جن کے خدا نہیں ہوتا
حوصلے کی یہ بات ہے ورنہ
وقت کوئی برا نہیں ہوتا
اس سے ہوتی ہے گفتگو میری
”جب کوئی دوسرا نہیں ہوتا“
عشق میں جان بھی اگر جائے
عشق کا حق ادا نہیں ہوتا
دیکھتا ہوں میں آسمان کی طرف
جب کوئی آسرا نہیں ہوتا
جتنا دنیا اسے سمجھتی ہے
کوئی اتنا برا نہیں ہوتا
دل کو اچھے جو لوگ لگتے ہیں

ڈھیروں خوشیاں عطا کرے، اللہ آپ سب کو ہمیشہ خوش رکھے اور ہمارا ردا اسی طرح دن دو گنی رات چو گنی ترقی کرتا رہے۔

سعدیہ جواد — کھاریاں

ماہ جولائی 2018ء کا ردا ڈائجسٹ ہنستا مسکراتا ہزاروں رنگ بکھیرتا 9 تاریخ کو ہمارے گھر کی دہلیز پر اپنا پیارا قدم رکھ چکا تھا۔ ٹائٹل پر عشا نور کی تصویر بہت اچھی لگی۔ ”گوشتہ آگہی“ صالحہ آپ کی بات بہت پسند آئی۔ ”ردائے جنت“ سے ہمیشہ دل باغ باغ ہو جاتا ہے۔ سلسلے وار ناول میں ”زندگی پھول محبت خوشبو“ بہت اچھا جا رہا ہے۔ مکمل ناول میں ”کہانی محبت کی“ جی اعلیٰ! بہت دل کو بھایا۔ ناولٹ میں ”محبت زندگی ہے“ صنوبر شاہ! بیٹھ تھا۔ افسانے میں ”ہمارے زمانے کی“ ایقان علی ”گوگنی بھو“ سیدہ عروج فاطمہ بہت پسند آئے۔ اب تشریف کا ٹوکرا لاتے ہیں مستقل سلسلوں کی جانب۔ ”ردا کی ڈائری میں“ ملک جواد نواز، صبا غنی، تبسم فیاض۔ ”اشعار“ رابعہ منیر، عائشہ عاصم، علشہ نور۔ ”اس ماہ میں“ ”رشتوں کی حقیقت“ عانیہ نیازی، ”زندگی“ فرزانہ شوکت، ”اس ماہ کی مشرقی لڑکیاں“ شاہدہ عامر۔ باقی دوستوں نے بھی اچھا لکھا۔ ”خوشبو“ میں سب دوستوں نے بہت اچھا اور بہت خوب صورت لکھا۔ ”ذرا پھر سے کہنا“ میں فیضان احمد فیضی، سباس گل اور ایس امتیاز۔ ”دوستوں کے نام پیغام“ میں سب دوستوں نے خوب صورت لکھا۔ ”چکن“ میں بہت کچھ سیکھا۔ ”سنگھار“ میں بہت کچھ پتا چلا۔

☆.....

سال نومبر میں ردا سے منسلک ہوئے دو سال مکمل ہو جائیں گے اس دوران باقاعدگی سے اپنے وقت پر اعزازی کا پی لیتی رہی ہے اور یہیں سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ ادارے کا ہر فرد محنت و خلوص سے اپنا کام کر رہا ہے۔ میں نے اپنے دل کی ہر بات خط کے ذریعے کی ہے اور جتنی محبت مجھے یہاں سے ملی ہے وہ ہمیشہ میرے ساتھ رہے گی۔ اللہ سے دعا ہے کہ یہی کرتی ہوں کہ ردا ڈائجسٹ کی ترقی میں یوں ہی اضافہ ہوتا رہے اور ان محبتوں پر کبھی زوال نہ آئے، آمین۔

انیتا اختر — فیصل آباد

پیاری صالحہ آپ ایڈٹورین آپ کی اور تمام پڑھنے لکھنے والوں کو میرا سلام۔ اب آئی ہوں اپنے فوریٹ ردا کی طرف بہت خوب صورت تھا۔ ”گوشتہ آگہی“ میں صالحہ آپ کی باتیں دل کو چھو گئیں۔ ”عائشہ نے لکھا ہے“ پڑھ کر مزہ آ رہا ہے۔ ”عشق کی داستاں جدا ہے میری“ اور ”کہو مجھ سے محبت ہے“ ریحانہ آفتاب جی! آپ تو چھا گئی پلیرز آنر کے ساتھ کچھ برامت کیجیے گا۔ قمر و ش آپ! آپ کے ناول کی پہلی قسط نے ہی واہ واہ کہنے پر مجبور کر دیا۔ شازیہ آئی بھی بہت زبردست لکھ رہی ہیں لیکن اسٹوری انک گئی ہے پلیرز کسی کی تو بدگمانی دور کیجیے۔ مکمل ناول بھی بہت اچھا تھا۔ ناولٹ، افسانے سب ایک سے بڑھ کر ایک خاص کر صالحہ آپ کا ”خواب پشیمان سا“ آپ کی پلیرز آپ اسی طرح لکھا کریں تاکہ ہمیں کچھ نہ کچھ سیکھنے کو ملتا رہے۔ شہانول کو منگنی کی بہت بہت مبارک باد۔ میری طرف سے اللہ آپ کو

باقاعدہ خط ہے اور یہ سراسر میری اپنی کوتاہی اور سستی کی وجہ سے ہے (دونوں کا نون کو ہاتھ لگا کر معذرت)۔ ”گوشتہ آگہی“ بہترین سلسلہ ہے۔ شازیہ مصطفیٰ کے تو خیر کیا کہنے، میں نے تو پہلے ہی کہہ دیا کہ ان کے لیے سر جھکا کر دعا میں ہیں۔ ریحانہ کا ناول بھی خوب جا رہا ہے، بس مجھے ایک نا سمجھ نہیں آئی یہ عرشان کے ساتھ ہمیشہ ولی لکھنا ضروری ہے کیا؟ (برا لگا تو سوری یار) انگلش پر ہاتھ ذرا دھیما رکھا کرو۔ قمر و ش شہک! آپ کے نام سے ہی اندازہ ہو جاتا ہے کہ تحریر پیار محبت میں کس قدر ڈوبی ہوگی، اچھا لگتا ہے رومانس پڑھنا لیکن وہی بات.....! ہاتھ ذرا ہولارکھ لیا گریں۔ بہر حال آپ کے لیے بہت ساری تعریفیں ہیں۔ ناولٹ اور افسانے سارے ہی بہت عمدہ ہوتے ہیں۔ عائشہ الیاس کی تحریر بہت زبردست ہوتی ہے اور ایقان کے افسانے.....! کیا بات ہے نورین آپ کی کے دونوں سلسلے بہت خوب صورت ہیں۔ ردائے جنت، چکن، اشعار سب کچھ ہی بہت عمدہ ہوتا ہے۔ اس پلیٹ فارم کے لیے ہمیشہ دعا گو رہوں گی۔

سیدہ عروج فاطمہ — ملتان

معزز صالحہ آپ اور نورین آپ! سب سے پہلے تو میرا سلام قبول کیجئے۔ امید ہے اللہ پاک کے فضل و کرم سے ہمارے تمام اشاف نمبران خیریت سے ہوں گے۔ اسی ہفتے میری آپ کا نکاح ہے۔ کل سے گھر میں مصروفیت بڑھنے والی ہے لیکن شکر الحمد للہ میری اس ماہ بھی حاضری لگ گئی ہے۔ ماشاء اللہ سے اس

الف سے لے کر ے تک پورے کے پورے بیٹھ اور فرسٹ کلاس رہے۔ ”ذرا پھر سے کہنا“ میں کبھی نے اچھا لکھا خاص کر زروہ وسمان اور ایس امتیاز احمد نے۔ ”چکن“ میں گرین کڑا ہی، کباب بریانی زبردست رہے۔ ”سنگھار“ میں نیم کے فوائد اور دہی کے فائدے معلومات میں اضافہ کر گئے گو کہ اس ماہ کا ردا بھی ہر ماہ کی طرح بہترین اور منفرد تحریروں کے لحاظ سے نمبروں رہا۔ اب اجازت ہماری دعا ہے کہ اللہ آپ کو ہمیشہ صحت و تندرستی کی نعمت سے مالا مال کرے، آمین۔

ریحانہ نور رضوان — کراچی

پیاری آپ، پیاری نورین! بہت سی دعائیں اور ڈھیر سارا پیار آپ سب کے لیے۔ آپ سب کی اتنی محبت و چاہت پر سدا شکر گزار رہتی ہوں۔ ردا نے ہمیشہ ہی مجھے مان دیا ہے جزاک اللہ۔ ردا ماشاء اللہ ہر ماہ ہی خوب صورت سرورق و کہانیوں سے آراستہ دل کو چھو جاتا ہے۔ ردا کی دانگی ترقی و کامیابی کی دعائیں۔

عائشہ ذوالفقار — فیصل آباد

ڈیزر صالحہ آپ! السلام علیکم! خدائے ذوالجلال سے دعا کرتی ہوں کہ آپ کو لمبی عمر اور صحت کاملہ کے ساتھ ہمیشہ خوش و خرم رکھے۔ ردا میں لکھنے والی تمام لکھاریوں کے لیے بہت ساری تعریفیں اور بہت ساری تالیاں۔ پرانی لکھاریوں کے آگے سہرا دے سے جھکا کر بہت ساری دعائیں اور نئی لکھاریوں کے لیے کندھے پر چھکی دے کر بہت ساری نیک تمنائیں۔ ردا میں میرا یہ پہلا

دوستوں کے لئے پتے

ردا سکھیوں کے نام

ان گنت دعاؤں اور وفاؤں کے ساتھ پیاری سکھیوں کو سلام خلوص عرض ہے گرچہ قرطاس پر رنگ بکھیرتے ماضی وقت بیت گھیا مگر فلمی دوستوں کی یاد بھی دل سے مجھ نہیں ہوئی۔ نہ ردا میں تہل آیا نہ احباب ہی فراموش ہوئے بس ہم خود ہی گردشِ دو دال میں الجھے رہے بہر حال رابعہ افضال کی چچھائی پکار رہا ہے نیہ نازی کی مدد پرانہ حاضری، پیاری صبا عبدالغنی کی خوشیاں بکھیرتی آند ہو یا افشاں علی کی رنگین ہستی..... کیا ہی خوب صورت رشتے ہیں جو بھلائے ہیں بھولتے۔ ایک طویل غیر حاضری کے بعد پیاری سکھیوں سے ہم کلام ہونے کا بھی الگ ہی نشہ ہے شاید قلم میں وہ طاقت نہیں جو جذبول کو الفاظ میں ڈھال سکے۔ دعا ہے کہ اللہ کبریم میرے اخلاص اور میری سکھیوں کی مسرتوں میں اضافہ فرمائے۔ (آمین)

فریدہ فرید۔ پاکپتن شریف

ردا، صالحہ آپی، نورین اور ردا دوستوں کے نام

دعاؤں میں بسے لوگوں

سنو یہ رابطوں کی دنیا ہے

رابطوں سے رشتے ہیں

چاہتوں کے یہ سنگم
خوشیوں کے یہ آنگن
دوستی کے یہ بندھن ہم کو یاد آئیں گے
آنے والے سالوں میں
کس کے سنگ ہنستا ہے
کس سے مل کر روتا ہے
کب یہ اپنے بس میں ہے
کب یہ اپنے بس میں ہے
مگر آسماں کی جانب
پھیلے ہاتھ کہتے ہیں
دل سے دل کا تعلق
معتبر دعا سے ہے
دعاؤں میں بسے لوگوں
جہاں بھی رہو
صد اخلاص رہو (آمین ثمہ آمین)

رہما نور رضوان۔ کراچی

فوزیہ کے نام

جنرل ہسپتال لاہور میں انتظامیہ کی شدید غفلت اور بیڈ نہ ملنے کی وجہ سے اسپتال کے فرش پر سخت سردی اور بیماری کی وجہ سے جاں بحق ہونے والی فوزیہ کے نام۔

غور حسن کے صدقے محبت یوں نہیں کرتے
بھری محفل میں ظاہر دل کی وحشت یوں نہیں کرتے

یہ مانا تم حسین ہو اور تمہیں حق ہے شرارت کا
کسی کی جان برہن جائے شرارت یوں نہیں کرتے
جسے تم حسن کہتے ہو وہ کعبہ سے نگاہوں کا
ادب لازم ہے کعبہ کی زیارت یوں نہیں کرتے
کچھ ایسے حسن کی خیرات دے دو ہم فقیروں کو
کسی سائل کو اپنے در سے رخصت یوں نہیں کرتے
حیا اور شرم کو ہم حسن زیور سمجھتے ہیں
یہ زیور لٹ کے رہ جائے سخاوت یوں نہیں کرتے
تمہاری اک نظر پر فیصلہ ہے زندگانی کا جواد
مسجماہو کے بیماروں سے غفلت یوں نہیں کرتے

ملک جواد نواز کے نام

خواب اور خوشبو

دونوں ہی آزاد ہیں

دونوں قید نہیں ہو سکتے

میرے خواب

اور تمہاری خوشبو

سعدیہ جواد۔ کھاریاں

میری سوئیٹ اینڈ لولی فرینڈ حنا کے نام

میری سوئیٹ اینڈ لولی فرینڈ حنا کی 14

اگست کو برتھ ڈے ہے اس اہم دن پر میری

طرف سے میری فرینڈ حنا کے لیے

خدا کرے

تم جیو ہزاروں سال

سال کے دن ہوں

پورے پچاس ہزار

نہ بھی آنکھ تمہاری نم ہوں

نہ بھی لبوں پر مسکراہٹ مدھم ہوں

خوشیوں کا نقص تمہارے آنگن میں ہو

محبت کے سارے رنگ تمہارے دامن میں ہوں
تم گلاب کی مانند کھلی رہو
کبھی نہ غم کا پچھی تمہیں ستائے
ہر لمحہ تو آباد رہے
ہے دعا میری یہ رب سے
ہر قدم پر تو کامیاب رہے

حنا تبسم۔ کراچی

ردا فرینڈز کے نام

السلام علیکم! میری بہنوں دوستوں اور
شاگردوں سب سے پہلے صالحہ آپی ہاؤ آر یو؟
نورین آپی تسی کیسے ہو جناب امید ہے فٹ
فاٹ ہی ہوں گے۔ افشاں علی عرف فوزیہ علی
میری پیاری دوست بہن ہمز کیسی ہو اور آج
کل کیا ہو رہا ہے۔ میری طرح صرف کہانیاں
کھڑی ہو چکی ہیں پھر پڑھ بھی رہی ہو۔ سچ یا میرے
گھر میں راسخ کی تو کوئی قدر ہی نہیں ہے کام کام
اور بس کام ہی کرتے رہو۔ (کیا تمہارے
ساتھ بھی ایسا ہے؟) کوئی بھائی باقی اور تھوڑا
سچ بھی دل میں بڑی خواہش تھی کہ تم سے
فرصت سے باتیں کر لوں تو بس پھر آج قلم کا
سہارا لے لیا ہے۔ شاید تم میرا خط پڑھ کر مسکرا
رہی ہو تو پلیز اس وقت دعا کرو کہ میں جو چاہتی
ہوں وہ بس مجھے مل جائے آمین دعا کا اس لیے
کہا ہے کہ شاید اوپر والا تمہاری سن لے۔ میں تم
سے ڈھیر دن باتیں کرنا چاہتی ہوں تمہیں دیکھنا
چاہتی ہوں۔ سنو اس دوستی کو کبھی مت توڑنا
بچھیں۔

ثناء کنول۔ لودھراں

☆.....



ران روست

اجزاء

دہی یا ران..... ڈیڑھ کلو
لہسن اور ک پیسٹ..... دو چائے کے چمچے
لال مرچ پاؤڈر..... ایک کھانے کا چمچ
دہی..... ایک کپ
جانفل جاوتری پاؤڈر..... آدھا چائے کا چمچ
پیتا پیسٹ..... تین کھانے کے چمچے
نمک..... حسب ذائقہ
چاٹ مصالحہ..... ایک چائے کا چمچ
زیرہ پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
کئی ہوئی سیاہ مرچ..... ایک چائے کا چمچ
تیل..... آدھا کپ
لیموں..... سرونگ کے لیے

ترکیب: ران میں اچھی طرح کٹ لگائیں۔ پھر تمام مصالحے ایک پیالے میں اکٹھا کر لیں اور اچھی طرح کس کر لیں۔ ران پر تمام مصالحے لگا کر چھ سے سات گھنٹے چھوڑ دیں۔ اب ایک بڑے دگچے میں تیل گرم کر کے ران اس میں رھیں ڈھکن ڈھک کر درمیانی آگ پر پکائیں۔ تھوڑی دیر بعد ران پلٹ دیں اور پکائیں۔ جب ران گل جائے اور تیل الگ ہو جائے تو ران ڈش میں نکالیں اور لیموں، سلاد اور نان کے ساتھ سرو کریں۔

باری کیو گولہ کباب

اجزاء:

قیمہ باریک..... ایک کلو
براؤن پیاز..... چار کھانے کے چمچے
پیتا پیسٹ..... ایک چائے کا چمچ
دہی..... ایک چائے کا چمچ
باری کیو گرم مصالحہ..... ایک چائے کا چمچ
لال مرچ پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
سونف پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
زیرہ پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
الانچی پاؤڈر..... آدھا چائے کا چمچ
لہسن اور ک پیسٹ..... ایک چائے کا چمچ
ہرا دھنیا (باریک چوب کر لیں)..... آدھا کپ
بیس..... تین کھانے کے چمچے
ہری مرچ..... چھ عدد
پودینہ (باریک چوب کر لیں)..... پون کپ
تیل..... لگانے کیلئے

ترکیب: گوشت کو پہلے دھولیں پھر خشک کر کے قیمہ بنوائیں۔ اب قیمہ میں براؤن پیاز، پیتا، دہی، گرم، مصالحہ، مرچ، سونف، زیرہ، الانچی، لہسن، اور ک، بیس، ہرا دھنیا، ہری مرچ، پودینہ تمام مصالحے کس کر کے آدھا گھنٹہ رھیں۔ پھر گولہ کباب بنا کر سینوں پر چڑھا دیں اور تھوڑی دیر فریج میں رھیں۔ فریج میں رکھنے سے کباب ٹوٹیں گے نہیں۔

اب باری کیو کریں تھوڑا سنک جائیں تو تیل کا برش کریں۔ پختی، سلاد، پراٹھے کے ساتھ سرو کریں۔

کر اہی کباب مصالحہ

اجزاء:

قیمہ..... آدھا کلو
اور ک پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچ
نمک..... حسب ذائقہ
لال مرچ پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
براؤن پیاز پیسٹ..... آدھا کپ
ہرا دھنیا..... پون کپ
ہری مرچیں (چوب کی ہوئی)..... تین عدد
دھنیا (کٹا ہوا)..... ایک چائے کا چمچ
زیرہ (کٹا ہوا)..... ایک چائے کا چمچ
گرم مصالحہ پاؤڈر..... آدھا چائے کا چمچ
انڈا (پھینٹ لیں)..... ایک عدد
بیس..... ایک کھانے کا چمچ
مصالحہ بنانے کے لیے:
براؤن پیاز کا پیسٹ..... تین کھانے کے چمچے
دہی..... چار کھانے کے چمچے
لہسن، اور ک پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچ
نمک..... حسب ذائقہ
لال مرچ پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
دھنیا پاؤڈر..... ایک چائے کا چمچ
تیل..... پون کپ

ترکیب: قیمہ چوب میں ڈال کر چوب کھولیں۔ پیالے میں نکال کر نمک، لال مرچ پاؤڈر، براؤن پیاز، ہری مرچیں، ہرا دھنیا، گرم مصالحہ پاؤڈر، انڈا، کٹا ہوا زیرہ، کٹا ہوا دھنیا اور بیس ڈال کر اچھی طرح کس کر لیں اور حسب پسند کسی بھی شیب میں کباب بنالیں۔ سوس پین میں تیل گرم کر کے براؤن پیاز، نمک، لال مرچ، پاؤڈر، دھنیا پاؤڈر، لہسن، اور ک پیسٹ، اور دہی ڈال کر مصالحہ بھون لیں۔ تیل الگ

ہو جائے تو ایک کپ پانی ڈال کر پکائیں اور فرائی کباب بھی ڈال دیں۔ تین چار منٹ بعد ہرا دھنیا، ہری مرچیں ڈال کر چولے سے اتار لیں۔ سرونگ ڈش میں نکال کر گرم گرم سرو کریں۔

تندوری عرب ران روست

اجزاء:

ران (بکرے کی)..... ڈیڑھ کلو
لال مرچ پاؤڈر..... ڈیڑھ کھانے کا چمچ
دھنیا (کٹا ہوا)..... ایک کھانے کا چمچ
سونف (کٹی ہوئی)..... ایک کھانے کا چمچ
انگور کا سرکہ..... آدھا کپ
گرم مصالحہ پاؤڈر..... ایک کھانے کا چمچ
لیموں کارس..... آدھا کپ
پیتے کا پیسٹ..... چار کھانے کے چمچے
لال رنگ..... ایک کپ
نمک..... حسب ذائقہ
تیل..... ایک کپ

ترکیب: ران کو اچھی طرح دھو کر تیز چھری کی مدد سے ترچھے کٹ لگائیں۔ پیالے میں سرکہ، گرم مصالحہ پاؤڈر، لال مرچ پاؤڈر، کٹا ہوا دھنیا، کٹی ہوئی سونف، لیموں کارس، پیتے کا پیسٹ، لال رنگ، نمک اور تیل ڈال کر کس کر دیں۔ ران پر مصالحے کا آمیزہ اچھی طرح لگا کر رات بھر کے لیے فریج میں رکھ دیں۔ رات کو ٹینک ٹرے میں رکھ کر پہلے سے گرم اور تیل سے گھسیٹیں، ایک طرف سے سنہری ہو جائے تو سائیڈ بدل دیں۔ تیار ہونے پر سرونگ ڈش میں نکال کر چاٹ مصالحہ اور لیموں کے سلائس سے گاؤش کر کے سرو کریں۔

سیخ کباب

اجزاء:

قیمہ (مشین کا نکلا ہوا)..... ایک کلو
کپا پیتا پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچ

سنگھار

اسنگ یا پھر لپ گلاس لگائیں جیسے براؤن برغندی یا پھر گلابی، سرخ رنگ کا استعمال نہ کریں درمیانی رنگت والی جلد آئی میک اپ کے لیے براؤن اور کارپشید لگائیں ڈارک رنگت والی جلد پر براؤن شید کا آئی میک ٹھیک رہے گا۔

سرخ رنگ کا لباس

ہلکی رنگت والی جلد پر کریمی آئی شید اور براؤن لائٹر استعمال کریں ہونٹوں پر ہلکی لپ اسنگ اور اس کے اوپر سرخ گلاس لگائیں۔ درمیانی رنگت والی خواتین کریمی آئی شید لگائیں ہلکے لائٹر اور ہونٹوں پر کریم کلر لپ اسنگ لگائیں گہری رنگت والی خواتین ڈیپ براؤن آئی شید لگائیں اور ہلکے لائٹر پر ریڈش براؤن شید لگائیں۔

کالا لباس

ہلکی رنگت والی خواتین زیادہ زور پلکوں پر دیں اور شید ہلکے رنگ کا لگائیں ہونٹوں پر ہلکی سی کریم لگائیں اور پھر پیمپن لٹر استعمال کریں ہونٹوں پر سرخ یا گلابی لپ اسنگ لگائیں۔ درمیانی رنگت والی کلر فل رنگین لائٹر لگائیں نیلی آنکھوں والی پھیکی رنگ کا انتخاب کریں اور جلد کے لحاظ سے ہونٹوں پر لگائیں بعد میں گولڈ گلاس کا بچ دیں۔

چوڑیاں اور چاندرات

چوڑیاں صنف نازک کی مذاکت کی مثالی تصویر کی جاتی ہیں خوشی کا کوئی بھی موقع ہو مشرق

لباس کو زیب تن کرنے کا سب سے اچھا پہلو ہے کہ آپ وہ لباس پہنیں جو عام حالت میں پہننا پسند نہیں کرتی اور ساتھ آنکھوں اور ہونٹوں پر میک اپ کر لیں عید پر سنگھار کرنے کے کچھ نئی ٹپس مندرجہ ذیل ہیں۔

گلابی رنگ کے لباس اور آئی شیدز

ہلکی رنگت والی جلد یعنی ایسی خواتین جن کی رنگت ہلکے رنگ کی ہو ان کو چاہئے کہ لائٹ اور نیوٹرل شیدز استعمال کریں مگر ایسے ہو کہ ان میں تھوڑی چمک دمک بھی ہو اور آنکھوں کو نمایاں کر سکیں ہونٹوں کے لیے جیسا کپڑے کا چرٹ ہو اس کے حساب سے لپ شید کا انتخاب کریں: اگر پرنٹ گلابی ہے تو پھر گلابی لپ گلاس یا پھر پرل شید لگائیں۔ اور جن خواتین کی جلد کا رنگ درمیانہ ہو یعنی نہ کالی نہ سفید ہو ان کو چاہئے کہ ہلکا سرخ رنگ استعمال کریں اگر زیادہ شوق رنگ استعمال کر لیں گی تو رنگت گہری سانولی لگے گی۔ لباس میں اگر بہت سے رنگ ہو تو ان کی مناسبت سے شید منتخب کریں اس کے علاوہ ایسی خواتین سرخ رنگ یا Peach رنگ کی لپ اسنگ استعمال کر سکتی ہیں۔

پیمپن رنگ کا لباس

ہلکی رنگت کے لئے گولڈ یا بھورا مائل رنگ ٹھیک ہوتا ہے۔ ہونٹوں پر گہرے شید کی لپ

ترکیب: پیالے میں گوشت، کچا پیتا پیسٹ، نمک، لال مرچ، پاؤڈر، ٹماٹر، لہسن اور ک پیسٹ، کٹا ہوا زیرہ، کٹا ہوا دھنیا، کٹا ہوا گرم مصالحہ اور لیموں کا رس ڈال کر مکس کر کے ایک گھنٹے کے لیے رکھ دیں۔ دینی میں تیل گرم کر کے پیاز ڈال کر فرائی کریں، سنہری ہو جائے تو گوشت ڈال کر مکس کریں اور ڈھک کر درمیانی آگ پر پکائیں، پانی خشک ہو جائے تو بھون لیں۔ تیل الگ ہونے لگے تو ہری مرچیں ڈال کر چولہے سے اتار لیں۔ سرونگ ڈش میں نکال کر سرو کریں۔

بیف اسنگ کباب

اجزاء: قیر..... آدھا کلو نمک..... حسب ذائقہ لہسن پیسٹ..... ایک چائے کا چمچہ اور ک پیسٹ..... ایک چائے کا چمچہ زیرہ..... ایک چائے کا چمچہ گرم مصالحہ پاؤڈر..... آدھا چائے کا چمچہ لال مرچ (کٹی ہوئی)..... آدھا چائے کا چمچہ پیاز (باریک چوب کر لیں)..... ایک عدد انڈا..... ایک عدد کارن فلور..... دو کھانے کے چمچے ثابت دھنیا (کٹا ہوا)..... ایک چائے کا چمچہ ہری مرچ (کٹی ہوئی)..... ایک کھانے کا چمچہ برا دھنیا (چوب کر لیں)..... آدھا کپ تیل..... حسب ضرورت لکڑی کی اسنگ..... حسب ضرورت ترکیب: قیر کو چور میں پیس لیں نمک، لہسن، اور ک پیسٹ، زیرہ، گرم مصالحہ پاؤڈر، کٹی لال مرچ، پیاز، انڈا، کارن فلور، کٹا دھنیا، کٹی ہری مرچ اور برا دھنیا ڈال کر اچھی طرح مکس کر کے تھوڑی دیر فریج میں رکھیں۔ کباب بنا کر گرم تیل میں فرائی کریں لکڑی کی اسنگ میں لگا کر پلیٹ میں رکھیں اور سلاڈ چٹنی، پچ کے ساتھ سرو کریں۔ ☆☆

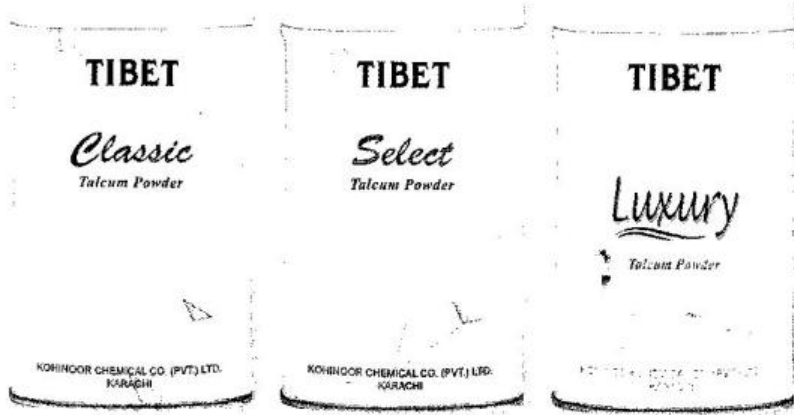
ادرک، لہسن پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچہ سرخ مرچ پاؤڈر..... ایک کھانے کا چمچہ گرم مصالحہ پاؤڈر..... ایک کھانے کا چمچہ ثابت دھنیا (کٹا ہوا)..... ایک کھانے کا چمچہ براؤن پیاز (چور کر لیں)..... آدھا کپ چائفل جاوتری پاؤڈر..... پون چائے کا چمچہ نمک..... حسب ذائقہ تیل..... پون کپ چٹنی..... حسب ضرورت ترکیب: پیالے میں قیر، کچا پیتا پیسٹ، اور ک، لہسن پیسٹ، سرخ مرچ پاؤڈر، گرم مصالحہ پاؤڈر، کٹا ہوا ثابت دھنیا، براؤن پیاز، چائفل جاوتری پاؤڈر، نمک اور تیل ڈال کر اچھی طرح مکس کر کے دو گھنٹے کے لیے ریفریجریٹر میں رکھ دیں۔ قیر کا آمیزہ تیلوں پر لگا کر باربی کیو کر لیں اور سے برش کی مدد سے لگا کر پیتائیں، سنہری ہو جائے تو سرونگ ڈش میں نکال کر پودینے کی چٹنی اور سلاڈ کے ساتھ گرم گرم سرو کریں۔

جھٹ پٹ منن کڑائی

اجزاء: گوشت..... ایک کلو کچا پیتا پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچہ لال مرچ پاؤڈر..... ایک کھانے کا چمچہ پیاز (سلاکس کاٹ لیں)..... دو عدد لہسن اور ک پیسٹ..... ایک کھانے کا چمچہ ٹماٹر (چوب کر لیں)..... تین عدد زیرہ (کٹا ہوا)..... ایک چائے کا چمچہ ثابت دھنیا (کٹا ہوا)..... ایک چائے کا چمچہ گرم مصالحہ (کٹا ہوا)..... آدھا چائے کا چمچہ لیموں کا رس..... دو کھانے کے چمچے ہری مرچیں..... گارنش کے لیے نمک..... حسب ذائقہ تیل..... آدھا کپ



اب 3 نئی خوشبوؤں میں دستیاب



کلاسیک

سلیکٹ

لکڑی

تبت ٹالکم پاور - جس سے شادی جگہ پہنچائے

تبت
ٹالکم پاور

رکھیں تاکہ وہ آپس میں نہ ٹکرائیں۔

☆ چوڑیوں کو ایسے کور میں بھی رکھا جاسکتا ہے۔ جوڑپ، سچ بٹن، یا چیکن پٹی سے کھلتے اور بند ہوتے ہوں تاکہ حفاظت کے ساتھ ٹکالنے اور رکھنے میں آسانی ہوں۔

☆ کپڑے اور ہلکے فوم کے چھوٹے بوٹے بنا کر ان میں علیحدہ علیحدہ کڑے رکھیں تاکہ ٹک نہ لگیں اور رگڑ سے محفوظ رہیں۔

عید منامیں مہندی لگائیں

عید کے موقع پر کئی دن پہلے سے پارلر میں رش بڑھنے لگتا ہے اب مہندی لگانا بھی برٹس بن گیا ہے ایک ہاتھ پر مہندی لگانے کے بڑے دام وصول کئے جاتے ہیں اور چاند رات تک تو ڈبل میسے لیے جاتے ہیں۔ مہندی لگانا کوئی بڑی بات نہیں اس ہنر کو سیکھنے کے لیے آپ اپنا وقت صرف کریں اور سادہ انداز میں مہندی لگانا سیکھیں۔

ہوتے ہیں ایک ڈیزائن کا انتخاب کریں ڈیزائن سادہ پھول پتیل والا ہو تو بہتر ہے۔ ایک سادہ کاغذ پر اپنا ہاتھ رکھ کر مہندی لگائیں اب اس ہاتھ کے نقشے پر پتیل کی مدد سے مہندی کے ڈیزائن کی پریکٹس کریں۔

جب کاغذ پر آپ مہندی لگانے کی پریکٹس کریں تو ایک سادہ شیشہ لیں اور ایک مہندی کی کون لیں شیشہ پر اپنا ہاتھ رکھ کر اس پر ٹریس کریں اس ہاتھ کے نقشے پر کون مہندی کی مدد سے ڈیزائن بنائیں جب آپ ان دونوں پر خوب اچھی طرح پریکٹس کر لیں تو پھر کسی کے بھی ہاتھ پر آپ با آسانی مہندی لگا سکتی ہیں۔

☆.....

میں چوڑیوں کے بغیر منانا ناممکن تصور کیا جاتا ہے۔ حیدر آباد چوڑی سازی کی صنعت سے منسلک ہے اس صنعت میں کام کرنے والیوں کا کہنا ہے کہ یہ بہت پیچیدہ اور سخت کام ہوتا ہے۔ چوڑی سازی کی اس صنعت کے مختلف مدرج میں بھی میں شیشے اور ٹوٹی ہوئی چوڑیوں کو پکا کر دائروں کی شکل دی جاتی ہے۔

چوڑیوں کی حفاظت

چوڑیوں کو محفوظ کرنے کے لیے آپ بہت سادہ اور آسان طریقے اپنا کر ان کے لیے چھوٹے چھوٹے کور اور ٹینڈ بنا کر نہ صرف ان کی حفاظت کر سکتی ہیں بلکہ کسی کو سجا کر تحفہ بھی دے سکتی ہیں۔

☆ چھوٹے سائز کے روئی یا فوم سے چھریے گاؤ تکیے بنائیے جو بہت آسانی سے عموماً خائیں سی لیتی ہیں مگر خیال رہے کہ چوڑیوں کے سائز کی مناسبت سے ہوں۔

☆ جوتے کے خالی ڈبے پر جینز کا موٹا کپڑا یا ہلکے فوم کی شیٹ کے ساتھ اپنی پسند کا کوئی بھی کپڑا لگا کر سی لیں اور گتے کے ڈبے پر اس شیٹ کے ساتھ اپنی پسند کا کوئی بھی کپڑا لگا کر سی لیں اور گتے ڈبے پر اس شیٹ کو یا تو سی لیاں یا گونڈ کی مدد سے چپکالیں۔

☆ پلاسٹک کی شیٹ پر زب اور کپڑے کی مدد سے سی کر ایک باکس کی شکل دیکر بھی چوڑیوں کو محفوظ بنایا جاسکتا ہے۔

☆ گاؤ تکیے پر چوڑیاں چڑھانے کے بعد ان پر پولی تھن بیگ چڑھانے سے وہ کافی عرصے تک کالی نہیں پڑتی۔

☆ ہر سیٹ کو دوسرے سے سیٹ سے بچانے کے لیے گتے یا فوم کی تیلی تہ لگا کر ڈبے میں